झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
नवोन्मेष शोध नेतृत्व
JCERT

प्रश्न बैंक-सह-उत्तर पुस्तक

Question Bank-Cum-Answer Book

2023

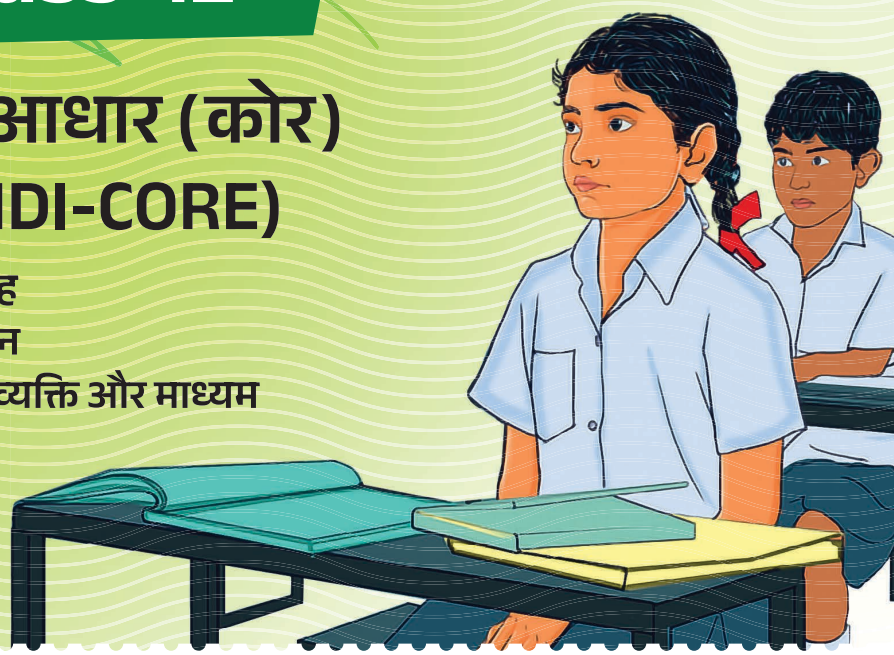

Class-12

हिन्दी-आधार (कोर)
(HINDI-CORE)

- ✓ आरोह
- ✓ वितान
- ✓ अभिव्यक्ति और माध्यम

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक
Question Bank-Cum-Answer Book

Class - 12

हिन्दी– आधार (कोर)

- आरोह : भाग–2
- वितान : भाग–2
- अभिव्यक्ति और माध्यम

2023

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

Jharkhandlab.com

प्रथम संस्करण : माह अगस्त 2023, श्रावण विक्रम संवत् 2080

© झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड

Jharkhandlab.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, छायाप्रतिलिपि अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण या जिल्द के साथ अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

- **क्रय–विक्रय दण्डनीय अपराध**

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

बच्चों के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने का मार्ग सरल एवं सुगम होना आवश्यक है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड के द्वारा कक्षा 12 के सभी विषयों के लिए प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण बच्चों के अधिगम कौशल को सुगमतापूर्वक विकसित करने एवं झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उन्हें तैयार करने के उद्देश्य से किया गया है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में सरल भाषा एवं रुचिकर ढंग से विषय–वस्तु को स्पष्ट करते हुए प्रश्नोत्तर दिए गए हैं। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के माध्यम से बच्चों में न केवल ज्ञानजन्य प्रतिभा का विकास होगा बल्कि आज के इस प्रतियोगिता के दौर में भी वे अनुकूल सफलता पाएंगे। हमारे प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यालय के शिक्षकवृन्द बच्चों की कल्पनाओं के साथ कितना जुड़ पाते हैं और विभिन्न प्रकार के प्रश्नोत्तरों को सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभवों के साथ–साथ बच्चों के विचारों के साथ कैसे सामंजस्य बनाते हैं।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के विविध प्रकारों यथा– बहुवैकल्पिक, अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न आदि के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नोत्तर समाहित किए गए हैं ताकि इसके अध्ययन से छात्रों में ना केवल विषय–वस्तु की समझ विकसित हो बल्कि उन्हें सीखने के प्रतिफल की भी प्राप्ति हो, साथ ही वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उनकी अच्छी तैयारी हो सके और वे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हुए सफलता प्राप्त कर सकें।

अंत में मैं इन पुस्तकों के लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

के० रवि कुमार भा.प्र.से.
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

Jharkhandlab.com

भूमिका

प्रिय शिक्षक एवं विद्यार्थी,

जोहार !

हमें कक्षा 12 के विभिन्न विषयों के प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक से आपका परिचय कराने में प्रसन्नता हो रही है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों के विषयवार एवं अध्यायवार अधिगम बिन्दुओं को समायोजित करते हुए झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जानेवाले प्रश्नों के विविध प्रकारों के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस विषय आधारित प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण का उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक रुचिकर, सरल एवं प्रभावशाली बनाना तथा विद्यार्थियों को वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा की तैयारियों में सहयोग प्रदान करना है, जिससे सकारात्मक रूप से छात्रों को सीखने के प्रतिफल प्राप्त हों और वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में वे बेहतर प्रदर्शन कर सकें। राज्य के विभिन्न जिलों से चयनित अनुभवी शिक्षकों के द्वारा इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण किया गया है।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि इनमें प्रश्नों के उत्तर को सरल भाषा में प्रस्तुत करते हुए वैचारिक समझ (Conceptual Understanding) विकसित करने पर जोर दिया गया है। साथ ही इन पुस्तकों में झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा – 2023 के प्रश्नोत्तर को भी समाहित किया गया है। इन पुस्तकों के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आएगा बल्कि वर्तमान समय के प्रतियोगिताओं के इस दौर में वे अनुकूल एवं अपेक्षित सफलता प्राप्त करने में भी सक्षम हो सकेंगे। आशा है कि यह प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक आपको पसंद आएगी एवं आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं के साथ।

किरण कुमारी पासी भा.प्र.से.
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
राँची, झारखण्ड

Jharkhandlab.com

पाठकों से अनुरोध

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण में काफी सावधानियाँ बरती गई है। इसके बावजूद यदि किसी प्रकार की अशुद्धियाँ मिले या कोई सुझाव हो तो इस email ID :- jcertquestionbank@gmail.com पर सूचित करें, ताकि अगले मुद्रण में इसे शुद्ध रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक निर्माण समिति

मुख्य संरक्षक

श्री के० रवि कुमार (भा.प्र.से.)
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

संरक्षक

श्रीमती किरण कुमारी पासी (भा.प्र.से.)
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

अवधारणा एवं मार्गदर्शन

श्री मुकुंद दास उपनिदेशक (प्र.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री बाँके बिहारी सिंह** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री मसुदी टुडू** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

समन्वय एवं निर्देशन

डॉ0 नीलम रानी
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(टी.जी.टी., सामाजिक विज्ञान, राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय पैतानो, जलडेगा, सिमडेगा)

सहयोग

श्री मणिलाल साव
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(पी.जी.टी. जीव विज्ञान, के. एन. +2 उच्च विद्यालय हरनाद, कसमार, बोकारो)

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक निर्माण कार्य समिति

रागिनी गुप्ता
PGT (हिन्दी)
राजकीयकृत +2 उच्च विद्यालय, पिस्का नगड़ी, राँची।

वैदेही कुमारी
PGT (हिन्दी)
राजकीयकृत हंसराज वाधवा +2 उच्च विद्यालय नामकुम, राँची।

कपलेश्वर महतो
PGT (हिन्दी)
जयपाल सिंह +2 उच्च विद्यालय तैमारा, बुण्डू, राँची।

निखिल कुमार
PGT (हिन्दी)
राजकीय बुनियादी उत्क्रमित +2 उच्च विद्यालय टेरो, बेड़ो

शिवानी
PGT (हिन्दी)
शिवनारायण मारवाड़ी बालिका +2 उच्च विद्यालय, राँची।

JharkhandLab.com

Jharkhandlab.com

विषय सूची

आरोह भाग – 2		
	काव्य – खंड	पृष्ठ संख्या
अध्याय – 1	**हरिवंशराय बच्चन** 1. आत्मपरिचय 2. एक गीत	1–2
अध्याय – 2	**आलोक धन्वा** 1. पतंग	3–6
अध्याय – 3	**कुँवर नारायण** 1. कविता के बहाने 2. बात सीधी थी पर	7–10
अध्याय – 4	**रघुवीर सहाय** 1. कैमरे में बंद अपाहिज	11–12
अध्याय – 5	**गजानन माधव मुक्तिबोध** 1. सहर्ष स्वीकारा है	13–16
अध्याय – 6	**शमशेर बहादुर सिंह** 1. उषा	17–18
अध्याय – 7	**सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** 1. बादल राग	19–20
अध्याय – 8	**तुलसीदास** 1. कवितावली (उत्तर कांड से) 2. लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप	21–25
अध्याय – 9	**फ़िराक गोरखपुरी** 1. रुबाइयाँ 2. गज़ल	26–27
अध्याय – 10	**उमाशंकर जोशी** 1. छोटा मेरा खेत 2. बगुलों के पंख	28–29
	गद्य – खंड	
अध्याय – 11	**महादेवी वर्मा** 1. भक्तिन	30–31
अध्याय – 12	**जैनेन्द्र कुमार** 1. बाज़ार दर्शन	32–33

Jharkhandlab.com

अध्याय – 13	**धर्मवीर भारती** 1. काले मेघा पानी दे	34–37
अध्याय – 14	**फणीश्वरनाथ रेणु** 1. पहलवान की ढोलक	38–39
अध्याय – 15	**विष्णु खरे** 1. चार्ली चैप्लिन यानी हम सब	40–41
अध्याय – 16	**रज़िया सज़्जाद ज़हीर** 1. नमक	42–46
अध्याय – 17	**हजारी प्रसाद द्विवेदी** 1. शिरीष के फूल	47–48
अध्याय – 18	**बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर** 1. श्रम विभाजन और जाति–प्रथा 1. मेरी कल्पना का आदर्श समाज	49–50
वितान भाग – 2		
पाठ – 1	**मनोहर श्याम जोशी** 1. सिल्वर वैडिंग	53–57
पाठ – 2	**आनंद यादव** 1. जूझ	58–59
पाठ – 3	**ओम थानवी** 1. अतीत में दबे पाँव	60–62
पाठ – 4	**ऐन फ्रैंक** 1. डायरी के पन्ने	63–66
अभिव्यक्ति और माध्यम		
1	अनुच्छेद लेखन	69–70
2	कार्यालयी पत्र	71–73
3	जनसंचार माध्यम	74–77
4	संपादकीय लेखन	78–79
5	रिपोर्ट लेखन	80–81
6	आलेख लेखन	82–83
7	पुस्तक समीक्षा	84
8	फीचर लेखन	85–86
	Solved Paper of JAC Annual Intermediate Examination - 2023	87–99

Jharkhandlab.com

आरोह

भाग–2

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

अध्याय - 1

आत्म-परिचय, एक गीत

- हरिवंश राय बच्चन

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. कविता एक ओर जहां जग जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूं।' विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है?

उत्तर - प्रस्तुत कविता में कवि जग जीवन का भार ढोने की बात कहता है। इसका अर्थ है - वह संसार से अलग नहीं है। वह दुनिया की चिंताओं के प्रति भी जागरूक है। वह अपनी कविता के द्वारा संसार को भारहीन और कष्टों से मुक्त करना चाहता है।

इस राह पर चलते चलते कुछ बातें कवि के मन को दुखी करती है। संसार का कुछ व्यवहार उसे दुखी करता है। संसार की बहुत सी गलत परंपराएं उसका रास्ता रोकती हैं। वह उन गलत परंपराओं को चुनौती देता है तथा उनकी परवाह नहीं करता।

प्रश्न 2. 'जहां पर दाना रहते हैं वही नादान भी होते हैं।' कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर - कवि का मानना है कि दुनियादारी में डूबे रहना उसकी जरूरतों को पूरा करने में लगे रहना नादानी है, मूर्खता है। दाना दुनियादारी का प्रतीक है और उसके पीछे उलझे रहना मनुष्य की नादानी है। कवि ने सांसारिक सफलताओं को व्यर्थ बताने के लिए यह कथन कहा है।

प्रश्न 3. मैं और, और जग और कहां का नाता - पंक्ति में और शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर - इस पंक्ति में और शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। अतः यमक अलंकार है। पहले और तीसरे और का अर्थ है अन्य भिन्न। पहले 'और' का अर्थ है- विशेष रूप से भावना प्रधान व्यक्ति तीसरे और का अर्थ है- सांसारिकता में डूबा हुआ आम आदमी। दूसरे और का अर्थ है- तथा। अतः यहां इस पंक्ति में यह शब्द अनेकार्थी शब्द के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

प्रश्न 4. 'शीतल वाणी में आग' के होने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर - कवि का स्वर और स्वभाव कोमल अवश्य है लेकिन उसके मन में विद्रोह की भावना प्रबल है। वह प्रेम से रहित संसार को अस्वीकार करता है। उसे महत्व नहीं देता। ऐसे संसार को वह अपनी ठोकर पर रखता है।

प्रश्न 5. बच्चे किस बात की आशा से नीड़ों से झांक रहे होंगे?

उत्तर - बच्चों को इस बात की आशा है कि उनके माता-पिता उनके लिए भोजन सामग्री लेकर तुरंत ही उनके पास आ रहे होंगे। जैसे ही वे आएंगे वे उन्हें भोजन के साथ-साथ बहुत सारा प्यार भी देंगे। इसी आशा से बच्चे नीड़ों से झांक रहे हैं।

प्रश्न 6. 'दिन जल्दी जल्दी ढलता है' - की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर - 'दिन जल्दी जल्दी ढलता है' की आवृत्ति से इस कविता की निम्नलिखित विशेषताओं का पता चलता है -

(क) यह कविता प्रेम - परक कविता है। इसमें प्रेम की व्याकुलता का चित्रण हुआ है। प्रेम के पल बहुत ही सुखदाई होते हैं। इसलिए प्रेम में समय के ढलने का पता नहीं चलता।

(ख) इस पंक्ति से यह भी पता चलता है कि यहां पर एक गीत की शुरुआत होने जा रही है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. जग किन लोगों को सम्मान देता है और क्यों?

उत्तर. जग उन्हीं लोगों को सम्मान देता है जो जग की बातें करते हैं। अर्थात संसार में सामाजिक भावनाओं का महत्व है, व्यक्तिगत भावनाओं का नहीं। समाज मनुष्य के निजी प्रेम - संबंधों को सम्मान नहीं देता। कविता में निजी सुख - दुख को प्रकट करना गलत माना जाता है।

प्रश्न 2. कवि को यह संसार अपूर्ण क्यों प्रतीत होता है ?

उत्तर - कवि भावनाओं को महत्व देता है लेकिन यह संसार भावनाओं को महत्व नहीं देता। कवि दुनियादारी में लगे रहना नहीं चाहता। वह प्रेममयी संसार चाहता है। परंतु कवि को यह प्रतीत होता है कि इस संसार में प्रेम का अभाव ही अभाव है और प्रेम के बिना सब कुछ अधूरा है। इसलिए कवि को यह संसार अपूर्ण प्रतीत होता है।

प्रश्न 3. इस कविता में नादान किसे कहा गया है और क्यों ?

उत्तर - इस कविता में नादान उन्हें कहा गया है जो सांसारिकता के दाने को चुगने में उलझे रहते हैं। जो मनुष्य सिर्फ और सिर्फ भोगी प्रवृत्ति का होता है वह नादान होता है।

कवि प्रेम की कोमल दुनिया को सच्ची दुनिया

मानता है। वह भावनामय संसार को सार्थक मानता है।

प्रश्न 4. कवि अपने किस सीखे हुए ज्ञान को भूल जाना चाहता है ?

उत्तर - कवि सांसारिकता के ज्ञान को भूल जाना चाहता है। आज तक उसने दुनिया से छल - कपट, स्वार्थ और धन कमाने की कला सीखी है। अब कवि को प्रतीत होता है कि इस तरह का ज्ञान व्यर्थ है। अतः वह इसे भूल जाना चाहता है।

प्रश्न 5. थका हुआ यात्री क्या सोच कर जल्दी- जल्दी चलने लगता है ?

उत्तर - थका हुआ यात्री अपने प्रियजनों से जल्द - से - जल्द मिलना चाहता है। वह शीघ्र ही उनके पास पहुंचना चाहता है। जब उसे अपनी मंजिल सामने नजर आती है तब उसकी चाल अपने - आप तेज हो जाती है। उसे यह भी डर सताता है की कहीं रात न हो जाए। उसका यह डर उसके कदमों की गति को और तेज कर देता है।

प्रश्न 6. हो जाए ना पथ में रात कहीं
मंजिल भी तो है दूर नहीं -
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!
दिन जल्दी जल्दी ढलता है!

प्रस्तुत पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -

उत्तर -

(क) भाव सौंदर्य - प्रस्तुत पंक्तियों में प्रेम की व्याकुलता का अत्यंत ही सूक्ष्म चित्रण किया गया है। जल्दी - जल्दी चलना और दिन के ढलने का भय सताना - ये दोनों ही प्रेम की व्याकुलता के परिचायक हैं।

(ख) शिल्प सौंदर्य- भाषा अत्यंत सरल, संगीतमय, सुकोमल और प्रवाहमयी है।

अभिव्यक्ति की सरलता मनभावन है।

जल्दी-जल्दी में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

jharkhandlab.com

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. **आत्म परिचय कविता के कवि कौन हैं?**
   क. रामधारी सिंह दिनकर ख. नागार्जुन
   ग. रघुवीर सहाय घ. हरिवंश राय बच्चन

2. **कवि कैसे संसार को ठुकराता है?**
   क. ईमानदार ख. सत्यनिष्ठ
   ग. वैभवशाली घ. कर्मशील

3. **कवि उन्माद में क्या लिए फिरता है?**
   क. अवसाद ख. अहसास
   ख. अहसान घ. अवसर

4. **दिन ढलने के साथ ही बच्चे कहां से झांक रहे हैं?**
   क. खिड़की से ख. छत से
   ग. दरवाजे से घ. नीड़ों से

5. **कवि के फूट पड़ने को समाज ने क्या कहा?**
   क. छंद बनाना ख. बहाने बनाना
   ग. अभिनय करना घ. आंसू बहाना

6. **आत्म परिचय कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है?**
   क. मस्ती ख. खुशी
   ग. सुधारवाद घ. निष्क्रियता

7. **पथ में होने वाली रात की आशंका से कौन भयभीत है?**
   क. प्रेमी ख. तपस्वी
   ग. थका पंथी घ. शिल्पकार

8. **कवि किस का भार लिए फिरता है?**
   क. घर - गृहस्थी का ख. जग - जीवन का
   ग. पास - पड़ोस का घ. कार्यालय का

9. **कवि किस सुरा का पान करता है?**
   क. स्नेह ख. उमंग
   ग. उत्साह घ. ईर्ष्या

10. **कवि किस अवस्था का उन्माद लिए फिरता है?**
    क. वृद्ध ख. प्रौढ़
    ग. युवा घ. किशोर

उत्तर-	1- घ	2- ग	3- क	4- घ	5- क
	6- क	7- ग	8- ख	9- क	10 - ग

Jharkhandlab.com

अध्याय - 2

पतंग

-आलोक धन्वा

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. 'सबसे तेज़ बौछारें गईं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर - पतंग कविता में कवि आलोक धन्वा ने बच्चों की बाल-सुलभ इच्छाओं और उमंगों का प्रकृति के साथ उनके रागात्मक संबंधों का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है। ' सबसे तेज बौछारें गईं, भादो गया' पंक्ति में प्रकृति का वर्षा ऋतु के उपरान्त शरद ऋतु के आगमन का परिवर्तन दिखाया गया है । भादो मास गुजर जाने के बाद जब घनघोर बारिश समाप्त हो जाती है तब शरद ऋतु का आगमन होता है। खरगोश की लाल आंखों जैसी चमकीली धूप निकल आती है, इसके कारण चारों और उज्ज्वल चमक बिखर जाती है । आकाश बिलकुल साफ और मुलायम हो जाता है। हवाओं में एक मनोरम सुगंधित महक फैल जाती है। शरद ऋतु के आगमन से चारों ओर उत्साह एवं उमंग का वातावरण छा जाता है पतंगबाजी का माहौल बन जाता है।

प्रश्न 2. सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए सबसे हल्की और रंगीन चीज़, सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है ?

उत्तर - पतंग के लिए सबसे हल्की और रंगीन चीज़, सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग कर कवि उसका साकार रूप पाठकों के सामने रखना चाहते हैं, उनके मन में जिज्ञासा जगाना चाहते हैं, कुतूहल उत्पन्न करना चाहते हैं तथा पतंग को विशिष्ट बनाकर उसकी ओर उनका ध्यान आकर्षित कराना चाहते हैं, क्योंकि विशेष वस्तु प्राप्त करने की लालसा सबके भीतर होती है। जब भी हम किसी चीज को सर्वोत्तम कहते हैं, सारी दुनिया में सबसे बड़ा कहते हैं तो पाठक स्वयं ही उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं।

प्रश्न 3. बिंब स्पष्ट करें-

सबसे तेज बौछारें गई भादो गया सवेरा हुआ

खरगोश की आंखों जैसा लाल सवेरा

शरद आया फूलों को पार करते हुए

अपनी नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए

घंटी बजाते हुए जोर-जोर से

चमकीले इशारों से बुलाते हुए और आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए कि पतंग ऊपर उठ सके।

उत्तर - तेज बौछारें =दृश्य (गतिशील)बिंब

सवेरा हुआ = दृश्य (स्थिर)बिंब

खरगोश की आंखों जैसा लाल सवेरा = दृश्य (स्थिर) बिंब पुलों को पार करते हुए

= दृश्य (गतिशील) बिंब

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए = दृश्य (गतिशील) बिंब

घंटी बजाते हुए जोर - जोर से = श्रव्य बिंब

चमकीले इशारों से बुलाते हुए = दृश्य (गतिशील)बिंब

आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए (स्पर्श)बिंब

पतंग ऊपर उठ सके =दृश्य (स्थिर) बिंब

प्रश्न 4. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास - कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है?

उत्तर - 'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' पंक्ति में कपास से बच्चों की कोमल कल्पनाओं का संबंध है। जिस प्रकार कपास अत्यंत स्वच्छ एवं कोमल होती है वैसे ही बच्चों की कल्पनाएं अत्यंत नवीन,स्वच्छ एवं भावुकतापूर्ण होती है। वे निश्चल भाव से निरंतर कल्पनाएं करते हैं।बच्चों के पैर भी कपास के समान कोमल, हल्के, आकर्षक और चोट सहने में समर्थ होते हैं।इसलिए वे ऊँचाई से कूदकर भी चोट नहीं खाते,बल्कि उनकी कूद से कपास जैसे मुलायम उनके तलवे जमीन की कठोरता का अनुभव नहीं कर पाते। अतः कपास से बालकों की समानता वर्णित करना तर्कसम्मत है।दोनों में गुणों की समानता का संबंध है।

प्रश्न 5. पतंगों के साथ साथ वे भी उड़ रहें हैं- कवि ने बच्चों के लिए ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर - पतंग उड़ाते समय बच्चे रोमांचित होते हैं। जिस प्रकार पतंग आकाश में उड़ती हुई ऊँचाइयाँ छूती है, उसी प्रकार बच्चें भी छतों पर डोलते हैं। वे पतंग को उड़ता देखकर अत्यधिक उत्साह और उमंग से भर जाते हैं । तब वे न तो खतरनाक ऊंचाइयों का ध्यान रखते हैं और न गिरने का। अर्थात् वे किसी भी खतरे से बिलकुल बेखबर होते हैं। एक संगीतमय ताल पर उनके शरीर हवा में लहराते हैं जैसे वे एक पतंग हो गए हैं। पतंग उड़ाते उड़ाते मानो उनके छोटे छोटे सपनों को पँख लग जाते हैं। इस समानता के कारण ठीक ही कहा गया है कि पतंगों के साथ बच्चे भी उड़ रहे हैं।

प्रश्न 6. भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) छतों को भी नरम बनाते हुए

दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए।

उत्तर - इन पंक्तियों में कवि आलोक धन्वा का कहना है कि बच्चे पतंग उड़ाते हुए जब छतों पर उछल-कूद करते हैं, दीवारों से छतों पर कूदते हैं, तो उनके पदचापों से लगातार जो मनोरम ध्वनि निकलती है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चे आसपास सब ओर मृदंग बजा रहे हैं।

(ख) अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से

और बच जाते हैं तब तो

और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं।

उत्तर - प्रस्तुत पंक्तियों में कवि आलोक धन्वा बच्चों के साहस का वर्णन करते हैं। वे कहते हैं कि बच्चे जब कभी पतंग उड़ाते हुए छत से गिर जाते हैं और बच जाते हैं तो वे और अधिक निडर हो जाते हैं।

प्रश्न 7. दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य हैं?

उत्तर - 'दिशाओं को मृदंग की बजाते हुए' का तात्पर्य संगीतमय वातावरण की सृष्टि से है। पतंग काटने पकड़ने के लिए इधर-उधर दौड़ते बच्चों की पदचापों से दिशाएँ गुँजित हो जाती हैं, उस समय उनकी आवाज़ मृदंग की तरह प्रतीत होती है। ऐसा लगता है मानो आस पास कहीं मृदंग बज रहा हो । यही मृदंग ध्वनि धीरे-धीरे सारी दिशाओं में गूंजने लगती है।

प्रश्न 8. जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए क्या आपको छत कठोर लगती हैं?

उत्तर - नहीं, जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए छत कठोर नहीं लगती, उस समय वे उसे पकड़ने की धुन में मगन होते है। बच्चों को पतंग उड़ाते हुए बस पतंग ही सब कुछ लगती है। उनकी हंसी

- खुशी और उदासी का संबंध पतंग उड़ने के साथ हो जाता है। उन्हें अन्य बातें बिल्कुल भी प्रभावित नहीं करती।इसलिए कठोर छतों पर कूदते हुए उन्हें कठोरता का जरा-भी आभास नहीं होता।वे तो पतंग के साथ उड़ते हुए प्रतीत होते हैं।

प्रश्न 9. खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद आप दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को कैसा महसूस करते हैं?

उत्तर - खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद हम दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को साहसी, उत्साही,निर्भीक और सक्षम महसूस करते हैं।निडरता उत्पन्न होने से हमारा आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

कविता के आस-पास

प्रश्न 1. आसमान में रंग बिरंगी पतंगों को देखकर आपके मन में कैसे ख्याल आते हैं? लिखिए

उत्तर - आसमान में रंग बिरंगी पतंगों को देखकर हमारा मन भी ऊँची-ऊँची उड़ानें भरने को करता है। छोटी-सी पतली पतंग अगर आसमान की ऊँचाई को छू सकती है तो हम किसलिए बड़ी-बड़ी उपलब्धियों को पाने के लिए प्रयासरत नहीं होते। यह सोचकर हमारे मन में निरन्तर कर्मशील रहने एवम् रंगीन सपने लेने की इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं।

प्रश्न 2. 'रोमांचित शरीर का संगीत'का जीवन के लय से क्या संबंध है?

उत्तर - जब हम किसी कार्य को पूरा करने में मग्न हो जाते हैं तब हमारा शरीर जैसे उस कार्य की लय में डूब जाता है उसी प्रकार

संगीत सुनते हुए हम उसकी लय ताल में खो जाते हैं, इसीलिए कहा गया है 'रोमांचित शरीर का संगीत'।

प्रश्न 3. 'महज़ एक धागे के सहारे, पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ' उन्हें (बच्चों को) कैसे थाम लेती हैं ? चर्चा करें।

उत्तर - बच्चें जब छतों के किनारों से गिरने वाले होते हैं तो पतंग की डोर उन्हें गिरने से बचा लेती है। बच्चों को डोर से भी उतना प्यार होता है जितना की पतंग से। वे पतंग को उड़ते हुए देखते हैं। साथ ही यह भी देखते हैं कि चक्के में डोर कितनी है। इन पतंगों की ऊँचाइयों से बच्चे संभल जाते हैं।

(अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर) दीर्घत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कविता 'पतंग' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर - 'पतंग' एक लम्बी कविता है। यह कविता आलोक धन्वा के एकमात्र काव्य-संग्रह' दुनिया रोज बनती है' से ली गई है। पतंग के माध्यम से कवि ने बच्चों की पतंग उड़ाने की उत्साही प्रवृत्ति को बताया है। बाल-क्रीड़ाओं एवं प्रकृति में परिवर्तित सुंदर बिम्बों का उपयोग किया गया है। पतंग उड़ाना बच्चों का बहुरंगी सपना है। आसमान में उड़ती पतंगें बच्चों की इच्छाओं की उड़ान को गति देती हैं साथ ही निडर, सावधान व खतरों से खेलने के लिए उत्साही बनाती हैं। गिर कर उठने का हौसला तथा तुरंत तेज गति से फिर से अपने पतंगों के काटने, उड़ाने, ढील देने जैसे लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु तत्पर करती हैं। बच्चों का उत्साह प्रकृति को अपना साथ देने के लिए मजबूर कर देता है इसीलिए कवि ने कहा भी कि "पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है, उनके बेचैन पैरों के पास।"

प्रश्न 2. कविता 'पतंग' में बिम्बों के द्वारा काव्य-सौन्दर्य प्रकट किया गया है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इस कविता में सुंदर बिम्बों के माध्यम से बच्चों की बाल-सुलभ चेष्टाओं का प्रभावी चित्रण हुआ है। काव्य में बिम्ब वह मानसिक चित्र है जो कल्पना द्वारा अनुभूत किया जाता है। यह इन्द्रियों पर आधारित होता है जिनकी वजह से हम काव्य के मूर्त रूप की अनुभूति करते हैं। कविता में व्यक्त बिंब सौंदर्य है - शरद ऋतु की सुबह की तुलना खरगोश की लाल-भूरी आँखों से की गई है। शरद ऋतु को उत्साही बालक के समान बताया गया है। तितलियों की नाजुक दुनिया का बिम्ब पतंगों की रंग-बिरंगी कोमल दुनिया से बाँधा गया है। 'पतंग' कविता में बिंबों की रंगीन दुनिया चारों तरफ व्याप्त है, यह एक ऐसी दुनिया है जहाँ शरद ऋतु का चमकीला इशारा है, दिशाओं में मृदंग बजते हैं। पतंग डोर के सहारे तथा बच्चे अपने रंध्रों के सहारे उड़ रहे हैं। बच्चों के भागते कदम डाल के लचीले वेग के समान हैं। इस तरह दृश्य, चाक्षुष, स्थिर, गतिशील और श्रव्य बिम्ब प्रस्तुत हुए हैं।

प्रश्न 3. कवि आलोक धन्वा के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - सातवें-आठवें दशक के कवि आलोक धन्वा ने बहुत छोटी अवस्था में ही गिनी-चुनी कविताओं से अपार लोकप्रियता अर्जित कर ली थी। इनका जन्म सन् 1948 में मुंगेर (बिहार) में हुआ था। सन् 1972 से लेखन आरंभ करने के बाद उनका पहला और अभी तक का एकमात्र काव्य संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' सन् 1998 में प्रकाशित हुआ। ये देश के विभिन्न हिस्सों में सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय रहे हैं। इनकी आरम्भिक कविताएँ हिन्दी के अनेक गंभीर काव्य-प्रेमियों को जुबानी याद रही हैं। इतनी व्यापक ख्याति के बावजूद भी कवि आलोक धन्वा ने कभी थोक के भाव में लेखन नहीं किया। इन्हें राहुल सम्मान, साहित्य सम्मान, भोजपुरी सम्मान तथा पहल सम्मान से पुरस्कृत किया गया है।

लघुत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'पतंग' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर - 'पतंग' एक लंबी कविता है। इस कविता में कवि ने पतंग के बहाने बाल सुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का सुंदर चित्रण किया है। बाल क्रियाकलापों एवं प्रकृति में आए परिवर्तनों को अभिव्यक्त करने के लिए सुंदर बिंबों का उपयोग किया गया है। 'पतंग'बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है। आसमान में उड़ती पतंग ऊँचाइयों की वे हदें है जिन्हें बाल-मन छूना चाहता है और उसके पार जाना चाहता है।

प्रश्न 2. पतंग भादो के बाद ही क्यों उड़ाई जाती है?

उत्तर - पतंग बहुत महीन कागज की होती है। अतः यह नमी के वातावरण में नहीं उड़ाई जा सकती। इस कारण वर्षा की समाप्ति के बाद ही पतंग उड़ाते हैं।अतः अत्यधिक शीत व गर्मी में भी पतंग नहीं उड़ाते। शरद में न नमी होती है और न गर्मी। अतः यही समय पतंग उड़ाने के लिए अनुकूल है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यांश का भाव-सौन्दर्य व शिल्प-सौन्दर्य लिखिए :

खरगोश की आँखों जैसा सवेरा

शरद आया पुलों को पार करते हुए

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज

चलाते हुए

घंटी बजाते हुए जोर-जोर से

चमकीले इशारों से बुलाते हुए

पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को

उत्तर : भाव-सौन्दर्य - प्रस्तुत काव्यांश 'पतंग' कविता से उद्धृत है। कवि आलोक धन्वा ने विभिन्न उपमानों द्वारा भाद्र पद मास के बाद के मौसम का वर्णन किया है। तत्पश्चात् बच्चे भी खेलने की ओर अग्रसर होने लगते हैं। वे विभिन्न संकेतों से अपने साथियों को बुलाने का प्रयत्न करते हैं और पतंग उड़ाने के लिए चल पड़ते हैं।

शिल्प-सौन्दर्य -

(क) 'खरगोश की आँखों जैसा सवेरा' में उपमा अलंकार है

jharkhandlab.com

(ख) 'जोर-जोर' से पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

(ग) खड़ी बोली का सुन्दर एवं सटीक प्रयोग हुआ है।

(घ) बाल-सुलभ क्रीड़ाओं का सजीव चित्रण हुआ है।

प्रश्न 4. 'पतंग' कविता में शरद् ऋतु की क्या विशेषता बतायी गई है?

उत्तर - 'पतंग' शीर्षक कविता में शरद् ऋतु की यह विशेषता बतायी गयी है कि इस ऋतु में आकाश स्वच्छ रहता है, धरती भी धुली हुई-सी रहती है। हवा मन्द-मन्द चलती है और धूप में ताजी चमक रहती है। यह ऋतु सुहावनी एवं आनन्ददायी लगती है।

प्रश्न 5. ऐसा कब प्रतीत होता है कि पृथ्वी बालकों के पैरों के समीप स्वयं ही घूमती चली आती है? 'पतंग' कविता के आधार पर समझाइए।

उत्तर - जब बच्चें अत्यधिक तेज गति से बेसुध होकर दौड़ते हुए पतंग उड़ाते हैं, तब प्रतीत होता है कि पृथ्वी स्वयं आगे बढ़कर बच्चों के पैरों के समीप पहुँचने का प्रयत्न कर रही है। उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चे दौड़ नहीं रहे हैं, अपितु पृथ्वी स्वयं ही उनके कोमल चरणों की ओर चली आ रही है।

प्रश्न 6. 'जब वे दौड़ते हैं बेसुध'-बच्चे बेसुधी में क्या करते हैं?

उत्तर - बच्चे पतंग उड़ाते समय छतों पर सब ओर दौड़ते रहते हैं। उन्हें तब भूख-प्यास, गर्मी-धूप आदि की जरा भी परवाह नहीं रहती है। उस समय वे बिना खतरों की परवाह किये छतों की दीवारों और मुंडेरों पर भी चढ़ जाते हैं तथा धरती की कठोरता की परवाह न करके दौड़ते-कूदते रहते हैं।

प्रश्न 7. 'तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया'- यह किसके लिए कहा गया है?

उत्तर - आकाश में रंग-बिरंगी पतंगें तितलियों की तरह उड़ती हैं। पतंग उड़ाते समय बच्चे सीटियों एवं किलकारियों का स्वर व्यक्त करते हैं । पतंगों की रंग-बिरंगी छटा तथा आकाश में उनके उड़ने के मनोरम दृश्य को लेकर कवि ने ऐसा कहा है।

प्रश्न 8. "किशोर और युवा वर्ग समाज का मार्गदर्शक होता है।"-'पतंग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - किशोर और युवा-वर्ग अपनी धुन में मनचाहा काम करता है। वे निडर होकर खतरों एवं बाधाओं का सामना कर साहस और हिम्मत के सहारे जीवन में उन्नति करना चाहते हैं। ऐसे निर्भीक, साहसी कार्य-कलापों से ही समाज को प्रगति का मार्गदर्शन मिलता है।

प्रश्न 9. बच्चे और भी निडर कब हो जाते हैं?

उत्तर - पतंग उड़ाते समय बच्चे जब कभी छत की खतरनाक दीवारों एवं मुंडेरों से नीचे गिर जाते हैं और उस दुर्घटना में चोटिल होने से बच जाते हैं, तब वे पूरी तरह निडर हो जाते हैं और फिर दुगुने जोश से पतंगें उड़ाने लगते हैं।

प्रश्न 10. 'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं'-पतंगों के साथ कौन उड़ रहे हैं और कैसे?

उत्तर - बच्चों का मन पतंगों को उड़ाते समय ऐसा तल्लीन रहता है कि वे अपना सारा ध्यान आकाश की ओर ही रखते हैं और उसी ओर देखते हुए दौड़ते-भागते रहते हैं। तब ऐसा लगता है कि आकाश में पतंगों के साथ-साथ बच्चे भी उड़ रहें हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. बच्चे पतंगों के साथ-साथ किस के सहारे उड़ रहे हैं?

क. फूलों ख. तंतुओं

ग. धागे घ. कल्पना

2. 'पतंग' कविता में 'कपास' किसका प्रतीक है?

क. प्रकाश ख. कोमलता

ग . सफेदी घ. शांति

3. पतंग उड़ाने वाले बच्चे दिशाओं को किसके समय बजाते हैं?

क. ढोलक के समान ख. वीणा के समान

ग. बाँसुरी के समान घ. मृदंग के समान

4. पृथ्वी किनके बेचैन पैरों के पास घूमती हुई आती है?

क. तितलियों के ख. खरगोश के

ग. बच्चों के **घ. वीरों के**

5. कौन-सी ऋतु आकाश को मुलायम बना देती है?

क. गीष्म ख. वसंत

ग. शरद घ. वर्षा

6. पतंग उड़ाते हुए बच्चे किसके सहारे स्वयं भी उड़ते-से है?

क. साहस के ख. फेफड़ों के

ग. शक्ति के घ. रंध्रों के

7. पतंग कविता में लाल सवेरा को कैसा कहा गया है?

क. खरगोश की आँखों जैसा ख. उजाला

ग. कपास जैसा **घ. चमकीला**

8. दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज़ किसे कहा गया है?

A. पतंग को B. अणु को

C. किरण को D. कली को

9. दौड़ते भागते बच्चे दिशाओं को किसकी तरह बजाते हैं?

A. ढोलक B. सितार

C. मृदंग D. बाजा

10. 'पतंग' कविता के कवि हैं-

A. आलोक रस्तोगी B. आलोक मिश्रा

C. आलोक धन्वा D. आलोक श्रीवास्तव

11. कवि ने तेज़ बौछारों के जाने के साथ ही किस महीने के भी चले जाने की बात कही है?

A. सावन B. आषाढ़

C. अश्विन D. भादो

12. किस की आँखों जैसा लाल सवेरा हुआ?

A. बिल्ली B. खरगोश

C. बंदर D. गाय

13. पुलों को पार करते हुए कौन-सी ऋतु आई?

A. शरद B. वसंत

C. पावस (वर्षा) **D. ग्रीष्म**

14. कवि के अनुसार दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन उड़ने वाली चीज़ है-

A. तितली B. पतंगा

C. पतंग D. मोटर

15. शरद क्या चलाते हुए आता है?

क. घोड़ा ख. साइकिल

ग. आँधी घ. मोटर

16. शरद क्या बजा रहा है?

क. घंटी ख. थाली

ग. बाजा घ. ढोलक

Jharkhandiab.com

17. **शरद बच्चों के झुंड को कैसे इशारों से बुलाता है ?**
क. तिरछे ख. सीधे
ग. तीखे घ. चमकीले

18. **'कपास' किसका प्रतीक है ?**
क. प्रकाश का ख. अंधकार का
ग. कोमलता का घ. शांति का

19. **पतंग के साथ बच्चे कैसे दौड़ते हैं ?**
क. खड़े रहते हैं ख. संभलकर
ग. रुक-रुक कर घ. बेसुध होकर

20. **'मृदंग' क्या है?**
क. बांसुरी ख. लंबी ढोलक
ग. सितार घ. शहनाई

21. **उन बच्चों का वेग किस की तरह लचीला है?**
क. रबड़ ख. फूल
ग. डाल घ. घास

22. **'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं' से आशय है-**
क. उड़ान भरना
ख. स्वप्न देखना
ग. आकाश छू लेने का अहसास होना
घ. पतंग उड़ने पर प्रसन्न होना

23. **शरद की साइकिल कैसी है ?**
क. लाल ख. नीली
ग. काली घ. चमकीली

24. **भादो किसका प्रतीक है ?**
क. प्रकाश ख. अंधकार
ग. तूफान घ. भूकंप

25. **शरद किसका प्रतीक है ?**
क. प्रकाश ख. अंधकार
ग. चमक घ. भूकंप

26. **आलोक धन्वा का जन्म कहां हुआ था ?**
क. झारखंड ख. मुंगेर
ग. दिल्ली घ. कलकत्ता

27. **बच्चे किन के साथ-साथ उड़ रहे हैं ?**
क. पक्षियों के ख. पतंगों के
ग. बादलों के घ. वायुयानों के

28. **छतों के खतरनाक किनारों से किस का भय है ?**
क. टकराने का ख. टूटने का
ग. गिरने का घ. संभलने का

29. **'पतंग' कविता में 'चमकीले' विशेषण किस के लिए है ?**
क. पतंगों के लिए ख. शरद के लिए
ग. कठोर दिशाओं के लिए घ. इशारों के लिए

उत्तर-	1- घ	2- ख	3- घ	4- ग	5- ग
	6- घ	7- क	8- क	9- ग	10- ग
	11- घ	12- ख	13- क	14- ग	15- ख
	16- क	17- घ	18- ग	19- घ	20- ख
	21- ग	22- ग	23- घ	24- ख	25- क
	26- ख	27- ख	28- ग	29- घ	

Jharkhandlab.com

अध्याय - 3

कविता के बहाने
बात सीधी थी पर

- कुंवर नारायण

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. इस कविता के बहाने बताएं कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या है ?

उत्तर - सब घर एक कर देने के माने से अर्थ यह है कि बच्चे किसी छल प्रपंच और भेदभाव के बिना खेल को खेलते हैं। खेलते वक्त उनका कोई गंभीर उद्देश्य नहीं होता वह केवल मनोरंजन के लिए खेल को खेलते है। उनके लिए सब बराबर हैं। उसी प्रकार कविता में कवि के द्वारा प्रयुक्त शब्दों का प्रयोग केवल मंगलमय उद्देश्य से किया जाता है ?

प्रश्न 2. 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है?

उत्तर - कविता में 'उड़ने' शब्द का अभिप्राय कल्पना की उड़ान से है । कवि कविता में कल्पनाओं के रंग भर कर कहीं भी घूम कर आ सकता है। चिड़ियों के उड़ने की एक सीमा और ऊर्जा होती है परंतु कविता में निहित कल्पनाओं की कोई सीमा नहीं होती है।

फूलों का खिलना एवं सुगंध फैलाना एक सीमित प्रक्रिया है किंतु कविता से उठने वाली कल्पना रूपी गंध आजीवन समाप्त नहीं होती।

प्रश्न 3. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर - कवि कविता को बच्चे के उस खेल की भांति मानते हैं जिसमें कोई छल- कपट, प्रपंच और गंभीर उद्देश्य नहीं होता। ठीक उसी प्रकार कवि भी अपने शब्दों से खेलते हुए कल्पनाओं को सर्व मंगलकारी बना देते हैं। कविता बच्चों की भांति बिना भेदभाव किए, बिना डरे और सीमाओं की परिभाषा को भूलते हुए संपूर्ण विश्व को अपना घर मान लेता है।

प्रश्न 4. कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या है?

उत्तर - कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' यह है कि फूलों से निकलने वाली सुंदर सुगंध मानव मन को ताजगी, चमक और शांति का एहसास कराती है किंतु एक निश्चित अवधि के बाद अपने गुणों को छोड़कर मुरझा जाती हैं, किंतु कविता की कल्पनाओं से उठने वाली गंध ना तो अपनी ताजगी और ना ही अपनी चमक को छोड़ती है। यह अपनी सर्व मंगलकारी भावनाओं से मानव के लिए आजीवन उपयोगी बनी रहती है।

प्रश्न -5. 'भाषा को सहूलियत' से बरतने से क्या अभिप्राय है?

उत्तरः- इसका अभिप्राय है कि हमें भाषा का प्रयोग उचित प्रकार से करना चाहिए। भाषा शब्दों का ताना-बाना है। उनके अर्थ प्रसंगगत होते हैं। अतः हमें उसका प्रयोग सही प्रकार से करना चाहिए। कई बार हम गलत शब्द का प्रयोग कर भाषा को पेचिदा बना देते हैं। इसलिए कहा गया है कि भाषा को सहूलियत के साथ बरतना चाहिए। जितना आवश्यक हो उतना ही बोलना चाहिए। अत्यधिक बोलना भी भाषा को विचित्रता दे देता है। हम बोलने में भूल ही जाते हैं कि हम क्या बोल रहे हैं। अतः बोलते समय अधिक सावधानी रखें।

प्रश्न-6. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है' कैसे ?

उत्तर- यह सही है कि बात और भाषा आपस में जुड़े हुए हैं। जब हम किसी से बात करते हैं, तो भाषा ही वह माध्यम हैं, जिससे हम अपनी बात दूसरों को समझा सकते हैं। यदि भाषा नहीं है, तो हम बात नहीं कर सकते हैं। यदि हम किसी के साथ बात ही नहीं करेंगे, तो भाषा का प्रयोग नहीं होगा। अतः यह अटूट संबंध है। किन्तु जब हम अपनी भाषा को सहजता से इस्तेमाल नहीं करते तो सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है जो कतई उचित नहीं है।

प्रश्न- 7. बात (कथ्य) के लिए नीचे दी गई विशेषताओं का उचित बिंबों/ मुहावरों से मिलान करें।

	बिंब/मुहावरा	**विशेषता**
(क)	**बात की चूड़ी मर जाना**	**कथ्य और भाषा सही सामंजस्य बनना**
(ख)	**बात की पेंच खोलना**	**बात का पकड़ में न आना**
(ग)	**बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना**	**बात का प्रभावहीन हो जाना**
(घ)	**पेंच को कील की तरह ठोंक देना**	**बात में कसावट का न होना**
(ङ)	**बात का बन जाना**	**बात को सहज और स्पष्ट करना**

उत्तर-

	बिंब/मुहावरा	विशेषता
(क)	बात की चूड़ी मर जाना	बात का प्रभावहीन हो जाना
(ख)	बात की पेंच खोलना	बात को सहज और स्पष्ट करना
(ग)	बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना	बात का पकड़ में न आना
(घ)	पेंच को कील की तरह ठोंक देना	बात में कसावट का न होना
(ङ)	बात का बन जाना	कथ्य और भाषा सही सामंजस्य बनना

प्रश्न- 8. बात से जुड़े कई मुहावरे प्रचलित हैं। कुछ मुहावरों का प्रयोग करते हुए लिखें।

उत्तर -

(क) बात बनना- (काम बन जाना) कल लड़के वाले आए थे। लगता है नेहा की बात बन गई है।

(ख) बात का बतंगड़ बनाना- (छोटी बात को बड़ी बना देना) गगन ने तो बात का बतंगड़ बना दिया है।

(ग) बात का धनी होना- (जुबान का पक्का) रोहन बात का धनी है। जो बोल दिया वह करके रहता है।

(घ) बातें बनाना- (यहाँ की वहाँ लगाना) लोगों को तो हमेशा बातें बनाने के लिए मिलना चाहिए।

(ड़) लातों के भूत बातों से नहीं मानते- (उसे समझाने से कोई फायदा नहीं) । वह लातों का भूत है बातों से नहीं मानेगा।

(च) बात बिगड़ना- काम खराब होना- तुमने बनाई बात बिगाड़ दी।

Jharkhandlab.com

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

प्रश्न- 1. कविता के बहाने

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सप्रसंग व्याख्या कीजिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कविता एक उड़ान हैं चिड़िया के बहाने

कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने?

बाहर भीतर

इस घर, उस घर

कविता के पंख लगा उड़ने के माने

चिडिया क्या जाने?

प्रसंग -

प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग- 2 में संकलित 'कविता के बहाने' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता कुंवर नारायण जी हैं। यह कविता उनके काव्य संग्रह' इन दिनों 'से ली गई है। इस कविता में कविता की असीम संभावनाओं को व्यक्त करने के लिए उन्होंने एक चिड़िया की उड़ान का आश्रय लिया है।

व्याख्या-

कवि कहते हैं कि चिड़ियों की उड़ान की एक सीमा होती है किंतु कविता की उड़ान असीमित होती है । कविता कल्पना के रूप में उड़ान भरते हुए और सारे बंधनों को तोड़ते हुए जनमानस तक पहुंचती है। कवि के अनुसार कविता की उड़ान चिड़ियों की उड़ान से अलग है।एक चिड़िया अपने निश्चित लक्ष्य की ओर उड़ान भरना जानती हैं किंतु कविता का लक्ष्य व्यापक होता है। चिड़िया में लगे पंख चिड़िया को एक निश्चित सीमा तक ही उड़ने में मदद करती है किंतु कविता में लगे कल्पना के पंख अत्यधिक ऊर्जावान होते हैं।बिना भेदभाव किए, बिना डरे और सीमाओं की परिभाषा को भूलते हुए यह अपने कल्पनाओं के द्वारा मानव मन को संवारने का काम करती है । कविता ना केवल मन के भीतर होने वाली गतिविधियों पर लिखी जाती है अपितु कविता में निहित कल्पना एक व्यक्ति समाज, राष्ट्र और विश्व को एक सूत्र में बांधने का काम करती है ।

विशेष-

प्रस्तुत काव्यांश प्रेरणादायक है। यहां कविता की अपार संभावनाओं को बताया गया है।

सरल एवं सहज खड़ी बोली में सशक्त अभिव्यक्ति है।

"चिड़िया क्या जाने?" में प्रश्न अलंकार है।

कविता का मानवीकरण किया गया है।

लाक्षणिकता है।

प्रश्न- 2.

(क) 'कविता एक उड़ान हैं चिड़िया के बहाने'-पंक्ति का भाव बताइए।

(ख) कविता कहाँ-कहाँ उड़ सकती हैं?

(ग) कविता की उड़ान व चिड़िया की उड़ान में क्या अंतर हैं?

(घ) कविता के पंख लगाकर कौन उड़ता है?

उत्तर –

(क) इस पंक्ति का अर्थ यह है कि कवि रचना करते समय पंक्षियों की तरह कल्पना की ऊँची-ऊँची उड़ान भरने लगते हैं।

(ख) कविता पंख लगाकर मानव के आंतरिक व बाह्य रूप में उड़ान भरती है। वह एक घर से दूसरे घर तक उड़ सकती है।

(ग) चिड़िया की उड़ान एक सीमा तक होती है, परंतु कविता की उड़ान व्यापक होती है। चिड़िया कविता की उड़ान को नहीं समझ सकती।

(घ) कविता के पंख लगाकर कवि उड़ता है। वह इसके सहारे मानव-मन व समाज की भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है।

प्रश्न- 3. बात सीधी थी पर.....

बात सीधी थी पर एक बार

भाषा के चक्कर में

जरा टेढ़ी फंस गई।

उसे पाने की कोशिश में

भाषा को उलटा पलटा

तोड़ा मरोड़ा

घुमाया फिराया

कि बात या तो बने

या फिर भाषा से बाहर आए-

लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ

बात और भी पेचीदा होती चली गई।

प्रसंग-

प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित कविता 'बात सीधी थी पर' से ली गई है। इसके रचयिता कुंवर नारायण हैं। इस कविता में भाषा की सहजता की बात कही गई है और बताया गया है कि अक्सर चमत्कार के चक्कर में भाषा दुरूह हो जाती है।

व्याख्या-

कवि कहते हैं कि वह अपने मन के भावों को सहज रूप से अभिव्यक्त करना चाहते थे, परंतु समाज की प्रकृति को देखते हुए उसे प्रभावी भाषा के रूप में प्रस्तुत करना चाहा। पर भाषा के चक्कर में भावों की सहजता नष्ट हो गई। मैंने मूल बात को कहने के लिए शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों आदि को बदला। फिर उसके रूप को बदला तथा शब्दों को उलट-पुलट कर प्रयोग किया। किन्तु इस प्रयोग से बात और उसकी भाषा के साथ-साथ कथ्य भी और जटिल होती चली गई ।

विशेष-

कवि ने भाषा की जटिलता पर कटाक्ष किया है। कविता की भाषा सरल, सहज एवं साहित्यिक खड़ी बोली है।

काव्यांश रचना मुक्त छंद में है।

'टेढ़ी फंसना', 'पेचीदा होना' मुहावरों का सुंदर प्रयोग है।

'साथ-साथ' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

प्रश्न- 4.

(क) "भाषा के चक्कर" का तात्पर्य बताइए।

(ख) कवि अपनी बात के बारे में क्या बताता है?

(ग) कवि ने बात को पाने के चक्कर में क्या-क्या किया?

(घ) कवि की असफलता का क्या कारण था?

उत्तर –

Jharkhandlab.com

(क) 'भाषा के चक्कर' से तात्पर्य है-भाषा को जबरन अलंकृत करना।

(ख) कवि कहता है कि उसकी बात साधारण थी, परंतु वह भाषा के चक्कर में उलझकर जटिल हो गई।

(ग) कवि ने बात को प्राप्त करने के लिए भाषा को घुमाया-फिराया, उलटा-पलटा, तोड़ा-मरोड़ा। फलस्वरूप वह बात पेचीदा हो गई।

(घ) कवि ने अपनी बात को कहने के लिए भाषा को जटिल व अलंकारिक बनाने की कोशिश की। इस कारण बात अपनी सहजता खो बैठी और वह पेचीदा हो गई।

(अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तरी) लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न- 1. 'कविता के बहाने कविता' में किस के अस्तित्व पर विचार किया गया है और क्यों?

उत्तर- 'कविता के बहाने कविता' में कविता के अस्तित्व पर विचार किया गया है। आज के भागदौड़ के जीवन में लोग अपनों से दूर भाग रहे हैं ऐसे में कविता का अस्तित्व होना आवश्यक है।

प्रश्न- 2. कवि किस प्रकार से सीमा, देशकाल, अपने-पराए का बंधन तोड़ता है?

उत्तर- एक कवि का मन स्वच्छ और निर्मल होता है। वह कविता का सृजन केवल एक व्यक्ति या एक देश के लिए नहीं करता बल्कि सारे विश्व को ध्यान में रखकर और अतीत से लेकर वर्तमान सभी काल के ऊपर लिखता है। उसके लिए सब बराबर है।

प्रश्न- 3. कविता कवि के लिए क्या है?

उत्तर - कवि के लिए कविता एक चिड़ियों की भांति उड़ान , बच्चों की तरह भेदभाव रहित खेल एवं ना मुरझाने वाले फूलों की महक है।

प्रश्न- 4. कविता में उड़ान ,खेल एवं महकना शब्द का क्या अभिप्राय है?

उत्तर - कवि के लिए 'उड़ान' शब्द का महत्व उनके मन की कल्पना से है, 'खेल' का महत्व शब्दों के प्रयोग से है एवं 'महकना' शब्द का प्रयोग वे अपनी रचनाओं की उपयोगिता से करते हैं।

5. फूल और कविता दोनों महकते हैं किंतु दोनों के महकने में अंतर है कैसे?

उत्तर- फूल निश्चित समय के बाद मुरझा जाते हैं और इसकी खुशबू भी समाप्त हो जाती है किंतु कविता कालजयी रचना बनकर सदियों तक अपने अस्तित्व को बनाए रखती है।

6. एक कवि के लिए कविता लिखने का उद्देश्य क्या हो सकता है?

उत्तर - एक कवि का कविता लिखने के कई उद्देश्य हो सकते हैं जैसे तनाव को कम करना, मनोरंजन प्रदान करना ,एकता स्थापित करना आदि।

7. कविता की उड़ान एक चिड़िया क्यों नहीं समझ सकती है?

उत्तर- चिड़िया अपनी सुरक्षा और उद्देश्य (खाने की तलाश) पूर्ति के लिए एक सीमित उड़ान भरती है। उसका कोई और उद्देश्य नहीं होता किंतु कविता में लगे कल्पना के पंख हमें दूर (अनन्त) तक ले जाती है।

8. कविता का खिलना फूल क्यों नहीं समझ सकता?

उत्तर - कविता का खिलना फूल नहीं समझ सकता क्योंकि एक समय के पश्चात फूल मुरझा जाते हैं और उससे उत्पन्न होने वाली खुशबू भी समाप्त हो जाती है, किंतु कविता के द्वारा फैलाई गई विचार कभी समाप्त नहीं होती।

9. कविता एक खेल है का अर्थ बताएं?

उत्तर - जिस प्रकार बच्चे भांति -भांति के खेल अपने मनोरंजन के लिए खेलते हैं उसी प्रकार से एक कवि अपने विचारों, कल्पनाओं, शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग कविता के द्वारा लोगों के मनोरंजन एवं उद्देश्य पूर्ति करने के लिए करता है।

प्रश्न 10. आधुनिक युग में कविता की संभावनाओं पर चर्चा कीजिए?

उत्तर - आधुनिक युग में कविताओं में संभावनाएँ-

(क) अभिव्यक्ति को सहज और सुंदर रूप से व्यक्त करना।

(ख) कविताओं को यथार्थ से और भी समीप से जोड़ना।

(ग) कविता की भाषा-शैली और शिल्प- शैली में बदलाव करना।

(घ) कविता में अलंकारों और छंदों के स्वरूप में नए बदलाव।

प्रश्न11. चूड़ी, कील, पेंच आदि मूर्त उपमानों के माध्यम से कवि ने कथ्य की अमूर्तता को साकार किया है। भाषा को समृद्ध एवं संप्रेषणीय बनाने में, बिंबों और उपमानों के महत्त्व पर परिसंवाद आयोजित करें।

उत्तर - भाषा को समृद्ध एवं संप्रेषणीय बनाने में बिंबों और उपमानों के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता है। ये ही कविता के स्वरूप को साकार करते हैं। इनके द्वारा ही कवि की बात प्रभावी बनती है और वह क्या कहना चाहता है, यह स्पष्ट होता है। 'बिंब' का अर्थ होता है, शब्दों के माध्यम से कविता में ऐन्द्रिय चित्र दर्शाना। कविता में इसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके द्वारा कवि अपनी कल्पनाशक्ति का प्रयोग कर अपने सूक्ष्म विचारों को एक चित्र के रूप में दर्शाता है। यह चित्र कविता पढ़ते समय हमारी आँखों के आगे साकार हो जाता है। उपमान का प्रयोग करके कवि भाषा को सरल, सहज बना देता है। इससे भाषा में शब्दांडबर खत्म हो जाता है और कविता अपने उद्देश्य की पूर्ति कर लेती है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि और बच्चे में क्या समानताएं हैं?

उत्तर- कवि और बच्चे दोनों निर्मल ,स्वच्छ भाव से सभी को अपनाते हैं उनके लिए कोई भी अपना पराया नहीं है।

प्रश्न 2. कविता लिखते समय कौन-कौन से बंधन टूट जाते हैं?

उत्तर - कविता लिखते समय सीमाओं, देश , काल और अपने पराए का बंधन टूट जाता है।

प्रश्न 3. 'कविता के बहाने' बिम्ब प्रधान कविता है। कविता में कौन कौन से बिम्ब(शब्द चित्र) का प्रयोग किया गया है?

उत्तर - चिड़िया ,फूल एवं बच्चों का प्रयोग बिम्ब के रूप में किया गया है।

4. कविता में बाहर -भीतर किसका प्रतीक है?

उत्तर - कविता में बाहर भीतर का अर्थ मन के आंतरिक भागों में चलने वाले गतिविधियों से है।

5. इस घर उस घर मैं निहित भाव का अर्थ बताएं?

उत्तर - इस घर उस घर का अर्थ है भेदभाव रहित होना।

6. कविता किस माध्यम से उड़ान भरता है?

उत्तर - कविता अपने कल्पना रूपी पंख से उड़ान भरती है।

7. कवि के अनुसार कविता क्या है?

उत्तर - कविता एक चिड़िया, फूल और बच्चे के खेल की भांति है।

8. कविता में बाहर -भीतर किसका प्रतीक है?

उत्तर - कविता में बाहर भीतर का अर्थ मन के आंतरिक भागों में चलने वाले गतिविधियों से है।

9. बच्चों के खेलते समय कौन सा बंधन टूट जाता है?

उत्तर बच्चों को खेलते समय अपना- पराया, धर्म -जाति, सीमा आदि का बंधन टूट जाता है।

jharkhandlab.com

10. कविताएं भी बंधन तोड़ा करती हैं?

उत्तर- कविताएं बंधन तोड़ा करती हैं क्योंकि कविताएं देश, सीमा अपना पराया, धर्म, जाति आदि जैसे बंधनों को नहीं मानता।

प्रश्न11. "कविता के बहाने "कविता के कवि कौन हैं और किस काव्य संग्रह से लिया गया है?

उत्तर - कविता के बहाने कविता के कवि हैं कुंवर नारायण जी तथा 'इन दिनों' काव्य संग्रह से यह कविता ली गई है।

प्रश्न 12. कवि ने किसके उड़ान को सीमित बताया है और क्यों?

उत्तर - कवि ने चिड़िया की उड़ान को सीमित बताया है क्योंकि चिड़िया के उड़ने की एक शक्ति एवं ऊर्जा होती है।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. 'बात की पेंच खोलना' से कवि का क्या तात्पर्य है?

क. बात का उलझना ख. बात का प्रभावहीन होना
ग. बात का स्पष्ट होना घ. बात का तर्कपूर्ण होना

2. कवि से शरारती बच्चे के समान कौन खेल रही थी?

क. बात ख. भाषा
ग. कविता घ. पतंग

3. भाषा के साथ-साथ बात कैसी होती गई थी?

क. सरल ख. दुष्कर
ग. पेचीदा घ. बोधगम्य

4. 'कविता के बहाने' कविता के रचनाकार हैं-

क. कुँवर सिंह ख. कुँवर प्रसाद
ग. कुँवर प्रकाश घ. कुँवर नारायण

5. कविता किस के बहाने एक उड़ान है?

क. अतीत ख. बालक
ग. चिड़िया घ. प्रेमिका

6. कविता फूलों के बहाने क्या है?

क. गिनना ख. खिलना
ग. मुरझाना घ. बहकना

7. कविता किस के बहाने खेल रही थी?

क. बच्चे के ख. खिलौने के
ग. पेंच के घ. भाषा के

8. 'सब घर एक कर देने' का आशय है-

क. भेदभाव नहीं रखना ख. तोड़-फोड़ करना
ग. सीमा में रहना घ. शोर मचाना

9. सीधी सी बात किस के चक्कर में फंस गई?

क. भाव के ख. छंद के
ग. अलंकार के घ. भाषा के

10. कवि किसे पाने की कोशिश करता है?

क. बात को ख. पेंच को
ग. कील को घ. कलम को

11. बात बाहर निकलने की अपेक्षा कैसी हो गई?

क. व्यर्थ ख. अनर्गल
ग. पेचीदा घ. सहज

12. कवि क्या करतब कर रहा था?

क. मेज़ पर पेंच ठोक रहा था
ख. बात सुलझाने की कोशिश कर रहा था
ग. नाटक कर रहा था
घ. लोगों को बात समझा रहा था

13. 'बात की चूड़ी मर जाना' से कवि का तात्पर्य है-

क. स्पष्ट होना ख. तर्कपूर्ण होना
ग. प्रभावपूर्ण होना घ. प्रभावहीन होना

14. 'बात की पेंच खोलना' प्रतीक से स्पष्ट होता है-

क. स्पष्ट होना ख. समझ न आना
ग. उलझ जाना घ. बहस करना

15. बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना है बात-

क. समझ जाना ख. तर्कपूर्ण होना
ग. समझ नहीं आना घ. प्रभावी होना

16. कविता किस का खेल है?

क. बच्चों का ख. चिड़िया का
ग. शब्दों का घ. फूलों का

17. 'बात सीधी थी पर' में किस की सहजता की बात कही गई है?

क. व्यक्ति ख. समाज
ग. देश घ. भाषा

18. कविता की उड़ान को कौन नहीं जान सकता?

क. रसिक व्यक्त ख. चिड़िया
ग. कवि घ. समीक्षक

19. 'कविता के पंख लगा उड़ने' से तात्पर्य है-

क. व्यर्थ लिखना ख. शब्द-अर्थ में विसंगति
ग. कल्पना करना घ. स्पष्ट करना

20. बात बाहर निकलने की अपेक्षा कैसी हो गई थी?

क. पेचीदा ख. सरल
ग. वक्र घ. व्यय

21. आडंबरपूर्ण शब्दों के प्रयोग से भाषा कैसी हो जाती है?

क. अस्पष्ट ख. स्पष्ट
ग. सहज घ. सुंदर

22. 'बात सीधी थी पर' में कवि ने किस पर बल दिया है?

क. भाषा की जटिलत ख. भावों की सरसता
ग. भाषा की सहजता घ. भावों की गरिमा

उत्तर -	1-ग	2-क	3-ग	4- घ	5-ग
	6- ख	7-क	8-क	9-घ	10- क
	11-ग	12-ख	13-घ	14-क	15-ग
	16-ग	17-घ	18-ख	19-ग	20-क
	21-क	22-ग			

jharkhandlab.com

अध्याय - 4

कैमरे में बंद अपाहिज

– रघुवीर सहाय

jharkhandlab.com

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1 कविता में कुछ पंक्तियां कोष्ठकों में रखी गई है- आपकी समझ से इनका क्या औचित्य है ?

उत्तर- कविता में कुछ पंक्तियां कोष्ठकों में रखी गयी हैं। इसका मुख्य उद्देश्य मीडिया की संवेदनहीनता को दिखाना है। कवि ने दूरदर्शन कार्यक्रम संचालक और दर्शकों का आपसी संबंध स्थापित करने के लिए ऐसा किया है। नाटक विधा में पात्रों की भाव भंगिमाएं कोष्ठकों में व्यक्त की जाती है । एक अपाहिज व्यक्ति के प्रति संवेदनहीनता का भाव व्यक्त करने वाली सभी पंक्तियां कोष्ठकों में रखी गई है।

प्रश्न- 2. कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है -विचार कीजिए ।

उत्तर- कैमरे में बंद अपाहिज कविता बाजारवाद के युग में उन लोगों का चरित्र खोलता है, जो दूसरे के दुखों को बेचकर धन कमाना चाहता है । कार्यक्रम संचालक अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए एक अपाहिज व्यक्ति से प्रश्न पूछता है । वह प्रश्न पूछते पूछते क्रूर बन जाता है । उसका उद्देश्य सिर्फ कार्यक्रम को सफल बनाना है न कि अपाहिज व्यक्ति से हमदर्दी । अतः यह कविता करुणा के मुखोटे में छिपी क्रूरता की कविता है ।

प्रश्न- 3. हम समर्थ शक्तिमान और हम एक दुर्बल को लाएंगे पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर- इस पंक्ति के माध्यम से मीडिया वाले को समर्थ शक्तिवान तथा अपाहिज को दुर्बल संबोधित किया गया है । मीडिया वाले इस कविता में समर्थ शक्तिमान हैं, समाज का पूंजीपति वर्ग है जो दूसरे के दुख को बेचकर पैसा कमाते हैं। अपाहिज से तरह-तरह के प्रश्न पूछते हैं । एक समर्थ व्यक्तित्व मीडिया वाले के प्रश्न से अपाहिज और दर्शक असहज महसूस करता है। अपाहिज तो बिल्कुल असहज हो जाता है। इस तरह कवि कार्यक्रम संचालक की स्वार्थी मनोवृति पर व्यंग्य किया है।

प्रश्न- 4. शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक, दोनों एक साथ रोने लगेंगे, तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा ?

उत्तर- यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे तो उससे प्रश्नकर्ता का व्यावसायिक उद्देश्य पूरा हो जाएगा। दूरदर्शन वाले सामाजिक उद्देश्य युक्त कार्यक्रम इसलिए दिखाते हैं कि दर्शकों की संवेदना अपाहिज पीड़ित व्यक्ति से जुड़ सकें । दूरदर्शन वाले इसलिए भी दिखाते हैं कि उनका कार्यक्रम सफल हो सके और पैसा कमा सके।

प्रश्न- 5. परदे पर वक्त की कीमत है कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है ?

उत्तर- परदे पर वक्त की कीमत है कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति व्यावसायिक नजरिया रखा है । जैसे ही पीड़ित व्यक्ति तथा दर्शक वर्ग भावुक होते हैं, वैसे ही कार्यक्रम संचालक का उद्देश्य पूरा हो जाता है। उसका कार्यक्रम सफल हो जाता है ।

(अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर) दीर्घत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है'-विचार कीजिए।

उत्तर- यह कथन बिल्कुल सच है कि यह कविता करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है। ऊपर से तो करुणा दिखाई देती है कि संचालक महोदय अपंग व्यक्ति के प्रति सहानुभूति दर्शा रहा है, पर उसका वास्तविक उद्देश्य कुछ और ही होता है। वह तो उसकी अपंगता बेचना चाहता है। उसे एक रोचक कार्यक्रम चाहिए जिसे दिखाकर वह दर्शकों की वाह-वाही लूट सके। उसे अपंग व्यक्ति से कुछ लेना-देना नहीं है। यह कविता यह बताती है कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले इस प्रकार के अधिकांश कार्यक्रम कारोबारी दबाव के तहत संवेदनशील होने का ढोंग भर करते हैं। कई बार उनके प्रश्न क्रूरता की सीमा तक पहुँच जाते हैं। अतः यह कहना उचित ही है कि 'कैमरे में बंद अपाहिज' के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न- 1. कैमरे में बंद अपाहिज कविता मीडिया वालों की संवेदनहीनता का चित्रण करती है। कैसे?

उत्तर- मीडिया वाले दूसरे की करुणा, दुख, पीड़ा को बेचते हैं ।बेचने के क्रम में ऐसे ऐसे सवाल उनसे पूछते हैं जो उनकी संवेदनहीनता का चित्रण करती है। मीडिया वाले अपने कार्यक्रम की टीआरपी बढ़ाने के लिए जानबूझकर कमजोर वर्ग को लाते हैं। ताकि उनका कार्यक्रम सफल हो ।

प्रश्न- 2. कैमरे में बंद अपाहिज कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की ?

उत्तर- यह कविता वास्तव में करुणा की कविता नहीं क्रूरता की कविता है। दूरदर्शन कमजोर एवं असत्य व्यक्ति को पर्दे पर लाकर उनका दुख बांटना चाहता है। लोगों का ध्यान उनकी पीड़ा की ओर खींचना चाहता है किंतु इसी क्रम में वह अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए ऐसे ऐसे प्रश्न पूछता है जो क्रूरता के प्रश्न है।

प्रश्न- 3. कैमरे में बंद अपाहिज शीर्षक की उपयुक्तता सिद्ध कीजिए।

उत्तर- यह शीर्षक कैमरे में बंद अपाहिज के मनोदशा का सार्थक प्रतिनिधित्व करता है। अपाहिज कितना बेबस है ।अपनी पीड़ा से ज्यादा प्रश्न कर्ता के प्रश्न से। दूरदर्शन वाले भी उसके पीड़ा दुख करूणा को बेचने के लिए कैमरे में उसे बंद करना चाहते हैं।

प्रश्न- 4. दूरदर्शन वाले कैमरे के सामने कमजोर को ही क्यों लाते हैं।?

उत्तर- दूरदर्शन वाले कैमरे के सामने कमजोर को ही लाते हैं क्योंकि दर्शक दूसरे की पीड़ा देखकर भावुक हो जाते हैं। कार्यक्रम सफल करने के लिए दर्शकों की संख्या में इजाफा चाहिए और यह इजाफा अपाहिज या अपंग व्यक्ति से होती है ।व्यावसायिक दबाव के कारण भी इस स्तर तक गिर जाते हैं।

प्रश्न- 5. सप्रसंग व्याख्या करें -

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे

हम समर्थ शक्तिवान

हम एक दुर्बल को लाएंगे

एक बंद कमरे में

प्रसंग-

आलोच्य पंक्तिया प्रयोगवाद और नई कविता के कवि रघुवीर सहाय द्वारा रचित कैमरे में बंद अपाहिज से उद्धृत है। जो हमारे पुस्तक 'आरोह' भाग - 2 में संकलित है।

संदर्भ - कवि कविता की शुरुआत में बताते हैं कि मीडिया वाले उद्घोषणा करते हैं कि वे समर्थ और शक्तिमान है और वे एक निर्बल अशक्त कमजोर व्यक्ति को लाएंगे।

व्याख्या-

उपरोक्त पंक्ति में दूरदर्शन वाला कहता है कि वह दूरदर्शन पर प्रश्नकर्ता है इसलिए वे समर्थ है, शक्तिवान है। शारीरिक रूप से जो दुर्बल है उसे बंद कमरे में लाएंगे। उसे तरह-तरह के प्रश्न पूछेंगे।

विशेष-

(1) मीडिया की दृष्टि में दुर्बल एक उत्पाद है जिसके दुख पीड़ा को बेचने की बू आ रही है।

(2) भाषा खड़ी बोली हिन्दी है।

(3) सहज, सरल, सुबोधगमय और अखबारी है।

(4) व्यंजना शब्द - शक्ति का प्रयोग किया गया है।

(5) मुक्तक छंद है।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न- 1. रघुवीर सहाय का जन्म कब हुआ?

(क) 1980 (ख) 1970

(ग) 1930 (घ) 1929

प्रश्न- 2. दूसरा सप्तक में किस कवि की कविता है ?

(क) प्रसाद (ख) निराला

(ग) पंत (घ) रघुवीर सहाय

प्रश्न- 3. रघुवीर सहाय की रचना है।

(क) सीढ़ियों पर धूप में (ख) आत्महत्या के विरुद्ध

(ग) हंसो हंसो जल्दी हंसो (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न- 4. सहाय की कविता कैमरे में बंद अपाहिज किस काव्य संग्रह में संकलित है ?

(क) लोग भूल गए हैं (ख) सीढ़ियों पर धूप में

(ग) आत्महत्या के विरुद्ध (घ) हंसो हंसो जल्दी हंसो

प्रश्न- 5. कैमरे मे बंद अपाहिज कविता में हम दूरदर्शन पर क्या बोलेंगे ?

(क) हम बलवान हैं

(ख) हम समर्थ और शक्तिवान हैं

(ग) हम कमजोर हैं

(घ) हम दुर्बल हैं

प्रश्न- 6. समर्थ शक्तिमान बंद कमरे में किसे लाएंगे?

(क) बलवान को (ख) दुर्बल

(ग) खिलाड़ी (घ) अभिनेता

प्रश्न- 7. अपाहिज से क्या पूछेंगे ?

(क) दुख (ख) पीड़ा

(ग) सुख (घ) इनमें से सभी

प्रश्न- 8. कार्यक्रम को रोचक बनाने के वास्ते क्या करेंगे ?

(क) हंसा देंगे (ख) घुमा देंग

(ग) रूला देंगे (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न-9. पर्दे पर कार्यक्रम संचालक क्या दिखलाएंगे ?

(क) फूली हुई आंख (ख) होठों की कसमसाहट

(ग) क और बख दोनों (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न-10. कार्यक्रम संचालक किन्हे रुलाना चाहता है ?

(क) अपाहिज को (ख) दर्शक

(ग) दोनों को (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न-11. पर्दा पर किस की कीमत है ?

(क) दर्शक की (ख) अपाहिज की

(ग) रोशनी की (घ) वक्त की

प्रश्न-12. कैमरे में बंद अपाहिज किस उद्देश्य युक्त कार्यक्रम है ?

(क) राजनीतिक उद्देश्य (ख) सामाजिक उद्देश्य

(ग) सांस्कृतिक उद्देश्य (घ) धार्मिक उद्देश्य

उत्तर-	1- घ	2- घ	3- घ	4- क	5- ख
	6- ख	7- क	8- ग	9- ग	10- ग
	11- घ	12- ख			

jharkhandlab.com

अध्याय - 5

सहर्ष स्वीकारा है

– गजानन माधव मुक्तिबोध

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न-1. टिप्पणी कीजिए:

गरबीली गरीबी, भीतर की सरिता, बहलाती सहलाती आत्मीयता, ममता के बादल।

उत्तर –

(क) गरबीली गरीबी –

इसका बहुत गहरा अर्थ है। प्रायः गरीब आदमी अपनी गरीबी से परेशान तथा हताश रहता है।निराशा उसके चारों तरफ कायम रहती है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते है जो गरीब होते हुए भी स्वाभिमानी होते हैं। कवि उन्हीं लोगों में से एक है। उन्हें अपनी गरीबी पर हीनता या ग्लानि नहीं बल्कि गर्व होती है।अतः उसने गरीबी को गरबीली गरीबी कहा है यानि अभावग्रस्त मगर सम्मान पूर्ण ज़िंदगी।

(ख) भीतर की सरिता –

व्यक्ति के मन के भीतर जन्म लेने वाली कोमल भावनाओं को कवि ने "भीतर की सरिता" का नाम दिया है।तात्पर्य प्रेम रूपी भावना से है। यह प्रेम हृदय के अंदर नदी के समान प्रवाहित होता है। जैसे नदी मनुष्य के जीवन का पालन-पोषण करती है, वैसे ही प्रेम की भावना मनुष्य का तथा उसके आपसी संबंधों का पालन-पोषण करती है।

(ग) बहलाती, सहलाती, आत्मीयता –

जब व्यक्ति किसी से बहुत अधिक प्रेम करता हैं तो वह उसे विपरीत परिस्थितियों में धैर्य दिलाने की कोशिश करता हैं। उससे प्रेमपूर्ण व्यवहार कर उसकी परेशानियों को दूर करने का प्रयास करता है। लेकिन इन पंक्तियों में कवि के इस व्यवहार के प्रति शिकायती भाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। कवि को हर समय प्रेमिका की बहलाने और सहलाने वाला व्यवहार पसंद नहीं आता होगा।

(घ) ममता के बादल –

ममता का अर्थ है-अपनत्व या स्नेह। जिसके साथ अपनत्व हो जाता है, उसके लिए सब कुछ न्योछावर किया जाता है। कवि की प्रियतमा उससे अत्यधिक स्नेह करती है। उसके स्नेह से कवि अंदर तक भीग जाता है।

प्रश्न- 2. इस कविता में और भी टिप्पणी-योग्य पद-प्रयोग हैं। ऐसे किसी एक प्रयोग का अपनी ओर से उल्लेख कर उस पर टिप्पणी करें।

उत्तर – 'मीठे पानी का सोता' टिप्पणी-योग्य पद-प्रयोग है। इसमें कवि ने अपने हृदय के अंदर स्नेह तथा प्रेम की भावनाओं को मीठे पानी का सोता कहा है। उसने स्नेह तथा प्रेम भावनाओं की तुलना झरने से की है।

प्रश्न- 3. व्याख्या कीजिए।

जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँड़ेलता हूँ, भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है!

उपर्युक्त पंक्तियों की व्याख्या करते हुए यह बताइए कि यहाँ चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा भूलकर अंधकार-अमावस्या में नहाने की बात क्यों की गई है?

उत्तर - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह-भाग -2' में संकलित कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता 'सहर्ष स्वीकारा है' से लिया गया है। कविता के इस अंश में कवि अपने भीतर बैठे स्नेह की गंभीरता का वर्णन कर रहे हैं।

उपरोक्त पंक्तियों में कवि अपने प्रिय से कहते हैं कि मेरे और तुम्हारे बीच में क्या संबंध है। मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूं। मैं जितना भी तुम्हारे प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करता हूँ उतना ही मेरा हृदय पुनः प्रेम से भर जाता है और अब तो ऐसा लगने लगा है जैसे मेरे दिल में प्रेम के मीठे पानी का कोई सोता (झरना) बह रहा हो। अर्थात कवि का हृदय प्रिय के प्रेम से हरदम भरा रहता हैं। जिस तरह आसमान में चमकते हुए चांद की चांदनी रात भर धरती पर छाई रहती है। ठीक उसी तरह उनके प्रिय के खिलते हुए चेहरे की मुस्कुराहट उन पर हरदम छाई रहती है, जो उनको खुशी व प्रेरणा देती रहती हैं।

यहां कवि द्वारा चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा भूलकर अंधकार अमावस्या में नहाने की बात इसलिये कही गई है क्योंकि कवि का व्यक्तित्व अपने प्रिय के प्रेम से पूरी तरह प्रभावित हैं। और उनके जीवन में जो कुछ भी है वह सब उनके प्रिय के कारण ही है। इसीलिए वो अपने प्रिय के प्रेम के प्रभाव से बाहर निकलने के लिए , यथार्थ के धरातल में अपना खुद का अस्तित्व खोजने के लिए उन्हें भूल जाना चाहते हैं।

4. तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अंधकार – अमावस्या
शरीर पर , चेहरे पर , अंतर में पा लूँ मैं
झेलूँ मैं , उसी में नहा लूँ मैं
इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है।
नहीं सहा जाता है।

(क) यहाँ अंधकार-अमावस्या के लिए क्या विशेषण इस्तेमाल किया गया है उससे विशेष्य में क्या अर्थ जुड़ता है?

(ख) कवि ने व्यक्तिगत संदर्भ में किस स्थिति को अमावस्या कहा है?

(ग) इस स्थिति से ठीक विपरीत ठहरने वाली कौन-सी स्थिति कविता में व्यक्त हुई है? इस वैपरीत्य को व्यक्त करने वाले शब्द का व्याख्यापूर्वक उल्लेख करें।

(घ) कवि अपने संबोध्य (जिसको कविता संबंधित है कविता का 'तुम') को पूरी तरह भूल जाना चाहता है, इस बात को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए क्या युक्ति अपनाई है? रेखांकित अंशों को ध्यान में रखकर उत्तर दें।

उत्तर –

(क) "दक्षिण ध्रुवी" विशेषण "अंधकार अमावस्या" के लिए प्रयोग किया है। दक्षिण ध्रुव पर 6 महीने के दिन और 6 महीने की रात होती है और उस 6 महीने की रात में भी अमावस की रात और अधिक काली व अंधेरी होती है। कवि भी मानते हैं कि अपने प्रिय को भूलने के बाद उनका जीवन भी उन काली अंधेरी रातों की तरह ही हो जायेगा। यानी उनके जीवन की सारी खुशियां खत्म हो जाएंगी।

(ख) कवि ने व्यक्तिगत संदर्भ में दुख के समय को अमावस्या कहा है। जिस प्रकार अंधकार पूरे संसार को ढक लेता है, वैसे ही अपने प्रिय व उनकी यादों को भूलने के बाद उनका जीवन अमावस्या की अंधेरी रातों की तरह हो जायेगा।

(ग) अमावस्या यानि काली अंधेरी रात और ठीक इसके विपरीत "रमणीय उजेला" यानि सुंदर उजला प्रकाश। जिस तरह अमावस्या दुःख और अवसाद का प्रतीक हैं ठीक उसी प्रकार "रमणीय उजेला" प्रसन्नता व खुशी प्रदान करने वाली भावनाएं हैं। ये दोनों स्थितियों सुख और दुख को व्यक्त करती है।

(घ) कवि ने अपनी बात को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए दक्षिण ध्रुव की अमावस्या के अंधकार का प्रयोग किया है कवि अपने प्रिय व उसकी यादों को भूलने के लिए उस घने अँधेरे में खो जाना चाहता है।

प्रश्न- 5. बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है- और कविता के शीर्षक 'सहर्ष स्वीकारा है' में आप कैसे अंतर्विरोध पाते हैं। चर्चा कीजिए।

उत्तर- इसके अंदर व्याप्त अंतर्विरोध हम इस प्रकार पाते हैं। एक तरफ कवि अपनी प्रेमिका के आत्मीय संबंध से सुखी दिखाई देता है। उसे लगता है कि प्रेमिका का आत्मीयपन उसके जीवन में समा चुका है। उसके चेहरे मात्र से ही अपने जीवन को प्रकाशित मानता हैं। लेकिन दूसरे ही पल वह प्रेमिका की आत्मीयता को सह नहीं पाता। उसे प्रेमिका का अधिक बहलाना और सहलाना अखरने लगता है। उसे यह व्यवहार कष्ट देता है। लेकिन इसके बिना वह जी भी नहीं पाता। इस प्रकार की स्थिति को ही अंतर्विरोध कहते हैं। जहाँ किसी चीज़ के बिना मनुष्य रह नहीं सकता और फिर उससे कष्ट भी पाता है।

(अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर) दीर्घत्तरीय प्रश्न

प्रश्न- 1. निम्नलिखित काव्यांशों का सौंदर्यबोध बताइए?

(क) गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब

यह विचार-वैभव सब

दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब

मौलिक है, मौलिक है इसलिए कि पल-पल में जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है

संवेदन तुम्हारा !!

उत्तर –

प्रसंग-

प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह-भाग -2' में संकलित, कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता 'सहर्ष स्वीकारा है' से लिया गया है।कविता के इस अंश में कवि ने अपने प्रिय को संबोधित करते हुए कहा है कि उसने जीवन के हर सुख- दुख को सहर्ष स्वीकार किया है।

व्याख्या-

यहां पर कवि अपनी गर्व से युक्त गरीबी से भरी जिंदगी के बारे में बात करते हुए कह रहे हैं कि उन्हें अपनी गरीबी या अभावग्रस्त जिंदगी पर भी गर्व है और इस जिंदगी को जीते हुए उन्होनें जो कुछ भी सीखा हैं या गंभीरता से अनुभव किया हैं। उनके विचारों में जो सुंदरता और व्यक्तित्व में दृढ़ता आयी हैं । उनके मन के भीतर जो प्रेम रूपी नदी बह रही है।यह सब कुछ नया है। यह सब कुछ मौलिक है यानि उनके पास अच्छा या बुरा, दुःख या सुख जो भी है। वो सब उनका अपना है, वास्तविक है ।

कवि आगे कहते हैं कि प्रत्येक क्षण में जो कुछ भी मेरे अंदर जाग्रत हैं , निरंतर हैं। वो सब कुछ तुम्हारे ही प्रेम के कारण हैं। अर्थात कवि ने अपने जीवन में जो कुछ भी पाया है। वह सब उनके प्रिय की प्रेरणा का ही फल है।

विशेष-

भाषा साहित्यक खड़ी बोली है। "गरबीली गरीबी, विचार-वैभव " , "मौलिक है , मौलिक है" में अनुप्रास अलंकार है। साथ में मुक्तक छंद का प्रयोग किया गया है। "विचार-वैभव और भीतर की सरिता" में रूपक अलंकार और "पल - पल" में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। कविता में श्रृंगार रस हैं।

(ख) सच मुच मुझे दंड दो कि हो जाऊँ
पाताली अँधेरे की गुहाओं में विवरों में
धुएँ के बादलों में
बिलकुल मैं लापता
लापता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा है!!
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
या मेरा जो होता-सा लगता है, होता सा-संभव है
सभी वह तुम्हारे ही कारण के कार्यों का घेरा है, कार्यों का वैभव है
अब तक तो जिंदगी में जो कुछ था, जो कुछ है
सहर्ष स्वीकारा है
इसलिए कि जो कुछ मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है ।

उत्तर-

प्रसंग –

प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह-भाग -2' में संकलित कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता 'सहर्ष स्वीकारा है' से लिया गया है । कविता कि इस अंश में कवि अपने प्रिय के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

व्याख्या-

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं तुम्हारी स्मृति रूपी पाताली गुफाओं में खो जाऊं। भले ही वह दंड पाकर मुझे कष्ट होगा फिर भी मैं तुम्हारे विस्मृति रूपी धुऐं के बादलों में खो जाना चाहता हूं। लेकिन इन बादलों में भी मुझे तुम्हारा ही सहारा मिल रहा है। अर्थात यहां भी मैं अनुभव कर रहा हूं कि मेरे जीवन में जो भी प्रकाश विद्यमानहै, सभी कुछ तुम्हारे कारण संभव हुआ है। अतः मैं हर स्थिति को तुम्हारी खुशी के लिए सहर्ष स्वीकार करता हूं।

विशेष –

भाषा साहित्यक खड़ी बोली है। मुक्तक छंद का प्रयोग किया गया हैं। "दंड दो" में अनुप्रास अलंकार हैं। "लापता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा है !!" में विरोधाभास अलंकार है। "कारण के कार्यों , सहर्ष स्वीकारा है" में अनुप्रास अलंकार है। "होता सा" में उपमा अलंकार है।

2. गजानन माधव मुक्तिबोध का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर: गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवंबर 1917 में ग्वालियर) मध्य प्रदेश में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा उज्जैन में हुई थी। मुक्तिबोध अत्यंत अध्ययन शील थे। उन्होंने अंग्रेजी,फ्रेंच तथा रूसी उपन्यासों के साथ जासूसी उपन्यासों,वैज्ञानिक उपन्यासों विभिन्न देशों के इतिहास तथा विज्ञान विषयक साहित्य का गहन अध्ययन किया। वह 'तार सप्तक' के पहले कवि थे। मुक्तिबोध अस्तित्व वादी विचारधारा के समर्थक थे। उनकी संवेदना एवं ज्ञान का दायरा बहुत व्यापक है। गहन विचार- शीलता और विशिष्ट भाषा-शैली के कारण उनके साहित्य की एक अलग पहचान है। उनका पूरा जीवन संघर्षों तथा विरोधों से भरा रहा है। उन्होंने मार्क्सवादी

Jharkhandiao.com

विचारधारा का अध्ययन किया जिसका असर उनकी कविताओं पर दिखाई देता है।

इन्होंने कविता के साथ-साथ चिंतन, कहानी ,निबंध, आलोचना, इतिहास आदि विधाओं में भी साहित्य सृजन किया।

इनका निधन 11 सितंबर 1964 हबीबगंज (भोपाल) में हो गया।

उनकी प्रमुख रचनाएं कुछ इस प्रकार है–

कविता संग्रह - चांद का मुंह टेढ़ा है , भूरी भूरी खाक धूल तथा तार सप्तक में रचनाएं प्रकाशित।

कहानी संग्रह -काठ का सपना ,विपात्र ,सतह से उठता आदमी ।

आलोचना- कामायनी एक पुनर्विचार ,नई कविता का आत्म संघर्ष, नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र।

आत्मकथा– एक साहित्यिक की डायरी ।

इतिहास – भारत : इतिहास और संस्कृति ।

सम्पूर्ण रचना – मुक्तिबोध रचनावली (छह खंडों में)

काव्य- सौंदर्य बोध संबंधी प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार-वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है।

प्रश्न- (क) 'गरीबी' के लिए 'गरबीली' विशेषण के प्रयोग से कवि का क्या आशय है ? स्पष्ट कीजिए ?

(ख) 'भीतर की सरिता' क्या है ? 'मौलिक है, मौलिक है 'के' दोहराव से कथन में क्या विशेषता आ गई है।

(ग) काव्यांश की भाषा पर संक्षिप्त टिपण्णी कीजिए ?

उत्तर-

(क) कवि ने 'गरीबी' के लिए 'गरबीली' विशेषण का प्रयोग किया है। 'गरबीली' से तात्पर्य 'स्वाभिमान' से है। वह गरीबी को महिमामंडित करना चाहता है। उसे अपनी गरीबी भी प्रिय है।

(ख) 'भीतर की सरिता' का अर्थ है-कवि के हृदय की असंख्य कोमल भावनाएँ। कवि के मन में प्रिया के प्रति अनेक भावनाएँ उमड़ती रहती हैं 'मौलिक है, मौलिक है' के दोहराव से कवि अनुभूतियों की गहनता व्यक्त करता है।

(ग) कवि ने गरबीली, गंभीर आदि विशेषणों का सुंदर प्रयोग किया है। 'भीतर की सरिता' लाक्षणिक प्रयोग है। 'विचार वैभव' में अनुप्रास अलंकार है। भावानुकूल तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली में सशक्त अभिव्यक्ति है।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न-1 'सहर्ष स्वीकारा है'- कविता में कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर- कवि ने इस कविता में अपने जीवन के समस्त खट्टे-मीठे अनुभवों, कोमल, तीखी अनुभूतियों और सुख-दुःख की स्थितियों को इसलिए स्वीकारा है. क्योंकि वह अपने किसी भी क्षण को अपने प्रिय से न केवल जुड़ा हुआ अनुभव करता है, अपितु हर स्थिति को उसी की देन मानता है।

प्रश्न-2. कवि अपनी प्रेमिका से अलग क्यों होना चाहता है?

उत्तर- कवि को अपने भविष्य की चिंता है। उसे आभास होता है कि आगे क्या होगा। उसे यह विश्वास नहीं है कि उसे उसकी प्रेमिका जीवनसाथी के रूप में मिल भी पाएगी या नहीं। अतः वह उसकी आत्मीयता, सांत्वना को सहन नहीं कर पाता।

प्रश्न 3. "सहर्ष स्वीकारा है" में कवि ने जिस चाँदनी को स्वयं सहर्ष स्वीकारा था, उससे मुक्ति पाने के लिए वह अंग-अंग में अमावस की चाह क्यों कर रहा है ? अथवा

"सहर्ष स्वीकारा है" कविता में कवि प्रकाश के स्थान पर अंधकार की कामना क्यों करता है ?

उत्तर- कवि मानते हैं कि उनके प्रिय के प्रेम की छाँव उनके ऊपर हर पल रहती हैं जो उन्हें चारों तरफ से घेरे रहती हैं। और वो अपने जीवन में प्राप्त सभी उपलब्धियों का प्रेरणा स्रोत भी अपने प्रिय को ही मानते हैं। उन्हें लगता हैं कि वो स्वयं कुछ भी कर पाने में सक्षम नहीं है और उनकी अंतरात्मा भी कमजोर और क्षमताहीन हो गई है।

इसी वजह से कवि का हृदय अपराधबोध की भावना से ग्रसित हो जाता है। और कवि अपने प्रिय की अत्यधिक आत्मयीता, संवेदनशीलता, भावात्मक लगाव के दायरे से बाहर निकल कर यथार्थ के धरातल में जीना चाहते हैं । अपना स्वयं का अस्तित्व ढूँढ़ना चाहते हैं। अपने प्रिय से अलग होने की पीड़ा को अपने अंग – अंग में महसूस करना चाहते हैं जो उनके लिए आमावस के गहरे अंधकार के समान ही है।

प्रश्न-4. मुक्तिबोध की कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि ने किसे सहर्ष स्वीकारा था और आगे चलकर वह उसी को क्यों भुला देना चाहता है ?

उत्तर- इस कविता में कवि ने अपने जीवन में घटित हर धटना को सहर्ष स्वीकारा किया था। क्योंकि उन सब से उनका प्रिय जुड़ा हुआ था। मगर आगे चल कर उनके प्रिय का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर हावी हो गया। अपने प्रिय से मिलने वाली अत्यधिक संवेदनशीलता, आत्मयीता, स्नेह व ममता ने उनको अक्षम व कमजोर बना दिया था।

इसीलिए बाद में कवि अपने प्रिय से दूर होना चाहते है और अपनी जिंदगी को स्वयं अपने बलबूते पर जीना चाहते हैं। अपने व्यक्तित्व में दृढ़ता लाना चाहते हैं।

प्रश्न-5. कवि के जीवन में ऐसा क्या-क्या है जिसे उसने "सहर्ष स्वीकारा है" ?

उत्तर- कवि ने अभावग्रस्त मगर गर्व से भरी गरीबी , जीवन में आयी सुखद व दुखद अनुभूतियों, खट्टे-मीठे अनुभव, मन में आये सुंदर विचार, व्यक्तित्व में आयी दृढ़ता, हृदय में उपजी कोमल भावनाओं को सहर्ष स्वीकार किया है। क्योंकि यह सब उनके प्रिय से जुड़ा हुआ है।

प्रश्न -6. "सहर्ष स्वीकारा है" कविता में कवि का संबोध्य कौन है ?

उत्तर- "सहर्ष स्वीकारा है" कविता में कवि का संबोध्य उनका अज्ञात प्रिय (पत्नी या प्रेयसी) है। क्योंकि कविता में कवि ने अपने उस रहस्यमय प्रिय को सीधे-सीधे संबोधित नहीं किया है। हाँ, कविता के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि कवि अपने प्रिय से गहरे रूप में जुड़े हुए हैं ।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -1. कवि ने अपने जीवन में क्या-क्या स्वीकार किया है?

उत्तर– कवि ने अपने जीवन में गर्वयुक्त गरीबी, गंभीर अनुभव, विचार-वैभव, दृढ़ता आदि को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया है।

प्रश्न -2. कवि को गरीबी कैसी लगती है और क्यों?

उत्तर- कवि को गरीबी गर्वीली लगती है क्योंकि उसे गरीबी भी उसके प्रेरणास्रोत प्रेमिका द्वारा प्राप्त हुई है।

jharkhandgab.com

3. कवि के भीतर कौन पीड़ा पहुँचाती है ?

उत्तरः कवि के भीतर ममता के बादल की मँडराती हुई कोमलता पीड़ा पहुँचाती है।

4. कवि की आत्मा कैसी हो गई ?

उत्तरः कवि की आत्मा कमज़ोर और अक्षम हो गई है।

5. अब कवि को क्या बरदाश्त नहीं होती?

उत्तरः अब कवि को बहलाती, सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती।

4. कवि किससे दंड की प्रार्थना करते हैं और क्यों ?

उत्तर : कवि प्रभु से दंड की प्रार्थना करते हैं क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में उन्हें भूलने की भूल की है।

5. कवि के व्यक्तिगत संदर्भ में किसे 'अमावस्या' कहा गया है ?

उत्तरः कवि के व्यक्तिगत संदर्भ में प्रतिकूल परिस्थितियों एवं पीड़ा को अमावस्या कहा गया है। कवि के जीवन में अपार दुख एवं समस्याओं ने उसे चारों तरफ से घेर लिया था।

6. 'रमणीय उजेला' क्या है और कवि उसके स्थान पर अंधकार क्यों चाह रहा है ?

उत्तरः 'रमणीय उजेला' से तात्पर्य प्रिय की कृपा का प्रतिफल है जो सुख, आनंद से परिपूर्ण है।

7. 'तुम से ही परिवेष्टित आच्छादित' - यहाँ 'तुम' कौन है? आप ऐसा क्यों मानते हैं?

उत्तरः यहाँ 'तुम' कवि का प्रिय है। कवि ने कविता अपने प्रिय को संबोधित करके कही है।

8. दक्षिणी ध्रुव एवं अंधकार से क्या तात्पर्य है

उत्तर. दक्षिणध्रुवी एवं अंधकार से तात्पर्य दुखों, पीड़ाओं एवं समस्याओं से है।

9. कवि कहाँ लापता होना चाहता है ?

उत्तर- कवि अंधेरी गुफाओं में लापता होना चाहता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरी

1. मुक्ति बोध का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

क. 13 नवंबर सन् 1917 ग्वालियर
ख. 13 नवंबर सन् 1916 भोपाल
ग. 13 नवंबर सन् 1911 उज्जैन
घ. 13 नवंबर सन् 1918 बनारस

2. मुक्ति बोध की मृत्यु कब और कहाँ हुई थी ?

क. 11 सितंबर सन् 1964 दिल्ली
ख . 11 सितंबर सन् 1965 लखनऊ
ग. 11 सितंबर सन् 1964 भोपाल
घ. 11 सितंबर सन् 1970 प्रयाग

3. "सहर्ष स्वीकारा है" का शाब्दिक अर्थ है -

क. दुःख के साथ है ख. खुशी के साथ है
ग. खुशी से अपनाया है घ. इनमें से कोई नहीं

4. मुक्ति बोध को किस युग का कवि माना जाता है-

क. आधुनिक प्रयोगवादी युग ख. छायावादी युग
ग. द्विवेद्वी युग घ. ये सभी

5. भूरि-भूरि खाक धूल, चाँद का मुँह टेढ़ा है, कविता संग्रह है-

क. मुक्ति बोध ख. निराला
ग. बच्चन घ. दिनकर

6. कवि ने किसको सहर्ष स्वीकार किया है-

क. लाभ-हानि ख. अच्छा-बुरा
ग. सुख-दुःख घ. कोई नहीं

7. कवि अपने प्रेरक व्यक्तित्व किसको मानता है ?

क. माँ ख. बहन
ग. प्रेमिका घ. ये सभी

8. कवि किसको भुला देना चाहता है--

क. अपने प्रेरक को ख. भाई को
ग. पिता को घ. माँ को

9. कवि चाहकर भी किसको नहीं भूल सकता है--

क. प्रणेता को ख. प्रेमिका को
ग. ईश्वर को घ. पत्नी को

10. बहलाती सहलाती आत्मीयता कैसी आत्मीयता है ?

क. संदेशपूर्ण ख. सांत्वना देने वाली
ग. दुःखद घ. विचार प्रदान करने वाला

11. 'ममता के बादल' कैसे बादल होते हैं ?

क. वर्षा के ख. आँधी के
ग. प्रेम के घ. गर्जना के

12. कवि ने अंधकार को कैसा कहा है ?

क. दक्षिणी ध्रुवी ख. उत्तरी ध्रुवी
ग. पूर्वी ध्रुवी घ. पश्चिमी ध्रुवी

13. कवि से क्या नहीं सहा जाता है?

क. गहन अंधकार ख. रमणीय उजाला
ग. धूप में खड़ा होना घ. शोर-शराब

14. 'सहर्ष स्वीकारा है' में ग़रीबी को माना गया है ?

क. कष्टकारी ख. रंगीली
ग. गरबीली घ. श्राप

15. 'पाताली अँधेरे की गुहाओं में विवरों में-यहाँ' विवरों' का अर्थ है-

क. बादल ख. बिल
ग. गुफा घ. शिविर

16. 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता में कवि ने अपनी प्रियतमा के चेहरे की तुलना किससे की है ?

क. कमल से ख. आने से
ग. चाँद से घ. आकाश से

17. 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता के अनुसार ममता के बादल की मंडराती कोमलता कहाँ पिराती है ?

क. बाहर ख. भीतर
ग. बीच घ. सर्वत्र

18. 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता में बहलाती सहलाती आत्मीयता क्या नहीं होती है ?

क. बर्दाश्त ख. फालतू
ग. जहरीली घ. कम

19. भीतर की सरिता का अर्थ है-

क. मनोभाव ख. अशांति
ग. क्रांति घ. जमीनी नदी

उत्तर -	1- क	2- ग	3- ग	4- क	5- क
	6- ख	7- ग	8- क	9- ख	10- ख
	11- ग	12- क	13- ख	14- ग	15- ख
	16- ग	17- ख	18- क	19- क	

Jharkhandlab.com

अध्याय - 6

उषा

- शमशेर बहादुर सिंह

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न-1. कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गांव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है?

उत्तर - कविता के निम्नलिखित उपमानों को देखकर कहा जा सकता है कि उषा शीर्षक कविता गांव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है -

(क) राख से लीपा हुआ चौका।

(ख) लाल केसर से धुला हुआ, काली सिल।

(ग) स्लेट पर मला हुआ लाल खड़िया चाक।

(घ) नील जल में गौर झिलमिल देह ।

प्रश्न- 2. भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

(अभी गीला पड़ा है)

नयी कविता में कोष्ठक, विराम चिन्हों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है ? समझाइए।

उत्तर- नयी कविता में विराम चिह्न और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में संवादात्मकता का समावेश होता है। उपमान को स्पष्ट करने में भी कोष्ठक में लिखे गए शब्द सहायक होते हैं। राख से लीपा हुआ चौका गीला होता है, परंतु कोष्ठक में दिए गए शब्दों (अभी गिला पड़ा है) से अधिक स्पष्ट हो जाता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न-3. उषा का जादू टूटने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - उषा का जादू टूटने से तात्पर्य है - सूर्योदय होना। सूर्य के उदय होते ही उषा का जादू टूट जाता है।

प्रश्न-4. अपने परिवेश के उपमानों का प्रयोग करते हुए सूर्योदय और सूर्यास्त का शब्द चित्र खींचिए।

उत्तर - प्रातःकाल सूर्य उदित होते समय प्रकृति में नयी चेतना उदय होती है। नीला आकाश नीले शंख जैसा दिखाई देने लगता है, तत्पश्चात् प्रकृति के चारों ओर हल्की लालिमा लिए धरती और आकाश को सुनहरे रोशनी से भर देता है। उषा का जादू टूटता है और दिन आगे बढ़ते हुए सूर्यास्त के समय धरती और आकाश में पुनः लालिमा बिखेरकर अंधेरे की ओर जाने लगती है। ऐसा लगने लगता है मानो सूर्य आराम करने के लिए लाल चादर ओढ़े शैय्या पर विश्राम करने जा रहा है।

प्रश्न -5. सप्रसंग व्याख्या करें -

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे

भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

(अभी गीला पड़ा है)

उत्तर- **प्रसंग-**

प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2 में संकलित उषा शीर्षक कविता से लिया गया है। इस कविता के कवि शमशेर बहादुर सिंह हैं। इस काव्यांश में सूर्योदय से पहले के वातावरण का सुंदर वर्णन किया गया है।

व्याख्या -

कवि बताता है कि प्रातः कालीन आकाश ऐसा लगता है मानो नीला शंख हो। सुबह-सुबह आकाश ऐसा लगने लगता है जैसे राख से लीपा हुआ चौका है। यह चौका नमी के कारण गीला लगता है।

विशेष -

1. कवि ने प्रकृति का मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया है।
2. सरल, सहज खड़ी बोली में सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।
3. नए उपमानों का सुंदर प्रयोग है।
4. 'राख से लीपा हुआ चौका' में ग्रामीण परिवेश का चित्रण है।
5. 'शंख जैसे' में उपमा अलंकार है।
6. मुक्तक छंद का प्रयोग है।

प्रश्न -6. काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें -

नील जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह

जैसी हिल रही हो

और.....

जादू टूटता है इस उषा का अब

सूर्योदय हो रहा है।

उत्तर - **भाव-सौंदर्य-**

कवि ने नीले जल में किसी गोरी देह वाली स्त्री का मनोहारी चित्रण किया है। धीमी हवा व नमी के कारण सूर्य का प्रतिबिंब हिलता-सा प्रतीत होता है। कुछ समय बाद जब सूर्योदय होता है तो प्रातः कालीन सुंदरता समाप्त हो जाती है।

काव्य सौंदर्य/ शिल्प सौंदर्य

1. सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।
2. उषा का सुंदर दृश्य बिंब है।
3. 'नील जल में..... हिल रही हो।' में उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग है।
4. मुक्तक छंद का प्रयोग हुआ है।
5. माधुर्य गुण है।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. 'उषा' शीर्षक कविता किसकी रचना है ?

क. जयशंकर प्रसाद ख. सुमित्रानंदन पंत

ग. शमशेर बहादुर सिंह घ. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

2. उषाकाल किस समय को कहते हैं ?

क. मध्याह्न ख. प्रभात

ग. रात्रि घ. संध्या

3. कवि ने राख से लीपा हुआ चौका किसे कहा है ?

क. भोर के नभ को ख. भोर के तारे को

ग. भोर के किरण को घ. भोर के वातावरण को

Jharkhandlab.com

4. **राख से लीपा हुआ चौका किस भाव को व्यक्त करता है ?**
   क. परंपरागत ख. विश्वास
   ग. प्राचीनता घ. पवित्रता

5. **काली सिल किससे धुली लगती है ?**
   क. लाल गुलाब ख. लाल कमल
   ग. लाल केसर घ. लाल सिंदूर

6. **उषा का जादू टूटने का क्या कारण है ?**
   क. सूर्योदय ख. सूर्यास्त
   ग. दोपहर घ. शाम

7. **सूर्योदय से पहले किसका जादू होता है ?**
   क. उषा का ख. निशा का
   ग. दिशा का घ. नभ का

8. **'कवियों के कवि' किसे कहा जाता है ?**
   क. रघुवीर सहाय ख. शमशेर बहादुर सिंह
   ग. निराला घ. जयशंकर प्रसाद

9. **बहुत नीला शंख जैसे' में कौन सा अलंकार है ?**
   क. उपमा ख. रूपक
   ग. अनुप्रास घ. श्लेष

10. **'उषा कविता' में कवि ने उषा का कौन-सा चित्र उपस्थित किया है?**
   क. रेखाचित्र ख. शब्द चित्र
   ग. छायाचित्र घ. व्यंग चित्र

उत्तर-	1- ग	2- ख	3- ख	4- घ	5- ग
	6- क	7- क	8- ख	9- क	10- ख

Jharkhandlab.com

अध्याय - 7

बादल राग

-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1 जीर्ण बाहु है, शीर्ण शरीर

तुझे बुलाता कृषक अधीर

ऐ विप्लव के वीर !

चूस लिया है उसका सार,

हाड़- मात्र ही है आधार

ऐ जीवन के पारावार!

प्रस्तुत पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - **(क) भाव सौन्दर्य -**

किसानों की दुर्दशा दिखाने के लिए उसे जीर्ण बाहु का तथा शीर्ण शरीर का दिखाया गया है। उसका अस्थिपंजर दिखाकर तथा उसे बुरी तरह चूसा दिखाकर कवि ने करुणा उत्पन्न की है।

(ख) शिल्प सौंदर्य -

छायावादी कविता।

प्राकृतिक प्रतीकों का सूक्ष्म प्रयोग।

बादलों का मानवीकरण किया गया है।

संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग।

छोटे- छोटे शब्दों के कारण कविता में प्रवाह का संचार।

प्रश्न 2. 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' पंक्ति में दुख की छाया किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर - 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' पंक्ति में दुख की छाया क्रांति या विनाश की आशंका को कहा गया है। जिन लोगों पास सुख के साधन होते हैं वे क्रांति से सदैव डरते हैं। क्रांति उन्हीं का कुछ छीनेगी जिनके पास कुछ है। सुविधासंपन्न लोगों को क्रांति की संभावना सदैव भयभीत करती रहती है। इसी कारण इसे दुख की छाया कहा गया है।

प्रश्न 3. 'अशनिपात से शापित उन्नत शत-शत वीर' पंक्ति में किस की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर - अशनिपात से शापित उन्नत शत - शत वीर पंक्ति में क्रांति विरोधी गर्वीले वीरों की ओर संकेत है जो क्रांति के वज्राघात से घायल होकर क्षत-विक्षत हो जाते हैं। अशनिपात से जहां पर्वत की चोटियां क्षत-विक्षत हो जाती हैं वहां क्रांति के प्रहार से बड़े-बड़े धन- संपन्न वीर धराशायी हो जाते हैं।

प्रश्न 4. 'विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते' पंक्ति में विप्लव रव से क्या तात्पर्य है? छोटे ही हैं शोभा पाते ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर - विप्लव रव का तात्पर्य है - क्रांति। जब क्रांति होती है तो उसका लाभ सामान्य जन लघु मानव या सर्वहारा वर्ग को ही मिलता है। क्रांति उथल-पुथल करती है। संपन्नों से कुछ छिनता है। छोटे लोग लाभ में रहते हैं। इसी भाव को कवि ने छोटे ही हैं शोभा पाते कहा है।

प्रश्न 5. बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?

उत्तर- बादलों के आगमन से प्रकृति में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते हैं। हवा बहने लगती है। बादल गरजने लगते हैं। मूसलाधार पानी बरसता है। वज्रपात से पर्वत शिखर क्षत-विक्षत हो जाते हैं। छोटे-छोटे पौधे खिल उठते हैं। कमलों से जल झरने लगता है।

प्रश्न 6. व्याख्या कीजिए:-

(क) तिरती है समीर सागर पर

अस्थिर सुख पर दुख की छाया-

जग के दग्ध हृदय पर

निर्दय विप्लव की प्लावित माया-

व्याख्या -

बादल वायु रूपी सागर पर मंडरा रहे हैं। वह इस प्रकार घुमड़-घुमड़ कर छाए हुए हैं कि जैसे अस्थायी सुखों पर अनंत दुखों की काली छाया मंडरा रही हो। वह संसार के दुखी हृदय पर क्रूर विनाश का जल भरा खेल रच रहे हैं। आशय यह है कि यह संसार शोषण और अभाव के दुख से परिपूर्ण है। बादल क्रांति- दूत बनकर ऐसी दुख भरी दुनिया को डूबा डालना चाहते हैं।

(ख) अट्टालिका नहीं है रे

आतंक भवन

सदा पंख पर ही होता

जल- विप्लव- पलावन

व्याख्या -

कवि कहता है कि यह ऊंचे ऊंचे भवन वास्तव में ऊंचे अर्थात महान नहीं हैं। यह तो भय और त्रास के निवास हैं। इनमें रहने वाले लोग सदा भयभीत रहते हैं। जल की विनाशलीला तो सदा पंक में ही होती है वहीं बाढ़ और विनाश का दृश्य उपस्थित होता है। आशय यह है कि सदा निम्न वर्ग के लोग ही क्रांति घटित करते हैं। समृद्ध लोग तो भय ग्रस्त ही रहते हैं।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. धरती की कोख में सोया अंकुर किसकी और ताक रहा है और क्यों?

उत्तर - धरती की कोख में सोया अंकुर निरंतर बादलों की ओर ताक रहा है। क्योंकि उसे यह आशा है कि वर्षा होगी तो उसे फूटकर बाहर आने का अवसर मिलेगा उसके व्यक्तित्व का विकास होगा। आशय यह है कि निम्न वर्ग के लोग सुख समृद्धि और विकास के पथ पर आगे नहीं बढ़ सके। उन्हें आशा है कि क्रांति के बाद उन्हें भी उत्थान का अवसर मिलेगा।

प्रश्न 2. 'चूस लिया है उनका सार' द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर - उपर्युक्त पंक्ति द्वारा कवि यह कहना चाहता है कि शोषकों ने गरीब किसान मजदूरों का खूब शोषण किया है। उन्होंने दलितों की जीवनी शक्ति को मानो चूस लिया है।

प्रश्न 3. क्षत-विक्षत हत अचल 'शरीर' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर - कवि पहाड़ो को बुरी तरह घायल दिखाकर कहना चाहते हैं कि क्रांति से धनी और संपन्न लोगों को बहुत क्षति पहुंचेगी। उनकी धन-संपत्ति सब छीन जाएगी। जन क्रांति से सर्वाधिक हानि उन्हें होगी।

Jharkhandbb.com

प्रश्न 4. कविता में शोषक किसे कहा गया है?

उत्तर - कवि ने कविता के माध्यम से पूंजीपतियों को संबोधित किया है। ऐसे पूंजीपति जो निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करते हैं, उन्हें कवि ने शोषक कहा है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. बादल राग कविता के कवि कौन हैं ?

(क) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) महादेवी वर्मा (घ) नागार्जुन

प्रश्न 2. कवि बादल का आह्वान किस रूप में करता है ?

(क) वर्षा (ख) क्रांति
(ग) शांति (घ) मजबूरी

प्रश्न 3. बादलों को क्रांति का क्या बताया गया है ?

(क) वाहन (ख) शोषक
(ग) पोषक (घ) दूत

प्रश्न 4. मानव जीवन में दुख कैसा है ?

(क) स्थिर (ख) अस्थिर
(ग) मायावी (घ) रहस्यमयी

प्रश्न 5. सुख किसके समान चंचल और अस्थिर है ?

(क) मन (ख) बादल
(ग) हवा (घ) बिजली

प्रश्न 6. बादल किसका प्रतीक है ?

(क) शांति (ख) निम्न वर्ग
(ग) उच्च वर्ग (घ) क्रांति

प्रश्न 7. धरती का शोषण कौन कर रहा है ?

(क) सर्दी (ख) गर्मी
(ग) वर्षा (घ) बसंत

प्रश्न 8. तेज वर्षा से कौन धराशाई होते हैं ?

(क) छोटे-छोटे पौधे (ख) पर्वत
(ग) बड़े-बड़े वृक्ष (घ) नदियां

प्रश्न 9. क्रांति का सबसे अधिक लाभ किसे मिलता है ?

(क) धनी वर्ग (ख) निम्न वर्ग
(ग) मध्यमवर्ग (घ) छात्र वर्ग

प्रश्न 10. बादलों को अधीरता से कौन बुला रहा है ?

(क) कृषक (ख) वृक्ष
(ग) पौधे (घ) बालक

उत्तर –	1- क	2- ख	3- घ	4- ख	5- क
	6- घ	7- ख	8- ग	9- ख	10 - क

Jharkhandlab.com

अध्याय - 8

कवितावली (उत्तर कांड से) , लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

- तुलसीदास

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

उत्तर - 'कवितावली' में वर्णित छंदों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि तुलसीदास जी को अपने युग की आर्थिक विषमता की गहरी समझ थी, क्योंकि उन्होंने तत्कालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। उन्होंने तत्कालीन सामाजिक विषमता से उत्पन्न गरीबी एवं बेकारी को दारिद-दसानन के समान बताया है। तुलसीदास के अनुसार उनके समय में लोग बेरोजगारी और भुखमरी की समस्या से परेशान थे । मजदूर, किसान, नौकर, भिखारी आदि सभी दुखी थे । तुलसीदास ने तो यहां तक कहा है कि पेट भरने के लिए लोग गलत सही सभी कार्य करते थे। गरीबी के कारण लोग अपनी संतान तक को बेचने के लिए तैयार थे। दरिद्रता रूपी रावण ने चारों तरफ हाहाकार मचा रखा था ।

प्रश्न 2. पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है–तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर- तुलसीदास ने कहा है कि पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति रूपी मेघ ही कर सकता है। मनुष्य का जन्म,कर्म,कर्म-फल सब ईश्वर के अधीन हैं। निष्ठा और पुरुषार्थ से मनुष्य के पेट की आग का शमन तभी हो सकता है जब ईश्वर की कृपा हो अर्थात् फल प्राप्ति के लिए दोनों में संतुलन का होना अति आवश्यक है। पेट की आग बुझाने के लिए की गई मेहनत के साथ - साथ ईश्वर की कृपा का होना बेहद जरूरी है।

प्रश्न 3. तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत क्यों समझी? धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ/काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ। इस सवैया में काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आती?

उत्तर - तुलसीदास जी ने प्रस्तुत सवैये के द्वारा तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों की ओर संकेत किया है । उस युग में जाति संबंधी नियम अत्यधिक कठोर हो गए थे। तुलसी इस सवैये में अगर अपनी बेटी की शादी की बात करते तो सामाजिक संदर्भ में बहुत अंतर आ जाता, क्योंकि पुरुष - प्रधान समाज में विवाह के बाद लड़की को अपनी जाति छोड़कर अपने पति की जाति अपनानी पड़ती है । दूसरे, यदि तुलसी अपनी बेटी की शादी ना करने का निर्णय लेते तो इसे भी समाज में गलत समझा जाता। तीसरे, यदि किसी अन्य जाति में अपनी बेटी का विवाह संपन्न करवा देते तो इससे भी समाज में एक प्रकार का जातिगत या सामाजिक संघर्ष बढ़ने की संभावना बढ़ जाती ।

प्रश्न 4. धूत कहौ ..... वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उत्तर - तुलसीदास का जीवन सदा अभावों में बीता, लेकिन उन्होंने अपने स्वाभिमान को जगाए रखा। इसी प्रकार के भाव उनकी भक्ति में भी आए हैं। वे राम के सामने गिड़गिड़ाते नहीं बल्कि जो कुछ उनसे प्राप्त करना चाहते हैं वह भक्त के अधिकार की दृष्टि से प्राप्त करना चाहते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें संसार के लोगों की चिंता नहीं है कि वे उनके बारे में क्या सोचते हैं?तुलसीदास राम में एकनिष्ठा और समर्पण भाव रख कर समाज में व्याप्त दूषित रीति- रिवाजों का घोर विरोध करते हैं तथा अपने स्वाभिमान को महत्व देते हैं। वे एक स्वाभिमानी आदर्श श्री राम भक्त के रूप में दिखाई देते हैं।

प्रश्न 5. व्याख्या करें-

(क) मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।

जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।

उत्तर - प्रस्तुत काव्यांश हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 2 के अंतर्गत गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' से अवतरित है । लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम विलाप करते हुए कहते हैं कि - हे भाई ! तुम मुझे कभी दुःखी नहीं देख सकते थे ।तुम्हारा स्वभाव सदा से ही मेरे लिए कोमल था ।मेरे हित के लिए तुमने माता-पिता को भी छोड़ दिया वन में मेरे साथ जाड़ा, गर्मी ,हवा सब कुछ सहन किया।किंतु वह प्रेम अब कहां है? मेरे व्याकुलतापूर्ण वचन सुनकर तुम उठते क्यों नहीं?यदि मुझे ज्ञात होता कि मैं वन में अपने भाई से बिछड़ जाऊंगा, मैं पिता के वचनों (जिसे मानना मेरा परम कर्तव्य था) को कभी न मानता और न ही तुम्हें अपने साथ लेकर वन आता।

(ख) जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।

उत्तर - मूर्च्छित लक्ष्मण को गोद में लेकर राम विलाप कर रहे हैं कि तुम्हारे बिना मेरी दशा ऐसी हो गई है जैसे पंखों के बिना पक्षी की, मणि के बिना साँप की और सूढ़ के बिना हाथी की स्थिति दयनीय हो जाती है। ऐसी स्थिति में मैं अक्षम व असहाय हो गया हूँ। यदि भाग्य ने तुम्हारे बिना मुझे जीवित रखा तो मेरा जीवन इसी तरह शक्तिहीन रहेगा। दूसरे शब्दों में, मेरे तेज व पराक्रम के पीछे तुम्हारी ही शक्ति कार्य करती रही है।

(ग) माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ।।

उत्तर प्रस्तुत पंक्ति में तुलसीदास की निस्पृहता का वर्णन करते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि मैं माँगकर ही खाता हूँ, मंदिर के अंदर ही सोता हूँ। मेरा किसी से कोई मतलब नहीं है। अर्थात मेरा जीवन बहुत ही सरल है। मैं माँग कर खाता हूँ, देवालय ही मेरा सोने का स्थान है। इसके अतिरिक्त मेरा किसी से कोई संबंध नहीं है।

(घ) ऊँचे नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।।

उत्तर - प्रस्तुत पंक्तियों में तत्कालीन समाज की दुर्दशा का पता चलता है। तुलसीदास जी कहते हैं कि बेकारी के कारण लोगों की दशा बहुत बुरी है। लोग अच्छे-बुरे काम करने को विवश हैं, वे अधर्म करने से भी नहीं चूकते हैं, पेट की आग से विवश होकर वे अपनी संतानों को तक बेच देते हैं। भाव यह है कि बेकारी ने लोगों को हर प्रकार के काम करने लिए मजबूर कर दिया है। जब भूख लगती है, तो उससे परेशान होकर वे अपने बेटा तथा बेटी तक को बेच डालते हैं।

प्रश्न 6. भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर - जब लक्ष्मण को शक्ति बाण लगा तो राम एकदम विह्वल हो उठे। वे ऐसे रोए जैसे कोई बालक पिता से बिछुड़कर होता है। सारी

Jharkhandlab.com

मानवीय संवेदनाएँ उन्होंने प्रकट कर दीं। जिस प्रकार मानव-मानव के लिए रोता है ठीक वैसा ही राम ने किया। राम के ऐसे रूप को देखकर यही कहा जा सकता है कि राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। मानव में अपेक्षित सारी अनुभूतियाँ इस शोक सभा में दिखाई देती हैं।

प्रश्न 7. शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उत्तर - लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर हनुमान संजीवनी बूटी लेने के लिए हिमालय पर्वत जाते हैं। उन्हें आने में विलंब हो जाने पर सभी बहुत चिंतित व दु:खी होते हैं। उसी समय हनुमान संजीवनी बूटी के साथ पूरा पर्वत लेकर आ जाते हैं, इस कार्य को देखते ही सभी में आशा और उत्साह का संचार हो गया तब मानो करुण रस के बीच वीर रस का संचार हो जाता है अर्थात् लक्ष्मण की मूर्च्छा से दुखी निराश लोगों के मन में उत्साह का संचार हो जाता है। अतः अचानक इस प्रकार के परिवर्तन होने के कारण यहाँ करुण रस के बीच वीर-रस का आविर्भाव कहा गया है।

प्रश्न 8. जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई।।

बरु अपजस सहतेऊँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

उत्तर- भाई के शोक में डूबे श्रीराम के इस प्रलाप को सुनकर यद्यपि स्त्री को बुरा लगेगा। वह सोचेगी कि भाई की तुलना में पत्नी को हीन समझा जाता है,परन्तु प्रलाप-विलाप में व्यक्ति बहुत कुछ कह जाता है। जिसके कारण प्रलाप किया जा रहा हो, उसे अन्य की उपेक्षा अधिक प्रिय बताया जाता है। राम का यह प्रलाप तत्कालीन परिस्थितियां, पुरुष - प्रधान सामाजिकता की ओर संकेत करती हैं। कवि के अनुसार राम उस समय नर-लीला कर रहे थे।

पाठ के आसपास

प्रश्न 1. कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में पत्नी (इंदुमती) के मृत्यु-शोक पर 'अज' तथा निराला की 'सरोज-स्मृति' में पुत्री (सरोज) के मृत्यु-शोक पर पिता के करुण उद्गार निकले हैं। उनसे भ्रातृशोक में डूबे राम के इस विलाप की तुलना करें।

उत्तर - 'सरोज-स्मृति' में कवि निराला ने अपनी पुत्री की मृत्यु पर उद्गार व्यक्त किए थे। ये एक असहाय पिता के उद्गार थे जो अपनी पुत्री की आकस्मिक मृत्यु के कारण उपजे थे। भ्रातृशोक में डूबे राम का विलाप निराला की तुलना में कम है। लक्ष्मण अभी सिर्फ़ मूर्च्छित ही हुए थे। उनके जीवित होने की आशा बची हुई थी। दूसरे, सरोज की मृत्यु के लिए निराला की कमजोर आर्थिक दशा जिम्मेदार थी। वे उसकी देखभाल नहीं कर पाए थे, जबकि राम के साथ ऐसी समस्या नहीं थी।

प्रश्न 2. 'पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी' तुलसी के युग का ही नहीं आज के युग का भी सत्य है। भुखमरी में किसानों की आत्महत्या और संतानों (खासकर बेटियों) को भी बेच डालने की हृदय-विदारक घटनाएँ हमारे देश में घटती रही हैं। वर्तमान परिस्थितियों और तुलसी के युग की तुलना करें।

उत्तर - तुलसीदास के युग में धन-वैभव-सम्पन्न लोग गरीबों की सन्तानों को दास रूप में खरीदते थे। उस समय आर्थिक विषमता पिछड़ेपन एवं कट्टर वर्ण-व्यवस्था जातिवाद के कारण भी थी। वर्तमान में पेट की खातिर तथा बेकारी के कारण अतीव निर्धन लोग अपनी सन्तान को बेचते थे। बन्धुआ मजदूर इसी का एक रूप है। आज की परिस्थिति भले ही पहले से भिन्न है, परन्तु कर्जदारी और भुखमरी के कारण किसानों के द्वारा आत्महत्या करने की घटनाएँ आज भी अति चिन्तनीय हैं।

प्रश्न 3. तुलसी के युग की बेकारी के क्या कारण हो सकते हैं? आज की बेकारी की समस्या के कारणों के साथ उसे मिलाकर कक्षा में परिचर्चा करें।

उत्तर - तुलसी युग की बेकारी का सबसे बड़ा कारण गरीबी और भुखमरी थी। लोगों के पास इतना धन नहीं था कि वे कोई रोजगार कर पाते। इसी कारण लोग बेकार होते चले गए। यही कारण आज की बेकारी का भी है। आज भी गरीबी है, भुखमरी है। लोगों को इन समस्याओं से मुक्ति नहीं मिलती, इसी कारण बेरोजगारी बढ़ती जा रही है।

प्रश्न 4. राम कौशल्या के पुत्र थे और लक्ष्मण सुमित्रा के। इस प्रकार वे परस्पर सहोदर (एक ही माँ के पेट से जन्मे) नहीं थे। फिर, राम ने उन्हें लक्ष्य कर ऐसा क्यों कहा-"मिलइ न जगत सहोदर भ्राता"? इस पर विचार करें।

उत्तर - राम और लक्ष्मण का जन्म यद्यपि एक ही माँ के पेट से नहीं हुआ था, लेकिन इनके पिता एक ही थे-महाराज दशरथ। इसलिए राम ने लक्ष्मण को सहोदर भ्राता कहा। लक्ष्मण ने सदा राम की सेवा की। उनके सुख के लिए अपने सुखों का त्याग कर दिया। केवल एक ही पेट से जन्म लेने वाले सगे नहीं होते बल्कि वही भाई सहोदर होता है जो पारिवारिक संबंधों को अच्छी तरह निभाता है। लक्ष्मण ने श्रीराम के दुख दूर करने के लिए जीवनभर कष्ट उठाए। राम का छोटा-सा दुख भी उनसे देखा नहीं जाता था। इसलिए राम ने उन्हें लक्ष्य कर "मिलइ न जगत सहोदर भ्राता" कहा।

5. यहाँ कवि तुलसी के दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित सवैया- ये पाँच छंद प्रयुक्त हैं। इसी प्रकार तुलसी साहित्य में छंद तथा काव्य रूप आए हैं। ऐसे छंदों एवं काव्य रूपों की सूची बनाएं।

उत्तर - तुलसी साहित्य में निम्नलिखित छंदों एवं काव्य रूपों का भी प्रयोग हुआ है-

प्रबंध काव्य - रामचरितमानस, रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल।

गीति काव्य- गीतावली, कृष्ण गीतावली, विनय-पत्रिका

मुक्तक काव्य - दोहावली, कवितावली, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न।

तुलसीदास जी ने अपने काव्य में दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, सोरठा के अतिरिक्त छप्पय, बरवै आदि छंदों का प्रयोग किया है।

(अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर) दीर्घत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।' में भक्त कवि तुलसीदास ने किस विकट स्थिति की ओर संकेत किया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - कवि ने बताया है कि संसार में सभी अच्छे-बुरे, ऊँचे-नीचे कार्यों का आधार 'पेट की आग' की गंभीर स्थिति ही सबसे बड़ा सत्य है। तुलसीदास के समय तत्कालीन परिस्थिति रोजगार को लेकर अत्यन्त विकट थी। पेट भरने हेतु जो व्यक्ति जैसा भी कार्य करता था, उन्हें वैसा भी कोई काम नहीं मिल रहा था। जिसके कारण भूखे मरने जैसी हालत हो गई थी। अच्छे-अच्छे घरों के लोग पेट पालने हेतु छोटा-बड़ा, उँच-नीच सभी कर्म करने लगे थे।

ऐसे में परिवार पालन के लिए या अपने पेट को भरने हेतु लोग अपनी संतानों को भी बेचने को विवश हो रहे थे। समय की दारुण स्थिति एवं मनुष्यों का कठिन जीवन-यापन देख तुलसीदास ने निम्न पंक्ति कही कि पेट की आग बुझाने हेतु अपनी जान से प्यारी संतान (बेटा-बेटी) को भी लोग बेचने में हिचकिचा नहीं रहे थे, जो कि बहुत ही बुरी परिस्थिति पर प्रकाश डालती है।

प्रश्न 2. 'धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपुतू कहौ' निम्न पंक्ति द्वारा कवि तुलसीदास वर्तमान की किस भयंकर समस्या को इंगित कर रहे हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - तुलसीदास कहते हैं कि कोई चाहे उन्हें धूत (घर से निष्कासित)

कहे, चाहे साधु-संन्यासी कहे, या फिर किसी भी जाति-विशेष के नाम से पुकारे। तुलसीदास की तत्कालीन स्थिति और अभी की वर्तमान परिस्थिति दोनों में ही जाति समस्या बहुत ही जटिल व बड़ी समस्या है। उस समय तुलसीदास की प्रसिद्धि एवं भक्ति देख कर कुछेक जाति विशेषज्ञ विद्वान तुलसीदास को नीचा व निम्न जाति का दिखाने हेतु दुष्प्रचार करते थे। उन्हीं लोगों को सटीक जवाब देने हेतु तुलसीदास ने कहा कि मुझे न किसी से कोई लेना-देना है। न किसी की बेटी के साथ, बेटा ब्याह कर जाति बिगाड़नी है। न मैं धर्म को लेकर कट्टरपंथी हूँ। मैं माँग कर खाता हूँ, मस्जिद में सोकर तथा भगवान राम की भक्ति-आराधना कर अपना जीवन गुजार सकता हूँ।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर-

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सप्रसंग व्याख्या कीजिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) कवितावली

1. किसबी, किसान-कुल, बनिक,

भिखारी, भाट,

चाकर, चपला नट, चोर, चार, चेटकी।

पेटको पढ़त, गुन गुढ़त, चढ़त गिरी,

अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।

ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,

पेट ही की पचित, बेचत बेटा-बेटकी।।

'तुलसी' बुझाई एक राम घनस्याम ही तें,

आग बड़वागितें बड़ी हैं आग पेटकी।।

शब्दार्थ -

किसबी-धंधा। कुल- परिवार। बनिक- व्यापारी। भाट- चारण, प्रशंसा करने वाला। चाकर- घरेलू नौकर। चपल- चंचल। चार- गुप्तचर, दूत। चटकी- बाजीगर। गुनगढ़त- विभिन्न कलाएँ व विधाएँ सीखना। अटत- घूमता। अखेटकी- शिकार करना। गहन गन- घना जंगल। अहन- दिन। करम-कार्य। अधरम- पाप। बुझाई- बुझाना, शांत करना। घनश्याम- काला बादल। बड़वागितें- समुद्र की आग से। आग पेट की- भूख।

प्रसंग-

प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से उद्धृत है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं। इस कवित्त में कवि ने तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक दुरावस्था का यथार्थपरक चित्रण किया है।

व्याख्या-

तुलसीदास कहते हैं कि इस संसार में मजदूर, किसान-वर्ग, व्यापारी, भिखारी, चारण, नौकर, चंचल नट, चोर, दूत, बाजीगर आदि पेट भरने के लिए अनेक काम करते हैं। कोई पढ़ता है, कोई अनेक तरह की कलाएँ सीखता है, कोई पर्वत पर चढ़ता है तो कोई दिन भर गहन जंगल में शिकार की खोज में भटकता है। पेट भरने के लिए लोग छोटे-बड़े कार्य करते हैं तथा धर्म-अधर्म का विचार नहीं करते। पेट के लिए वे अपने बेटा-बेटी को भी बेचने को विवश हैं। तुलसीदास कहते हैं कि अब ऐसी आग भगवान राम रूपी बादल से ही बुझ सकती है, क्योंकि पेट की आग तो समुद्र की आग से भी भयंकर है।

विशेष-

(i) समाज में भूख की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है।

(ii) कवित्त छंद है।

(iii) तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग है।

(iv) ब्रजभाषा लालित्य है।

(v) 'राम घनस्याम' में रूपक अलंकार तथा 'आगि बड़वागितें..पेट की' में व्यतिरेक अलंकार है।

(vi) निम्नलिखित में अनुप्रास अलंकार की छटा है-

'किसबी, किसान-कुल', 'भिखारी, भाट', 'चाकर, चपल', 'चोर, चार, चेटकी', 'गुन, गढ़त', 'गहन-गन', 'अहन अखेटकी', 'बचत बेटा-बेटकी', 'बड़वागितें बड़ी'

(vii) अभिधा शब्द-शक्ति है।

प्रश्न

(क) पेट भरने के लिए लोग क्या-क्या अनैतिक कार्य करते हैं ?

(ख) कवि ने समाज के किन-किन लोगों का वर्णन किया है ? उनकी क्या परेशानी है?

(ग) कवि के अनुसार, पेट की आग कौन बुझा सकता है ? यह आग कैसी है ?

(घ) उन कर्मों का उल्लेख कीजिए, जिन्हें लोग पेट की आग बुझाने के लिए करते हैं ?

उत्तर- (क) पेट भरने के लिए लोग धर्म-अधर्म व ऊंचे-नीचे सभी प्रकार के कार्य करते है ? विवशता के कारण वे अपनी संतानों को भी बेच देते हैं ?

(ख) कवि ने मज़दूर, किसान-कुल, व्यापारी, भिखारी, भाट, नौकर, चोर, दूत, जादूगर आदि वर्गों का वर्णन किया है। वे भूख व गरीबी से परेशान हैं।

(ग) कवि के अनुसार, पेट की आग को रामरूपी घनश्याम ही बुझा सकते हैं। यह आग समुद्र की आग से भी भयंकर है।

(घ) कुछ लोग पेट की आग बुझाने के लिए पढ़ते हैं तो कुछ अनेक तरह की कलाएँ सीखते हैं। कोई पर्वत पर चढ़ता है तो कोई घने जंगल में शिकार के पीछे भागता है। इस तरह वे अनेक छोटे-बड़े काम करते हैं।

(ख)

'लक्ष्मण-मूर्च्छा' और राम का विलाप

दोहा

1. तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैहउँ नाथ तुरंग।

अस कहि आयसु पाह पद, बदि चलेउ हनुमत।

भरत बाहु बल सील गुन, प्रभु पद प्रीति अपार।

मन महुँ जात सराहत, पुनि-पुनि पवनकुमार।।

शब्दार्थ- तव-तुम्हारा, आपका। प्रताप-यश। उर-हृदय। राखि-रखकर। जैहऊँ-जाऊँगा। नाथ-स्वामी। अस-इस तरह। आयसु-आज्ञा। पाह-पाकर। पद-चरण, पैर। बदि-वंदना करके। बहु-भुजा। सील-सद्व्यवहार। गुन-गुण। प्रीति-प्रेम। अयार-अधिक। महुँ-में। सराहत-बड़ाई करते हुए। पुनि-पुनि-फिर-फिर।पवनकुमार-हनुमान।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग से उद्धृत है। यह प्रसंग रामचरितमानस के लंकाकांड से लिया गया है। इसके रचयिता कवि तुलसीदास हैं। इस प्रसंग में लक्ष्मण के मूर्च्छित होने तथा हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाने में भरत से मुलाकात का वर्णन किया गया है।

jharkhandlah.com

व्याख्या- हे नाथ! हे प्रभो!! मैं आपका प्रताप हृदय में रखकर तुरंत यानी समय से वहाँ पहुँच जाऊँगा। ऐसा कहकर और भरत जी से आज्ञा लेकर एवं उनके चरणों की वंदना करके हनुमान जी चल दिए।भरत के बाहुबल, शील स्वभाव तथा प्रभु के चरणों में उनकी अपार भक्ति को मन में बार-बार सराहते हुए हनुमान संजीवनी बूटी लेकर लंका की तरफ चले जा रहे थे।

विशेष- हनुमान की भक्ति व भरत के गुणों का वर्णन हुआ है।

(ii) दोहा छंद है।

(iii) अवधी भाषा का प्रयोग है।

(iv) 'मन महुँ', 'पुनि-पुनि पवन कुमार', 'पाइ पद' में अनुप्रास तथा 'पुनि-पुनि' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

प्रश्न.

(क) कवि तथा कविता का नाम बताइए?

(ख) हनुमान ने भरत जी को क्या आश्वासन दिया ?

(ग) हनुमान ने भरत से क्या कहा ?

(घ) हनुमान भरत की किस बात से प्रभावित हुए ?

(ङ) हनुमान ने संकट में धैर्य नहीं खोया। वे वीर एवं धैर्यवान थे-स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

(क) कवि-तुलसीदास।

कविता-लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप।

(ख) हनुमान जी ने भरत जी को यह आश्वासन दिया कि "हे नाथ! मैं आपका प्रताप हृदय में रखकर तुरंत संजीवनी बूटी लेकर लंका पहुँच जाऊँगा। आप निश्चिंत रहिए।"

(ग) हनुमान ने भरत से कहा कि "हे नाथ! मैं आपके प्रताप को मन में धारण करके तुरंत जाऊँगा।"

(घ) हनुमान भरत की रामभक्ति, शील स्वभाव व बाहुबल से प्रभावित हुए।

(ङ) मेघनाथ का बाण लगने से लक्ष्मण घायल व मूर्च्छित हो गए थे। इससे श्रीराम सहित पूरी वानर सेना शोकाकुल होकर विलाप कर रही थी। ऐसे में हनुमान ने विलाप करने की जगह धैर्य बनाए रखा और संजीवनी लेने गए। इससे स्पष्ट होता है कि हनुमान वीर और धैर्यवान थे।

लघुत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. "किसबी, किसान कुल, बनिक... " इस कवित्त के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इस कवित्त से आशय है कि आर्थिक स्थिति खराब दशा में होने के कारण तथा अपनी भूख मिटाने के लिए लोग पाप-कर्म करने लग गये थे। तब आम लोग श्रीराम की भक्ति को ही अपना अन्तिम सहारा मान रहे थे।

प्रश्न 2. "आगि बड़वागि तें बड़ी है आगि पेट की"-तुलसी ने पेट की आग को बड़ी क्यों बताया है?

उत्तर - शरीर को चलाने हेतु पेट का भरा होना आवश्यक है और पेट भरने के लिए अनेक कर्म करने पड़ते हैं। भिखारी से लेकर बड़े-बड़े लोग भी पेट की आग शान्त करने में लगे रहते हैं। इसलिए पेट की आग को बड़वाग्नि से बड़ी कहा गया है क्योंकि बड़वाग्नि प्रयत्न द्वारा शान्त हो जाती है।

प्रश्न 3. "खेती न किसान को. हहा करी" कवित्त में किस स्थिति का चित्रण हुआ है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इस कवित्त में तत्कालीन बेकारी-बेरोजगारी की स्थिति का चित्रण हुआ है; क्योंकि उस समय किसान खेती से, व्यापारी व्यवसाय से, भिखारी भीख और चाकर नौकरी न मिलने से परेशान थे। गरीबी रूपी रावण से सारा समाज व्यथित, दुःखी और पीड़ित था।

प्रश्न 4. "काहू की जाति बिगार न सोऊ"-इससे कवि ने क्या व्यंजना की है?

उत्तर - तुलसी के युग में जाति-प्रथा का बोलबाला था। ऊँची जातियों के लोग नीची जातियों से शादी सम्बन्ध या खान-पान का व्यवहार नहीं रखते थे। तुलसीदास को निम्न जाति का माना जाता था, इसलिए उन्होंने कहा कि मुझे किसी से कोई लेना-देना नहीं और मैं किसी की जाति नहीं बिगाड़ना चाहता हूँ जबकि लोग अपनी जाति की श्रेष्ठता का ध्यान रखते थे, अपनी जाति बिगड़ने नहीं देते थे।

प्रश्न 5. "माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो"-इससे तुलसी के विषय में क्या पता चलता है?

उत्तर - इससे तुलसी के विषय में यह पता चलता है कि वे धार्मिक कट्टरता से ग्रस्त नहीं थे और सर्वधर्म सद्भाव रखते थे। वे लोभ-लालच से रहित, स्वाभिमानी और सच्चे सन्त स्वभाव के थे। इसलिए उन्हें माँग के खाने और मस्जिद में सोने से कोई परहेज नहीं था।

प्रश्न 6. "लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम-विलाप" काव्यांश के आधार पर भ्रातृ-शोक में विह्वल श्रीराम की दशा को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर श्रीराम अत्यधिक विह्वल हो उठे। उस समय वे माता सुमित्रा का ध्यान कर लक्ष्मण को अपने साथ लाने पर पछताने लगे। लक्ष्मण जैसे सेवा-भावी अनुज के अनिष्ट की आशंका से वे प्रलाप करने लगे तथा अविनाशी प्रभु होने के पश्चात् भी मनुष्यों की भाँति द्रवित हो गये।

प्रश्न 7. "तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरन्त"- यह किसने, कब और किस आशय से कहा? बताइये।

उत्तर - यह हनुमान ने भरत से कहा- संजीवनी बूटी ले जाते समय भरत ने अपने बाण से घायल हनुमान को जब अभिमन्त्रित बाण पर बिठाया, तब हनुमान ने कहा कि आप बड़े प्रतापी हैं, मैं आपके प्रताप का स्मरण कर तुरन्त ही लंका पहुँच जाऊँगा।

प्रश्न 8. "बोले वचन अनुज अनुसारी"-इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - श्रीराम परमब्रह्म के अवतार थे, वे अन्तर्यामी थे और भूत-भविष्य को जानते थे। परन्तु लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर उसके अनिष्ट की शंका से वे सामान्य मनुष्य की तरह विचलित होकर विलाप करने लगे थे।

प्रश्न 9. "बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं"- श्रीराम किस अपयश को सहना ठीक समझते थे?

उत्तर- श्रीराम पत्नी सीता के अपहरण को अपना अपयश मानते थे। पत्नी की रक्षा न कर सकना अपयश का कारण माना जाता है। स्त्री के कारण भाई को गँवाना भी अपयश माना जाता है। श्रीराम पत्नी हरण का अपयश सह सकते थे लेकिन भाई के वियोग का अपयश नहीं चाहते थे।

प्रश्न 10. "उतरु काह दैहउँ तेहि जाई"- ऐसा किस आशय से कहा गया है?

उत्तर - श्रीराम ने लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने पर कहा कि मैं माता सुमित्रा को क्या उत्तर दूंगा? लक्ष्मण की मृत्यु का समाचार उन्हें कैसे सुनाऊँगा और उनके हृदय पर तब क्या बीतेगी? मैं अपना अपराध कैसे व्यक्त कर सकूँगा?

प्रश्न 11. श्रीराम के विलाप और उसी क्षण हनुमान के आगमन से वानर सेना पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर - श्रीराम के विलाप को सुनकर सारी वानर-सेना अत्यधिक व्याकुल हो गयी, परन्तु तभी संजीवनी बूटी सहित हनुमान के आगमन से सभी वानर अत्यधिक प्रसन्न और उत्साहित हो गये तथा उनमें उत्साह और वीर रस का संचार हो गया।

प्रश्न 12. रावण के अभिमानी वचन सुनकर कुम्भकर्ण ने क्या कहा?

उत्तर : रावण के अभिमानी वचन सुनकर कुम्भकर्ण ने कहा कि तुमने पाप-कर्म किया है, तुम जगत्-जननी सीता का अपहरण कर लाये हो और अब अपना भला चाहते हो। अब तुम्हें अपनी इस दुष्टता का फल भोगना ही पड़ेगा।

प्रश्न 13. क्या तुलसी का साहित्य आज भी प्रासंगिक है?

उत्तर - तुलसी ने लगभग 450 वर्ष पहले जो कहा था, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अपने समाज की सभी समस्याओं का चित्रण किया। इन्हीं समस्याओं के कारण तुलसी युग का समाज पूरी तरह से बिखर चुका था। उन्होंने इन सारी विद्रूपताओं को देखा और उसका चित्रण किया। जिस प्रकार की परिस्थितियाँ उस युग में विद्यमान थी ठीक वही परिस्थितियाँ आज भी विद्यमान हैं। इसीलिए तुलसीदास का साहित्य आज भी प्रासंगिक है।

प्रश्न 14. तुलसी की काव्य भाषा के बारे में बताइए।

उत्तर- तुलसी ने मुख्य रूप से अवधी भाषा का प्रयोग किया है। उस युग में इसी भाषा का प्रचलन था। लोगों के बीच इसी व्यवहार की भाषा प्रचलित थी। इसीलिए तुलसी ने इस लोक व्यवहार की भाषा का प्रयोग किया है।

प्रश्न 15. तुलसीदास की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- तुलसीदास के काव्य में कई अलंकारों का प्रयोग हुआ है। उन्होंने मुख्य रूप से उपमा, अनुप्रास, रूपक, अतिश्योक्ति, वीरता आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। इन अलंकारों के प्रयोग से भाषा में चमत्कार उत्पन्न हुआ है। वह अधिक प्रभावी बन गई है।

प्रश्न 16. तुलसी की छंद योजना कैसी है?

उत्तरः तुलसी ने दोहे और चौपाई छंद का प्रयोग प्रमुखता से किया है। उन्होंने अपने सारे काव्यों में इन्हीं छंदों का प्रयोग किया। इनका प्रयोग करके तुलसी ने अपनी बात को अधिक स्पष्ट ढंग से कह दिया है। तुलसी की चौपाइयाँ इतनी सरल और प्रभावी बन पड़ी हैं कि लोग आज भी इनका काव्य पाठ करते हैं। तुलसी ने कहीं-कहीं हरिगीतिका छंद का प्रयोग भी किया है, लेकिन न्यून मात्रा में। लेकिन बहुलता दोहा और चौपाई छंदों की ही रही है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कवितावली किसकी रचना है ?
क. वाल्मीकि ख. तुलसीदास
ग. कबीरदास घ. सूरदास

2. संसार के सभी लोग काम क्यों करते हैं ?
क. पेट भरने के लिए ख. आनंद के लिए
ग. खेल के लिए घ. ईश्वर को प्रसन्न करने के

3. किस बला के लिए लोग दर-दर ठोकरें खाते-फिरते हैं ?
क. मुँह की ख. हाथ की
ग. दिमाग़ की घ. पेट की

4. किस की कृपा से भूख के लिए भटकते लोगों को शांति मिल सकती है ?
क. इंसान की कृपा से ख. शैतान की कृपा से
ग. राम की कृपा से घ. देव की कृपा से

5. समाज में चारों ओर किसका बोल-बाला है ?
क. प्रेम और भाईचारे का ख. गरीबी और बेकारी
ग. घृणा और लड़ाई का घ. अमीरी और रोजगारी का

6. संपूर्ण समाज को गरीबी ने किस रूप में घेर रखा है ?
क. रावण ख. दानव
ग. शैतान घ. राक्षस

7. वेदों और पुराणों के अनुसार संकट के समय कौन सहायता करता है ?
क. नेता लोग ख. अफ़सर
ग. देवता घ. प्रभुराम

8. लक्ष्मण के जीवित होने की खबर सुन कर रावण किस के पास गया ?
क. मेघनाथ ख. विभीषण
ग. कुंभकरण घ. सुषेण

9. 'अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ' काव्यांश में किस पात्र के न आने का वर्णन है ?
क. सुग्रीव ख. मयंद
ग. अंगद घ. हनुमान

10. 'कवितावली उत्तरकांड से' में कौन-सा छंद है ?
क. दोहा ख. चौपाई
ग. सवैया घ. कवित्त

11. हनुमान राम जी से क्या लाने की आज्ञा माँगते हैं ?
क. सीता ख. संजीवनी बूटी
ग. प्राणनाशक बूटी घ. जीवनदायिनी बूटी

12. राम जी के एकनिष्ठ भक्त कौन थे?
क. सुग्रीव ख. जामवंत
ग. नील घ. हनुमान

13. 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' में किस भाषा का प्रयोग हुआ है ?
क. ब्रज ख. हिंदी
ग. अवधी घ. संस्कृत

14. 'नारि हानि विशेष छति नाहीं' यहाँ 'छति' का अर्थ है ?
क. छाता ख. छत
ग. लाभ घ. हानि

15. 'जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान' यह पंक्ति किसने कही ?
क. राम ख. लक्ष्मण
ग. कुंभकर्ण घ. रावण

16. लक्ष्मण कहाँ मूर्च्छित हुए थे?
क. घर में ख. बाज़ार में
ग. युद्ध में घ. उपवन में

17. लक्ष्मण ने राम जी के लिए किस चीज़ का त्याग किया ?
क. सब दुखों का ख. सब सुखों का
ग. सारे धन का घ. सभी तरह के भोजन का

18. लक्ष्मण की दशा देखकर साधारण मानव की तरह कौन विलाप करने लगा ?
क. हनुमान ख. सीता
ग. सुग्रीव घ. राम

19. संसार में पुनः क्या नहीं मिलता?
क. वनवास ख. घर
ग. सहोदर भाई घ. संपदा

20. श्रीराम ने लक्ष्मण को हृदय से लगाया तो कौन हर्षित हुए ?
क. हनुमान ख. सुषेण वैद
ग. भालू-कपि-समूह घ. लक्ष्मण

21. 'उमा एक अखंड रघुराई' पंक्ति में 'उमा' शब्द का क्या अर्थ है ?
क. शची ख. उर्वशी
ग. शारदा घ. पार्वती

उत्तर-	1- ख	2- क	3- घ	4- ग	5- ख
	6- क	7- घ	8- ग	9- घ	10- घ
	11- ख	12- घ	13- ग	14- घ	15- ग
	16- ग	17- ख	18- घ	19- ग	20- ग
	21- घ				

Jharkhandlab.com

अध्याय - 9

रुबाइयाँ, गज़ल

- फ़िराक गोरखपुरी

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न- 1. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव वंचित करना चाहते हैं?

उत्तर- शायर राखी के लच्छे को प्राकृतिक घटनाक्रम बिजली की चमक की तरह मानते हैं। भाई बहन के प्रेम का प्रतीक राखी का त्यौहार सावन के महीने में मनाया जाता है। जिस प्रकार सावन में आसमान में बिजली चमकती है, उसी प्रकार राखी के दिन भाइयों के हाथों पर राखी के लच्छे चमकते हैं।

प्रश्न- 2. खुद का परदा खोलने से क्या आशय है ?

उत्तर- शायर के विचार अनुसार जब कोई व्यक्ति अपनी राज की बातें किसी दूसरे व्यक्ति से करता है और दूसरा व्यक्ति उन बातों को किसी और के सामने प्रकट करता है, वास्तव में वह अपना परदा खोलता है। इसलिए शायर ने कहा कि मेरा परदा खोलने वाले अपना परदा खोल रहे हैं।

प्रश्न- 3. किस्मत हमको रो लेवे हैं हम किस्मत को रो ले हैं- इस पंक्ति में शायर कि किस वक्त के साथ तनातनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है। चर्चा कीजिए।

उत्तर- कवि एक तरफ अपने भाग्य से कभी संतुष्ट नहीं रहा किस्मत कवि के साथ कभी नहीं रहा।वह अपनी बदकिस्मती के लिए खीझता रहता है। दूसरी तरफ कवि कर्महीन लोगों पर व्यंग करता है। कर्महीन लोग असफलता के मिलने पर भाग्य को दोष देते हैं। किस्मत उनकी कर्म हीनता को दोष देती है।

प्रश्न- 4. टिप्पणी करें

(क) गोदी के चांद और गगन के चांद का रिश्ता।

उत्तर- गोदी के चांद का मतलब -बच्चा ,गगन का चांद आसमान की गोदी का चांद -चंद्रमा। दोनों का रिश्ता यही है कि गोदी का चांद गगन के चांद को अपने में अपने हाथ में पकड़ लेना चाहता है। तभी तो सूरदास ने भी कहा है मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।

(ख) सावन की घटाएं व रक्षाबंधन का पर्व।

उत्तर – रक्षाबंधन का पर्व सावन के महीने में मनाया जाता है। सावन के महीने में घटाएं बरसती हैं। उसी प्रकार भाई के न आने पर बहन के आंखों से भी सावन की घटारूपी आंसू बरसते हैं।

(अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर) दीर्घत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1. पाठ्यपुस्तक में संकलित फिराक गोरखपुरी की गजल का केंद्रीय भाव लिखिए।

उत्तर – फिराक गोरखपुरी ने 'गजल' में दर्द व कसक का वर्णन किया है। उसने बताया है कि लोगों ने उसे सदा ताने दिए हैं। उसकी किस्मत हमेशा उसे दगा देती रही। दुनिया में केवल गम ही था जो उसके पास रहा। उसे लगता है जैसे रात के सन्नाटे में कोई बोल रहा है। इश्क के बारे में शायर का कहना है कि इश्क वही पा सकता है जो अपना सब-कुछ दाँव पर लगा दे। कवि की गजलों पर मीर की गजलों का प्रभाव है। यह गज़ल इस तरह बोलती है जिसमें दर्द भी है, एक शायर की ठसक भी है और साथ ही है काव्यशिल्प की वह ऊँचाई, जो गजल की विशेषता मानी जाती है।

प्रश्न- 2. फिराक की रुबाई में भाषा के विलक्षण प्रयोग किए गए हैं-स्पष्ट करें।

उत्तर – कवि की भाषा उर्दू है, परंतु उन्होंने हिंदी व लोकभाषा का भी प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में हिंदी, उर्दू व लोकभाषा के अनूठे गठबंधन के विलक्षण प्रयोग हैं जिसे गाँधी जी हिंदुस्तानी के रूप में पल्लवित करना चाहते थे। ये विलक्षण प्रयोग हैं-लोका देना, घुटनियों में लेकर कपड़े पिन्हाना, गेसुओं में कंघी करना, रूपवती मुखड़ा, नर्म दमक, जिदयाया बालक, रस की पुतली। माँ हाथ में आईना देकर बच्चे को बहला रही है

देख आईने में चाँद उतर आया है।

चाँद की परछाई भी चाँद ही है।

लघुत्तरीय प्रश्न

प्रश्न- 1. बच्चा कब खिलखिला कर हंस पड़ता है।

उत्तर- मां जब बच्चे को हवा में लोका देती है तब बच्चा खिलखिला कर हंस पड़ता है।

प्रश्न- 2. बच्चा आंगन मे क्यों ठुनक रहा है ?

उत्तर- आंगन में चांद को पकड़ने के लिए ठुनक रहा है उसे हाथों में लेना चाहता है।

प्रश्न- 3. राखी के लच्छे किसकी तरह चमक रहे हैं ?

उत्तर- राखी के लच्छे सावन माह की बिजली की तरह चमक रहे हैं।

प्रश्न- 4. परदा खोलने से शायर का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर- शायर कहना चाहते हैं कि जो हमारी निंदा करते हैं वह अपना परदा खोलते हैं।

प्रश्न- 5. किस्मत हमको रो लेवे से तात्पर्य क्या है ?

उत्तर- किस्मत हमको रो लेवे भाग्यवादी लोगो के लिए है जो असफलता के लिए किस्मत को दोष देते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 रुबाइयां और गजल किसकी रचना है ?

(क) फिराक गोरखपुरी (ख) फिराक सुल्तानपुरी
(ग) मजरूह सुल्तानपुरी (घ) अहमद पुरी

प्रश्न 2 माँ अपने प्यारे बेटे को कहां लिए खड़ी है,?

(क) घर के मंदिर में (ख) घर की छत पर
(ग) घर के आंगन में (घ) घर के द्वार पर

प्रश्न 3 मां बच्चे को किस जल से नहाती हैं ?

(क) गर्म जल (ख) गंगाजल
(ग) निर्मल जल (घ) नल के जल

प्रश्न 4 घर में किस से बने सुंदर खिलौने रखे हैं ?

(क) चीनी चाय पत्ती (ख) चीनी मिट्टी
(ग) रेत मिट्टी (घ) बालू

jharkhandlab.com

प्रश्न-5. बालक किस पर ललचाया है ?

(क) सूरज पर (ख) चांद पर

(ग) तारे पर (घ) खिलौने पर

प्रश्न- 6. कवि को बदनाम कौन कर रहा है ?

(क) दुश्मन (ख) दोस्त

(ग) प्रेमिका (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न- 7. किस्मत का रोना कौन रोते हैं ?

क. कर्महीन ख. भाग्यहीन

ग. क और ख दोनों घ. कोई नहीं

प्रश्न- 8. गजल के अनुसार रात में कौन बोल रहे हैं ?

(क) तारे (ख) बच्चे

(ग) जुगनू (घ) पक्षी

प्रश्न- 9. कवि को अपनी प्रियतमा के साथ-साथ किसका ख्याल है ?

(क) परिवार (ख) समाज

(ग) दुनिया (घ) देश

प्रश्न-10. तारे आंखें झपकावें हैं जर्रा-जर्रा सोये हैं यहां जर्रा-जर्रा का अर्थ है

(क) जरा जरा (ख) जरा सा

(ग) क्षण-क्षण (घ) कण -कण

उत्तर-	1- (क)	2- (ग)	3- (ग)	4- (ख)	5- (ख)
	6-(ख)	7- (ग)	8- (क)	9- (ग)	10- (घ)

Jharkhandlab.com

अध्याय - 10

छोटा मेरा खेत

-उमाशंकर जोशी

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न- 1. छोटे चैकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है ?

उत्तर- कवि ने छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना इसलिए कहा है जिस प्रकार कृषक खेत में अपने बीज बोने से लेकर फसल तैयार होने तक कृषि कार्य करता है उसी प्रकार कवि भी कागज के पन्नों में भाव रोपण से लेकर अनंत काल तक की कटाई के लिए कृति तैयार करता है।

प्रश्न- 2. रचना के संदर्भ में अंधड़ और बीज क्या है ?

उत्तर- कवि की रचना का आरंभ भावों के उथल-पुथल से होता है ।भावों का उद्वेलन की तुलना अंधड़ से की गई है। अंधड़ में कोई बीज उड़ के यहां से वहां जाता है और बीजारोपण होता है ।भावों के अंधड़ में ही कोई भाव बीज बनकर कृति की रचना स्रोत होती है ।

प्रश्न- 3. रस का अक्षयपात्र से कवि ने रचनाकर्म किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है ?

उत्तर- कवि ने रचना कर्म को रस का अक्षयपात्र विशेषण से उपार्जित किया है। पूर्ण कृति तैयार फसल के समान होती है। फसल कुछ समय पश्चात समाप्त हो जाता है किंतु रचना कर्म अनंत काल तक रस का स्रोत पाठकों के लिए होता है।

प्रश्न- 4. व्याख्या करें

(1) शब्द के अंकुर फूटे

पल्लव पुष्पों से नामित हुए विशेष ।

उत्तर- **प्रसंग-**

आलोच्य पंक्तियां गुजराती कविता के अग्रगण्य कवि उमाशंकर जोशी द्वारा रचित छोटा मेरा खेत से उद्धृत है।

संदर्भ:

कवि कवि- कर्म कृषि कर्म से तुलना करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार बीज से अंकुर फूटते हैं उसी प्रकार भावनात्मक रूपी बीज से शब्दों का निर्माण होता है।

व्याख्या -

कवि शब्दों के माध्यम से भावों को अभिव्यक्त करता है। भावाभिव्यक्ति रूपी बीजों को बोता है जो रचना के रूप में पुष्पित और फलित होकर चारों ओर अपनी सुंदरता और मिठास फैलाते हैं।

विशेष- कवि कर्म और कृषि कर्म की तुलना की गई है ।

भाषा तत्सम निष्ठ खड़ी बोली है।

'पल्लव-पुष्पों' में अनुप्रास अलंकार है ।

मुक्तक छंद का प्रयोग है।

(2) रोपाई क्षण की

कटाई अनंतता की

लूटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

उत्तर- **प्रसंग-**

आलोच्य पंक्तियां गुजराती कविता के प्रख्यात कवि उमाशंकर जोशी द्वारा रचित छोटा मेरा खेत से उद्धृत है।

संदर्भ:

प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने रचना कर्म को क्षणिक बताते हुए उसकी कालजयीअनंतता की बात की है ।

व्याख्या -

कवि के मन में जो भाव उठते हैं उसे वह क्षणों में ही रोपते हैं ।किंतु इसकी कटाई अनंतता की है ।किसी कृति की रचना करने के बाद उसके पाठक अनंत काल तक उसकी कटाई कर सकते हैं। पाठकों के पढ़ने से कभी भी व कम नहीं होती ।

विशेष -

भाषा खड़ी बोली है ।

साहित्यिक कृति के अनंतता की बात की है।

कृति में अमरता का तत्व है ।

मुक्तक छंद है।

(अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर) दीर्घत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1. छोटा मेरा खेत का सार लिखें।

उत्तर- इस कविता में कवि ने खेती के रूप में कवि-कर्म के हर चरण को बाँधने की कोशिश की है। कवि को कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। इस खेत में किसी अंधड़ अर्थात भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज रचना, विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है। यह कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है। उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंततः कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है जो कृषि-कर्म के लिहाज से पुष्पित-पल्लवित होने की स्थिति है। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, वह क्षण में होने वाली रोपाई का ही परिणाम है। पर यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई से कम नहीं होती। खेत में पैदा होने वाला अन्न कुछ समय के बाद समाप्त हो जाता है, किंतु साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

प्रश्न- 2. बगुलों के पंख का सार लिखे।

उत्तर- यह कविता सुंदर दृश्य बिंबयुक्त कविता है जो प्रकृति के सुंदर दृश्यों को हमारी आँखों के सामने सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। सौंदर्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कवि ने कई युक्तियाँ अपनाई हैं जिनमें से सर्वाधिक प्रचलित युक्ति है-सौंदर्य के व्यौरों के चित्रात्मक वर्णन के साथ अपने मन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का वर्णन। कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है। वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। इस नयनाभिराम दृश्य में कवि सब कुछ भूलकर उसमें खो जाता है। वह इस माया से अपने को बचाने की गुहार लगाता है, लेकिन वह स्वयं को इससे बचा नहीं पाता।

प्रश्न-3. सप्रसंग व्याख्या करें -

नभ में पाँती -बँधे बगुले के पंख

चुराए लिए जाती है वे मेरी आंखें।

कजरारे बादलों की छाई नभ छाया।

तैरती साँझ की छाई नभ छाया

jharkhandlab.com

उत्तर- प्रसंग -

आलोच्य पंक्तियां गुजराती कवि उमाशंकर जोशी द्वारा रचित बगुले के पंख से उद्धृत है।

संदर्भ:

इस कविता में सौंदर्य की नई परिभाषा प्रस्तुत की गई है तथा मानव मन पर इसके प्रभाव को बताया गया है।

व्याख्या -

कवि आकाश में छाए काले काले बादलों में पंक्ति बनाकर उड़ते हुए बगुले के सुंदर-सुंदर पंखों को देखता है। वह कहता है कि मैं आकाश में पंक्तिबद्ध बगुले को उड़ते हुए एकटक देखता रहता हूं। सांयकाल चमकीली सफेद काया नभ पर तैरती हुई प्रतीत होती है।

विशेष- कवि ने आकाश के प्राकृतिक सौंदर्य को अभिव्यक्त किया है। खड़ी बोली है। बिंब योजना है। आँखें चुराना मुहावरे का प्रयोग है। भाषा सरल व सहज है।

लघुत्तरीय प्रश्न

प्रश्न- 1. छोटा मेरा खेत कविता का रूपक स्पष्ट कीजिए

उत्तर- कवि ने छोटा मेरा खेत कविता में कवि कर्म और कृषि कर्म की समानता दिखलाई है। एक कृषक जिस प्रकार खेत में बीज बोता है। बीज अंकुरित पल्लवित होकर पौधा बनता है तथा फसल तैयार होने पर उदर पूर्ति करता है। इसी प्रकार भावनात्मक आंधी आती है फिर किसी क्षण बीजारोपण होता है। फिर रचना कल्पना के सहारे तैयार होता है। यह रचना रस का अक्षय स्रोत बनता है और अनंत काल तक रस को लुटाता है।

प्रश्न- 2. बगुले के पंख कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर- बगुले के पंख एक दृश्यात्मक कविता है। कवि आकाश में उड़ते हुए बगुले की पंक्ति को देखकर तरह-तरह की कल्पनाएं करता है। कवि को वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की सफेद काया के समान लगते हैं। एक तरफ कवि इस सौंदर्य से बचना चाहता है तथा दूसरी तरफ इससे बँध जाना चाहता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 छोटा मेरा खेत किसकी रचना है ?

(क) रमाशंकर जोशी (ख) भीमसेन जोशी
(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) उमाशंकर जोशी

प्रश्न 2 छोटा मेरा खेत में कवि का खेत क्या है ?

(क) मन (ख) प्यार
(ग) चरती और परती (घ) कागज रूपी खेत

प्रश्न 3 साहित्य कब तक रस का अक्षय स्रोत बना रहता है ?

(क) वर्तमान काल (ख) भूतकाल
(ग) भविष्य काल (घ) अनंत काल

प्रश्न 4 कवि किस रसायन का प्रयोग साहित्य रचना के लिए करता है ?

(क) यूरिया का (ख) गोबर का
(ग) कल्पना का (घ) भाव का

प्रश्न 5 कवि ने अपने खेत में कौन सा बीज बोया है ?

(क) प्रेम रूपी बीज (ख) विचार रूपी बीज
(ग) शब्द रूप बीज (घ) धान रूपे बीज

प्रश्न 6 बगुले के पंख किसकी रचना है ?

(क) भवानी प्रसाद मिश्रा (ख) रामवृक्ष बेनीपुरी
(ग) फिराक गोरखपुरी (घ) उमाशंकर जोशी

प्रश्न 7 बगुले की पंक्ति कहां बंधी है ?

(क) जल में (ख) नभ मे
(ग) थल मे (घ) वायु में

प्रश्न 8 बगुलो के पंखो द्वारा कवि का क्या चुराए जाने की बात कही गई है ?

(क) आंख (ख) मन
(ग) बुद्धि (घ) ह्रदय

प्रश्न 9 बगुले के पंख काले बादलों के ऊपर तैरते किसके समान प्रतीत होते हैं ?

(क) प्रातःकाल की सुंदर काया
(ख) सायं काल की पीली काया
(ग) रात्रि की काली काया
(घ) सांझ की श्वेत काया

प्रश्न 10 उमाशंकर जोशी किस भाषा के कवि हैं ?

(क) गुजराती भाषा (ख) पंजाबी भाषा
(ग) बंगाली भाषा (घ) हिंदी भाषा

प्रश्न 11 दोनो कविताएं (छोटा मेरा खेत, बगुले के पंख) गुजराती भाषा से हिंदी रूपांतरण किसने किया ?

(क) रघुवीर चौधरी (ख) भोला भाई पटेल
(ग) क और ख दोनों (घ) दोनों मे से कोई नहीं

प्रश्न 12 कौन सी कविता एक सुंदर दृश्य की कविता है ?

(क) बगुले के पंख (ख) आत्म परिचय
(ग) कविता के बहाने (घ) बात सीधी थी पर

उत्तर-	1- (घ)	2- (घ)	3- (घ)	4- (ग)	5- (ग)
	6- (घ)	7- (ख)	8- (क)	9- (घ)	10- (क)
	11- (ग)	12- (क)			

Jharkhandlab.com

अध्याय - 11

भक्तिन

-महादेवी वर्मा

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न - 1. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

उत्तर - भक्तिन का वास्तविक नाम लक्षमिन अर्थात् लक्ष्मी था, जिसका अर्थ है - धन की देवी। लेकिन नाम के अनुसार लक्ष्मी के पास धन बिल्कुल नहीं था।वह गरीब थी, इसलिए वह अपना वास्तविक नाम छुपाना चाहती थी। लेखिका महादेवी वर्मा ने उसके गले में कंठी की माला देखकर उसका नया नामकरण किया था, क्योंकि लक्ष्मी ने अपना नाम लक्ष्मी न पुकारने की प्रार्थना लेखिका से की थी।

प्रश्न - 2. दो कन्या रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र- महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अक्सर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर - दो कन्या रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र- महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। भक्तिन की सास ने तीन पुत्रों को जन्म दिया था तथा जिठानियां भी पुत्रों को जन्म देकर सास को खुश कर दी थीं। ऐसी स्थिति में भक्तिन द्वारा सिर्फ कन्याओं के जन्म देने से उपेक्षा का शिकार बनी। यह सही है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। भक्तिन को उसके पति से अलग करने के लिए सास व जिठानियों ने ही षड्यंत्र किए। पुत्र न होना, दहेज प्रथा, सती प्रथा, बाल-विवाह, संतान न होना आदि मामलों में स्त्री ही समस्या को गंभीर बनाती हैं।

प्रश्न - 3. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

उत्तर - नारी पर समाज द्वारा हमेशा ही शोषित की जाती रही है। उसे इच्छानुसार पति चुनने की आजादी नहीं दी जाती। माता-पिता जिसे चाहे वही उसका पति बन जाता है। लड़की की इच्छा बिल्कुल शामिल नहीं होती। लड़की यदि मान जाती है तो ठीक वरना उसकी शादी जबरदस्ती करवा दी जाती है। उसे इस बात का कोई अधिकार नहीं है कि वह किससे विवाह करे या किससे न करे। स्त्री के इस मानवाधिकार को सदियों से कुचला जाता रहा है।

प्रश्न - 4. भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर- भक्तिन में सेवा-भाव है; वह कर्तव्यपरायणा भी है, परंतु इसके बावजूद भक्तिन के निम्नलिखित कार्य लेखिका को दुर्गुण लगते हैं -

(क) भक्तिन लेखिका के बिखरे पड़े रुपए- पैसों को भंडार घर की मटकी में छिपा देती थी। जब उससे इस कार्य के लिए पूछा जाता है तो वह अपने को सही ठहराने के लिए तरह-तरह के तर्क देती थी।

(ख) वह लेखिका को प्रसन्न रखने के लिए बात को इधर-उधर घुमाकर बताती थी। वह इसे झूठ नहीं मानती थी।

(ग) वह दूसरों को अपने अनुसार ढालना चाहती है परंतु स्वयं जैसे का तैसे रहना चाहती है।

(घ) शास्त्र की बातों को भी वह अपनी सुविधानुसार सुलझा लेती है। वह किसी के तर्क को नहीं मानती।

(ड.) पढ़ाई-लिखाई में उसकी रूचि बिल्कुल नहीं थी।

प्रश्न - 5. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

उत्तर - शास्त्र के प्रश्नों को भी भक्तिन अपनी सुविधानुसार सुलझा लेती है। वह सिर मुंडाए रखती थी, यह लेखिका को अच्छा नहीं लगता था। जब लेखिका भक्तिन को ऐसा करने से रोका तो उसने अपनी बात ऊपर रखते हुए कहा कि शास्त्र में यही लिखा है। जब लेखिका ने पूछा कि क्या लिखा है? उसने तुरंत उत्तर दिया - 'तीरथ गए मुंडाए सिद्ध।'यह बात किस शास्त्र में लिखी गई है, इसका ज्ञान भक्तिन को नहीं था जबकि लेखिका जानती थी कि यह कथन किसी व्यक्ति का नहीं है न ही किसी शास्त्र का है। अतः वह भक्तिन का चूड़ाकर्म हर बृहस्पतिवार को होने से लेखिका नहीं रोक सकी और यथाविधि निष्पन्न होता रहा।

प्रश्न - 6. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गईं ?

उत्तर - भक्तिन देहाती महिला थी। शहर में आकर भी उसने स्वयं कोई परिवर्तन नहीं किया। वह दूसरों को भी अपने अनुसार बना लेना चाहती थी। उसने लेखिका को अपने अनुसार ही ढालना शुरू किया। उसने लेखिका का मीठा खाना बिल्कुल बंद कर दिया। उसने गाढ़ी दाल व मोटी रोटी खिलाकर लेखिका की स्वास्थ्य संबंधी चिंता दूर कर दी। अब लेखिका को रात को मकई का दलिया, सवेरे मट्ठा, तिल लगाकर बाजरे के बनाए ठंडे पुए, ज्वार के भुने हुए भुट्टे के हरे-हरे दानों की खिचड़ी और सफेद महुए की लपसी मिलने लगी। इन सबको वह स्वाद से खाने लगी। इसके अतिरिक्त उसने महादेवी को देहाती भाषा भी सिखा दी। इस प्रकार महादेवी अधिक देहाती बन गई।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न -7. भक्तिन अनेक अवगुणों के होते हुए भी लेखिका के लिए अनमोल क्यों थी?

उत्तर - भक्तिन अनेक अवगुणों के होते हुए भी लेखिका के लिए अनमोल थी, क्योंकि वह लेखिका के हर कष्ट को लेने को तैयार थी। वह लेखिका की सेवा तत्परता के साथ करती थी। लेखिका के पास पैसे की कमी की बात सुनकर वह जीवन भर की अपनी कमाई उसे देना चाहती थी।

प्रश्न - 8. भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में विभक्त किया गया है?

उत्तर - भक्तिन के जीवन को चार परिच्छेदों में विभक्त किया गया है -

क. पहला परिच्छेद - भक्तिन का बचपन, मां की मृत्यु, विमाता के द्वारा भक्तिन का बाल विवाह कराना।

ख. दूसरा परिच्छेद - भक्तिन का वैवाहिक जीवन, सास तथा जिठानिओं का अन्यायपूर्ण व्यवहार, परिवार से अलगौझा करा लेना।

ग. तीसरा परिच्छेद - पति की मृत्यु, भक्तिन का विधवा अवस्था में संघर्षपूर्ण जीवन।

घ. चौथा परिच्छेद - आजीविका के लिए शहर में महादेवी वर्मा की सेविका के रूप में।

प्रश्न- 9. भक्तिन का दुर्भाग्य क्या था? उसे हठी क्यों कहा गया?

उत्तर - भक्तिन का दुर्भाग्य था कि उसकी बड़ी लड़की किशोरी से युवती बनी ही थी कि उसका पति मर गया। वह असमय विधवा हो गई। दुर्भाग्य को हठी इसलिए कहा गया है, क्योंकि बेटी के विधवा होने से पहले भक्तिन को बचपन से ही माता का बिछोह, बाल विवाह, विमाता का दंश, पिता की अकाल मृत्यु व असमय पति की मृत्यु जैसे जीवन में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा।

jharkhandlab.com

प्रश्न -10. भक्तिन की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - भक्तिन की चारित्रिक विशेषताएं निम्नांकित है -

क. समर्पित सेविका
ख. स्वाभिमानी
ग. परिश्रमी
घ. धर्म परायण
ड. संघर्षशील
च. तर्कशील

प्रश्न- 11. भक्तिन को शहर क्यों आना पड़ा?

उत्तर - भक्तिन को शहर आना पड़ा क्योंकि नए दामाद के आ जाने से घर में क्लेश बढ़ा। इस कारण खेती-बारी चौपट हो गई। लगान अदा न करने पर जमींदार ने भक्तिन को दिनभर कड़ी धूप में खड़ा रखा। इस अपमान व कमाई के विचार से शहर आई।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. भक्तिन पाठ की लेखिका कौन है ?

क. मोहन राकेश ख. सुभद्रा कुमारी चौहान
ग. महादेवी वर्मा घ. कीर्ति चौधरी

2. भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था ?

क. लक्षमिन(लक्ष्मी) ख. भक्तिन
ग. सेविका घ. दासी

3. भक्तिन पाठ में लेखिका ने भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में विभक्त किया है ?

क. दो ख. तीन
ग. चार घ. पांच

4. भक्तिन महादेवी वर्मा से कितने वर्ष बड़ी थी ?

क. 20 ख. 25
ग. 27 घ. 30

5. भक्तिन का विवाह किस गांव में हुआ था ?

क. मढैया ख. झूसी
ग. पूसी घ. हंडिया

6. भक्तिन का शूरवीर पिता किस गांव का रहने वाला था ?

क. झूसी ख. हंडिया
ग. मढैया घ. गढ़ैया

7. 'भक्तिन' संस्मरण महादेवी वर्मा की किस कृति में संकलित है ?

क. अतीत के चलचित्र ख. स्मृति की रेखाएं
ग. पथ के साथी घ. मेरा परिवार

8. भक्तिन का विवाह किस आयु में हुआ था ?

क. 3 वर्ष ख. 4 वर्ष
ग. 5 वर्ष घ. 9 वर्ष

9. भक्तिन का गौना किस उम्र में हुआ था ?

क. 5 वर्ष ख. 7 वर्ष
ग. 8 वर्ष घ. 9 वर्ष

10. "तुषारपात" का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

क. ओले गिरना ख. पत्ता गिरना
ग. पानी गिरना घ. मिट्टी गिरना

उत्तर -	1- ग	2- क	3- ग	4- ख	5- घ
	6- क	7- ख	8- ग	9- घ	10- क

Jharkhandlab.com

अध्याय- 12

बाजार दर्शन

-जैनेंद्र कुमार

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या क्या असर पड़ता है ?

उत्तर - बाजार का जादू चढ़ने पर मनुष्य बाजार की आकर्षक वस्तुओं के वश में हो जाता है। वह लालच में आकर गैर जरूरी चीजों को खरीदता चला जाता है। परंतु जब जादू उतरता है तो उसे ज्ञात होता है कि वह वस्तुएं उसे आराम देने की बजाय उसके आराम में खलल डालती हैं।

प्रश्न 2. बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन सा सशक्त पहलू उभर कर आता है? क्या आपकी नजर में उनका आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है ?

उत्तर - भगत जी चौक बाजार में आंखें खोलकर चलते हैं; लेकिन उसे देखकर भौंचक्के नहीं होते। वह खोए- खोए से खड़े नहीं रहते। बाजार के माल के प्रति उनके मन में कोई अप्रीति नहीं है। वह खुली आंख और भरे मन से बाजार जाते हैं। उनको जीरा और काला नमक खरीदना होता है तो वह सीधा पंसारी की दुकान पर रुकते हैं।

निश्चय भगत जी का आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है। अधिक से अधिक सामान जोड़ने की चाहत समाज में अशांति उत्पन्न करती है। यदि मनुष्य अपनी आवश्यकतानुसार ही खरीदारी करें तो महंगाई नहीं बढ़ेगी। मनुष्यों में असंतोष नहीं होगा। समाज में शांति स्थापित हो सकेगी।

प्रश्न 3. बाजारूपन से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं? अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है ?

उत्तर - बाजारूपन से तात्पर्य है- ऊपरी चमक-दमक और दिखावा। जब विक्रेता बेकार की वस्तुओं को आकर्षक बनाकर ग्राहक को बेचने लगते हैं या ग्राहक जरूरत की चीजों को छोड़कर मनी पावर दिखाने के लिए बाजार से माल ख़रीदता है तो वहां बाजारूपन आ जाता है।

जो मनुष्य बाजार से आवश्यकता की चीजें खरीदते हैं वह बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं इसी प्रकार जो दुकानदार ग्राहकों की आवश्यकता के अनुसार चीजें बेचते हैं वहां भी बाजार सार्थक हो जाता है।

प्रश्न 4. बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता। वह देखता है सिर्फ उसकी क्रय- शक्ति को। इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहां तक सहमत हैं ?

उत्तर - बाजार में सभी जाति, धर्म, और लिंग के व्यक्ति जाते हैं। सभी अपने मतलब के वस्तु खरीदते हैं। कोई भी ग्राहक या विक्रेता एक दूसरे की जाति, धर्म और लिंग नहीं देखते। वहां व्यक्ति की महत्ता उसकी क्रय - शक्ति पर निर्भर करती है। विक्रेता उसी ग्राहक को अधिक महत्व देता है जो अधिक खरीदारी करता है। इस दृष्टि से बाजार जाति- धर्म का भेद मिटाकर सामाजिक समता की रचना करता है।

प्रश्न 5. आप अपने तथा समाज के कुछ ऐसे प्रसंग का उल्लेख करें: -
(क) जब पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत हुआ।
(ख) जब पैसे की शक्ति काम नहीं आई।

उत्तर

(क) जब पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत हुआ - धनी लोगों के बच्चों की शादी में जब बड़े -बड़े लोगों की उपस्थिति देखते हैं तब आम आदमी पैसे की शक्ति का अनुभव करने लगता है। जब शादी के महंगे कार्ड, अतिथियों की बड़ी संख्या, तरह-तरह के पकवान आदि का वर्णन सुनने को मिलता है तब पैसे की शक्ति का परिचय मिलता है।

(ख) जब पैसे की शक्ति काम नहीं आई - कभी-कभी यह भी देखने को मिलता है कि पैसे की शक्ति व्यर्थ चली गई। इसका सबसे अच्छा उदाहरण मृत्यु का है। कोई कितना भी पैसा खर्च कर ले, मृत्यु को नहीं टाला जा सकता। कुछ ईमानदार लोगों को भी पैसे का लालच नहीं डिगा पाता। वहां भी पैसे की शक्ति काम नहीं आती।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. पैसे की व्यंग्य- शक्ति का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर - पैसे की व्यंग्य शक्ति का तात्पर्य है - पैसे के आधार पर अपने अभाव के कारण स्वयं को हीन समझना या अधिक पैसे के कारण स्वयं को ऊंचा समझना। पैसा ही हीनता या श्रेष्ठता का अनुभव कराता है यही पैसे की व्यंग्य शक्ति है।

प्रश्न 2. बाजार जाते समय किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर - बाजार जाते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम बिना जरूरत के वहां न जाएं। बाजार की हर वस्तु को ललचाई दृष्टि से न देखें। आवश्यकता की चीजें ही खरीदें। लेखक के शब्दों में वहां 'खाली मन ना जाएं।'

प्रश्न 3. लेखक ने किस प्रकार के बाजार को मानवता के लिए विडंबना कहा है और क्यों ?

उत्तर - लेखक ने ऐसे बाजार को मानवता के लिए विडंबना कहा है जिसमें लोग आवश्यकता- पूर्ति हेतु क्रय विक्रय नहीं करते बल्कि अपनी खरीदारी करने की क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। ऐसे बाजार में सद्भाव नष्ट होता है, कपट बढ़ता है, शोषण का बोलबाला होता है। सभी लोग दूसरे की हानि करके अपना लाभ कमाना चाहते हैं। ऐसे में कपटी सफल होता है, निष्कपट मारा जाता है। ऐसा बाजार पूरी मानवता के लिए अभिशाप है क्योंकि इसमें लाभ कम हानि अधिक होती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. बाजार दर्शन पाठ के लेखक कौन हैं?

क. फणीश्वर नाथ रेणु ख. जैनेंद्र कुमार
ग. विष्णु खरे घ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

jharkhandlab.com

2. **किस की गर्मी बाजार से अधिक सामान खरीदने पर विवश करती है ?**

क. मौसम की ख. दिमाग की

ग. पत्नी की घ. पैसे की

3. **फिजूल सामान को फिजूल समझने वाले लोगों को क्या कहा गया है ?**

क. मूर्ख ख. संयमी

ग. खर्चीला घ. स्वाभिमानी

4. **ऊंचे बाजार का आमंत्रण कैसा होता है ?**

क. आकर्षक ख. वाचाल

ग. मूक घ. भयंकर

5. **असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या मनुष्य को क्या बना देते हैं ?**

क. संयमी ख. संतोषी

ग. बहादुर घ. बेकार

6. **सजा - धजा बाजार क्या करता है ?**

क. आमंत्रित ख. नियंत्रित

ख. संगठित घ. संचालित

7. **बाजार में क्या है?**

क. वस्तुएं ख. गति

ग. जादू घ. सौंदर्य

8. **बाजार का जादू किसके माध्यम राह से काम करता है ?**

क. आंख ख. हाथ

ग. मुंह घ. नाक

9. **लू में जाना हो तो क्या पीकर जाना चाहिए ?**

क. चाय ख. पानी

ग. गरम दूध घ. कॉफ़ी

10. **भगत जी क्या बेचते हैं ?**

क. फल ख. मेवा

ग. चूरन घ. चना

उत्तर-	1- ख	2- घ	3- ख	4- ग	5- घ
	6- क	7- ग	8- क	9- ख	10- ग

Jharkhandlab.com

अध्याय - 13 काले मेघा पानी दे

-धर्मवीर भारती

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न-1. लोगों ने लड़कों की टोली को मेढ़क मंडली नाम किस आधार पर दिया ? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी ?

उत्तर- अनावृष्टि होने पर गाँव के किशोर, बच्चे टोली बनाकर गली-गली घूमकर लोगों से पानी माँगते थे, जब उनपर लोग पानी डालते तब प्रसन्नतापूर्वक पानी से सराबोर होकर धूल-मिट्टी में लोट-पोट जाते थे। गाँव के कुछ लोगों को लड़कों का नंग- धड़ंग होकर कीचड़ में लथपथ होना बुरा लगता था। वे इसे गँवारपन और अंधविश्वास समझते थे, इसलिए उन्होंने लड़कों की ऐसी टोली को मेढ़क मंडली नाम दिया था।

जबकि बच्चों का ऐसा मानना था कि वे इंदर की सेना के सैनिक है और उसी के लिए वे लोगों से पानी का दान माँगते है। अतः वे स्वयं को इंदर सेना के नाम से पुकारते थे।

प्रश्न- 2. जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

उत्तर- जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को निम्न तर्कों द्वारा सही ठहराया- त्याग और दान की महत्ता- ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है। जो चीज अपने पास भी कम हो और अपनी आवश्यकता को भूलकर यह चीज दूसरों को दान कर देना ही त्याग है। कुछ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है। अतः देवता से भी कुछ माँगने के पहले उन्हें कुछ दान भी करना पड़ता है।

- इंद्रदेव को जल का अर्घ्य चढ़ाना - इंदरसेना पर पानी फेंकना पानी की बरबादी नहीं बल्कि इंद्रदेव को जल का अर्घ्य चढ़ाना है ताकि वे प्रसन्न होकर धरती को तृप्त करें।
- पानी की बुवाई करना - जिस प्रकार किसान फसल उगाने के लिए जमीन पर अपने सबसे अच्छे बीजों का दान कर बुवाई करता है, वैसे ही पानी वाले बादलों की फसल पाने के लिए इन्दर सेना पर पानी डाल कर पानी की बुवाई की जाती है।

प्रश्न- 3. पानी दे, गुड़धानी दे मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है ?

उत्तर- गुड़धानी अनाज और गुड़ के मिश्रण को कहते हैं। यहाँ पर गुड़धानी से तात्पर्य अच्छी फसल से है। हमारी अर्थव्यस्था कृषि पर आधारित है, इस कारण जब अच्छी वर्षा होगी तभी अच्छी फसल भी होगी इसलिए पानी के साथ गुड़धानी की माँग की जा रही है। यहाँ गुड़धानी प्रसन्नता और खुशहाली का प्रतीक भी है।

प्रश्न- 4. गगरी फूटी बैल पियासा इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है?

उत्तर- बैल हमारी कृषि संस्कृति का अविभाजित हिस्सा है या यूँ कहें बैल भारतीय कृषि संस्कृति की रीढ़ की हड्डी है। किसान बैलों से ही खेतों को जोतकर अन्न उपजाते हैं। उनके प्यासे रहने पर कृषि प्रभावित होती है इसलिए गगरी फूटी बैल पियासा इंदरसेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात कृषि के संदर्भ में मुखरित हुई है, जब वे तृप्त होंगे तभी खेतों में किसानों की मेहनत को बल मिलेगा और धरती फसलों से संपन्न होगी।

प्रश्न- 5. इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है ? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है ?

उत्तर- भारतीय समाज - संस्कृति में गंगा सबसे पूजनीय नदी और जल का आदिम स्रोत है। जिसका भारतीय इतिहास में धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक महत्त्व है। वह भारतीयों के लिए केवल एक नदी नहीं अपितु माँ है। उसमें पानी नहीं अपितु अमृत तुल्य जल बहता है। भारतीय संस्कृति में नदियों के किनारे मानव सभ्यताएँ फली - फूली हैं। बड़े-बड़े नगर, तीर्थ स्थान नदियों के किनारे स्थित हैं, ऐसे परिवेश में भारतवासी सबसे पहले गंगा मैया की जय ही बोलेंगे और इसलिए ही इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय ही बोलती है।

प्रश्न- 6. रिश्तों में हमारी भावना-शक्ति बँट जाना विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति को कमज़ोर करती है। पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के संदर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए।

उत्तर - लेखक का अपनी जीजी के प्रति गहरा प्यार था। वह अपनी जीजी को बहुत मानता था। दोनों में भावनात्मक संबंध बहुत गहरा था। लेखक जिस परंपरा का या अंधविश्वास का विरोध करता है जीजी उसी का भरपूर समर्थन करती है। धीरे-धीरे लेखक और उसकी जीजी के बीच की भावनात्मक शक्ति बँटती चली जाती हैं। लेखक का विश्वास डगमगाने लगता है। वह कहता भी है कि मेरे विश्वास का किला ढहने लगा था। उसकी जीजी लेखक की बुद्धि शक्ति को भावनात्मक रिश्तों से कमजोर कर देती है। इसलिए लेखक चाहकर भी किसी बात का विरोध नहीं कर पाता। यद्यपि वह विरोध जताने का प्रयास करता है लेकिन अंत में उसे जीजी के आगे समर्पण करना पड़ता है।

(अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर) लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न- 1. 'काले मेघा पानी दे' शीर्षक निबन्ध का मूल भाव या प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- निबन्ध का प्रतिपाद्य यह है कि विज्ञान तर्क की कसौटी पर खरी उतरने वाली बात को ही सत्य मानता है। साथ ही विश्वास भावना के आधार पर अनहोनी-होनी सबको सत्य मान लेता है। भारतीय समाज में अन्धविश्वास होते हुए भी उनमें सामाजिक कल्याण की भावना सांस्कृतिक चेतना एवं संस्कारों से पल्लिवत होती है।

प्रश्न- 2. 'इंदर सेना' अनावृष्टि दूर करने के लिए क्या करती थी ?

उत्तर- 'इन्द्र सेना' में गाँव के दस-बारह वर्ष से सोलह-अठारह वर्ष के सभी लड़के नंग-धड़ंग उछल-कूद, शोर-शराबे के साथ कीचड़-मिट्टी को शरीर पर मलते हुए घर-घर जाते थे और' बोल गंगा मैया की जय' का नारा लगाते हुए पानी की माँग करते थे। वे आस्था के कारण इन्द्र देवता से बारिश करने के लिए प्रार्थना करते हुए ऐसा करते हैं।

प्रश्न- 3. समय पर वर्षा न होने से गाँववासी कौन-कौन से उपाय करते थे?

उत्तर- गाँववासी अपनी आस्था के अनुसार इन्द्रदेवता को प्रसन्न करने के लिए सामूहिक रूप से पूजा-पाठ कराते, कथा-कीर्तन एवं रात्रि-जागरण आदि सारे कार्य करते। इन सब उपायों के बाद भी वर्षा नहीं होती, तो इन्द्र सेना आकर इन्द्रदेवता से जल-वर्षण की प्रार्थना करती थी।

प्रश्न- 4. जीजी के त्याग व दान के विषय में क्या विचार थे ? 'काले मेघा पानी दो' अध्याय के आधार पर बताइये।

उत्तर- इस सम्बन्ध में जीजी के विचार थे कि जो चीज मनुष्य पाना चाहता है, उसे पहले खुद देना पड़ता है–त्याग करना पड़ता है। बिना त्याग के दान नहीं होता है। जो चीज बहुत कम है, उसका त्याग करने से ही लोक-कल्याण होता है। इससे स्वार्थ-भावना कम होती है और परोपकार भावना बढ़ती है।

प्रश्न- 5. इंदर सेना पर पानी फेंकने से मना करने पर जीजी ने क्या प्रयास किया और लेखक को कैसे समझाया ?

उत्तर- तब जीजी ने उसके मुँह में मठरी डालते हुए समझाया कि इन्द्र सेना पर पानी फेंकना पानी की बर्बादी नहीं है, यह पानी का अर्घ्य चढ़ाना है। जो चीज हमारे पास कम हो और प्रिय भी हो, उसका दान करना ही सच्चा त्याग है। इन्द्र सेना को पानी देने से इन्द्र देवता प्रसन्न होंगे और वे हमें पानी देंगे अर्थात् वर्षा करेंगे।

प्रश्न- 6. "हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं, वह भी बुवाई है।" जीजी के इस कथन का क्या आशय है? क्या आप इससे सहमत हैं?

उत्तर: किसान को अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो वह पाँच-छः सेर अच्छा गेहूँ लेकर उसकी जमीन में बुवाई कर देता है। इस तरह बुवाई करने से उसको कई गुना अनाज प्राप्त होता है। इसी प्रकार इन्दर सेना पर हम जो पानी फेंकते हैं, वह भी पानी की बुवाई है। इससे बादलों से कई गुना अधिक पानी मिलता है। हम जीजी के इस तर्क से सहमत नहीं हैं, क्योंकि इसमें अन्धविश्वास की अधिकता है।

प्रश्न 7. "हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं।" इससे लेखक ने क्या आक्षेप किया है?

उत्तर- इससे लेखक ने वर्तमान काल में पनप रहे भ्रष्टाचार पर आक्षेप किया है। आज भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है। आज हर किसी के भ्रष्टाचार पर बातें खूब की जाती हैं, परन्तु स्वयं के भ्रष्टाचरण पर सब चुप रहते हैं। इससे समाज, देश तथा मानवता का पतन हो रहा है।

प्रश्न- 8. "यह सच भी है कि यथा प्रजा तथा राजा।" इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कहावत प्रसिद्ध है - 'यथा राजा तथा प्रजा', अर्थात जैसा राजा होगा, प्रजा भी वैसी ही होगी। राजा दानी, त्यागी और परोपकारी होगा, तो प्रजा भी उसी के अनुरूप आचरण करेगी, परन्तु प्रजा के आचरण का प्रभाव राजा पर भी पड़ता है। जनता त्याग-भावना का आचरण करती है तो तब राजा अर्थात् देवता भी त्याग करते हैं, जनता की प्रार्थना सुनकर इच्छित फल देते हैं।

प्रश्न 9. जीजी के प्यार के कारण लेखक के सामने क्या मुश्किल आ गई थी ?

उत्तर: लेखक आर्यसमाजी प्रभाव के कारण इन्द्र सेना के आचरण को, धार्मिक परम्पराओं को अन्धविश्वास और पाखण्ड मानता था। परन्तु उनके सामने यह मुश्किल थी कि जीजी के प्यार के कारण अनिच्छा से वह पूजा-पाठ एवं गहरी श्रद्धा होने से उनका साथ देता था और उनके स्नेह के कारण मजबूरी में सारे धार्मिक अनुष्ठान करता था।

प्रश्न 10. जीजी के अनुसार आज भारत के लोगों का आचरण किस प्रकार का हो गया है ?

उत्तर: आज भारत में लोगों का आचरण स्वार्थी हो गया है। स्वार्थपरता के कारण वे दूसरों की कठिनाइयों एवं कष्टों की कोई चिन्ता नहीं करते हैं। लोग परमार्थ और परोपकार को भूलते जा रहे हैं। समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ध्यान नहीं रखते परन्तु अपने अधिकारों की बात करते हैं। अब देश-प्रेम कोरे उपदेश का विषय बन गया है।

प्रश्न 11. "इन बातों को आज पचास से ज्यादा बरस होने को आये"- लेखक को पचास वर्ष पूर्व की कौन-सी बात कचोटती है?

उत्तर: लेखक को पचास वर्ष जीजी ने दान और त्याग के साथ ही आचरण को लेकर जो कुछ कहा था, वह बात आज के सन्दर्भ में लेखक को कचोटती है, क्योंकि आज लोग त्याग और दान को भूल गये हैं। देश एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को नहीं निभाते हैं। केवल स्वार्थ, भ्रष्टाचार, अधिकार-प्राप्ति और छल-कपट रह गया है।

प्रश्न 12. "गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं।" इस कथन से क्या व्यंजना की गई है?

उत्तर- यह कथन प्रतीकात्मक है। वर्तमान में हमारे देश में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। जनता के कल्याण के लिए बनने वाली विकास योजनाओं रूपी गगरी में भ्रष्टाचार के छेद हो गये हैं। योजनाएँ तो खूब बनती हैं, पर उनका लाभ आम जनता को नहीं मिलता है, इस तरह उक्त कथन से समकालीन भ्रष्ट शासन की व्यंजना की गई है।

प्रश्न- 13. 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण द्वारा लेखक ने क्या सन्देश व्यक्त किया है?

उत्तर- लेखक ने यह सन्देश दिया है कि विज्ञान अपनी जगह सत्य है तथा उसके आविष्कारों से सभी परिचित हैं। फिर भी जनता के सामूहिक चित्त में अन्धविश्वास और लौकिक कर्मकाण्ड का इतना प्रभाव है कि विज्ञान भी उसके सामने कमजोर पड़ जाता है। अतएव परम्परागत मान्यताओं तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण में जन-भावना के अनुसार समन्वय रखना जरूरी है।

प्रश्न 14. 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर समझाइए कि लेखक ने भारतीयों का अंग्रेजों से पिछड़ने व .. उनका गुलाम बनने के क्या कारण बताये हैं? वह उस स्थिति में सुधार चाहते हुए भी क्यों नहीं कर पाता है?

उत्तर: लेखक ने भारतीयों का अंग्रेजों से पिछड़ने एवं उनका गुलाम होने का कारण पाखण्ड और अन्धविश्वास बताया है। भारतीयों में रूढ़िवादी धार्मिक मान्यता एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण अशिक्षित या अर्द्ध-शिक्षित लोग अन्धविश्वासों से छुटकारा नहीं पाते हैं। रूढ़ संस्कारों के कारण चाहते हुए भी इस स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है।

प्रश्न 15. "विज्ञान का सत्य बड़ा है या सहज प्रेम का रस?" काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: आज विज्ञान का युग है और वैज्ञानिक विकास को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि विज्ञान का सत्य बड़ा है। जीजी ने लेखक को सहज प्रेम-भाव में इन्द्र सेना पर पानी फेंकना उचित आचरण बताया। लेखक न चाहता हुआ भी उसके अनुसार कार्य करने लगा। इसका कारण जीजी का सहज प्रेम ही था।

प्रश्न16. तकनीकी विकास के दौर में भी भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। कृषि समाज में चैत्र, वैशाख सभी माह बहुत महत्त्वपूर्ण है पर आषाढ़ का चढ़ना उनमें उल्लास क्यों भर देता है?

उत्तर- आषाढ़ का महीना वर्षा ऋतु का प्रतीक माना जाता है। यह महीना किसानों में अच्छी एवं नयी फसल की आशा जगाता है। इसी महीने में अधिकतम वर्षा भी होती है। इस कारण आषाढ़ शुरू होते ही किसानों में वर्षा की आशा,अच्छी फसल की उम्मीद और उल्लास बढ़ने लगता है।

प्रश्न17. पाठ के संदर्भ में इसी पुस्तक में दी गई निराला की कविता बादल - राग पर विचार कीजिए और बताइए कि आपके जीवन में बादलों की क्या भूमिका है?

उत्तर- कवि निराला की कविता 'बादल राग' में बादलों को क्रांति के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है। बादल शोषित वर्ग को शोषकों द्वारा मुक्त कर उन्हें उनका अधिकार दिलाता है। उन्हें जाग्रत करता है। उसी प्रकार हमारे जीवन में बादल अहम् भूमिका निभाते हैं। बादल न केवल प्यासी धरती की प्यास बुझाते हैं बल्कि नव सृजन में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रकृति और मनुष्य दोनों ही इन पर निर्भर रहते हैं।

प्रश्न18. पानी का संकट वर्तमान स्थिति में भी बहुत गहराया हुआ है। इसी तरह के पर्यावरण से संबद्ध अन्य संकटों के बारे में लिखिए।

उत्तर- पर्यावरण से संबद्ध अन्य संकट निम्न है - मौसम में बदलाव, भूमि का बंजर होना, अतिवृष्टि होना, वायु प्रदूषण की अधिकता, तापमान में वृद्धि आदि।

Jharkhandlab.com

(अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर) दीर्घत्तरीय प्रश्न

प्रश्न- 1. क्या इंदर सेना आज के युवा वर्ग का प्रेरणास्रोत हो सकती है? क्या आपके स्मृति कोश में ऐसा कोई अनुभव है जब युवाओं ने संगठित होकर समाजोपयोगी रचनात्मक कार्य किया हो ? उल्लेख करें।

उत्तर- इंदर सेना सही मायनों में आज के युवा वर्ग का प्रेरणा स्रोत बन सकती है क्योंकि किसी भी सामाजिक समस्या को यदि सुलझाना हो तो उसके लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक होता है और यह प्रयास इंदर सेना द्वारा भी किया जाता था। यद्यपि उन्हें गाँव वालों की आलोचना का भी सामना करना पड़ता था, फिर भी वे साहस नहीं छोड़ते थे। सामूहिक शक्ति से हम किसी भी आंदोलन को सफल बना सकते हैं। जैसे पर्यावरण संबंधी चिपको आंदोलन अथवा महात्मा गाँधी जी के सभी आन्दोलन इसी सामूहिक प्रयास से ही सफल हुए।

प्रश्न- 5. आपकी दादी - नानी किस तरह के विश्वासों की बात करती है? ऐसी स्थिति में उनके प्रति आपका रवैया क्या होता है? लिखिए

उत्तर- हमारी दादी-नानी अनेक प्रकार के व्रत-उपवास, त्योहार, धार्मिक अनुष्ठान आदि में गहरी आस्था रखती हैं। उनकी इस आस्था से हम सभी प्रभावित होते हैं। हम उनकी कुछ आस्थाओं (बिल्ली का रास्ता काटना, निकलते समय छींक का आना, आँख का फड़कना, पशुओं का रोना आदि) को अंधविश्वास भी मानते हैं परंतु फिर भी उसका विरोध नहीं कर पाते क्योंकि हमें लगता है कि इसका कारण उनकी अशिक्षा और पुराने ख्यालों का होना है। हमारे विरोध से उन्हें दुःख पहुँचेगा और साथ ही पारिवारिक शांति भी भंग होगी और वैसे भी वे जो कुछ भी इन आस्थाओं के वशीभूत होकर करती हैं उसके पीछे उनका उद्देश्य तो पारिवारिक भलाई ही होता है इसलिए हम उनकी बातों को बिना कोई तर्क दिए मान लेते हैं।हम उन्हें दुःख नहीं पहुंचाना चाहते।

प्रश्न- 6. लेखक धर्मवीर भारती के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।

उत्तर - **लेखक परिचय** - स्वातन्त्र्योत्तर साहित्यकारों में अग्रणी स्थान रखने वाले धर्मवीर भारती का जन्म इलाहाबाद नगर में सन् 1926 ई. में हुआ। वहीं से उच्च शिक्षा प्राप्त कर ये स्वावलम्बी बने। 'अभ्युदय' और 'संगम' पत्रों का सम्पादन-सहयोग करने के बाद ये प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक बने। कुछ समय बाद विश्वविद्यालय की नौकरी छोड़कर मुम्बई चले गये और वहाँ ' धर्मयुग' पत्रिका का सम्पादन करने लगे।

इन्हें 'दूसरा सप्तक' के कवियों में स्थान प्राप्त हुआ। इन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्ति स्वातन्त्र्य, मानवीय संकट तथा रोमानी चेतना को अभिव्यक्ति दी है। इनकी रचनाओं में सामाजिक चेतना के साथ संगीत की लय मिलती है। इस विशेषता से ये रोमानी गीतकार माने जाते हैं। इन्हें पद्मश्री, व्यास सम्मान एवं साहित्य-जगत् के कई अन्य राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। भारती जी का निधन सन् 1997 ई. में हुआ।

रचनाएँ- इन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, गीतिनाट्य और रिपोर्ताज आदि सभी में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - 'कनुप्रिया', 'सात गीत-वर्ष', 'ठंडा लोहा' (काव्य-संग्रह); 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'गुनाहों का देवता' (उपन्यास); 'अंधा युग' (गीतिनाट्य); 'मुर्दो का गाँव', 'चाँद और टूटे हुए लोग', 'बन्द गली का आखिरी मकान' (कहानी-संग्रह); 'ठेले पर हिमालय', 'कहनी-अनकहनी', 'पश्यन्ती', 'मानव मूल्य और साहित्य' (निबन्ध-संग्रह)।

प्रश्न- 7. 'काले मेघा पानी दे' निबन्ध का सारांश लिखिए।

उत्तर - 'काले मेघा पानी दे' निबन्ध लोकजीवन के विश्वास एवं उनसे उत्पन्न हुई मान्यताओं पर आधारित है। विज्ञान के तर्क एवं लोगों का विश्वास दोनों अपनी जगह सत्य हैं इस बात को पुष्ट करता है। भीषण गर्मी के कारण पानी की कमी से बेहाल गाँव के लोग वर्षा कराने के उद्देश्य से पूजा-पाठ और कथा-विधान करके जब थक-हार जाते हैं तब वर्षा कराने का अंतिम उपाय के रूप में इन्द्र सेना निकलती है।

इन्दर सेना नंग-धड़ंग बच्चों की टोली है, जो कीचड़ में लथपथ होकर गली-गली पानी माँगने निकलती है। लोग घरों की छतों से उन पर पानी फेंकते हैं। लोगों की मान्यता है कि इन्द्र बादलों के स्वामी और वर्षा के देवता हैं। इन्द्र की सेना पर पानी डालने से इन्द्र भगवान प्रसन्न होकर पानी बरसायेंगे।

प्रश्न- 8. 'काले मेघा पानी दे' निबन्ध के माध्यम से लेखक ने वर्तमान की किस समस्या की ओर संकेत किया है और कैसे?

उत्तर - आर्यसमाजी विचारधारा वाला लेखक इन्द्र देवता को मनाने के लिए तथा पूजा-पाठ सम्बन्धी सभी क्रिया कलापों को अंधविश्वास मानता है। इसके विपरीत अपने जीजी के विचारानुसार एवं स्नेहवश वह सभी कार्य करते भी हैं। उनकी जीजी कहती है कि कुछ पाने के लिए कुछ देना भी पड़ता है। त्याग के बिना दान नहीं होता है। लेखक ने भ्रष्टाचार की समस्या को उठाते हुए कहा है कि जीवन में कुछ पाने के लिए त्याग आवश्यक है। जो लोग त्याग और दान की महत्ता को नहीं मानते, वे ही भ्रष्टाचार में लिप्त रह कर देश और समाज को लूटते हैं। सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं का लाभ गरीबों तक नहीं पहुंच रहा है। काले मेघा के दल उमड़ रहे हैं पर आज भी गरीब की गगरी फूटी हुई है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. इंदर सेना आज के युवा वर्ग का प्रेरणा-स्रोत बन सकती है?
क. हाँ　　ख. नहीं
ग. कह नहीं सकते　　घ. इनमें से कोई नहीं

2. 'काले मेघा पानी दे' पाठ के लेखक का नाम है-
क. जैनेंद्र कुमार　　ख. महादेवी वर्मा
ग. रघुवीर सहाय　　घ. धर्मवीर भारती

3. 'इंदर सेना' को लेखक ने क्या नाम दिया है ?
क. वानर सेना　　ख. राम सेना
ग. मेढ़क-मंडली　　घ. कछुआ मंडली

4. इंदर सेना द्वारा जल का दान माँगने को लेखक क्या कहता है ?
क. अंधविश्वास　　ख. लोक विश्वास
ग. धार्मिक विश्वास　　घ. लोक परंपरा

5. इंदर सेना के किशोर पानी और कीचड़ में लोट-लोट कर क्या माँगते हैं ?
क. रोटी　　ख. वर्षा
ग. जल　　घ. पैसे

6. लोगों ने लड़कों की टोली को मेढक-मंडली नाम क्यों दिया?
क. नंग-धड़ंग शरीर के साथ कीचड़-कांदों में लोटने के कारण
ख. अनावृष्टि में जल माँगने के कारण
ग. शोर-शराबे द्वारा गाँव की शांति भंग करने के कारण
घ. तालाब में मेंढकों के समान उछलने के कारण

7. किशोर अपने-आप को इंदर सेना क्यों कहते हैं ?
क. वर्षा के लिए इंद्र को प्रसन्न करने के लिए
ख. लोगों से जल माँगने के लिए
ग. इंद्र देवता से प्यार करने के लिए
घ. इंद्र के समान आचरण करने के लिए

Jharkhandlab.com

8. **'गुड़धानी' से क्या अभिप्राय है ?**
   क. अनाज
   ख. पानी
   ग. गुड़ और चने से बना लड्डू
   घ. धन-संपत्ति

9. **लंगोटधारी युवक किसकी जय बोलते हैं ?**
   क. इंद्र देवता की ख. गंगा मैया की
   ग. भगवान की घ. बादलों की

10. **लेखक बचपन से किससे प्रभावित है?**
   क. ब्रह्म समाज से ख. सनातन धर्म से
   ग. प्रार्थना सभा से घ. आर्य समाज से

11. **लेखक किस सभा का उपमंत्री था ?**
   क. युवक सभा का ख. बटता सभा का
   ग. कुमार सुधार सभा का घ. आर्य सभा का

12. **जीजी लेखक के हाथों पूजा-अनुष्ठान क्यों कराती थी ?**
   क. अपने कल्याण के लिए
   ख. लेखक के कल्याण के लिए
   ग. समाज-कल्याण के लिए
   घ. परिवार के कल्याण के लिए

13. **जीजी ने इंदर सेना पर डाले हुए पानी को क्या कहा ?**
   क. सूर्य देवता को अर्घ्य ख. बादल को अर्घ्य
   ग. इंद्र देवता को अर्घ्य घ. किसान को अर्घ्य

14. **किन लोगों ने त्याग और दान की महिमा का गुणगान किया है ?**
   क. ऋषि-मुनियों ने ख. देवताओं ने
   ग. राजनीतिज्ञों ने घ. शिक्षकों में

15. **किस वस्तु का दान महत्त्वपूर्ण है ?**
   क. जो वस्तु तुम्हारे पास बहुत अधिक है
   ख. जो वस्तु तुम्हारे पास बहुत कम है
   ग. जो वस्तु तुम्हारे पास नहीं है
   घ. जो वस्तु तुमने किसी से उधार ली है

16. **'काले मेघा पानी दे' में लेखक ने किस भाषा का प्रयोग किया है?**
   क. साहित्यिक ब्रज भाषा का
   ख. सामान्य बोलचाल की ब्रज भाषा का
   ग. साहित्यिक हिंदी भाषा का
   घ. उर्दू प्रधान हिंदी भाषा का

उत्तर-	1- क	2- घ	3- ग	4- क	5- ख
	6- क	7- क	8- ग	9- ख	10- घ
	11- ग	12- ख	13- ग	14- क	15- ख
	16- ग				

Jharkhandlab.com

अध्याय - 14

पहलवान की ढोलक

फणीश्वरनाथ रेणु

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दांव पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते हैं, उन्हें शब्द दीजिए।

उत्तर - कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दांव पेंच में अद्भुत तालमेल था। ढोल बजते ही लुट्टन की रगों में खून दौड़ने लगता था। उसे हर थाप में नए दांव पेंच सुनाई पड़ते थे। ढोल की आवाज उसे हिम्मत प्रदान करती थी। ढोल की आवाज और लुट्टन के दांव पेंच में निम्नलिखित तालमेल था -

(क) धाक धिना, तिरकट तिना - दांव काटो, बाहर हो जाओ।

(ख) चटाक - चट - धा - उठाकर पटक दे।

(ग) धिना - धिना, धिक - धिना - चित करो चित करो।

(घ) ढाक ढीना - वाह पट्ठे।

(च) चट - गिड़- धा - मत डरना।

ये ध्वन्यात्मक शब्द हमारे मन में उत्साह का संचार करते हैं।

प्रश्न 2. कहानी के किस - किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर - लुट्टन पहलवान का जीवन उतार-चढ़ाव से भरा रहा। जीवन के हर दुःख - सुख से उसे दो - चार होना पड़ा। सबसे पहले बचपन में ही उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई। उसका पालन - पोषण उसकी विधवा सास ने किया। उसके बाद उसने चांद सिंह को हराकर राज दरबार का स्थायी पहलवान बना। फिर काला खां को भी हरा कर उसने अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर ली। वह 15 वर्षों तक अजेय रहा। अपने दोनों बेटों को भी राज दरबार का भावी पहलवान बना लिया। राजा साहब की मृत्यु के बाद उस पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। विलायत से आते ही राजकुमार ने पहलवान और उसके दोनों बेटों को दरबार से निकाल दिया। गांव में फैली महामारी के कारण एक दिन दोनों बेटे चल बसे। कुछ दिन बाद स्वयं पहलवान भी चल बसा।

प्रश्न 3. लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं,यही ढोल है?

उत्तर - लुट्टन ने किसी गुरु से कुश्ती के दांव - पेंच नहीं सीखे थे। उसे प्रेरणा मिलती थी तो केवल ढोलक की आवाज से। ढोलक की हर ताल पर उसकी नसें उत्तेजित हो उठती थी और तन - बदन कुश्ती के लिए मचल उठता था। श्यामनगर के मेले में भी उसने चांद सिंह को ढोलक की आवाज से ही हराया था। इसलिए कुश्ती जीतने के बाद उसने ढोल को प्रणाम किया और वह ढोल को ही अपना गुरु मानने लगा।

प्रश्न 4. गांव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर - गांव में लुट्टन पहलवान की ढोल की आवाज का गहरा प्रभाव पड़ता था। यह आवाज गांव के लोगों को भी उत्साहित करती थी। गांव में महामारी के कारण लोगों में सन्नाटा छाया हुआ था। उसी ढोल की आवाज से लोगों को जीवन का एहसास होता था। लोग समझते थे कि जब लुट्टन का ढोल बज रहा है तो मौत का कैसा डर। इसलिए अपने बेटों की मौत के बावजूद भी वह मौत के सन्नाटे को तोड़ने के लिए लगातार ढोल बजाता रहा।

प्रश्न 5. ढोलक की आवाज का पूरे गांव में क्या असर होता था?

उत्तर - ढोलक की आवाज से रात का सन्नाटा और भय कम हो जाता था। बच्चे, बूढ़े या जवान ढोलक की आवाज से सबकी आंखों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता था और वे सभी उत्साह से भर जाते थे। लोग भले ही बीमारी के कारण मर रहे थे लेकिन जब तक जीवित थे ढोलक की आवाज के कारण उन्हें मरने का भय नहीं सताता था। ढोलक की आवाज से उनका दर्द कम हो जाता था और वह आराम से मर सकते थे।

प्रश्न 6. महामारी फैलने के बाद गांव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

उत्तर - महामारी फैलने के बाद गांव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में बहुत अंतर था। सूर्योदय के समय सभी लोग लाशों को जलाने के लिए जाते थे। अपने पड़ोसियों और आत्मीयों को हिम्मत देते थे। किंतु सूर्यास्त होते ही लोग अपने अपने घरों में घुस जाते थे। उसके बाद कोई चूं की आवाज भी नहीं आती थी। धीरे-धीरे उनके बोलने की शक्ति भी जाती रहती थी। पास में दम तोड़ते पुत्र को अंतिम बार बेटा कहकर पुकारने की भी हिम्मत माताओं में नहीं होती थी। रात्रि में सिर्फ पहलवान की ढोलक ही महामारी को चुनौती देती थी।

प्रश्न 7. कुश्ती का दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था -

क. ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं है?

ख. इसकी जगह अब किन खेलों ने ले ली है?

ग. कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं?

उत्तरः

(क) कुश्ती, दंगल और पहलवानी राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। यही उनके मनोरंजन का भी साधन था। लेकिन अब राजतंत्र की जगह लोकतंत्र ने ले ली है और मनोरंजन के भी कई साधन आ चुके हैं। इसलिए अब ऐसी स्थिति नहीं है।

(ख) इसकी जगह अब फुटबॉल, क्रिकेट, वॉलीबॉल, टेनिस, शतरंज, बैडमिंटन आदि खेलों ने ले ली है।

(ग) कुश्ती को फिर से लोकप्रिय बनाने के लिए ग्रामीण स्तर पर कुश्ती की प्रतियोगिताएं कराई जा सकती हैं। सरकार द्वारा भी इसे प्रोत्साहन दिया जा सकता है जिससे खिलाड़ियों की दिलचस्पी उसमें बढ़े।

प्रश्न 8. आशय स्पष्ट करें -

आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिला कर हंस पड़ते थे।

उत्तर - महामारी के कारण गांव में हर तरफ भय का साम्राज्य फैल गया था इस कारण गांव की रात भी बहुत भयानक प्रतीत होती थी ऐसे समय में लेखक ने रात के दृश्य का वर्णन किया है। ऐसे समय में यदि कोई तारा लोगों के बीच आकर इनके दुखों को समेटना भी चाहता है तो वह रास्ते में ही गायब हो जाता है। वह पृथ्वी पर नहीं पहुंच पाता है। अन्य सभी तारे उस तारे की इस स्थिति पर मजाक उड़ाते प्रतीत होते हैं।

jharkhandlab.com

प्रश्न 9. पाठ में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया है पाठ में से ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।
क. अंधेरी रात चुपचाप आंसू बहा रही थी।

उत्तर - यहां पर रात का मानवीकरण किया गया है। गांव में हैजा और मलेरिया फैला हुआ था। महामारी की चपेट में आकर लोग मर रहे थे। चारों ओर मौत का सन्नाटा छाया हुआ था। ऐसे में ओस की बूंदे आंसू बहाती सी प्रतीत हो रही थी।

(ख) अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिला कर हंस पढ़ते थे।

उत्तर - यहां तारों को हंसता हुआ दिखाकर उनका मानवीकरण किया गया है। यहां पर तारे मजाक उड़ाते हुए प्रतीत हो रहे हैं।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लुट्टन पहलवान की पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताइए।

उत्तर - लुट्टन जब नौ वर्ष का था उसी समय उसके माता-पिता की मृत्यु हो चुकी थी। उसका विवाह बचपन में ही हो चुका था। उसकी विधवा सास ने उसका पालन पोषण किया। वह अपनी सास के यहां गायों को चराता, कसरत करता और बड़ा हो गया। समय के साथ उसका शरीर काफी मजबूत हो गया। इसके बाद वह पहलवानी में जोर आजमाइश करने लगा।

प्रश्न 2. गांव में फैली बीमारी से उत्पन्न गांव की दशा का चित्रण लेखक ने किस प्रकार किया है?

उत्तर - हैजा और मलेरिया के प्रकोप से गांव में भयंकर महामारी फैली हुई थी। चारों तरफ मौत का भयानक तांडव चल रहा था। सियारों के रोने और उल्लुओं की डरावनी आवाज कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गांव की झोपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज, हरे राम, हे भगवान की टेर अवश्य सुनाई देती थी। बच्चे कभी-कभी निर्बल कंठ से मां - मां पुकार कर रो पड़ते थे।

प्रश्न 3. जब मैनेजर और सिपाहियों ने लुट्टन को चांद सिंह से लड़ने से मना कर दिया तो लुट्टन ने क्या कहा ?

उत्तर - मैनेजर और सिपाहियों की बातें सुनकर लुट्टन गिड़गिड़ाने लगा। वह राजा साहब के सामने जा खड़ा हुआ। उसने कहा दुहाई सरकार, अगर लड़ने की अनुमति नहीं मिली तो पत्थर पर माथा पटक - पटक कर मर जाऊंगा। लेकिन लडूंगा अवश्य सरकार। वह कहने लगा लड़ेंगे सरकार, हुकुम हो सरकार।

प्रश्न 4. राजा साहब ने लुट्टन सिंह को सहारा क्यों दिया था ? अंत में उसकी दुर्गति होने का क्या कारण था ?

उत्तर - श्याम नगर के दंगल में जब लुट्टन सिंह ने चांद सिंह को हरा दिया तब राजा साहब ने उसे आश्रय दिया। पन्द्रह साल तक वह राज दरबार में रहा। राज दरबार में उसे सभी सुख सुविधाएं प्राप्त थी। राजा साहब के मरने के बाद नए राजा साहब को पहलवानी में रुचि नहीं थी। उन्हें घुड़सवारी में रुचि थी। इसलिए उसने पहलवान और उसके बेटों को राजदरबार से निकाल दिया। इसके बाद वह गांव आकर रहने लगा। यहां उसे भोजन भी मुश्किल से मिलता था। महामारी ने उसके बेटों को निगल लिया और उसके चार-पांच दिन बाद वह भी मर गया।

प्रश्न 5. राज दरबार का पहलवान बन जाने के बाद लुट्टन सिंह की दिनचर्या पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - राजदरबार का पहलवान बन जाने के बाद लुट्टन की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। उसे राजा साहब की कृपा दृष्टि प्राप्त हुई। पौष्टिक भोजन मिलने लगा। आसपास के सभी नामी पहलवानों को हरा दिया। अब राजा साहब ने उसके कुश्ती लड़ने पर रोक लगा दी। अब वह केवल दर्शनीय जीव बन गया। मेलों में वह घुटने तक लंबा चोगा पहनकर अस्त-व्यस्त पगड़ी बांधकर मतवाले हाथी की तरह चलता था। हलवाई उसे बुला बुलाकर मिठाई खिलाते थे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1 पहलवान की ढोलक पाठ के लेखक कौन हैं ?
क. नागार्जुन ख. रघुवीर सहाय
ग. फणीश्वरनाथ रेणु घ. प्रेमचंद

2. पहलवान का क्या नाम था ?
क. लुट्टन सिंह ख. हरि सिंह
ग. बोधा सिंह घ. दारा सिंह

3. पहलवान के कितने बेटे थे ?
क. चार ख. दो
ग. तीन घ. पांच

4. शेर के बच्चे नाम से प्रसिद्ध पहलवान कौन था ?
क. भैरव सिंह ख. बादल सिंह
ग. सूरज सिंह घ. चांद सिंह

5. चांद सिंह के गुरु का क्या नाम था ?
क. सूरज सिंह ख. बादल सिंह
ग. गोरा सिंह घ. गोरा सिंह

6. लुट्टन सिंह ने चांद सिंह पहलवान को कहां के दंगल में हराया था ?
क. राम नगर ख. गोपाल नगर
ग. श्याम नगर घ. भाव नगर

7. लुट्टन सिंह ने किस दूसरे नामी पहलवान को दंगल में हरा दिया था ?
क. अफजल खां ख. कल्लू खां
ग. अब्दुल खां घ. काला खां

8. कितने वर्ष तक पहलवान अजेय रहा ?
क. दस ख. पंद्रह
ग. अट्ठारह घ. बीस

9. फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म कब हुआ था ?
क. 1918 ख. 1919
ग. 1920 घ. 1921

10. फणीश्वर नाथ रेणु की मृत्यु कब हुई ?
क. 1975 ख. 1976
ग. 1977 घ. 1978

उत्तर-	1- ग	2- क	3- ख	4- घ	5- ख
	6- ग	7- घ	8- ख	9- घ	10- ग

jharkhandlab.com

अध्याय - 15 चार्ली चैप्लिन यानी हम सब

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि अभी चैप्लिन पर करीब 50 वर्षों तक काफ़ी कुछ कहा जाएगा?

उत्तर- पश्चिमी देशों में बार-बार चार्ली का पुनर्जीवन होता ही है। विकासशील दुनिया में जैसे-जैसे टेलीविजन और वीडियो का प्रसार हो रहा है एक बहुत बड़ा दर्शक वर्ग नए सिरे से चार्ली को घड़ी सुधारते या जूता खाने की कोशिश करते हुए देख रहा है। चैप्लिन की ऐसी कुछ फिल्में या इस्तेमाल ना की गई रीलें भी मिली हैं जिनके बारे में कोई जानता ना था । इसलिए लेखक ने कहा है कि अभी चैप्लिन पर करीब 50 वर्षों तक काफी कुछ कहा जाएगा।

प्रश्न 2. चैप्लिन ने न सिर्फ फ़िल्म कला को लोकतांत्रिक बनाया बल्कि दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को तोड़ा। इस पंक्ति में लोकतांत्रिक बनाने का और वर्ण व्यवस्था तोड़ने का क्या अभिप्राय है? क्या आप इससे सहमत हैं ?

उत्तर- चैप्लिन की फिल्में लोकतांत्रिक इसलिए है क्योंकि उनकी फिल्मों को पागलखाने के मरीजों, विकल मस्तिष्क लोगों से आंइस्टाइन जैसे महान प्रतिभा वाले व्यक्तित्व को एक स्तर पर और कहीं सूक्ष्म रसास्वादन के साथ देख सकते हैं । चैप्लिन की फिल्में कला को लोकतांत्रिक बनाने के साथ दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को तोड़ा।चैप्लिन अपनी फिल्मों में अभिनय से यह बता देते हैं कि एक राजा भी उतना ही नंगा है जितना वह। अतः लेखक की राय से पूर्णतया सहमति है।

3. लेखक ने चार्ली का भारतीयकरण किसे कहा और क्यों? गांधी और नेहरू ने भी उनका सान्निध्य क्यों चाहा ?

उत्तरः लेखक के अनुसार 'आवारा' सिर्फ 'द ट्रंप' का शब्द अनुवाद ही नहीं बल्कि चार्ली का भारतीयकरण ही था। 'आवारा' और 'श्री 420' में पहली बार नायक का अपने ऊपर हंसने का अभिनय शुरू हुआ जो चार्ली का ही अवतार था दरअसल मनुष्य स्वयं ईश्वर या नियति का विदूषक है । यही कारण है कि महात्मा गांधी और नेहरु जी ने उनका सान्निध्य चाहा।

4. लेखक ने कलाकृति और रस के संदर्भ में किसे श्रेयस्कर माना है और क्यों ? क्या आप कुछ ऐसे उदाहरण दे सकते हैं जहाँ कई रस साथ-साथ आए हों ?

उत्तर- लेखक ने कलाकृति और रस के संदर्भ में कुछ रसों कलाकृति मे पाया जाना श्रेयस्कर माना है। जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं । यह संसार की सारी सांस्कृतिक परंपराओं को मालूम है लेकिन करुणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे रस सिद्धांत की मांग करता है जो भारतीय परंपराओं में नहीं है। रामचरितमानस में नवरस के दर्शन होते हैं।

प्रश्न 5 जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली के व्यक्तित्व को कैसे संपन्न बनाया ?

उत्तर – चार्ली का वास्तविक जीवन पर्दे के अभिनय से बिल्कुल विपरीत था । चार्ली एक परित्यक्ता , दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री का बेटा होना ,बाद में भयावह गरीबी और मां के पागलपन से संघर्ष करना साम्राज्यवाद, औद्योगिक क्रांति, पूंजीवाद तथा सामंत शाही से मगरूर एक समाज द्वारा दुरदुराया जाना। इन सब से चैपलिन को वे जीवन मूल्य मिले जो करोड़पति हो जाने के बावजूद अंत तक उनमें रहे। यही कारण है कि वह एक महानतम और समृद्धितम व्यक्तित्व हैं जोश में करना और मानवता से भरे हुए हैं।

प्रश्न 6. चार्ली चैप्लिन की फ़िल्मों में निहित त्रासदी / करुणा , हास्य का सामंजस्य , भारतीय कला और सौंदर्य शास्त्र की परिधि में क्यों नहीं आता हैं ?

उत्तर- भारतीय कला और सौंदर्य शास्त्र को कई रसों का पता है,उनमें से कुछ रसों का किसी कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर भी माना गया है । जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं ।यह संसार की सारी सांस्कृतिक परंपराओं को मालूम है लेकिन करुणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे रस सिद्धांत की मांग करता है जो भारतीय परंपराओं में नहीं मिलता। रामायण तथा महाभारत में जो हास्य है वह दूसरों पर है और अधिकांशत परसंताप से प्रेरित है। जो करूणा है वह अक्सर सद्व्क्तियों के लिए और कभी-कभार दुष्टों के लिए है। संस्कृत नाटकों में भी करुणा और हादसे का सामंजस्य नहीं है।

प्रश्न 7. चार्ली सबसे ज्यादा स्वयं पर कब हँसता है ?

उत्तर- चार्ली स्वयं पर सबसे ज्यादा तब हंसते है जब वह स्वयं को आत्मविश्वास से लबरेज, सफलता, सभ्यता, संस्कृति तथा समृद्धि की प्रतिमूर्ति, दूसरों से ज्यादा शक्तिशाली व श्रेष्ठ समझते है।तभी कुछ न कुछ गड़बड़ अवश्य हो जाती हैं। जो लोगों को हंसने का मौका देती है।

(अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर) दीर्घत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 चार्ली का भारत मे व्यापक स्वीकार का क्या महत्व है।

उत्तर- भारत में चैप्लिन के इतने व्यापक स्वीकार का एक अलग सौंदर्यशास्त्रीय महत्त्व तो है ही भारतीय जनमानस पर उसने जो प्रभाव डाला होगा उसका पर्याप्त मूल्यांकन शायद अभी होने को है। हास्य कब करुणा में बदल जाएगा और करुणा कब हास्य में परिवर्तित हो जाएगी। इससे पारंपरिक या सैद्धांतिक रूप से अपरिचित भारतीय जनता ने उस 'फिनोमेनन' को यूँ स्वीकार किया जैसे बत्तख पानी को स्वीकारती है। किसी 'विदेशी' कला-सिद्धांत को इतने स्वाभाविक रूप से पचाने से अलग ही प्रश्न खड़े होते हैं और अंशतः एक तरह की कला की सार्वजनिकता को ही रेखांकित करते हैं।

किसी भी समाज में इने-गिने लोगों को 'अमिताभ बच्चन' या 'दिलीप कुमार' कहकर ताना दिया जाता है लेकिन किसी भी व्यक्ति को परिस्थितियों का औचित्य देखते हुए 'चार्ली' या 'जानी वॉकर' कह दिया जाता है। यह स्वयं एक स्वीकारोक्ति है कि हमारे बीच 'नायक' कम हैं जबकि हर व्यक्ति दूसरे को कभी-न-कभी विदूषक समझता है। दरअसल मनुष्य स्वयं ईश्वर या नियति का विदूषक, क्लाउन, जोकर या साइड किक है। यह अकारण नहीं है कि महात्मा गांधी से बाली चैप्लिन का खासा पुट था और गांधी तथा तब नेहरू दोनों ने कभी चार्ली का सान्निध्य चाहा था ।

लघुत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. चार्ली की फिल्म समय भूगोल और संस्कृति की सीमाओं से खिलवाड़ करता है

उत्तर- चैप्लिन की कला दुनिया के सामने है और 5 पीढ़ियों को मुक्त कर चुकी है। समय, भूगोल और संस्कृतियों की सीमाओं से खिलवाड़ करता हुआ चार्ली आज भारत के लाखों बच्चों को हंसा रहा है। जो उसे अपने बुढ़ापे तक याद रखेंगे पश्चिम में तो बार-बार चार्ली का पुनर्जीवन होता ही है।

प्रश्न 2. चार्ली की फिल्में भावनाओं पर टिकी हुई है, बुद्धि पर नही ?

उत्तर- उनकी फिल्में भावनाओं पर टिकी हुई है बुद्धि पर नहीं। 'मेट्रोपोलिस', 'कैबिनेट आफ डॉक्टर कैलीगरी, द रोवंथ सील,

लास्ट ईयर इन मारिएनवाड़, द सैक्रिफाइस जैसी फ़िल्में दर्शक से एक उच्चतर अहसास की मांग करती है। उनकी फिल्म हर वर्ग तथा वर्णव्यवस्था के लोग देख सकते हैं।

प्रश्न- 3. चैप्लिन खानाबदोश से कैसे जुड़े है थे ?

उत्तर- अपनी नानी के तरफ से चैप्लिन खानाबदोश से जुड़े हुए थे और यह एक सुदूर रूमानी संभावना बनी हुई है कि शायद उस खानाबदोश औरतों में भारतीयता रहे हो क्योंकि यूरोप के जिप्सी भारत से ही गए थे।

प्रश्न- 4. चार्ली ने कला के लिए भावना को चुना उसके कारण बताएं ?

उत्तर - चार्ली के बचपन की दो घटनाओं ने उन्हें प्रेरित किया कि वे भावना को ही कला में चुने। पहली घटना जब एक बार बीमार थे उनकी माता बाईबिल सुनाती है। ईसा की सूली पर चढ़ने का प्रकरण, दूसरी घटना कसाई खाने से भागा हुआ भेड़ जो अंततः पकड़ लिया गया।

प्रश्न- 5. लेखक ने हम सबको चार्ली क्यों माना है ?

उत्तर- अपने जीवन के अधिकांश हिस्सों में हम चार्ली जैसे ही होते हैं। हमारे महानतम क्षणो मे कोई भी हमे चिढ़कर या लात मार कर भाग सकता है। अपने चरित्र क्षणो में हम पलायन के शिकार हो सकते हैं। कभी-कभी लाचार होते हुए जीत भी सकते हैं। मूलतःहम सब चार्ली है क्योंकि हम सुपरमैन नहीं हो सकते। सत्ता, शक्ति, बुद्धिमता और पैसे के चरमोत्कर्ष में जब हम आईना देखते हैं तो चेहरा चार्ली चार्ली हो जाता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न- 1. चार्ली चैप्लिन यानी हम सब के लेखक कौन हैं ?

(क) रघुवीर सहाय (ख) भवानी प्रसाद मिश्र
(ग) आलोक धनवा (घ) विष्णु खरे

प्रश्न- 2. लेखक के अनुसार चार्ली पर कितने वर्षों तक काम होगा ?

(क) 60 (ख) 50
(ग) 70 (ग) 100

प्रश्न- 3. चार्ली के फिल्म कौन-कौन सी हैं ?

(क) मेट्रोपोलिस
(ख) दी कैबिनेट ऑफ डॉक्टर कैलिगारी
(ग) द रोवंथ सील
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न- 4. चार्ली की पहली फिल्म कौन सी है ?

(क) लास्ट ईयर इन मारिएनवाड
(ख) द सैक्रिफाइस
(ग) मेकिंग ए लिविंग
(घ) द रोवंथ सील

प्रश्न- 5. चैप्लिन के फिल्म के दर्शक कौन हैं ?

(क) पागल खाने की लोग (ख) विकल मस्तिष्क के लोग
(ग) महान प्रतिभा वाले लोग (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न- 6. चार्ली ने कला के लिए क्या चुना?

(क) भावना (ख) बुद्धि
(ग) भावना और बुद्धि (घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न- 7. इस घटना ने चार्ली को भावना प्रधान बना दिया ?

(क) ईसा की सूली पर चढ़ना
(ख) कसाई खाना से भागा भेड़
(ग) क और ख
(घ) इनमे से कोई नहीं

प्रश्न- 8. चार्ली से किनका सान्निध्य था ?

(क) गांधी (ख) नेहरू
(ग) क और ख (घ) कोई नहीं

प्रश्न- 9. आवारा किसका शब्दानुवाद है ?

(क) दी ट्रम्प (ख) द सैक्रिफाइस
(ग) द रोवंथ सील (घ) मेट्रोपोलिस

प्रश्न-10. चार्ली के अभिनय में किस रस का संयोग है ?

(क) श्रृंगार और वीभत्स (ख) श्रृंगार और करुणा
(ग) हास्य और करुणा (घ) वीर और वीभत्स

उत्तर-	1- घ	2- ख	3- घ	4- ग	5- घ
	6- क	7- ग	8- ग	9- क	10- ग

Jharkhandlab.com

अध्याय - 16 | नमक

- रज़िया सज़्ज़ाद ज़हीर

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. सफ़िया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से क्यों मना कर दिया?

उत्तर - सफ़िया लाहौर से विस्थापित होकर गई सिख बीबी के लिए सौगात में नमक ले जाना चाहती थी। किंतु उनके भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से इसलिए मना किया क्योंकि पुलिस ऑफिसर होने के नाते वह जानता था कि पाकिस्तान से भारत नमक ले जाना गैरकानूनी है। और चोरी छुपे नमक भारत ले जाने पर कस्टम अधिकारियों के द्वारा पकड़े जाने का खतरा भी था । इसीलिये सफिया के भाई ने नमक ले जाने से मना कर दिया।

प्रश्न 2. नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफ़िया के मन में क्या द्वंद्व था?

उत्तर- सफ़िया को जब पता चला कि पाकिस्तान से नमक ले जाना कानूनन जुर्म है, तो वह द्वंद्व में पड़ गई। एक तरफ़ उसके लिए नमक ले जाना आवश्यक था,दूसरी तरफ़ वह कानून की मुज़रिम नहीं बनना चाहती थी। उसके लिए यह नमक एक माँ के लिए प्रेम की सौगात थी। वह उसे छिपाकर नहीं ले जाना चाहती थी। वह प्रेम की सौगात को जुर्म के रूप में नहीं बल्कि सम्मान के साथ ले जाना चाहती थी। उसे लग रहा था कि यदि वह बता दे, तो शायद उसे नमक ले जाने दिया जाएगा। दूसरे ही पल उसे लगता था कि यदि उसे मना कर दें, तो वह एक माँ का दिल तोड़ देगी। इस बात को लेकर उसके मन में द्वंद्व की स्थिति बन गई।

प्रश्न 3. जब सफ़िया अमृतसर पुल पर चढ़ी थी तो कस्टम ऑफिसर निचली सीढ़ी के पास सिर झुकाए चुपचाप क्यों खड़े थे ?

उत्तर - जब सफ़िया ने पाकिस्तान से भारत नमक लाने के संदर्भ में सिख बीवी से जुड़ा प्रसंग उन्हें सुनाया तो उन्हें भी अचानक अपने वतन ढाका की याद हो आई। वह सिख बीबी की दिल की भावना को अच्छी तरह से समझते थे क्योंकि इतने साल हिंदुस्तान में गुजारने के बाद भी वो भावनात्मक रूप से अपने वतन से जुड़े थे और अपनी जन्मभूमि ढाका को ही मानते थे।

दूसरा,वो सफिया के प्रति अपने दिल से सम्मान प्रकट कर रहे थे । क्योंकि उसने सिर्फ एक वादा निभाने के लिए इतना बड़ा जोखिम उठाया।

प्रश्न 4. "लाहौर अभी भी उनका वतन है और देहली मेरा या मेरा वतन ढाका है"। जैसे उद्‌गार किस सामाजिक यथार्थ का संकेत करते हैं?

उत्तर- उपरोक्त कथन से पता चलता है कि राजनैतिक या भौगोलिक , किसी भी कारण से किसी भी देश या जमीन को टुकड़ों में बांटा तो जा सकता है लेकिन लोगों के दिलों से उनकी भावनाओं , उनके जज्बातों को मिटाया नहीं जा सकता। इसीलिए हिंदुस्तान के दो टुकड़ों में बंट जाने के बाद भी एक पाकिस्तानी आज भी अपना वतन हिंदुस्तान को ही मानता है तो एक हिंदुस्तानी लाहौर को बहुत याद करती है। लोगों ने अपने राजनीतिक उद्देश्य के लिए भले ही देश को दो टुकड़ों में बाँट दिया हो लेकिन कोई भी शक्ति उनके हृदय से उनकी मातृभूमि के प्रति प्रेम को मिटा नहीं सकती है। वक्त -बेवक्त उनके हृदय की टीस प्रकट होते ही रहती है।

प्रश्न 5. नमक ले जाने के बारे में सफ़िया के मन में उठे द्वंद्वों के आधार पर उसकी चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- नमक ले जाने के बारे में सफ़िया के मन में जो द्वंद्व की स्थिति बन गई थी। इससे उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताओं का पता चलता है-

(क) ईमानदार- सफ़िया एक ईमानदार स्त्री थी। रिश्तों के साथ-साथ वह व्यवस्था और कानून के प्रति भी काफी ईमानदार थी। वह अपने प्रेम की सौगात नमक को पूरे सम्मान के साथ ले जाना चाहती थी। उसे गलत ढंग से ले जाना कदापि मंजूर नही था।

(ख) विचारशील- वह एक विचारशील स्त्री थी।वह कार्य को करने से पहले उसके विषय में यह निश्चित कर लेना चाहती थी कि वह जो कर रही है, वह सही है या नहीं है।

(ग) कानून के प्रति सम्मान- सफ़िया कानून का आदर करती थी। यही कारण है कि वह अपने साथ पुड़िया छिपाकर ले जाने में हिचकिचा रही थी। वह चाहती थी कि वह गलत नहीं कर रही है। अतः कानून उसकी भावनाओं को समझेगा। यही कारण है कि वह नमक की पुड़िया को अफसरों के सामने रख देती है।

(घ) निर्भीक- सफ़िया एक निर्भीक स्त्री थी। वह जानती है कि वह कोई गलत काम नहीं कर रही है। अतः उसे डरने की आवश्यकता नहीं है।

(ङ) दृढ़ निश्चयी- सफ़िया एक दृढ़-निश्चयी स्त्री थी। भाई द्वारा कानून का डर दिखाए जाने पर भी वह अपने निश्चय से हिलती नहीं है।

(च) स्पष्टवादी- कस्टम अधिकारियों के समक्ष कीनुओं में छिपाकर लाए गए नमक को रख देना उसकी स्पष्टवादिता का परिचायक है।

(छ) वचनबद्ध- नमक के सीमा पार ले जाने की अड़चन सुनकर वह चाहती तो भारत आकर सिख बीबी को अपनी मजबूरी बताकर संतुष्ट कर सकती थी लेकिन वह वचनबद्ध और कर्तव्य परायण स्त्री होने के नाते उसने अपने वचन को तकलीफों से गुजरकर भी निभाया।

प्रश्न- 6. मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से ज़मीन और जनता बँट नहीं जाती है- उचित तर्कों व उदाहरणों के ज़रिये इसकी पुष्टि करें।

उत्तरः "मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से ज़मीन और जनता बँट नहीं जाती है।" इन पंक्तियों की लेखिका रजिया सज्जाद जहीर का कथन पूरी तरह से सत्य है। इसकी पुष्टि कई तर्कों के द्वारा की जा सकती है। जैसे - राजनीतिक कारणों से देश का विभाजन कर दिया जाता है लेकिन यह अलगाव भावनात्मक रूप से उनकी मातृभूमि से अलग नहीं कर सकता।

प्रस्तुत पाठ में सिख बीबी, पाकिस्तान के कस्टम अफ़सर तथा अमृतसर के कस्टम अफ़सर इस बात का प्रमाण है। वे सब उन स्थानों को अपना मानते हैं, जहाँ आज वे रहते नहीं हैं। उनका दिल तो वहीं पर रह गया है, जहाँ उनका जन्म हुआ, जहाँ उन्होंने अपना बचपन तथा जवानी निकाली थी। सिख बीबी आज भारत में थी लेकिन अपना दिल पाकिस्तान के लाहौर में छोड़ आई थीं। वे सीमाओं को नहीं मानती। आज भी पाकिस्तान में मिलने वाले लाहौरी नमक में उनकी आत्मा बस गई है। नमक तो शायद भारत में भी मिल सकता था लेकिन उनके लिए असली नमक तो लाहौर में मिलने वाला था।

ऐसे ही पाकिस्तान के कस्टम अफ़सर अवश्य पाकिस्तान में रह रहे थे लेकिन उनके लिए उनका असली वतन देहली था। सिख बीबी को बुज़ुर्ग माना जा सकता है लेकिन पाकिस्तान के कस्टम अफ़सर तो इतने बुज़ुर्ग नहीं थे।

ऐसे ही अमृतसर के कस्टम अफ़सर के लिए उनका असली वतन ढाका था। इन सभी बातों से पता चलता है कि मानचित्र पर लकीर

Jharkhandlab.com

खींच देने से ही में जनता तथा जमीन नहीं बँट जाते हैं। वह दिलों में तथा स्थानों में यादें बनकर रह जाती हैं।

प्रश्न- 7. नमक कहानी में भारत व पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है, कैसे?

उत्तरः बाहरी आवरण को देखने से हम पाते हैं कि भारत व पाक की जनता में भेदभाव की भावना विद्यमान है। किन्तु यह सच्चाई नहीं है। हकीकत ठीक इसके विपरीत है।

विभाजन के समय लोगों को विवश होकर अपना देश छोड़ना पड़ा था। उनके गली-मोहल्ले, पड़ोसी, मित्र, घर, खेत-खलिहान सब पीछे छूट गए थे। किंतु उनकी यादें उनके मन में हमेशा विद्यमान रहीं। सिख बीबी, पाकिस्तान तथा अमृतसर के कस्टम अफ़सर इसके प्रमाण हैं। उनके दिलों में आज भी मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है और जब तक वे जिंदा रहेंगे, वह ऐसे ही विद्यमान रहेगा। उसे कोई असामाजिक ताकत मिटा नहीं सकती है।

प्रश्न -8. राजनैतिक सीमा तथा सत्ता लोलुप व मज़हबी दुराग्रहों में बँटे होने के बावजूद हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में एक ही इंसानी दिल के टुकड़े धड़क रहे हैं, जो मिलने को आतुर हैं। पाठ के आधार पर समझाइए।

उत्तर - राजनैतिक सीमा द्वारा खींची भारत-पाक की सरहद होते हुए भी पाकिस्तान और भारत में एक ही इन्सानी दिल के टुकड़े धड़क रहे हैं। सत्ता लोलुप या मजहबी दुराग्रहों के कारण देश के बंटवारे की स्थितियाँ पैदा हुई किन्तु,निर्वासित होने के बाद भी लोगों के मन में अपने वतन के प्रति, अपने लोगों के प्रति प्रेम एवं लगाव मौजूद रहता है। यद्यपि भारत-पाक विभाजन के कारण लोग अपने मित्रों, संबंधियों एवं पड़ोसियों से बिछुड़ गए किंतु उनका हृदय आज भी उन बिछड़े लोगों से मिलने के लिए आतुर रहता है।

प्रस्तुत पाठ में भी सफिया अपने वतन लाहौर में रहते भाइयों, मित्रों और पड़ोसियों से मिलने के लिए बेचैन रहती हैं तथा अपने वतन की चीजों को भारत ले जाती है। सिख बीबी से किये वायदे के अनुसार अपने वतन लाहौर के नमक को भारत ले जाना नहीं भूलती। कष्टम अधिकारी अपने वतन दिल्ली (भारत) की निवासी सफ़िया को देखकर अपने वतन को याद करते हैं। अपने वतन जाती सफिया को गैर कानूनी ढंग से नमक ले जाने से नहीं रोकते। यह दृष्टान्त इसका गवाह है कि भारत-पाक विभाजन के बावजूद भी लोगों में एक ही इंसानी दिलों के टुकड़े धड़क रहे हैं।

क्यों कहा गया ?

प्रश्न 1: क्या सब कानून हुकूमत के ही होते हैं, कुछ मुहब्बत, मुरौवत, आदमियत, इंसानियत के नहीं होते ?

उत्तर : ऐसा इसलिए कहा गया है ताकि यह बताया जा सके कि कानून सब कुछ नहीं होते हैं। कानून से बढ़कर भी मुहब्बत तथा इंसानियत होती है। जिसमें एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए कुछ करने को प्रेरित हो जाता है। लेखिका का भाई जब अपनी बहन को लाहौरी नमक यह कहकर ले जाने से मना कर देता है कि यह कानूनन जुर्म है, तो लेखिका अपने भाई को समझाती है कि मनुष्य कानून का गुलाम नहीं है। कानून का आदर-सम्मान सबको करना चाहिए। लेकिन जब बात प्रेम और इंसानियत की हो, तो उसे इन्हें छोड़ देना चाहिए।

प्रश्न- 2. भावना के स्थान पर बुद्धि धीरे-धीरे उस पर हावी हो रही थी।

उत्तर- भाई द्वारा यह बताए जाने पर कि लाहौरी नमक भारत ले जाना अपराध है, लेखिका उसे अपने तर्कों से चुप करवा देती है। लेकिन जब वह इस विषय पर सोचती है, तो पाती है कि भाई सही कह रहा है। 'भावना' बुद्धि के तर्कों के आगे दबने लगती है। अब वह समझ जाती है कि नमक को सामने से ले जाना कठिन हो जाएगा। अतः वह नमक को छिपा कर ले जाने की सोचती है। अतः इससे पता चलता है कि भावना के स्थान पर वह बुद्धि का प्रयोग करने लगती है।

प्रश्न- 3. मुहब्बत तो कस्टम से इस तरह से गुज़र जाती है कि कानून हैरान रह जाता है।

उत्तर- यह वाक्य कानून के आगे मुहब्बत की अहमियत दर्शाने के लिए पाकिस्तानी कस्टम आफ़िसर के माध्यम से यह बताया गया है कि मुहब्बत की अहमियत इतनी है कि यह किसी कानून को नहीं देखती है। पाकिस्तानी कस्टम ऑफिसर लेखिका को नमक ले जाने देता है। वह कानून को भूल जाता है। बस उसे याद रहता है तो लेखिका का ज़स्बा और अपना वतन देहली। जहाँ प्रेम हो, वहाँ कानून की पूछ न के बराबर रह जाती है। क्योंकि कानून का काम दोषियों को सज़ा देना है और मुहब्बत का काम दिलों को मिलाना है।

प्रश्न 4: हमारी ज़मीन हमारे पानी का मज़ा ही कुछ और है!

उत्तरः अमृतसर का कस्टम ऑफिसर अपने वतन की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए यह पंक्ति कहता है। अमृतसर का कस्टम ऑफिसर एक हिन्दू है लेकिन उसके प्राण उसके वतन ढाका में अटके हुए हैं। विभाजन के बाद वह भारत में आकर बस गया है लेकिन अपना दिल वह ढाका में छोड़ आया है। इससे पता चलता है कि वतन का संबंध सीमाओं से नहीं है। वतन का संबंध तो दिल से है।

पाठ के आस-पास

प्रश्न- 1. नमक कहानी में हिंदुस्तान-पाकिस्तान में रहने वाले लोगों की भावनाओं, संवेदनाओं को उभारा गया है। वर्तमान संदर्भ में इन संवेदनाओं की स्थिति को तर्क सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः नमक कहानी में लेखिका ने हिंदुस्तान में रहने वाले लोगों की भावनाओं और संवेदनाओं को उकेरा है।वर्तमान संदर्भ में भी भारत पाक विभाजन के कारण विस्थापित निवासियों की स्थिति ठीक ऐसी ही है जैसी सिख बीबी और कस्टम अधिकारी की अपने वतन लाहौर और दिल्ली के प्रति थी। आज भी लोग अपने वतन जाने, अपने मित्रों, संबंधियों और पड़ोसियों से मिलने के लिए तड़पते हैं। आज भी उनका दिल अपनी जन्मभूमि के दर्शनों के लिए लालायित रहता है। आज भी लोग अपने समाज,संस्कृति और लोगों की पहचान को अपने दिलों से नहीं निकाल पाए हैं।

प्रश्न- 2. सफ़िया की मनःस्थिति को कहानी में एक विशिष्ट संदर्भ में अलग तरह से स्पष्ट किया गया है। अगर आप सफ़िया की जगह होते/होतीं तो क्या आपकी मनःस्थिति भी वैसी ही होती? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर - बिलकुल ,यदि मैं सफ़िया की जगह होती, तो मेरी भी मनःस्थिति बिलकुल उसकी जैसी होती। क्योंकि मेरे अंदर भी लोगों के प्रति ऐसा ही प्रेम और इंसानियत है। मेरे लिए प्रेम सबसे ऊपर है। प्रेम के आगे मैं किसी कानून को तथा किसी विभाजित देश के बंधन को नहीं मानती हूँ। मेरे लिए पाकिस्तान में रहने वाले भी मेरे अपने हैं और भारत में रहने वाले भी मेरे अपने ही हैं।

प्रश्न- 3. भारत-पाकिस्तान के आपसी संबंधों को सुधारने के लिए दोनों सरकारें प्रयासरत हैं। व्यक्तिगत तौर पर आप इसमें क्या योगदान दे सकते/सकती हैं?

उत्तर - यह सही है कि दोनों देशों की सरकारें भारत-पाकिस्तान के आपसी संबंध सुधारने में प्रयासरत हैं। मैं भी इसके लिए अपने स्तर से प्रयास कर रही हूँ। मैं वहाँ की संस्कृति तथा परंपराओं का अध्ययन करती हूं।इंटरनेट के माध्यम से मैं वहां मित्र बनाती हूं। मैंने जब से पाकिस्तानी कार्यक्रम देखने आरंभ किए हैं मैं वहाँ के कलाकारों की प्रशंसक बन गई हूँ। मैंने वहाँ की फ़िल्में जैसे 'बोल' तथा 'खुदा के लिए' देखी है। इसके अतिरिक्त वहाँ के कलाकार जैसे फवाद खान मेरे प्रिय कलाकार हैं। वहाँ की महिलाओं द्वारा पहने जाना वाला परिधान मेरे पंसदीदा हैं। ऐसे ही परिधान मैं भारत में अपने लिए बनवाए हैं। इस तरह मैं अपने आसपास के लोगों को भी उनके विषय में परिचित करवाती रहती हूँ। इस तरह से मैं व्यक्तिगत तौर पर अपना हर संभव योगदान दे रही हूँ।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 4. लेखिका ने विभाजन से उपजी विस्थापन की समस्या का चित्रण करते हुए सफ़िया व सिख बीबी के माध्यम से यह भी परोक्ष रूप से संकेत किया है कि इसमें भी विवाह की रीति के कारण स्त्री सबसे अधिक विस्थापित है। क्या आप इससे सहमत हैं?

उत्तर - यह सही है कि प्रत्येक स्त्री को अपने जीवन में विवाह करने के बाद विस्थापन से गुजरना पड़ता है। जिन माता-पिता के घर वह पली बढ़ी होती है, विवाह के पश्चात उसे छोड़ना पड़ता है। सिख बीबी और स्वयं सफ़िया उन्हीं में से एक हैं। सिख बीबी और सफ़िया को विवाह के पश्चात अपने परिवार से अलग होना पड़ता है। लेखिका अपने भाइयों से मिलने पाकिस्तान जाती है और कई वर्षों तक उनसे नहीं मिल पाती है। ऐसे ही सिख बीबी की स्थिति भी होती है। यह अवश्य है कि पति का साथ स्त्री को इस विस्थापन से उबार लाता है। लेकिन एक स्त्री इस विस्थापन से अवश्य गुजरती है।

(अन्य महत्तवपूर्ण प्रश्नोत्तर) दीर्घत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. विभाजन के अनेक स्वरूपों में बँटी जनता को मिलाने की अनेक भूमिकाएं हो सकती हैं- रक्त संबंध, विज्ञान, साहित्य व कला। इनमें से कौन सबसे अधिक ताकतवर है और क्यों?

उत्तर : इनमें से सबसे अधिक ताकतवर साहित्य व कला है। रक्त संबंध एक छोटे दायरे तक सीमित रहते हैं। विज्ञान लोगों को सुविधा दे सकता है लेकिन मिला नहीं सकता है। हम एक-दूसरे की तकनीक का उपयोग करते हैं लेकिन उससे मिलाना संभव नहीं है। साहित्य व कला है, जो लोगों के दिलों में घर कर जाता है। इससे हर वर्ग के लोगों के दिलों में जगह पायी जा सकती है। सबसे प्रेम पाया जा सकता है और उन्हें प्रेम दिया जा सकता है। साहित्य व कला के माध्यम से ही लोगों के मध्य बैरभाव को मिटाया जा सकता है। यदि ऐसा न होता तो पाकिस्तान के कलाकार भारत में और भारत के कलाकार पाकिस्तान के लोगों के दिलों में जगह नहीं पाते। साहित्य व कला को जंजीरों में जकड़ा नहीं जा सकता है। ये तो पक्षियों के समान पंख फैलाकर लोगों के दिलों में घर कर जाते हैं।

प्रश्न 2. सिख बीवी के प्रति सफ़िया के आकर्षण का क्या कारण था? 'नमक' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर- जब सफ़िया ने सिख बीवी को देखा, तो वह हैरान रह गई। बीवी का वैसा ही चेहरा था, जैसा सफ़िया की माँ का था। बिलकुल वही कद, वही भारी शरीर, वही छोटी छोटी चमकदार आँखें, जिनमें नेकी, मुहब्बत और रहमदिली की रोशनी जगमगा रही थी। चेहरा खुली किताब जैसा था। बीवी ने वैसी ही सफ़ेद मलमल का दुपट्टा ओढ़ रखा था, जैसा सफ़िया की अम्मा मुहर्रम में ओढ़ा करती थीं, इसीलिए सफ़िया बीवी की तरफ बार-बार बड़े प्यार से देखने लगी। उसकी माँ तो बरसों पहले मर चुकी थीं, पर यह कौन ? उसकी माँ जैसी हैं, इतनी समानता कैसे है ? यही सोचकर सफ़िया उनके प्रति आकर्षित हुई।

प्रश्न 3. लाहौर और अमृतसर के कस्टम अधिकारियों ने सफ़िया के साथ कैसा व्यवहार किया?

उत्तर- दोनों जगह के कस्टम अधिकारियों ने सफ़िया और उसकी नमक रूपी सद्भावना का सम्मान किया। केवल सम्मान ही नहीं, उसे यह भी जानकारी मिली कि उनमें से एक देहली को अपना वतन मानते हैं और दूसरे ढाका को अपना वतन कहते हैं। उन दोनों ने सफ़िया के प्रति पूरा सद्भाव दिखाया, कानून का उल्लंघन करके भी उसे नमक ले जाने दिया। अमृतसर वाले सुनील दास गुप्त तो उसका थैला उठाकर चले और उसके पुल पार करने तक वहीं पर खड़े रहे। उन अधिकारियों ने यह साबित कर दिया कि कोई भी कानून या सरहद प्रेम से ऊपर नहीं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. फिर पलकों से कुछ सितारे टूटकर दूधिया आँचल में समा जाते है।

उत्तर- लेखिका ने सिख बीबी के आँखों से निकले आँसूओं का उल्लेख बड़े सुंदर रूप में किया है। सिख बीबी जब अपने वतन लाहौर को याद करती है, तो उनकी आँखों से आँसू निकलकर उनके आँचल में गिर जाते हैं। यह आँसू उनकी यादों का प्रतीक है, जो निकलकर आँचल में समा जाते हैं।

प्रश्न 2. किसका वतन कहाँ है- वह जो कस्टम के इस तरफ़ है या उस तरफ़।

उत्तरः लेखिका पाकिस्तान तथा अमृतसर के कस्टम ऑफिसर की बात सुनकर हैरत में है। उनके अनुसार मानचित्र पर भारत तथा पाकिस्तान विभाजित होकर अलग- अलग देश बन चुके हैं। लेकिन लोगों के दिलों में इस विभाजन का नाम नहीं है। अतः वह सोच में पड़ जाती है कि यह बता पाना कठिन है कि किसका वतन कहाँ है ? जो दिलों के अंदर है या जो मानचित्र पर स्थित है।

प्रश्न 3. 'नमक' कहानी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

उत्तरः 'नमक' कहानी भारत-पाक विभाजन के बाद दोनों देशों के विस्थापित लोगों के दिलों को टटोलती मार्मिक कहानी है। लाहौर से आई सिख बीबी लाहौर को अपना वतन मानती है तथा लेखिका को वहाँ से नमक लाने को कहती है। पाकिस्तान में कस्टम अधिकारी दिल्ली को अपना वतन मानता है और उसे नमक ले जाने देता है। दिल्ली का कस्टम अधिकारी ढाका को अपना वतन मानता है। वस्तुतः ज़मीन पर खींची हुई रेखाएँ लोगों के दिलों को नहीं बाँटती।

प्रश्न 4. सफ़िया को अटारी में समझ ही नहीं आया कि कहाँ लाहौर खत्म हुआ और किस जगह अमृतसर शुरू हो गया। ऐसा क्यों?

उत्तरः सफ़िया को लाहौर और अमृतसर में कोई अंतर महसूस नहीं हुआ। क्योंकि दोनों नगरों की जमीन, बोली, पहनावा आदि एक जैसा था। दोनों तरफ़ के लोग एक ही भाषा में बात कर रहे थे। उनके मिलने का तरीका एक था। इसलिए सफ़िया को समझ नहीं आया कि कहाँ लाहौर खत्म हुआ और अमृतसर शुरू हो गया।

प्रश्न 5. 'नमक' कहानी में 'नमक' किस बात का प्रतीक है। इस कहानी में 'वतन' शब्द का भाव किस प्रकार दोनों तरफ़ के लोगों को भावुक करता है?

उत्तरः 'नमक' कहानी में नमक प्रेम व सद्भावना के तोहफे का प्रतीक है। 'वतन' शब्द का भाव ही है कि देश का बँटवारा होने के बावजूद लोगों के अंदर अपनी जन्मभूमि से लगाव समाप्त नहीं होता। वतन की याद हरेक के मन में कहीं-न-कहीं दबी हुई है। देश की सीमाएँ बंटने के बावजूद दोनों तरफ के लोगों को अपनी जन्मभूमि की याद आती है।

प्रश्न 6. 'नमक' कहानी में नमक की पुड़िया इतनी महत्त्वपूर्ण क्यों हो गई है? कस्टम अधिकारी उसे लौटाते हुए भावुक क्यों हो उठा?

उत्तरः इस कहानी में नमक की पुड़िया के महत्त्वपूर्ण बनने का यह कारण है कि भारत-पाक के बीच नमक का व्यापार गैरकानूनी था। दूसरे, यह विभाजन की यादों से जुड़ी है। कस्टम अधिकारी नमक की पुड़िया लौटाते हुए भावुक हो उठा क्योंकि हर व्यक्ति को जन्मभूमि से लगाव होता है। उस प्रेम की अनुभूति से वह भावुक हो उठा।

प्रश्न -7. 'नमक' कहानी में क्या सन्देश छिपा हुआ है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'नमक' कहानी में छिपा संदेश यह है कि मानचित्र पर एक लकीर मात्र खींच देने से वहाँ रहने वाले लोगों के दिल नहीं बँट जाते। जमीन बंटने से लोगों के आवागमन पर प्रतिबंध और पाबंदियाँ लग जाती हैं परंतु लोगों का लगाव अपने मूल स्थान से बना रहता है। पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी द्वारा दिल्ली को तथा भारतीय कस्टम अधिकारी द्वारा ढाका को अपना वतन मानना इसका प्रमाण है।

8. भारत-पाकिस्तान के बीच वर्तमान संबंध कैसे हैं?

उत्तरः यद्यपि विभाजन के बाद दोनों देशों के संबंधों में कई वर्षों तक तनाव का माहौल रहा है? लेकिन पिछले 5-7 वर्षों से दोनों के बीच

jharkhandlab.com

संबंधों में भाई-चारे और आपसी लेन-देन की भावना बढ़ी है। रेल, सड़क, यातायात बहाल हुआ है। आज दोनों के बीच संबंध काफ़ी सुधरे हैं। कला, साहित्य, विज्ञान और संस्कृति के माध्यम से दोनों देशों में सौहार्दपूर्ण माहौल बनता जा रहा है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कीर्तन कितने बजे खत्म हुआ ?

उत्तरः कीर्तन लगभग ग्यारह बजे तक खत्म हो चुका था।

2. सिख बीबी लाहौर से क्या मंगाना चाहती थी ?

उत्तरः सीख बीबी लाहौर से नमक मंगवाना चाहती थी।

3. कस्टम अधिकारी ने सफ़िया की बात सुनकर क्या किया ?

उत्तरः कस्टम अधिकारी ने सर्वप्रथम साफ़िया की सारी बातें सुनी फिर नमक के पुड़िये को मोड़ कर स्वयं ही उसके बैग में रख दिया।

4. मोहब्बत तो कस्टम से इस तरह गुजर जाती है कि कानून हैरान रह जाता। इस वाक्य से लेखिका का क्या अभिप्राय है ?

उत्तरः उपरोक्त पंक्तियों से लेखिका का अभिप्राय है कि कस्टम वालों का प्रेम की भेंट भेजने का अंदाज़ कुछ इस प्रकार था जिसे देख कानून भी इस बात पर हैरान रह गई।

5. लेखिका "कस्टम" को कैसे परिभाषित करते हैं ?

उत्तरः लेखिका के अनुसार कस्टम सरहद पर लगे नोकदार लोहे की छड़ों का लगाया गया एक जाल है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. पाकिस्तान के कस्टम अधिकारी का वतन कौन-सा था ?

क. लाहौर ख. दिल्ली
ग. कोलकाता घ. लखनऊ

2. "मुहब्बत तो कस्टम से इस तरह गुज़र जाती है कि कानून हैरान रह जाता है।" यह कथन किसका है ?

क. पाकिस्तान कस्टम अधिकारी का
ख. सफ़िया का
ग. सफ़िया के भाई का
घ. सुनील दास गुप्त का

3. भारत के कस्टम अधिकारी का नाम क्या था ?

क. सुनील दास गुप्त ख. सुशील कुमार गुप्त
ग. सुनील गुप्ता घ. सुशील गुप्ता

4. सुनीलदास गुप्त ने सफिया के लिए क्या मँगवाया ?

क. ठंडा शर्बत ख. लिम्का
ग. कोका कोला घ. अच्छी वाली चाय

5. सुनील दास किसे अपना वतन मानता है ?

क. भारत को ख. पाकिस्तान को
ग. दिल्ली को घ. ढाका को

6. सुनील दास के मित्र का नाम क्या था ?

क. शमसुल मेहरबान ख. शमसुल इसलाम
ग. शमसुल मोहम्म घ. शमसुल अकरम

7. सुनीलदास गुप्त अपने दोस्त के साथ बचपन में किन साहित्यकारों को पढ़ते थे ?

क. नजरुल और निराला ख. नजरुल और शरतचंद्र
ग. टैगोर और शरतचंद्र घ. नज़रुल और टैगोर

8. सुनील दास गुप्त ने कहाँ के डाभ को श्रेष्ठ बताया ?

क. कोलकाता का ख. चेन्नई का
ग. लाहौर का घ. ढाका का

9. 'मैंने आपसे कहा न कि मेरा वतन ढाका है' यह कथन किसका है?

क. सफ़िया का ख. पुलिसवाले का
ग. सुनील दासगुप्त का घ. शमसुल इस्लाम का

10. 'नमक' कहानी की लेखिका का नाम क्या है ?

क. महादेवी वर्मा ख. सुभद्राकुमारी चौहान
ग. रज़िया सज्जाद जहीर घ. फणीश्वर नाथ रेणु

11. नमक कहानी का संबंध किससे है ?

क. हिंदुओं तथा मुसलमानों से
ख. भारतवासियों से
ग. पाकिस्तानियों से
घ. भारत-पाक विभाजन से

12. सफ़िया लाहौर जाने से पहले किस कार्यक्रम में गई थी?

क. कीर्तन में ख. जगराते में
ग. मंदिर में घ. मस्जिद में

13. सिख बीबी ने किसे अपना वतन कहा ?

क. अमृतसर को ख. लाहौर को
ग. दिल्ली को घ. मुलतान को

14. कीर्तन कितने बजे समाप्त हुआ?

क. 9 बजे ख. 10 बजे
ग. 11 बजे घ. 12 बजे

15. सफ़िया पाकिस्तान के किस नगर में गई थी ?

क. मुलतान में ख. लाहौर में
ग. सयालकोट में घ. इस्लामाबाद मे

16. सिख बीबी ने सफ़िया से क्या तोहफा लाने के लिए कहा ?

क. लाहौरी शाल ख. लाहौरी नमक
ग. लाहौरी कीनू घ. लाहौरी मेवा

17. सफ़िया लाहौर में किसके पास गई थी ?

क. माता-पिता के पास ख. दोस्तों के पास
ग. पड़ोसियों के पास घ. भाइयों के पास

18. सफ़िया का भाई क्या था ?

क. पुलिस अफसर ख. कस्टम अधिकारी
ग. व्यापारी घ. सरकारी नौकर

19. लाहौरी नमक किस कागज़ में लिपटा हुआ था ?

क. हरे कागज़ में ख. लाल कागज़ में
ग. पीले कागज़ में घ. बादामी कागज़ में

20. सफ़िया का भाई किसकी दुहाई देकर नमक न ले जाने के लिए कह रहा था ?

क. सरकार की ख. कानून की
ग. इंसानियत की घ. प्रेम की

21. 'आखिर कस्टमवाले भी इंसान होते हैं, कोई मशीन तो नहीं होते', यह कथन किसका है?

क. सफ़िया के भाई का ख. सफ़िया का
ग. लेखिका का घ. सुनील दास गुप्त का

jharkhandiab.com

22. **आप अदीब ठहरी और सभी अदीबों का दिमाग थोड़ा-सा तो ज़रूर ही घूमा हुआ होता है। यहाँ 'अदीब' शब्द किसके लिए प्रयोग हुआ है?**

क. सिरफिरे व्यक्ति के लिए
ख. पागल के लिए
ग. साहित्यकार के लिए
घ. सरकारी अधिकारी के लिए

23. **सफ़िया ने टोकरी में कौन-से फल डाले ?**

क. संतरे ख. माल्टे
ग. आम घ. कीनू

24. **पहले सफ़िया ने नमक की पुड़िया को कहाँ रखा ?**

क. अपने पर्स में
ख. फलों की टोकरी की तह में
ग. फलों के ऊपर
घ. सूटकेस में

25. **शहजादा अपनी रान चीरकर क्या छिपा लेता था ?**

क. सोना ख. मोती
ग. हीरा घ. चाँद

26. **जिस कमरे में सफ़िया सो रही थी उसकी खिड़की के पास कौन-सा दरख्त लगा हुआ था ?**

क. चंपा का ख. चमेली का
ग. गेंदा का घ. गुलाब का

उत्तर –	1- ख	2- क	3- क	4- घ	5- घ
	6- ख	7- घ	8-घ	9-ग	10-ग
	11- घ	12- क	13- ख	14- ग	15- ख
	16- ख	17- घ	18- क	19- घ	20- ख
	21- ख	22- ग	23- घ	24- ख	25- ग
	26-क				

Jharkhandlab.com

अध्याय - 17	# शिरीष के फूल - हजारी प्रसाद द्विवेदी

jharkhandlab.com

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न - 1. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?

उत्तर - लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह माना है, क्योंकि अवधूत वह है जो सांसारिक मोहमाया से ऊपर होता है। शिरीष संन्यासी की तरह विषम परिस्थिति में भी डटा रहता है। भयंकर गरमी, उमस, लू आदि में भी इसका पेड़ फूलों से लदा हुआ मिलता है। कालजयी अवधूत की भांति जीवन की अजेयता का प्रचार करता रहता है।

प्रश्न -2. हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है - प्रस्तुत पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर - शिरीष के फूलों में सब कुछ कोमल है, लेकिन लेखक कहता है कि फूलों में कोमलता तो होती है पर उनका व्यवहार (फल) बहुत कठोर होता है अर्थात् शिरीष हृदय से तो कोमल है किंतु व्यवहार से कठोर है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। संत तुलसीदास, कालिदास, कबीर दास ने भी समाज को उच्च कोटि का साहित्य दिया, परंतु बाहरी तौर पर सदैव कठोर बने रहे।

प्रश्न - 3. द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रह कर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।

उत्तर - द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। लेखक ने कहा है कि शिरीष वास्तव में अवधूत है। वह किसी भी स्थिति में विचलित नहीं होता है। सुख हो या दुःख उसने कभी हार नहीं मानी, दोनों ही स्थितियों में वह अडिग रहा। शिरीष का फूल प्रत्येक मौसम में चाहे बसंत हो या पतझड़ सरस बना रहता है। वसंत ऋतु में भी वैसा ही बना रहता है जैसे लू और उमस भरे मौसम में। इसलिए चाहे कोलाहल हो या संघर्ष, उसने हर स्थिति में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है।

प्रश्न - 4. हाय, वह अवधूत कहां है! ऐसा कहकर लेखक ने आत्म-बल पर देह- बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे ?

उत्तर - 'हाय, वह अवधूत कहां है!' ऐसा कहकर लेखक ने आत्म-बल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। आज जिस प्रकार शिरीष का महत्त्व कम हो गया है, उसी प्रकार मनुष्य में आत्मबल का अभाव हो गया है। वह मानव मूल्यों को त्याग कर हिंसा, असत्य आदि आसुरी प्रवृत्तियों को अपना रहा है। आज चारों तरफ तनाव का माहौल है और गांधी जैसा अवधूत लापता है। वर्तमान सभ्यता के संकट के सुधार के लिए महात्मा गांधी जैसे लोगों का अभाव है।

प्रश्न - 5. कवि (साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय - एक साथ आवश्यक है। ऐसा विचार प्रस्तुत कर लेखक ने साहित्य-कर्म के लिए बहुत ऊंचा मानदंड निर्धारित किया है। विस्तार पूर्वक समझाएं।

उत्तर - कवि (साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी जैसी स्थिर प्रज्ञता होनी चाहिए, क्योंकि इसी के आधार पर वह निष्पक्ष और सार्थक काव्य की रचना कर सकता है। वह निष्पक्ष भाव से किसी जाति, लिंग, धर्म या विचारधारा विशेष को प्रश्रय न दे। जो कुछ भी समाज के लिए उपयोगी हो सकता है उसी का चित्रण करे। साथ में उसमें विदग्ध प्रेमि का-सा हृदय भी होना चाहिए, क्योंकि स्थितप्रज्ञ होकर कालजयी साहित्य नहीं रचा जा सकता है। यदि मन में वियोग की विदग्ध हृदय की भावना होगी तो कोमल भाव अपने आप साहित्य में निरूपित होते जाएंगे। इसलिए दोनों स्थितियों का होना अनिवार्य है।

प्रश्न-6. सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवी हो सकता है, जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनी गतिशीलता बनाए रखी है। पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर- सृष्टि का नियम है कि जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु भी निश्चित है। बुढ़ापा और मृत्यु इस नश्वर संसार के प्रामाणिक सत्य है। निश्चित अवधि के बाद हर वस्तु का अंत अनिवार्य है। जड़ता मृत्यु का ही दूसरा नाम है। किसी भी व्यक्ति या वस्तु में जब तक विकसित होने तथा नएपन के गुण है तब तक उसका स्वागत होता है। एक वृक्ष का फल ज्यों ही वृक्ष से रस लेकर पक जाता है, उसका वृक्ष से गिरना तय हो जाता है। वह वृक्ष से तभी तक जुड़ा रह सकता है जब तक वृक्ष से रस लेकर अपने-आप को विकसित कर रहा होता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति जब तक अपने जीवन में कुछ न कुछ प्राप्त करने का प्रयास करता रहता है तभी तक चेतना उसके शरीर में विद्यमान रहती है। समाज से भी वह व्यक्ति अधिक सफल और दीर्घजीवी माना जाता है, जो अपने व्यवहार में जड़ता नहीं आने देता। नएपन के स्वागत के लिए हमेशा तैयार रहता है। शिरीष की तरह निरंतर बदल रही परिस्थितियों से समन्वय बनाए रखता है।

प्रश्न -7 आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहां बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आंख बचा पाएंगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुंह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे की मरे।

उत्तर - लेखक ने बताया है कि जरा और मृत्यु दोनों ही जगत के प्रामाणिक सत्य हैं। हमेशा ही जन्म और मृत्यु का संघर्ष चलता रहता है। जो लोग अज्ञानी हैं, वे यह समझते हैं कि जहां हैं, वहां सदैव बने रहें किंतु उनकी यह सोच गलत है। यदि यमराज की मार से बचना है तो मनुष्य को हिलते-डुलते रहना चाहिए क्योंकि गतिशीलता ही जीवन और विराम होना मृत्यु है।

(ख) जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?..... मैं कहता हूं कवि बनना है मेरे दोस्तों, तो फक्कड़ बनो।

उत्तर - इन पंक्तियों का आशय सच्चा कवि बनने से है। द्विवेदी के अनुसार यदि श्रेष्ठ कवि बनना है तो अनासक्त और फक्कड़ बनना होगा। अनासक्त भाव से व्यक्ति तटस्थ रहकर आत्म निरीक्षण कर पाता है और फक्कड़ स्वभाव का होने से वह सांसारिक आकर्षणों से दूर रहता है। यदि वह अपने कार्यों का लेखा-जोखा, हानि-लाभ में उलझा रहे तो कवि नहीं बन पाएगा। कवि बनने के लिए फक्कड़ स्वभाव का होना आवश्यक है।

(ग) फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अंगुली है। वह इशारा है।

उत्तर - इस पंक्ति का आशय सुंदरता और सृजन की सीमा से है। लेखक के कहने का तात्पर्य है कि पेड़, फूल और फल इनका अपना-अपना अस्तित्व होता है। ये यूं ही समाप्त नहीं होते हैं। ये संकेत देते हैं कि जीवन में अभी बहुत कुछ शेष है, अभी भी सृजन की अपार संभावनाएं हैं।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न -1. शिरीष के फूल किस ऋतु में खिलते हैं ?

उत्तर - शिरीष के फूल बसंत ऋतु में खिलते हैं।

प्रश्न -2. शिरीष के फूल का पेड़ कैसा होता है?

उत्तर - शिरीष एक मैदानी इलाके का पेड़ है। आकार में विशाल होता है पर पत्ते बहुत छोटे-छोटे होते हैं। इसके फूलों में पंखुड़ियों की जगह रेशे-रेशे होते हैं।

प्रश्न -3. शिरीष किस मंत्र का प्रचार करता है?

उत्तर - शिरीष कालजयी अवधूत की तरह जीवन की अजेयता मंत्र का प्रचार करता है।

प्रश्न - 4. लेखक कहां बैठकर लिख रहा है? वहां का वातावरण कैसा है?

उत्तर - लेखक जहां बैठकर लिख रहा है, उसके आगे-पीछे, दाएं-बाएं शिरीष के अनेक पेड़ हैं। जेठ की जलती धूप से धरती अग्निकुंड बनी हुई है, शिरीष नीचे से ऊपर फूलों से लदा हुआ है।

प्रश्न - 5. शिरीष के फूल और फल के स्वभाव में अंतर क्या है?

उत्तर - शिरीष के फूल बहुत कोमल होते हैं, जबकि फल अत्यधिक मजबूत होते हैं। वे तभी तक अपना स्थान नहीं छोड़ते जब तक नए फल और नए पत्ते मिलकर उन्हें धकियाकर बाहर नहीं निकाल देते।

प्रश्न - 6. कालिदास को लेखक ने क्या कहा है?

उत्तर - कालिदास को लेखक ने अनासक्त योगी कहा है। उन्होंने मेघदूत जैसे सरस महाकाव्य की रचना की है।

प्रश्न - 7. शिरीष की ऐसी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उसे कालजयी अवधूत की संज्ञा दी?

उत्तर - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष को निम्न विशेषताओं के कारण कालजयी अवधूत की संज्ञा दी है। वह संन्यासी की तरह कठोर मौसम में जिंदा रहता है। वह भीषण गर्मी में भी फूलों से लदा रहता है तथा अपनी सरसता बनाए रखता है। वह विषम परिस्थितियों में भी अडिग रहता है, घुटने नहीं टेकता। वह संन्यासी की तरह हर स्थिति में मस्त रहता है।

प्रश्न -8. सप्रसंग व्याख्या करें -

फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब-कुछ कोमल है! यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नयी पौध के लोग उन्हें धक्का मार कर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

उत्तर- **प्रसंग -**

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 2 में संकलित आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के ललित निबंध शिरीष के फूल पाठ से लिया गया है। प्रस्तुत निबंध में लेखक ने शिरीष के फूल के सौंदर्य वर्णन के साथ-साथ सामाजिक विषयों पर भी प्रकाश डाला है।

व्याख्या -

लेखक का कथन है कि शिरीष के फूल इतने अधिक सुंदर और कोमल है कि कालिदास के बाद कवियों ने यह सोच लिया कि शिरीष के पेड़ की प्रत्येक वस्तु कोमल होती है, परंतु यह उनकी भारी गलती है। कारण यह है कि शिरीष के फल बहुत मजबूत होते हैं। ये फल नए फूलों के आ जाने पर भी अपना स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल और पत्ते उन्हें मिलकर धक्का देकर बाहर का रास्ता नहीं दिखाते तब तक वे अपने स्थान पर जमे रहते हैं। शिरीष के फलों को देखकर लेखक उन नेताओं को याद करने लगता है, जो किसी प्रकार से भी जमाने का रुख को नहीं पहचानते और अपने पद पर तब तक बने रहना चाहते हैं जब तक युवा पीढ़ी के लोग उन्हें धक्का मारकर बाहर नहीं निकाल देते।

विशेष -

1. इन पंक्तियों में शिरीष के सुंदरता और कोमलता के साथ अड़ियल रूप का वर्णन हुआ है।
2. सरल एवं सहज साहित्यिक हिंदी का प्रयोग हुआ है।
3. शब्द चयन सार्थक उचित और भावानुकूल है।
4. शिरीष के फूलों की तुलना नेताओं के साथ करना सर्वथा सार्थक और सटीक है।
5. विचारात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. उमस और लू में कौन-सा पेड़ कालजयी अवधूत की भांति अजेय है?

क. साल ख. तलाश
ग. शिरीष घ. गुलमोहर

2. लेखक ने कवि बनने के लिए क्या बनना आवश्यक माना है ?

क. फक्कड़ ख. वाचाल
ग. विद्वान घ. पंडित

3. शिरीष की सबसे बड़ी विशेषता .....है ?

क. प्रगल्भता ख. दिव्यता
ग. मौलिकता घ भव्यता

4. मेघदूत किस कवि की रचना है ?

क. वाल्मीकि ख. भवभूति
ग. तुलसीदास घ. कालिदास

5. अमलतास कितने दिनों के लिए फूलता है ?

क. 2 सप्ताह ख. 5 सप्ताह
ग. 10 दिन घ. 15-20 दिन

6. लेखक ने शिरीष की तुलना किसके साथ की है ?

क. अवधूत के साथ ख. साधु के साथ
ग. पथिक के साथ घ. गृहस्थ के साथ

7. शिरीष का वृक्ष कहां से अपना रस खींचता है ?

क. पानी से ख. चट्टान से
ग. वायुमंडल से घ. मिट्टी से

8. द्विवेदी ने कबीर के अतिरिक्त और किस कवि को अनासक्त योगी कहा है?

क. रसखान ख. महर्षि व्यास
ग. वाल्मीकि घ. कालिदास

9. 'शिरीष के फूल' साहित्य के किस विधा में लिखा गया है?

क. कहानी ख. उपन्यास
ग. ललित निबंध घ. संस्मरण

10. "धरा को प्रमाण यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना" किस कवि का कथन है?

क. तुलसीदास ख. सूरदास
ग. कबीर दास घ. नंददास

उत्तर-	1- ग	2- क	3- ख	4- घ	5- घ
	6- क	7- ग	8- घ	9- ग	10- क

Jharkhandlab.com

अध्याय - 18	श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज - बाबासाहेब

jharkhandlab.com

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. जाति- प्रथा को श्रम में विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे अंबेडकर के क्या तर्क हैं?

उत्तर - अंबेडकर- जाति प्रथा को श्रम- विभाजन का एक रूप नहीं मानते क्योंकि यह स्वाभाविक नहीं है। यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है। इसमें व्यक्ति की क्षमता की अनदेखी की जाती है। व्यक्ति के जन्म से पहले ही श्रम- विभाजन होना किसी भी तरह से सही नहीं है। यह प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक ही व्यवसाय में बांध देती है। मनुष्य को भी उस पेशा को अपनाने के लिए बाध्य होना पड़ता है। संकट के समय भी समाज मनुष्य को पेशा बदलने की अनुमति नहीं देता।

प्रश्न 2. जाति- प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती जा रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर - जाति -प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती जो उसका पैतृक पेशा न हो। भले ही वह उस पेशे में पारंगत हो। कभी-कभी अचानक ही ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है कि मनुष्य अपना पेशा बदलने को बाध्य हो जाता है। ऐसे में यदि जाति - प्रथा पेशा न बदलने दे तो भुखमरी और बेरोजगारी अपने आप आ जाएगी।

आज के समय में ऐसी बाध्यता नहीं है लोग स्वेच्छा से पैतृक व्यवसाय छोड़कर दूसरे व्यवसाय में जा रहे हैं। अब लोग जाति के आधार पर नहीं बल्कि हुनर के आधार पर व्यवसाय अपना रहे हैं।

प्रश्न 3. लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

उत्तर - लेखक के अनुसार दासता केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। दासता में वह स्थिति भी शामिल है जिसमें लोगों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश किया जाता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता के बाहर भी है। जाति- प्रथा की तरह ऐसा वर्ग का होना भी संभव है जहां लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशा अपनाना पड़ता है।

प्रश्न 4. शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्य में असमानता संभावित रहने के बावजूद अंबेडकर समता को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं ? इसके पीछे उनका क्या तर्क है?

उत्तर - शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद अंबेडकर क्षमता को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह करते हैं। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए। समाज के सभी सदस्यों को आरंभ से ही समान अवसर व समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाने चाहिए। उनका तर्क है कि वंश में जन्म लेना या सामाजिक परंपरा पर व्यक्ति का वश नहीं है। अतः उस आधार पर निर्णय लेना उचित नहीं है।

प्रश्न 5. सही में अंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है; जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या आप इससे सहमत हैं?

उत्तर - हम लेखक से पूर्णतया सहमत हैं। सहमति का कारण यह है कि कुछ लोग किसी खास वंश में पैदा होने के कारण अच्छे व्यवहार के हकदार बन जाते हैं। जबकि इसमें उनका कोई योगदान नहीं होता है। यह स्थिति व्यक्ति को सम्मान तो दिला देता है किंतु उसकी क्षमता का मूल्यांकन नहीं होता। मनुष्य की महानता उसके कोशिशों के परिणाम पर तय होनी चाहिए। मनुष्य के प्रयासों का सही आकलन तभी हो सकता है जब सभी को समान अवसर मिले। अतः पहले जातिवाद का उन्मूलन होना चाहिए, फिर भौतिक स्थितियां और जीवन सुविधाएं समान होनी चाहिए। इसके बाद जो श्रेष्ठ सिद्ध हो वही उत्तम व्यवहार का हकदार हो।

प्रश्न 6. आदर्श समाज के तीन तत्व में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस भ्रातृता शब्द से कहां तक सहमत हैं यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/ समझेंगी?

उत्तर - आदर्श समाज के तीसरे तत्व 'भ्रातृता' पर विचार करते समय लेखक ने अलग से स्त्रियों का उल्लेख नहीं किया है। किंतु लेखक समाज की बात कर रहा है। समाज स्त्री- पुरुष दोनों से मिलकर बनता है। इसलिए सम्मिलित करने या न करने की बात बिल्कुल व्यर्थ है।

'भ्रातृता' शब्द आमतौर पर व्यवहार में प्रचलित नहीं है। यह संस्कृतनिष्ठ शब्द है। मेरे विचार से भाईचारा शब्द उचित रहेगा।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. जन्मजात धंधों में लगे श्रमिक कार्यकुशल क्यों नहीं बन पाते?

उत्तर - जो लोग जाति प्रथा के कारण मजबूरी में काम धंधा अपनाते हैं वह कार्यकुशल नहीं बन पाते। कारण यह है कि रुचि ना होने पर भी मजबूरी में उन्हें वह काम करना पड़ता है। इस कारण वे दुर्भावना से भी ग्रस्त हो जाते हैं। इसलिए वे काम करने की बजाय टालते हैं। काम में मन भी नहीं लगता। इसलिए वे अपनी क्षमता से भी कम परिणाम प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 2. अंबेडकर किस आधार पर असमान व्यवहार को उचित मानते हैं?

उत्तर - डॉक्टर अंबेडकर असमान प्रयत्न के आधार पर असमान व्यवहार को उचित मानते हैं। यदि कोई अपनी इच्छा से कम प्रयत्न करता है तो उसे कम सम्मान मिलना चाहिए। ज्यादा प्रयत्न करने पर ज्यादा सम्मान मिलना चाहिए। इस तरह का प्रोत्साहन या दंड उचित है। इससे मनुष्य को अपनी क्षमताओं का विकास करने का अवसर मिलता है।

प्रश्न 3. डॉक्टर अंबेडकर के अनुसार अधिकतम कार्यकुशलता किस प्रकार बढ़ाई जा सकती है?

उत्तर - डॉक्टर अंबेडकर के अनुसार मनुष्य की कार्यकुशलता को अधिकतम तभी बढ़ाया जा सकता है जब उसे समान व्यवहार और समान अवसर दिया जाएगा।

प्रश्न 4. लेखक ने पूरे पाठ में जाति - प्रथा की किन-किन बुराइयों का उल्लेख किया है?

उत्तर - लेखक ने इस पाठ में जाति- प्रथा की निम्नलिखित बुराइयों का उल्लेख किया है:-

(क) जाति- प्रथा के आधार पर श्रम विभाजन स्वाभाविक नहीं है।

(ख) जाति- प्रथा श्रमिकों में भेद पैदा करती है।

(ग) श्रम- विभाजन रूचि पर आधारित नहीं हो पाता है।

(घ) जन्म से पहले ही श्रम- विभाजन जाति- प्रथा की ही देन है।

(ड.) श्रम- विभाजन में व्यक्ति की क्षमता का ध्यान नहीं रखा जाता है।

(च) इस प्रकार के श्रम- विभाजन में व्यक्ति काम में रुचि नहीं लेता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. श्रम- विभाजन और जाति- प्रथा पाठ के लेखक कौन हैं?

क. भीमराव अंबेडकर ख. धर्मवीर भारती
ग. हजारी प्रसाद द्विवेदी घ. विष्णु खरे

2. जाति-प्रथा व्यक्ति को जीवन भर के लिए किससे बांध देती है?

क. व्यवसाय छोड़ने से ख. अनेक व्यवसायों से
ग. एक ही व्यवसाय से घ. व्यवसाय बदलने से

3. लेखक ने भारतीय समाज में गरीबी और भुखमरी का क्या कारण बताया है?

क. अशिक्षा ख. जाति - प्रथा
ग. पूंजीवाद घ. सांप्रदायिकता

4. जाति- प्रथा का श्रम- विभाजन किस प्रकार का है?

क. अस्वाभाविक ख. स्वाभाविक
ग. सार्थक घ. निरर्थक

5. जाति प्रथा से व्यक्ति को कौन सा पेशा मिलता है?

क. स्वतंत्र पेशा ख. उच्च पेशा
ग. तकनीकी पेशा घ. पैतृक पेशा

6. कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने के लिए मजबूर करना क्या कहलाता है?

क. स्वतंत्रता ख. आज्ञा- पालन
ग. दासता घ. गरीबी

7. लेखक समाज के सभी सदस्यों को कौन से अवसर प्रदान करने के पक्ष में है?

क. समान अवसर ख. असमान अवसर
ग. व्यावहारिक अवसर घ. अव्यावहारिक अवसर

8. जाति- प्रथा समाज में क्या पैदा करती है?

क. समानता ख. ऊंच-नीच का भेद
ग. गरीबी घ. कार्यकुशलता

9. आदर्श समाज का लाभ किसे प्राप्त होगा?

क. अमीरों को ख. गरीबों को
ग. ऊंची जाति के लोगों को घ. सभी को

10. लेखक के अनुसार दासता का संबंध किससे नहीं है?

क. समाज से ख. कानून से
ग. शिक्षा से घ. धन से

उत्तर-	1- क	2- ग	3- ख	4- क	5- घ
	6- ग	7- क	8- ख	9- घ	10- ग

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

वितान

भाग–2

Jharkhandlab.com

पाठ - 1	सिल्वर वैडिंग -मनोहर श्याम जोशी

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर :- यशोधर बाबू एक दफ्तर में सेक्शन ऑफिसर के पद पर कार्यरत थे । बचपन में ही माता-पिता के देहांत हो जाने की वजह से यशोधर बाबू जिम्मेदारियों के बोझ से दब गए थे। यशोधर बाबू ने मैट्रिक पास करने के बाद नौकरी की खोज में किशन दा के यहां रहते हुए मेस का रसोईया बनकर काम किया। यशोधर बाबू घोर संस्कारी किशन दा को अपना आदर्श मानते थे। यही कारण है कि उनके विचारों में किशन दा के विचारों की गहरी छाप थी। वे सदैव पुराने ख्यालों वाले लोगों के बीच रहे, पले-बढ़े, जिसके कारण उन्हें आधुनिकता के विचार बड़े ही असहनीय लगते थे।अतःवे उन परंपराओं को चाह कर भी नहीं छोड़ पाए। उन्होंने कभी भी आधुनिक संपन्न जीवन नहीं जिया था इसी के कारण परिवार के सदस्यों से उनका मतभेद बना रहता था जबकि यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों में आधुनिक नहीं थी किंतु अपने बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी के चलते स्वयं को मॉड (आधुनिक) बना लेती है । विवाह के बाद उसे संयुक्त परिवार के कठोर नियमों का निर्वाह करना पड़ा इसलिए वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से जल्दी ही प्रभावित हो गईं । वे बेटी के कहने के अनुसार नए कपड़े पहनती हैं और बेटों के किसी भी मामले में दखल नहीं देती।यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ परिवर्तित हो जाती है, लेकिन यशोधर बाबू किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से जुड़े होने के कारण स्वयं को कभी भी समय के साथ बदलने की चेष्टा नहीं किये। वे बदलते समय को समझते तो हैं किंतु पूरे मन से स्वीकार न कर पाने के कारण असफल रहते हैं।

प्रश्न 2. पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य की आप कितनी अर्थ-छवियाँ खोज सकते/सकती हैं?

उत्तर :- 'सिल्वर वैडिंग' पाठ में' जो हुआ होगा' वाक्य का प्रयोग यशोधर बाबू ने अनेक जगह कई अभिव्यक्तियों के लिए किया है। 'जो हुआ होगा' वाक्य पाठ में पहली बार तब आता है, जब यशोधर बाबू किशन दा के जाति भाई से उनकी मृत्यु का कारण पूछते है।उत्तर में जाति भाई ने कहा-' जो हुआ होगा' यानी 'पता नहीं, क्या हुआ।' आशय यह है कि बिना बाल-बच्चों वाले किशनदा के संबंध में उनकी जाति भाई इतनी उदासीन थे कि उनकी मृत्यु किस कारण से हुई ,उन्होंने यह भी जानने की जरूरत नहीं समझी।इससे किशनदा के जीवन को लेकर लोगों की उदासीनता व्यंजित हुई है। किशनदा की मौत से इस वाक्य के आधार पर यह अर्थ निकलता है कि विवाह एक आवश्यक संस्कार है।बाल - बच्चों से भविष्य की अर्थात् वृद्धावस्था की सुरक्षा का बोध बना रहता है। यदि किशनदा के बाल - बच्चे होते तो जाति भाई उनके प्रति इतने उदासीन नहीं हो सकते थे। अतः बच्चों का होना भी जरूरी है।

दूसरी बार 'जो हुआ होगा' वाक्य से बाल-बच्चों का न होना, घर-परिवार का न होना और रिटायर होकर गाँव के एक कोने में बैठकर विवश जीवनयापन करना - यह अर्थ व्यक्त हुआ है। तीसरी बार पाठ के अन्त में अपने बेटे के रूखे व्यवहार एवं पत्नी की उदासीनता से यशोधर बाबू को अपनी उपेक्षा का बोध हुआ। तब यशोधर स्वयं को किशनदा की तरह उपेक्षित मानने लगे तथा कहने लगे कि उनकी मौत 'जो हुआ होगा' से हुई होगी। अर्थात् इस तरह की उपेक्षा मिलने से ही हुई होगी। किशनदा की मृत्यु के सही कारणों का पता नहीं चल सका । बस यशोधर बाबू यह सोचते ही रह गए कि किशनदा की मृत्यु कैसे हुई? जिसका उत्तर किसी के पास नहीं था।

प्रश्न 3 :-'समहाउ इंप्रॉपर' वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारम्भ में 'तकिया कलाम' की तरह करते हैं। इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या सम्बन्ध बनता है ?

उत्तर- प्रस्तुत कहानी में 'समहाउ इंप्रॉपर' वाक्यांश का प्रयोग एक दर्जन से भी अधिक बार हुआ है। यह यशोधर बाबू का तकिया कलाम है और इसका सम्बन्ध यशोधर बाबू के व्यक्तित्व से है। वह पुराने सिद्धान्तों से चिपका हुआ व्यक्ति है। इस कारण नये जमाने के साथ तालमेल न बिठा पाने से वह कुछ असन्तुष्ट होने पर ऐसा कहता है कि वह हर चीज का मूल्यांकन अपनी सोच के आधार पर करता है। उसे किशनदा की परम्परा तथा बुजुर्ग लोगों की मान्यताओं का सदा ध्यान रहता है।

घर में पत्नी और बच्चों के साथ वह इसी कारण अनफिट लगता है कि वह उनकी बातों को अनुचित मानता है, स्वयं को परिवार का बुजुर्ग मानकर अकड़ा रहता है। इस प्रकार यशोधर बाबू द्वारा बार-बार प्रयुक्त 'समहाउ इंप्रॉपर' वाक्यांश उनके पुराने परम्परावादी व्यक्तित्व पर प्रश्न-चिह्न लगाता है। लेखक ने व्यंजना की है कि नये युग के अनुसार जीना और नये परिवर्तनों को स्वीकार करना चाहिए। नये जमाने के हिसाब से यशोधर बाबू की तरह 'समहाउ इंप्रापर' नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 4. यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशनदा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आपके जीवन को दिशा देने में किसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा और कैसे?

उत्तर :- यशोधर बाबू का जीवन किशनदा के व्यक्तित्व से पूरी तरह प्रभावित था। यशोधर एक प्रकार से किशनदा के शिष्य तथा मानस-पुत्र थे। किशनदा ने ही उन्हें सर्वप्रथम सहारा दिया था, फिर नौकरी पर लगाया था और जीवन के निर्माण की अनेक शिक्षाएँ दी थीं। इसी कारण यशोधर बाबू हर बात पर किशनदा का स्मरण कर उनसे प्रेरणा लेते रहते थे। कार्यालय में अधीनस्थ कर्मचारियों से, अन्य लोगों से, सामाजिक कार्यकलापों एवं घर-गृहस्थी आदि सभी कामों में प्रवृत्त रहने पर वे पूर्णतया किशनदा को अपना आदर्श मानते थे।

यशोधर बाबू की तरह ही मेरे जीवन को दिशा देने में मेरे एक गुरुजी का तथा बड़े भाई का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। पिताजी की असामयिक मृत्यु हो जाने पर भी बड़े भाई ने मुझे पढ़ा-लिखाकर योग्य बनाया और गुरुजी ने मुझे सदाचरण, स्वाभिमान तथा मानवीय आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा दी। इसी से मैं अपने व्यक्तित्व को ढाल सका हूँ।

प्रश्न 5 वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

उत्तर :- यह प्रश्न प्रत्येक छात्र के पारिवारिक अनुभवों एवं स्थितियों पर आधारित है। अतः अनुभव स्वयं लिख सकते हैं। यहाँ उत्तर इस प्रकार दिया जा रहा है...वर्तमान में शहरों में संयुक्त परिवार की प्रथा समाप्त हो गई है, परन्तु गाँवों में अभी भी यह प्रथा प्रचलित है। शहरी नागरिक होने से मैं एकल परिवार का सदस्य हूँ। परिवार में मेरे माता-पिता, मैं और एक छोटी बहिन - इस प्रकार चार ही सदस्य हैं। पिताजी परिवार के भरण-पोषण का पूरा ध्यान रखते हैं।

हम दोनों भाई-बहिन को उन्होंने अच्छी शिक्षा देने का निश्चय कर रखा है। इसी कारण पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अन्य चीजों की जरा-सी फ़रमाइश करने पर वे तुरन्त सारी चीजें ले आते हैं। इस तरह के व्यवहार से हमारा मन पढ़ाई में खूब लगता है। पिताजी कभी-कभी अपने पिछले जीवन, संयुक्त परिवार की परम्पराओं और उनके अन्धविश्वासों का जिक्र करते हैं। परन्तु संयुक्त परिवार

jharkhandlab.com

से अलग होकर अब वे हमारे जीवन को उच्च से उच्चतर बनाने की आकांक्षा रखते। प्रस्तुत कहानी का नायक यशोधर अपने जीवन में कुछ कटा हुआ-सा तथा पुराने सिद्धान्तों से चिपका हुआ-सा दिखाई देता है। इसी कारण वह अपने बच्चों एवं पत्नी की बातों से सामंजस्य नहीं रख पाता है। उसके बच्चे भी उसकी भावनाओं से तालमेल नहीं रखते हैं। परन्तु हमारे परिवार में ऐसी स्थिति नहीं है तथा घर के सभी सदस्यों में हर तरह से सामंजस्य रहता है।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किसे आप कहानी की मूल संवेदना कहेंगे/ कहेंगी और क्यों?

(क) हाशिये पर धकेले जाते मानवीय मूल्य

(ख) पीढ़ी का अन्तराल

(ग) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

उत्तर : - 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू के बच्चे एवं पत्नी नये विचारों के समर्थक होने से मानवीय मूल्यों को उतना महत्त्व नहीं देते हैं। वे रिश्तेदारी, सामाजिक कर्त्तव्य, भाईचारा, बुजुर्गों का सम्मान आदि का कम ही ध्यान रखते हैं। यशोधर के बच्चों पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव रहता है, स्वयं यशोधर भी कभी-कभी पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित दिखाई देते हैं, परन्तु प्रस्तुत कहानी की मूल संवेदना में ये दोनों बिन्दु सहायक तत्त्व हैं।

इस कहानी की मूल संवेदना 'पीढ़ी का अन्तराल' व्यंजित करना है। यशोधर बाबू पुरानी परम्पराओं एवं किशनदा के आदर्शों को अपनाते हैं, परन्तु उनके बेटे-बेटी (तथा पत्नी भी) पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित रहते हैं। उनकी बेटी जीन्स-बाँहरहित टॉप पहनती है, पत्नी भी नये-जमाने के हिसाब से मॉड बनने का प्रयास करती है। इस कारण यशोधर बाबू अपने परिवार से कटे रहते हैं। अतः उपर्युक्त तीनों स्थितियों में से पीढ़ी अन्तराल की समस्या ही प्रस्तुत कहानी का केन्द्र है।

प्रश्न 7. अपने घर और विद्यालय के आस-पास हो रहे उन बदलावों के बारे में लिखें जो सुविधाजनक और आधुनिक होते हुए भी बुजुर्गों को अच्छे नहीं लगते। अच्छा न लगने के क्या कारण होंगे?

उत्तर ; - हमारे घर व विद्यालय के आस-पास निम्नलिखित बदलाव हो रहे हैं जिन्हें बुजुर्ग पसंद नहीं करते-

युवाओं द्वारा मोबाइल का प्रयोग करना।

युवाओं द्वारा पैदल न चलकर तीव्र गति से चलाते हुए मोटर-साइकिल या स्कूटर का प्रयोग।

लड़कियों द्वारा जीन्स व शर्ट पहनना।

लड़के-लड़कियों की दोस्ती व पार्क में घूमना।

खड़े होकर भोजन करना।

तेज आवाज में संगीत सुनना।

बुजुर्ग पीढ़ी इन सभी परिवर्तनों का विरोध करती है। उन्हें लगता है कि ये हमारी संस्कृति के खिलाफ़ हैं। कुछ सुविधाओं को वे स्वास्थ्य की दृष्टि से खराब मानते हैं तो कुछ उनकी परंपरा को खत्म कर रहे हैं। महिलाओं व लड़कियों को अपनी सभ्यता व संस्कृति के अनुसार आचरण करना चाहिए।

प्रश्न 8. यशोधर बाबू के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है? दिए गए तीन कथनों में से आप जिसके समर्थन में हैं, अपने अनुभवों और सोच के आधार पर उसके लिए तर्क दीजिए -

(क) यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह पुराने हैं और वे सहानुभूति के पात्र नहीं हैं।

(ख) यशोधर बाबू में एक तरह का द्वन्द्व है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता तो है पर पुराना छोड़ता नहीं। इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है।

(ग) यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्व है और नयी पीढ़ी द्वारा उनके विचारों को अपनाना ही उचित है।

उत्तर : - यशोधर बाबू में एक तरह का द्वन्द्व है। इस कारण उन्हें नये जमाने का रहन-सहन एवं चाल-चलन आदि अपनी ओर खींचता है, तो दूसरी तरफ उन्हें पुरानी परम्पराएँ एवं संस्कार नहीं छोड़ते हैं। इस तरह वे नये और पुराने संस्कारों के द्वन्द्व से घिरे रहते हैं। इस कारण उनके प्रति सहानुभूति रखने की जरूरत है; क्योंकि वे ग्रामीण परिवेश से दिल्ली आये, किशनदा के परम्परागत आचरण से प्रभावित रहे, संयुक्त परिवार में भी रहे तथा रिश्ते नातों के साथ सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहे। वे अपने गाँव के नाते-रिश्तों, परम्परागत संस्कारों, धर्म-कर्म तथा समाज-सेवा आदि से जुड़े थे, अपनी बहिन के सुख-दुःख में सहभागी बनते थे। इस तरह वे सिद्धान्तों और मूल्यों को महत्त्व देते थे, परन्तु परिवार में बच्चों के व्यवहार से, 'सिल्वर वैडिंग' के आयोजन से तथा अन्य कारणों से नयेपन की ओर भी कुछ आकर्षित होने लगे थे। इस सम्बन्ध में हमारा मानना है कि पुरानी एवं नयी पीढ़ी के मध्य का यह द्वन्द्व एक ही पात्र में पूर्णतया सही दिखाई देता है। अतः यशोधर बाबू सहानुभूति के पात्र हैं।

प्रश्न 1. कहानी के आधार पर यशोधर पंत के व्यक्तित्व की विशेषताएं बताएं।

उत्तर : - कहानी के आधार पर यशोधर पंत के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएं हैं -

1. सरल,सादगी पसंद व धार्मिक व्यक्ति -यशोधर पंत बहुत ही सरल व सादगी पसंद व्यक्ति थे। धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण नियमित पूजा पाठ आदि करते और ऑफिस से आते वक्त बिड़ला मंदिर अवश्य जाते थे।

2. सामाजिक व्यक्ति-यशोधर बाबू एक सामाजिक व्यक्ति थे। जो सामाजिक रिश्तों को निभाना और उन्हें संजो कर रखना पसंद करते थे।

3 जिम्मेदार और समझदार व्यक्ति - यशोधर बाबू गृह मंत्रालय में सेक्शन ऑफिसर थे। वो अपनी हर जिम्मेदारी का बखूबी निर्वहन करते थे और यह गुण उन्होंने किशन दा से ही सीखा था।

4. मितव्ययी-वो फिजूलखर्ची पर विश्वास नहीं करते थे । इसीलिए उन्होंने अपनी सिल्वर वैडिंग के दिन ऑफिस वालों को बड़ी मुश्किल से 30 रूपये जलपान हेतु दिए थे।

5. परंपरावादी व्यक्ति - उन्होंने आजीवन अपनी कुमाऊँनी परंपराओं, रीति-रिवाजों का बड़े शिद्त से निर्वहन किया। वो अक्सर कुमाऊँनी रीति-रिवाजों, त्यौहारों से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन अपने घर में किया करते थे।

6. संवेदनशील व्यक्ति - हालांकि उनके और उनके बच्चों के बीच विचारों का टकराव चलता रहता था। लेकिन फिर भी अपने पारिवारिक माहौल को शांतिपूर्ण बनाए रखने के लिए वो अपना अधिकतर समय घर से बाहर ही गुजारते थे। उनके बच्चे अपने किसी भी मामले में उनसे राय नहीं लेते थे जो उनको काफी बुरी लगती थी लेकिन फिर भी वो उसे चुप रहकर सहन कर जाते थे।

7. आधुनिकता के घोर विरोधी - वो आधुनिक तौर-तरीकों , जीवन मूल्यों व संस्कारों के घोर विरोधी थे लेकिन अपने बेटों की तरक्की से खुश भी होते थे।

8. भौतिक सुख के विरोधी - यशोधर भौतिक संसाधनों के घोर विरोधी थे। उन्हें घर या दफ्तर में पार्टी करना पसंद नहीं था। वे पैदल चलते थे या साइकिल पर चलते थे। केक काटना,बाल काला करना, मेकअप, धन संग्रह आदि पसंद नहीं था।

9. अपरिवर्तनशील - यशोधर बाबू आदर्शों से चिपके रहे। वे समय के अनुसार अपने विचारों में परिवर्तन नहीं ला सके। वे रूढ़िवादी थे। उन्हें बच्चों के नए प्रयासों पर संदेह रहता था। वे सेक्शन अफ़सर होते हुए भी साइकिल से दफ्तर जाते थे.

प्रश्न 2. यशोधर बाबू के जीवन में जीवन मूल्यों के पुराने और नए प्रचलन में किस प्रकार का द्वंद था ?

उत्तर ; - यशोधर बाबू के जीवन में पुराने और नए जीवन मूल्यों और संस्कारों के बीच द्वंद था और उनका पूरा जीवन इसी द्वंद में बीत गया। एक तरफ किशन दा के दिये संस्कार और दूसरी तरफ उनके बच्चों की आधुनिक विचारधारा और वो कभी उन दोनों में सामंजस्य नहीं बिठा पाए।

वो पुरानी पीढ़ी की विचारधारा को ही सर्वश्रेष्ठ मानते थे। नए जमाने के तौर-तरीकों, रीति रिवाजों को "अंग्रेजों के चोचले" कहते थे। यहां तक कि वो स्कूटर में जाने के बजाय पैदल जाना ही ज्यादा पसंद करते थे । वो अपनी रिश्तेदारी - नातेदारी निभाना चाहते थे।

उन्हें अपनी बेटी का जींस-टॉप पहनना और पत्नी का बिना बांह वाला ब्लाउज पहनना भी पसंद नहीं था। लेकिन उनके बच्चे अपना जीवन स्वतंत्रता पूर्वक जीने में विश्वास करते थे। वो आधुनिक सुख सुविधाओं के साथ रहना पसंद करते थे। इन्हीं सब कारणों से उनके और उनके बच्चों के बीच हमेशा टकराव चलता रहता था जिस कारण वो भरे पूरे परिवार के बावजूद अकेले हो गये।

प्रश्न 3. "समहाऊ इम्प्रॉपर " वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते थे। इस काव्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है ?

उत्तर- यशोधर बाबू "समहाऊ इम्प्रॉपर " वाक्य का प्रयोग बार -बार करते थे। यशोधर बाबू को जब भी कुछ गलत या अनुचित लगता था या वो किसी के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते थे या उन्हें कहीं किसी काम में कोई कमी नजर आती थी यानी जब वो अनिर्णय की स्थिति में होते थे तब अक्सर इस वाक्य का प्रयोग करते थे जो उनके व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव डालता है ।

दरअसल वो यह निर्णय नहीं ले पाते थे कि जो कुछ नई पीढ़ी कर रही हैं, वह सही है या गलत,क्योंकि उनके द्वारा की गई कुछ चीजों को वो अच्छा मानते थे कुछ को नहीं। इसीलिए नई पीढ़ी के विचारों के साथ सामंजस्य न बना पाने के कारण जमाने के हिसाब से यशोधर बाबू अप्रासंगिक व अकेले हो गए थे।

कहानी का कथ्य यह कहता है कि एक खुशहाल जीवन जीने के लिए व्यक्ति को समय के साथ अपने विचारों में थोड़ा बदलाव कर नई व अच्छी चीजों को ग्रहण कर, लोगों के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश करनी चाहिए।

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. "नवीन पीढ़ी और नवीन जीवन मूल्य, पुरानी पीढ़ी और प्राचीन जीवन मूल्य, इन दोनों के बीच सदैव टकराहट चलती रहती है।" 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर- 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के प्रमुख पात्र यशोधर बाबू संस्कारी व्यक्ति हैं। वे पुरानी पीढ़ी और प्राचीन जीवन मूल्यों को अपनी परंपरावादी सोच के आधार पर श्रेष्ठ मानते हैं, जबकि उनका बेटा-बेटी तथा उनकी पत्नी भी नयी पीढ़ी के जीवन मूल्यों का अनुसरण करती है। फलस्वरूप घर में यशोधर बाबू का हर बात में विरोध होता है। उनकी बात न कोई मानने को तैयार होता है और न कोई सुनता है। वे घर में अकेले पड़ जाते हैं। तब वे दफ्तर से देर शाम तक घर पहुँचते हैं तथा किशनदा के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार घर में उनकी सदा टकराहट चलती रहती है और पीढ़ियों का अन्तराल उन्हें परेशान कर देता है।

प्रश्न 2. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में मानवीय मूल्यों के घिसने तथा सामाजिक विकास में बाधा डालने वाले तत्त्वों की व्यंजना हुई है।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सिल्वर वैडिंग' कहानी के उद्देश्य का निरूपण कीजिए।

उत्तर : - 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के कथानक में पुरानी एवं नयी परम्पराओं व मूल्यों के टकराहट का यथार्थ चित्रण किया गया है। कहानी के प्रमुख पात्र यशोधर बाबू संस्कारी व्यक्ति हैं और 'जो हुआ होगा' कहकर यथास्थितिवाद से ग्रस्त रहते हैं, तो दूसरी ओर 'समहाउ इंप्रापर' कहकर अनिर्णय की स्थिति में रहते हैं। वे अपने बच्चों की तरक्की से खुश होते हैं लेकिन उनके बच्चे तथा पत्नी का आधुनिकता की ओर बढ़ता झुकाव उन्हें अखरता भी है।

यशोधर बाबू खुद को बदलने में असमर्थ पाते हैं। परिणामस्वरूप वे घर में देर से आने लगते हैं। वस्तुतः आज हमारा समाज आधुनिकता की ओर ही बढ़ रहा है, परन्तु दूसरी ओर इससे मानवीय मूल्य भी घट रहे हैं। 'समहाउ इंप्रापर' के कारण देश का विकास बाधित भी हो रहा है। कहानी का उद्देश्य इन्हीं स्थितियों की व्यंजना करना है।

प्रश्न 3. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के प्रमुख पात्र यशोधर बाबू समय के साथ ढल सकने में असफल रहते हैं। ऐसा क्यों? लिखिए।

उत्तर : - 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के प्रमुख पात्र यशोधर बाबू ग्रामीण परिवेश से पोषित संस्कारी व्यक्ति हैं। उनके जीवन में किशनदा की सिखाई हुई बातों का महत्त्व अभी तक बना हुआ है। वे किशनदा को अपना आदर्श मानते हैं और वे उन्हीं के आदर्शों के अनुरूप जीना चाहते हैं। इतना ही नहीं वे अपने परिवार को भी उन्हीं आदर्शों पर ढालना चाहते हैं।

इधर जमाना बहुत बदल चुका है। स्वयं उनकी पत्नी और बच्चे भी जमाने की नई हवा से प्रभावित हैं। यशोधर बाबू के अपने संस्कार, प्रौढ़ आयु तथा नए चलन की व्यर्थता उन्हें ढलने नहीं देती। इस कारण वे नए जमाने की नई परंपराओं की, नए रंग-ढंग की, नई वेशभूषा को बेकार मानते हैं। उन्हें आधुनिक पहनावा, पश्चिमी रंग-ढंग और नया रहन-सहन अपने अनुकूल नहीं लगता, इसलिए वे समय के साथ ढल सकने में असफल रहते हैं।

प्रश्न 4. यशोधर बाबू की पत्नी के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- यशोधर की पत्नी एक आम भारतीय नारी है, जो बदलते वक्त के साथ बदलना जानती है। उसके व्यक्तित्व में निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं -

दबी हुई नारी - यशोधर की पत्नी को विवाह के बाद अनचाहे मन से संयुक्त परिवार में रहना पड़ा। इस कारण जिस तरह से स्वच्छंद होकर वह सुख-भोग लेना चाहती थी, वैसा नहीं ले पायी। इसलिए वह अपने पति से कहती है "किशनदा तो थे ही जन्म के बूढ़े, तुम्हें क्या सुर लगा जो उनका बुढ़ापा खुद ओढ़ने लगे हो।"

आधुनिकता की चाह - यशोधर बाबू की पत्नी में आधुनिक रंग-ढंग की बहुत चाह है। इसलिए वह बालों में खिज़ाब, ओठों पर लाली लगाती है और ऊँची एड़ी की चप्पल पहनती है। पर अपने पति को कहती है-"वह सिर पर पल्लू वल्लू मैंने कर लिया बहुत तुम्हारे कहने पर समझे, मेरी बेटी वही करेगी जो दुनिया कर रही है।"

विद्रोही स्वभाव - यशोधर की पत्नी के मन में अपने पति के प्रति जरा-भी सहानुभूति नहीं है। वह उनको उबाऊ व्यक्ति मानती है जो समय से पहले ही बूढ़ा हो गया है। अतः वह पूरी तरह अपने बच्चों की तरफदारी करती हैं।

अतिलघूत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. यशोधर बाबू को किसकी बातचीत से पता चलता है कि आज उनके विवाह के पच्चीस वर्ष पूरे हो गए हैं?

उत्तर- यशोधर बाबू को अपने अधीनस्थ लिपिक चड्ढा की बातचीत से पता चलता है कि आज पच्चीस वर्ष उनके विवाह के पूरे हो गए हैं।

प्रश्न 2. मेनन से मुखातिब होकर यशोधर बाबू ने क्या कहा था?

उत्तर- मेनन से मुखातिब होकर यशोधर बाबू ने कहा था- "नाव लैट मी सी, आई वॉज मैरिड ऑन सिक्स्थ फरवरी नाइन्टिन फोर्टी सेवन।"

प्रश्न 3. यशोधर बाबू की घड़ी की ओर देखकर चड्ढा ने क्या कहा था ?

उत्तर - "चड्ढा ने घड़ी की ओर देखकर कहा था-" बाबा आदम के जमाने की है, अब तो डिजिटल ले लो एक जापानी। सस्ती मिल जाती है।"

प्रश्न 4. रोजी-रोटी की तलाश में यशोधर पंत दिल्ली में किसकी शरण में आए थे ?

उत्तर - रोजी-रोटी की तलाश में मैट्रिक पास यशोधर पंत-दिल्ली में किशनदा की शरण में आए थे। उन्होंने मैस का रसोइया बनाकर रख लिया।

प्रश्न 5. किशनदा ने यशोधर पंत को पचास रुपये उधार क्यों दिए थे ?

उत्तर- किशनदा ने यशोधर पंत को पचास रुपये उधार इसलिए दिए थे कि वह अपने लिए कपड़े बनवा सके और गाँव पैसे भेज सके।

प्रश्न 6. किशनदा यशोधर पंत की सरकारी नौकरी क्यों नहीं लगवा सके थे ?

उत्तर : - किशनदा यशोधर पंत की सरकारी नौकरी इसलिए नहीं लगवा सके थे क्योंकि उनकी उम्र उस समय सरकारी नौकरी के लिए कम थी।

प्रश्न 7. यशोधर बाबू ने कौन-सी अदा किशनदा से सीखी थी?

उत्तर - "यशोधर बाबू खुश होते हुए झेंपे और झेंपते हुए खुश हुए।" यह अदा उन्होंने किशनदा से सीखी थी।

प्रश्न 8. आधुनिक युवा बन चलने पर यशोधर बाबू के बच्चे उनसे क्या अपेक्षा करते हैं ?

उत्तर ; - बच्चे उनसे अपेक्षा करते हैं कि वे स्कूटर ले लें, क्योंकि साइकिल तो चपरासी चलाते हैं। साइकिल चलाना उन्हें नागवार गुजरता है।

प्रश्न 9. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी किस द्वन्द्व पर आधारित है ?

उत्तर - यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं। उनके बच्चे आधुनिक रंग-ढंग और प्रगति के दीवाने हैं। पूरी कहानी इसी द्वन्द्व पर आधारित है।

प्रश्न 10. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में लेखक क्या कहना चाहता है ?

उत्तर : - लेखक कहना चाहता है कि यदि नित बदलती दुनिया में सम्मान से जीना चाहते हो तो नए परिवर्तनों को अनुचित बताने की बजाय उन्हें स्वीकार करो।

प्रश्न 11. यशोधर बाबू ने अपने जीवन में मकान क्यों नहीं बनवाया ?

उत्तर- किशनदा ने उनसे कहा था-मूर्ख लोग मकान बनवाते हैं, सयाने उसमें रहते हैं। उनकी इस उक्ति से प्रभावित होकर उन्होंने आजीवन सरकारी क्वार्टर में रहने का निश्चय किया।

प्रश्न 12. यशोधर बाबू अपने परिवार से क्या अपेक्षा करते थे ?

उत्तर- वे अपने परिवार से अपेक्षा करते थे कि सभी उनका सम्मान करें, हर बात में उनकी राय ली जाए, बच्चे अपना वेतन लाकर उन्हें ही दें।

प्रश्न 13. सिल्वर वैडिंग' कहानी में किस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है ?

उत्तर- प्रस्तुत कहानी में आधुनिकता के मोह में पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण और मानव-मूल्यों की ह्रास की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

प्रश्न 14. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर - कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि जीवन में आधुनिकता का समावेश करें परन्तु पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण नहीं करें।

प्रश्न 15. किशन दा ने अपना जीवन किसके नाम कर दिया था ?

उत्तर- किशनदा ने अपना जीवन समाज सेवा जैसे अच्छे काम के लिए समर्पित कर दिया था।

प्रश्न 16. सिल्वर वैडिंग का आयोजन क्यों हुआ था ?

उत्तर- यशोधर बाबू की शादी के 25 वर्ष पूरे होने की खुशी में सिल्वर वैडिंग का आयोजन किया गया था।

प्रश्न 17. रिटायरमेंट के समय यशोधर बाबू का वेतन कितना था ?

उत्तर - रिटायरमेंट के समय यशोधर बाबू का वेतन डेढ़ हजार रुपया था।

प्रश्न 18. यशोधर बाबू ने किसी स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की थी ?

उत्तर- रैम्जे स्कूल अल्मोड़ा से यशोधर बाबू ने अपनी मैट्रिक के परीक्षा पास की थी।

प्रश्न 19. यशोधर बाबू की शादी कब हुई थी ?

उत्तर- 6 फरवरी सन् 1947 को यशोधर बाबू की शादी हुई थी।

प्रश्न 20. सिल्वर वैडिंग का आयोजन क्यों हुआ था?

उत्तर- यशोधर बाबू के शादी के 25 वर्ष पूरे होने की खुशी में सिल्वर वैडिंग का आयोजन किया गया था।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1. सिल्वर वैडिंग शादी का कौन सा साल होता है ?

क. 21 ख. 22
ग. 23 घ. 25

2. किशनदा का पूरा नाम क्या था ?

क. कृष्ण पांडे ख. गोपी नन्द
ग. कृष्णानाथ पाण्डेय घ. कृष्णा नन्द पांडे

3. यशोधर पंत को चड्ढा की कौनसी बात इम्प्रॉपर महसूस होती है ?

क. मोहरी वाली पतलून ख. ऊंची एड़ी के जूते
ग. A तथा B दोनों घ. इनमे से कोई नहीं

4. यशोधर बाबू को कौन सी सवारी निहायती बेहूदा लगती है ?

क. रेल गाडी ख. स्कूटर
ग. साइकिल घ. गाड़ी

5.' सिल्वर वैडिंग' पर भूषण ने अपने पिता को क्या उपहार दिया ?

क. घड़ी ख. पैंट
ग. पैंट और कमीज़ घ. ऊनी ड्रेसिंग गाउन

6. यशोधर का दूसरा बेटा क्या करता है ?

क. नौकरी ख. साफ सफाई
ग. आईएएस की तैयारी घ. समाज सेवा

7. यशोधर पंत के बड़े लड़के का क्या नाम है?

क. श्याम ख. राम
ग. भूषण घ. रमेश

8. यशोधर पंत का बड़ा लड़का क्या करता है?

क. विज्ञापन कंपनी में नौकरी ख. साफ सफाई
ग. समाज सेवा घ. शिक्षक

9. यशोधर का तीसरा बेटा स्कॉलरशिप लेकर कहाँ चला गया ?

क. पाकिस्तान ख. जापान
ग. कनाडा घ. अमेरिका

10. यशोधर के जीजा का क्या नाम है ?

क. राम जोशी ख. काम जोशी
ग. श्याम जोशी घ. जनार्दन जोशी

11. यशोधर पंत बार बार किस शब्द का प्रयोग करते हैं ?

क. एक्स्क्यूस मी ख. सॉरी
ग. इट्स ओके घ. सम्हाउ इम्प्रॉपर

12. यशोधर पंत की सिल्वर वैडिंग का प्रबंध किसने किया ?

क. रमेश ने ख. भूषण ने
ग. जनार्दन जोशी ने घ. इनमे से कोई नहीं

Jharkhandiah.com

13. **यशोधर बाबू के कितने बेटे थे ?**
क एक ख. दो
ग. तीन घ. चार

14. **यशोधर बाबू कौन से पद पर नियुक्त थे -**
क. इंस्पेक्टर ख. सब इंस्पेक्टर
ग. सफाई कर्मचारी घ. सेक्शन ऑफिसर

15. **यशोधर बाबू कैसी जिंदगी जीना चाहते थे ?**
क. कठोर ख. विलासतापूर्ण
ग. शाही घ. सरल और सादी

16. **इस कहानी की मूल संवेदना क्या है ?**
क. पीढ़ी का अंतराल ख. प्रकृति का प्रकोप
ग. प्रदूषण घ. बाढ़

17. **ऑफिस से छुट्टी होने पर यशोधर बाबू कहाँ जाते थे ?**
क. इस्कॉन मंदिर ख. कमल मंदिर
ग. बिड़ला मंदिर घ. गुरुद्वारा

18. **यशोधर बाबू घर से ऑफिस कैसे जाते थे ?**
क. बस से ख. कार से
ग. पैदल घ. रथ से

19. **यशोधर बाबू की किस से तकरार होती रहती थी ?**
क. भाई से ख. किशनदा से
ग. पत्नी और बच्चों से घ. इनमें से कोई नहीं

20. **यशोधर बाबू जुड़े हुए हैं-**
क. आधुनिकता से ख. पुरानी परंपराओं से
ग. विलायती जीवन से घ. सरकारी कार्यालय से

21. **भूषण ने यशोधर पंत को क्या उपहार दिया ?**
क. जीन्स ख. पजामा
ग. ऊनी गाउन घ. कमीज

22. **सिल्वर वैडिंग पाठ किस विधा में रचित है ?**
क. निबंध ख. नाटक
ग. एकांकी घ. कहानी

23. **यशोधर बाबू का परिवार किस संस्कृति में ढलने में सफल रहा ?**
क. पश्चिमी ख. भारतीय
ग. चीनी घ. जापानी

24. **गिरीश कौन था ?**
क. यशोधर का बेटा
ख. यशोधर की पत्नी का चचेरा भाई
ग. यशोधर का ससुर
घ. यशोधर का बड़ा भाई

25. **यशोधर बाबू की बेटी क्या करना चाहती है ?**
क. आईएएस की तैयारी
ख. पुलिस की नौकरी
ग. डॉक्टर की पढ़ाई के लिए अमेरिका जाना
घ. इनमें से कोई नहीं

26. **यशोधर बाबू जुड़े हुए हैं-**
क. आधुनिकता से ख. पुरानी परंपराओं से
ग. विलायती जीवन से घ. सरकारी कार्यालय से

27. **यशोधर बाबू की पत्नी किसका साथ देती है ?**
क. पति का ख आधुनिकता का
ग. अपने बच्चों का घ. मौज मस्ती का

28. **यशोधर बाबू के बड़े लड़के को कितने रुपये मासिक की नौकरी मिली?**
क. 1800 रुपये ख. 1600 रुपये
ग. 1500 रुपये घ. 1400 रुपये

29. **यशोधर बाबू का अपने बच्चों के प्रति कैसा व्यवहार था ?**
क. स्नेहपूर्ण ख. ईष्यापूर्ण
ग. घृणापूर्ण घ. अलगाव

30. **जब सब्जी लेकर यशोधर घर पहुँचे तो उनकी दशा कैसी थी ?**
क. द्वारिका जाने वाले सुदामा जैसी
ख. द्वारिका से लौटे सुदामा जैसी
ग. बचपन के सुदामा जैसी
घ. पत्नी के साथ सुदामा जैसी

31. **यशोधर बाबू के क्वार्टर में कितने कमरे थे?**
क. दो ख. तीन
ग. चार घ. एक

32. **'सिल्वर वैडिंग' में गाउन पहनते समय यशोधर बाबू को कौन-सी बात चुभी?**
क. पत्नी द्वारा उपेक्षा ख. भूषण के व्यंग्य वचन
ग. केक काटना घ. दूध लाने की बात

33. **सिल्वर वैडिंग' पाठ के लेखक का नाम क्या है?**
क. फणीश्वर नाथ रेणु ख. मनोहर श्याम जोशी
ग. श्याम मनोहर जोशी घ. मनोहर वर्मा

34. **'सिल्वर वैडिंग' कहानी के कथानायक का नाम क्या है?**
क. यशोधर बाबू ख. भूषण
ग. किशनदा घ. चड्ढा

35. **यशोधर बाबू किसको अपना आदर्श मानते थे?**
क. भूषण को ख. किशनदा को
ग. अपनी पत्नी को घ. अपने साले को

36. **यशोधर बाबू सर्वप्रथम किस पद पर नियुक्त हुए ?**
क. बॉय सर्विस ख. क्लर्क
ग. सहायक क्लर्क घ. सेक्शन आफ़िसर

37. **यशोधर का पूरा नाम है-**
क. यशोधर बाबू ख. ए०डी० पंत
ग. वाई०डी० पंत घ. ओ०डी० पंत

38. **यशोधर बाबू के विवाह की कौन-सी वर्षगाँठ मनाई गई ?**
क. बीसवीं ख. तीसवीं
ग. पच्चीसवीं घ. चालीसवीं

39. **दफ्तर के बाबुओं को अपनी सिल्वर वैडिंग के लिए यशोधर बाबू ने कुल कितने रुपये दिए ?**
क. दस ख. पंद्रह
ग. बीस घ. तीस

40. **लेखक ने यशोधर बाबू को किशनदा का कौन-सा पुत्र कहा है ?**
क. मानस पुत्र ख. दत्तक पुत्र
ग. नाजायज़ पुत्र घ. पुत्र

41. **यशोधर बाबू मूलतः कहाँ के रहने वाले थे ?**
क. दिल्ली के ख. आगरा के
ग. कुमाऊँ के घ. मेरठ के

42. **किशनदा यशोधर को क्या कहकर बुलाते थे ?**
क. भाऊ ख. बेटा
ग. यशोधर घ. भाई

उत्तर-	1- घ	2- घ	3- ग	4- ख	5- घ	6- ग	7- ग
	8- क	9- घ	10- घ	11- घ	12- ख	13- ग	14- घ
	15- घ	16- क	17- ग	18- ग	19- ग	20- ख	21- ग
	22- घ	23- क	24- ख	25- ग	26- ख	27- ग	28- ग
	29- घ	30- ख	31- क	32- घ	33- ख	34- क	35- ख
	36- क	37- ग	38- ग	39- घ	40- क	41- ग	42- क

Jharkhandlab.com

पाठ - 2

जूझ

-आनंद यादव

jharkhandlab.com

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. 'जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथनायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है ?

उत्तर - शीर्षक किसी भी रचना की मूल भाव को प्रकट करता है। इस पाठ का शीर्षक 'जूझ' संपूर्ण अध्याय में फैला हुआ है। 'जूझ' का अर्थ है -'जूझना अथवा संघर्ष करना'। इसमें कथनायक आनंद ने विद्यालय जाने के लिए अतिशय संघर्ष किया है। इस कहानी के कथानायक आनंद में संघर्ष का भाव भरा है। उसके पिता उसे विद्यालय जाने से मना कर देते है। इसके बाद भी कथानायक मां को अपने पक्ष में लेकर दत्ता जी राव देसाई सरकार की सहायता लेता है। वह देसाई सरकार व अपने पिता के सामने अपना पक्ष रखता है तथा अपने ऊपर लगे आरोपों का उत्तर देता है। आगे बढ़ने के लिए वह हर कठिन शर्त मानता है। विद्यालय में भी वह नए माहौल में ढलने, कविता रचने आदि के लिए संघर्ष करता है। अतः यह शीर्षक सर्वथा उचित है तथा कथानायक की केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है।

प्रश्न-2. स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ ?

उत्तर - मराठी अध्यापक सौंदलगेकर के कविता पढ़ाने का ढंग अत्यंत रोचक एवं विलक्षण था। कविता का वाचन वे भाव, लय, ताल, गति के साथ करते थे। लेखक एकाग्र होकर मास्टर साहब के हाव-भाव, ध्वनि, गति और रसों का रसास्वादन किया करते थे। लेखक में इन्हीं अध्यापक के प्रोत्साहन एवं उत्साहवर्धन के कारण स्वयं कविता रच सकने का आत्मविश्वास पैदा हुआ।

प्रश्न-3. श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई।

उत्तर - सौंदलगेकर के अध्यापन की विशेषताएं निम्नलिखित हैं, जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई -

(क) सौंदलगेकर मराठी पढ़ाते थे, अध्यापन के समय वे स्वयं पाठ में रम जाते थे।

(ख) वे कविता बहुत ही अच्छे ढंग से पढ़ाते थे। सुरीला गला, छंद की गति, चाल और रसिकता उनमें थीं।

(ग) उन्हें मराठी कविताओं के साथ-साथ अनेक अंग्रेजी कविताएं कंठस्थ थीं। उनकी कविताओं में छंदों की लय, गति, ताल अच्छी तरह दिखाई देती थी।

(घ) वे कविता पढ़ाते समय उसे गाकर सुनाने के साथ-साथ अभिनय कर भाव ग्रहण कराते थे।

(ङ) वे पढ़ाते समय अन्य दूसरे कवियों के संस्मरण सुनाते थे।

प्रश्न-4. कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन की प्रति लेखक की धारणाओं में क्या बदलाव आया ?

उत्तर - कविता के प्रति लगाव से पहले लेखक को खेतों में सिंचाई करते हुए, ढोर चराते हुए तथा दूसरे काम करते हुए अकेलापन बहुत खटकता था। उसे ऐसा लगता था कि कोई-न-कोई साथ होना चाहिए। उसे किसी के साथ बोलते हुए, गपशप करते हुए, हंसी मजाक करते हुए काम करना अच्छा लगता था। कविता के प्रति लगाव के बाद उसे अकेलेपन से ऊब नहीं होती। अब वह स्वयं से ही खेलना सीख गया। पहले की अपेक्षा अब उसे अकेला रहना अच्छा लगने लगा। इस स्थिति में वह ऊंची आवाज में कविता गा सकता था। अभिनय भी कर सकता था। इस तरह अब उसे अकेलापन आनंद देने लगा।

प्रश्न-5. आपके ख्याल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का ? तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर - मेरे ख्याल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया बिल्कुल सही था, क्योंकि लेखक को पढ़ने की इच्छा थी जिसे दत्ता जी राव ने सही पहचाना। उसकी प्रतिभा के बारे में दत्ता जी राव ने पूरी तरह जान लिया था। वैसे भी लेखक को पढ़ाने के पीछे दत्ता जी राव का कोई स्वार्थ नहीं था जबकि लेखक के पिता का पढ़ाई-लिखाई के बारे में रवैया बिल्कुल गलत था। वास्तव में लेखक के पिता अपने स्वार्थ के लिए अपने बेटे को नहीं पढ़ाना चाहता था। लेखक के पिता को पता था कि यदि उसका बेटा स्कूल जाने लगा तो उसे घूमने फिरने के लिए समय नहीं मिलेगा, न ही वह रखमाबाई के पास जा सकेगा।

प्रश्न-6. दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी मां को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा यदि झूठ का सहारा न लेना पड़ता तो आगे का घटनाक्रम क्या होता ? अनुमान लगाएं।

उत्तर - दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी मां को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि दोनों ने झूठ का सहारा नहीं लिया होता तो दत्ता जी राव उसके पिता पर दबाव नहीं दे पाते। लेखक पिता द्वारा दिए गए काम ही करता रहता। उसकी पढ़ाई लिखाई नहीं हो पाती। वह सारा जीवन खेती में ही लगा रहता। इस झूठ के बिना हमें यह प्रेरणादायक कहानी भी नहीं मिल पाती। इस तरह कभी-कभी एक झूठ भी मनुष्य व समाज के विकास करने में सक्षम साबित होता है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1. आनंद यादव का मूल नाम क्या है ?

उत्तर - आनंद यादव का मूल नाम आनंद रत्नाप्पा ज़काते है।

प्रश्न-2. जूझ शीर्षक उपन्यास पर कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ ?

उत्तर - जूझ उपन्यास पर आनंद यादव को सन् 1990 में 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त हुआ।

प्रश्न-3. जूझ किस प्रकार का उपन्यास है ?

उत्तर - जूझ मराठी के प्रख्यात कथाकार डॉ आनंद यादव का आत्मकथात्मक उपन्यास है।

प्रश्न-4. जूझ का क्या अर्थ होता है ?

उत्तर - जूझ का अर्थ जूझना या संघर्ष करना होता है।

प्रश्न-5. जूझ मूल रूप से किस उपन्यास से ली गई है ?

उत्तर - 'जूझ' मूल रूप से मराठी उपन्यास "झोबी" से ली गई है। इस उपन्यास के लेखक आनंद यादव हैं।

प्रश्न-6. आनंद यादव द्वारा लिखी गई मराठी उपन्यास "झोबी" का हिंदी अनुवाद किसने किया है ?

उत्तर - आनंद यादव द्वारा लिखी गई मराठी उपन्यास 'झोबी' का हिंदी अनुवाद केशव प्रथम वीर ने किया है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1. जूझ कहानी हमें क्या संदेश देता है ?

उत्तर - जूझ कहानी से हमें यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति को संघर्ष से

नहीं घबराना चाहिए। समस्याएं तो जीवन में आती ही रहती है। हमें इन समस्याओं से भागना नहीं चाहिए, बल्कि उनका मुकाबला करना चाहिए।

प्रश्न-2. जूझ कहानी का मूल भाव क्या है ?

उत्तर - 'जूझ' का अर्थ है - 'जूझना एवं संघर्ष करना'। इसमें कथानायक आनंदा ने विद्यालय जाने के लिए अतिशय संघर्ष किया है। यह शीर्षक एक किशोर के देखे एवं भोगे हुए गंवाई जीवन के खुरदरे यथार्थ व परिवेश को विश्वसनीय ढंग से प्रकट करता है।

प्रश्न-3. वसंत पाटिल कौन था ? लेखक ने उससे दोस्ती क्यों और कैसे की ?

उत्तर - वसंत पाटिल दुबला पतला परंतु होशियार लड़का था। वह स्वभाव से शांत था तथा हर समय पढ़ने में लगा रहता था। वह घर से ही पूरी तैयारी करके विद्यालय आता था। अध्यापक से पूछे गए सारे सवालों का ठीक-ठीक उत्तर देता था। वह दूसरों के सवालों की जांच करता था। उसे कक्षा का मॉनिटर बना दिया गया था। लेखक भी उसकी देखा-देखी मेहनत करने लगा। उसने किताबों पर अखबारी कागज का कवर चढ़ाया तथा हर समय पढ़ने लगा। उसके सवाल भी ठीक निकलने लगे। वह भी वसंत पाटिल की तरह लड़कों के सवाल जांचने लगा। इस तरह दोनों दोस्त बन गए।

प्रश्न-4. बालक आनंद यादव के पिता ने किन शर्तों पर उसे विद्यालय जाने दिया ?

उत्तर - बालक आनंद यादव के पिता ने निम्नलिखित शर्तों पर उसे विद्यालय जाने दिया -

(क) पाठशाला जाने से पहले 11:00 बजे तक खेत में काम करना होगा तथा पानी लगाना होगा।

(ख) सवेरे खेत पर जाते समय ही बस्ता लेकर जाना होगा।

(ग) छुट्टी होने के बाद घर में बस्ता रखकर सीधे खेत पर आकर घंटा भर ढोर चराना होगा।

(घ) अगर किसी दिन खेत में ज्यादा काम होगा तो उसे उस दिन पाठशाला नहीं जाना होगा।

प्रश्न-5. जूझ कहानी में आपको किस पात्र ने सबसे अधिक प्रभावित किया और क्यों ? उसकी चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - जूझ कहानी में मुझे सबसे अधिक प्रभावित दत्ता जी राव देसाई ने किया। उनकी चारित्रिक विशेषताएं निम्नलिखित हैं -

(क) व्यक्तित्व - दत्ता जी राव गांव के सम्मानित जमींदार हैं। वे उदार, नेकदिल व रोबीले हैं। वे बच्चे व महिलाओं के साथ सद् व्यवहार करते हैं।

(ख) समझदार - राव साहब बेहद समझदार हैं। वे हर बात को ध्यान से सुनते हैं तथा फिर उसका समाधान करते हैं।

(ग) व्यावहारिक - दत्ता जी राव व्यावहारिक हैं। वे नियम - दाम, दंड, भेद की नीति जानते हैं। लेखक की पढ़ाई के बारे में खोजना के तहत उसके पिता को बुलाकर आम बातें करते हैं। लेखक के बीच में आ जाने पर वे उसकी पढ़ाई के बारे में पूछते हैं। फिर सारी कहानी सुनकर उसके पिता को डांटते भी हैं तथा समझाते भी जाते हैं। इस तरह वे लेखक की पढ़ाई के लिए उसे तैयार करते हैं।

(घ) तर्कशील - राव साहब बेहद तर्कशील हैं। उसके तर्कों के सामने लेखक का पिता निरुत्तर हो जाता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. जूझ पाठ के लेखक कौन है ?

क. आनंद गुप्ता ख. आनंद रतन यादव
ग. आनंद सिंह घ. आनंद श्रीवास्तव

2. जूझ नामक पाठ किस भाषा का हिंदी अनुवाद है ?

क. खड़ी बोली हिंदी ख. अवधी
ग. मराठी घ. संस्कृत

3. कहानी के शीर्षक जूझ का क्या अर्थ है ?

क. संघर्ष ख. मेहनत
ग. कठिनाई घ. चतुराई

4. लेखक के पिता का नाम क्या था ?

क. रामप्पा ख. मोहनाप्पा
ग. कुंभीप्पा घ. रत्नाप्पा

5. शर्त के अनुसार पाठशाला जाने से पहले लेखक को सवेरे कितने बजे तक खेत में काम करना होता था ?

क. 9:00 बजे तक ख. 10:00 बजे तक
ग. 11:00 बजे तक घ. 12:00 बजे तक

6. स्कूल से छुट्टी के बाद लेखक को कितने घंटे ढोर चराने होते थे ?

क. एक घंटा ख. दो घंटे
ग. तीन घंटे घ. चार घंटे

7. लेखक के कक्षा अध्यापक का नाम क्या था ?

क. सौंदलगेकर ख. मंत्री
ग. रननवरे घ. चाह्वाण

8. लेखक को गणित पढ़ाने वाले मास्टर का क्या नाम था ?

क. रननवरे ख. सौंदलगेकर
ग. मंत्री घ. वसंत पाटिल

9. जूझ कहानी किस मराठी उपन्यास से ली गई है ?

क. झोबी ख. गोदान
ग. कादंबरी घ. जमुना पर्यटन

10. कक्षा का मॉनिटर कौन था ?

क. आनंदा ख. वसंत पाटिल
ग. चाह्वाण घ. दत्ता राव

11. लेखक को मराठी कौन पढ़ाते थे ?

क. रननवरे ख. दादा
ग. सौंदलगेकर घ. मंत्री

12. जूझ उपन्यास का हिंदी अनुवाद किसने किया है ?

क. प्रेमचंद ख. केशव प्रथम वीर
ग. केशवदास घ. धर्मवीर भारती

13. जूझ उपन्यास को कौन-सा पुरस्कार मिला ?

क. नोबेल ख. साहित्य भारती
ग. साहित्य अकादमी घ. व्यास सम्मान

14. जूझ कहानी से लेखक की किस प्रवृत्ति का उद्घाटन हुआ है ?

क. पढ़ाई करने की प्रवृत्ति का
ख. कविता करने की प्रवृत्ति का
ग. लेखन प्रवृत्ति का
घ. संघर्षमयी प्रवृत्ति का

15. जूझ पाठ के अनुसार लेखक के घर कोल्हू चलना कब से शुरू होता था ?

क. दीवाली के बाद ख. दशहरा के बाद
ग. पूस के बाद घ. गर्मी के बाद

उत्तर -	1- ख	2- ग	3- क	4- घ	5- ग
	6- क	7- ख	8- ग	9- क	10- ख
	11- ग	12- ख	13- ग	14- घ	15- क

Jharkhandlab.com

पाठ - 3 | अतीत में दबे पाँव

-ओम थानवी

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न- 1. सिंधु सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। कैसे ?

उत्तर - सिंधु-सभ्यता के शहर मुअनजो-दड़ो की व्यवस्था, साधन संपन्न और सुनियोजित थी। वहाँ की अन्न-भंडारण व्यवस्था, जल-निकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ा सुनियोजन के साथ किया गया था; यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी जाए तो कम-से-कम नुकसान हो। इन सारी व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कम हुई है। वस्तुतः इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता।

प्रश्न- 2. 'सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया?

उत्तर - सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज़्यादा था। वास्तुकला या नगर-नियोजन ही नहीं, धातु और पत्थर की। मूर्तियाँ, मृद्-भांडे, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सबसे ऊपर सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप सिंधु सभ्यता को तकनीक-सिद्ध से ज़्यादा कला-सिद्ध जाहिर करता है। खुदाई के दौरान जो भी वस्तुएँ मिलीं या फिर जो भी निर्माण शैली के तत्व मिले, उन सभी से यही बात निकलकर आती है कि सिंधु सभ्यता समाज प्रधान थी। यह व्यक्तिगत न होकर सामूहिक थी। इसमें न तो किसी राजा का प्रभाव था और न ही किसी धर्म विशेष का सिंधु सभ्यता का सौंदर्य समाज पोषित था।

प्रश्न- 3. पुरातत्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि-"सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"

उत्तर - मुअनजो-दड़ो, हड़प्पा से लेकर हरियाणा तक समूची सिंधु-सभ्यता में हथियार उस तरह नहीं मिले हैं जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रासाद मिले हैं, न मंदिर, न राजाओं व महंतो की समाधियाँ। मुअनजो-दड़ो से मिला नरेश के सिर का मुकुट भी बहुत छोटा है। इन सबके बावजूद यहाँ ऐसा अनुशासन जरूर था जो नगर-योजना, वास्तु-शिल्प, मुहर-ठप्पों, पानी या साफ़-सफ़ाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं में एकरूपता रखे हुए था। इन आधारों पर विद्वान यह मानते हैं कि यह सभ्यता समझ से अनुशासित सभ्यता थी।

प्रश्न- 4. 'यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जातीं; वे आकाश की तरफ़ अधूरी रह जाती हैं, लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं।' इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है?

उत्तर :- इस कथन के पीछे लेखक का आशय यही है कि खंडहर होने के बाद भी पायदान हड़प्पा इतिहास का पूरा परिचय देते हैं। इतनी ऊँची छत पर स्वयं चढ़कर इतिहास का अनुभव करना। सिंधु घाटी की सभ्यता केवल इतिहास नहीं है बल्कि इतिहास के पार की वस्तु है। इतिहास के पार की वस्तु को इन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर ही देखा जा सकता है। ये अधूरे पायदान यही दर्शाते हैं. कि विश्व की दो सबसे प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास कैसा था।

प्रश्न 5. टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों को भी दस्तावेज़ होते हैं-इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- यह सच है कि टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं। मुअनजो-दड़ो के खंडहर यह अहसास कराते हैं कि आज से पाँच हजार साल पहले कभी यहाँ बस्ती थी। ये खंडहर उस समय की संस्कृति का परिचय कराते हैं। लेखक कहता है कि इस आदिम शहर के किसी भी मकान की दीवार पर पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं चाहे वह एक खंडहर ही क्यों न हो, किसी घर की देहरी पर पाँव रखकर आप सहसा सहम सकते हैं, रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध महसूस कर सकते हैं या शहर के किसी सुनसान मार्ग पर कान देकर बैलगाड़ी की रुन-झुन सुन सकते हैं। इस तरह जीवन के प्रति सजग दृष्टि होने पर पुरातात्विक खंडहर भी जीवन की धड़कन सुना देते हैं। ये एक प्रकार के दस्तावेज होते हैं जो इतिहास के साथ-साथ उस अनछुए समय को भी हमारे सामने उपस्थित कर देते हैं।

प्रश्न 6 .इस पाठ में एक ऐसे स्थान का वर्णन है, जिसे बहुत कम लोगों ने देखा होगा, परंतु इससे आपके मन में उस नगर की एक तसवीर बनती है। किसी ऐसे ऐतिहासिक स्थल, जिसको आपने नज़दीक से देखा हो, का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर :- मैंने दिल्ली के लाल किले को नजदीक से देखा है। यह एक ऐतिहासिक स्थल है। यह बहुत बड़ा किला है। जिसे जहांगीर के पुत्र शाहजहां ने बनवाया था । मुगलों ने अपनी राजधानी बना रखा था।इस किले के चारों ओर प्रत्येक कोने पर ऊँचे-ऊँचे स्तंभ हैं। इसके परकोटों पर खूबसूरत मीनाकारी की गई है। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के रहने के लिए महल के साथ ही कमरे बनवाए हुए थे। किले का मुख्य गुंबद बहुत ऊँचा था। इसके साथ ही एक मीना बाज़ार था जहाँ पर हर प्रकार का साजो-सामान बिकता था। यह किला आज भी शांतभाव से खड़ा अपना इतिहास बताता प्रतीत होता है। किले का प्रवेश द्वार बहुत मजबूत है।

प्रश्न 7. नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें।

उत्तर :- सिंधु घाटी सभ्यता में नदी, कुएँ, स्नानागार व बेजोड़ निकासी व्यवस्था के अनुसार लेखक इसे 'जल-संस्कृति' की संज्ञा देता है। मैं लेखक की बात से पूर्णतः सहमत हूँ। सिंधु-सभ्यता को जल-संस्कृति कहने के समर्थन में निम्नलिखित कारण हैं –

यह सभ्यता नदी के किनारे बसी है। मुअनजो-दड़ो के निकट सिंधु नदी बहती है।

यहाँ पीने के पानी के लिए लगभग सात सौ कुएँ मिले हैं। ये कुएँ पानी की बहुतायत सिद्ध करते हैं।

मुअनजो-दड़ो में स्नानागार हैं। एक पंक्ति में आठ स्नानागार हैं जिनमें किसी के भी द्वार एक-दूसरे के सामने नहीं खुलते। कुंड में पानी के रिसाव को रोकने के लिए चूने और चिराड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है।

जल-निकासी के लिए नालियाँ व नाले बने हुए हैं जो पकी ईटों से बने हैं। ये ईटों से ढँके हुए हैं। आज भी शहरों में जल-निकासी के लिए ऐसी व्यवस्था की जाती है।

jharkhandlab.com

मकानों में अलग-अलग स्नानागार बने हुए हैं।

मुहरों पर उत्कीर्ण पशु शेर, हाथी या गैडा जल-प्रदेशों में ही पाए जाते हैं।

प्रश्न 8. सिंधु घाटी सभ्यता का कोई लिखिए साक्ष्य नहीं मिला है। सिर्फ़ अवशेषों के आधार पर ही धारणा बनाई है। इस लेख में मुअन-जोदड़ो के बारे में जो धारणा व्यक्त की गई है। क्या आपके मन में इससे कोई भिन्न धारणा या भाव भी पैदा होता है? इन संभावनाओं पर कक्षा में समूह-चर्चा करें।

उत्तर :- यदि मोहनजोदड़ो अर्थात् सिंधु घाटी की सभ्यता के बारे में धारणा बिना साक्ष्यों के आधार पर बनाई गई है तो यह गलत नहीं है। क्योंकि जो कुछ हमें खुदाई से मिला है वह किसी साक्ष्य से कम नहीं। खुदाई के दौरान मिले बर्तनों, सिक्कों, नगरों, सड़कों, गलियों को साक्ष्य ही कहा जा सकता। साक्ष्य लिखित हों यह जरूरी नहीं है। जो कुछ हमें सामने दिखाई दे रहा है वह भी तो प्रमाण है। फिर हम इस तथ्य को कैसे भुला दें कि ये दोनों नगर विश्व की प्राचीनतम संस्कृति और सभ्यता के प्रमाण हैं। इन्हीं के कारण अन्य सभी संस्कृतियाँ विकसित हुईं। मुअन-जोदड़ो के बारे में जो धारणा व्यक्त की गई है। वह हर दृष्टि से प्रामाणिक है।

दीर्घ प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1 मोहनजोदड़ो की विशेषता बताइए।

उत्तर :- मोहनजोदड़ो का मतलब है मुर्दों का टीला। दक्षिण एशिया में बसे इस शहर को सबसे पुराना शहर माना जाता है। इतने साल पहले बने इस शहर को इतने व्यवस्थित ढंग से बनाया गया है, कि जिसकी कल्पना भी हम नहीं कर सकते है. पाकिस्तान के सिंध में 2600 BC के आस पास इसका निर्माण हुआ था। खुदाई के दौरान इस शहर के बारे में लोगों को जानकारी हुई। इसमें बड़ी बड़ी इमारतें, जल कुंड, मजबूत दिवार वाले घर, सुंदर चित्रकारी, मिट्टी व धातु के बर्तन, मुद्राएँ, मूर्तियाँ, ईट, तराशे हुए पत्थर और भी बहुत सी चीजें मिली। जिससे ये पता चलता है कि यहाँ एक व्यवस्थित शहर बना हुआ था। जैसे हम आज रहते है वैसे ही वे लोग भी घरों में रहते थे, खेती किया करते थे। मिटटी के नीचे दबे इस रहस्य को जानने के बहुत से लोग उत्साहित है। इस पर कई बार खुदाई का काम शुरू हुआ और बंद हुआ है। कहा जाये तो अभी सिर्फ एक तिहाई भाग की ही खुदाई हुई है। ये शहर 200 हैक्टेयर क्षेत्र में बसा हुआ है। इस प्राचीन सभ्यता के लिए पाकिस्तान को एक नेशनल आइकॉन माना जाता है।

1856 में एक अंग्रेज इंजिनियर ने रेलरोड बनाते समय इस प्राचीन सभ्यता को खोज निकाला था। रेलवे ट्रैक बनाने के लिए ये इंजिनियर पत्थरों की तलाश कर रहा था, जिससे वो गिट्टी बना सके। यहाँ उन्हें बहुत मजबूत और पुराने ईट मिली, जो बिल्कुल आज की ईट की तरह बनी हुई थी। वहां के एक आदमी ने बताया कि सबके घर इन्ही ईटो से बने है जो उन्हें खुदाई में मिलते है, तब इंजिनियर समझ गया कि ये जगह किसी प्राचीन शहर के इतिहास से जुड़ी है। इस इंजिनियर को सबसे पहले सिन्धु नदी के पास बसे इस सबसे पुरानी सभ्यता के बारे में पता चला था, इसलिए इसे सिन्धु घाटी की सभ्यता कहा गया। इस प्राचीन सभ्यता के समय एक और प्राचीन सभ्यता भी थी जो मिश्र, ग्रीस में थी, ये बात पुरातत्ववेत्ताओं के द्वारा कही गई है। सिन्धु घाटी की सभ्यता 2600 BC से 3000 BC तक रही थी। इस प्राचीन सभ्यता में कुछ अर्बन सेंटर थे, जो है मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, लोथल, कालीबंगन, धोलावीरा, राखीगढ़ी मोहनजोदड़ो इन सबमें सबसे अग्रिम शहर था। उस समय ये सबसे बड़ा व व्यवस्थित शहर माना जाता था। इसलिए पुरातात्विक ने इसकी सबसे पहले खोज शुरू की व इसके बारे में अधिक जानकारी इक्कठी की। इसके बाद हड़प्पा ऐसा शहर था, जो व्यवस्थित था व जिसको अग्रिम ढंग से बनाया गया था।

लघु उत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 मुअनजोदड़ो की बड़ी बस्ती के बारे में विस्तार से बताइए।

उत्तर :- लेखक बताता है कि बड़ी बस्ती के घर बहुत बड़े होते थे। इसी प्रकार इन घरों के आँगन भी बहुत खुले होते थे। इन घरों की दीवारें ऊँची और मोटी होती थीं। सभी घर पक्की ईंटों के हैं। एक ही आकार की ईंटे इन घरों में लगाई गई हैं। यहाँ पत्थर का प्रयोग ज्यादा नहीं हुआ। कहीं-कहीं नालियों को अनगढ़ पत्थरों से ढक दिया है ताकि गंदगी न फैले। इस प्रकार मुअनजोदड़ो की बड़ी बस्ती निर्माण कला की दृष्टि से संपन्न एवं कुशल थी।

प्रश्न 2. क्या प्राचीनकाल में रंगाई का काम होता था।

उत्तर :- प्राचीनकाल में भी रंगाई का काम होता था। आज भी मुअनजोदड़ो में एक रंगरेज का कारखाना मौजूद है। यहाँ ज़मीन में गोल गड्ढे उभरे हुए हैं। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि इसमें रंगाई के लिए बर्तन रखे जाते होंगे।

प्रश्न 3. खुदाई के दौरान मुअनजोदड़ो से क्या-क्या मिला?

उत्तर :- मुअनजोदड़ो से निकली वस्तुओं की पंजीकृत संख्या पचास हजार है। अहम चीज गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य यंत्र, चाक पर बने बड़े-बड़े मिट्टी के मटके, चौपड़ की गोटियाँ, दीये, माप तौल के पत्थर, ताँबे का शीशा, मिट्टी की बैलगाड़ी, दो पाटों वाली चक्की, मिट्टी के कंगन, मनकों वाले पत्थर के हार प्रमुख हैं।

प्रश्न 4. सिंधु घाटी की सभ्यता कैसी थी? तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर :- लेखक के मतानुसार सिंधु घाटी की सभ्यता 'लो-प्रोफाइल' सभ्यता थी। मुअनजोदड़ो की खुदाई के दौरान न तो राजप्रसाद ही मिले और न ही मंदिर। यहाँ जो नरेश की मूर्ति मिली है उनके मुकुट का आकार बहुत छोटा है। इन आधारों पर कहा जा सकता है कि सिंधु घाटी आडंबर हीन सभ्यता थी। ऐसी सभ्यता जो छोटी होते हुए भी महान थी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

1. खुदाई से प्राप्त गेहूँ का रंग कैसा है ?
- क. पीला ख. काला
- ग. हरा घ. नीला

2 सिंधु सभ्यता की खूबी क्या है ?
- क. सौंदर्य-बोध ख. संस्कृति-बोध
- ग. सभ्यता-बोध घ. नागर-बोध

3. लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्य-बोध को क्या नाम दिया है ?
- क. राज-पोषित ख धर्म-पोषित
- ग. समाज-पोषित घ. व्यापार-पोषित

4. मुअनजो-दड़ो अपने काल में किसका केंद्र रहा होगा ?
- क. सभ्यता का ख. राजनीति का
- ग. धर्म का घ. व्यापार का

5. मुअनजो-दड़ो नगर कितने हैक्टेयर में फैला हुआ था ?
- क. 300 हैक्टेयर ख. 200 हैक्टेयर
- ग. 500 हैक्टेयर घ. 150 हैक्टेयर

6. भग्न इमारत में कितने खंभे हैं ?
- क. 20 खंभे ख. 30 खंभे
- ग. 15 खंभे घ. 40 खंभे

7. 'डी के' हलका किसके नाम पर रखा गया है ?
- क. दयाकाशीनाथ के ख. दीक्षितकाशीनाथ के
- ग. धर्मकाशीनाथ के घ. दयालुकाशीनाथ के

jharkhandlab.com

8. **मुअनजो-दड़ो की लंबी सड़क अब कितनी बची है ?**
क. 2 मील ख. 3 मील
ग. 1/2 मील घ. 1 मील

9. **मुअनजो-दड़ो में लगभग कितने कुएँ थे ?**
क. 500 ख. 200
ग. 800 घ. 700

10. **सिंधु घाटी सभ्यता में कौन-से फल उगाए जाते थे ?**
क. सेब और संतरे ख. संतरे और केले
ग. खजूर और अंगूर घ. खजूर और अमरूद

11 **सिंधु घाटी सभ्यता में कपास पैदा होती थी। इसका क्या प्रमाण है ?**
क. कपास के बीज ख. ऊन
ग. सूती कपड़ा घ. गर्म कपड़ा

12 **'अतीत में दबे पाँव' नामक पाठ के रचयिता का नाम क्या है ?**
क. ओम थानवी ख. मनोहर श्याम जोशी
ग. फणीश्वरनाथ रेणु घ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

13. **लेखक के अनुसार मुअनजो-दड़ो की आबादी लगभग कितनी थी ?**
क. 20 हजार ख. 65 हजार
ग. 85 हजार घ. 50 हजार

14. **मुअनजो-दड़ो का नगर कितने हजार साल पहले का है ?**
क. 1000 साल ख. 2000 साल
ग. 3000 साल घ. 5000 साल

15. **मुअनजो-दड़ो की मुख्य सड़क की चौड़ाई कितनी है ?**
क. 32 फीट ख. 20 फीट
ग. 33 फीट घ. 23 फीट

16. **मुअनजो-दड़ो की सभ्यता और संस्कृति किसकी शोभा बढ़ा रहे हैं ?**
क. लाहौर की ख दिल्ली की
ग. लंदन की घ. अजायबघर की

17. **मुअनजो-दड़ो के सबसे ऊँचे चबूतरे पर क्या विद्यमान है ?**
क. मदिर ख. बौद्ध स्तूप
ग. राजमहल घ. विशाल भवन

18. **बौद्ध स्तूप कितने फुट ऊँचे चबूतरे पर निर्मित है ?**
क. 15 फुट ख. 25 फुट
ग. 12 फुट घ. 10 फुट

19. **चबूतरे पर किसके कमरे बने हुए हैं ?**
क. मज़दूरों के ख. किसानों के
ग. भिक्षुओं के घ. शिक्षकों के

20. **राखालदास बैनर्जी यहाँ पर किस वर्ष आए थे ?**
क. सन् 1922 में ख. सन् 1923 में
ग. सन् 1924 में घ. सन् 1925 में

21. **राखालदास बनर्जी कौन थे ?**
क. शिक्षक ख. भिक्षु
ग. पुरातत्त्ववेत्ता घ. व्यापारी

22. **मुअनजो-दड़ो को नागर भारत का सबसे पुराना क्या कहा गया है ?**
क. नगर ख. कस्बा
ग. लैंडस्केप घ. गाँव

23. **मुअनजो-दड़ो के वास्तुकला की तुलना किस नगर के साथ की गई है ?**
क. दिल्ली से ख. जयपुर से
ग. चंडीगढ़ से घ. बीकानेर से

24. **मुअनजो-दड़ो से सिंधु नदी कितनी दूरी पर बहती है ?**
क. 4 किलोमीटर ख. 5 किलोमीटर
ग. 10 किलोमीटर घ. 6 किलोमीटर

25. **दक्षिण में टूटे-फूटे घरों का जमघट किसकी बस्ती मानी गई है ?**
क. अमीरों की ख. भिक्षुओं की
ग. कामगारों की घ. शिक्षकों की

26. **महाकुंड कितने फुट लंबा है ?**
क. 20 फुट ख. 30 फुट
ग. 50 फुट घ. 40 फुट

27. **महाकुंड की चौड़ाई कितनी है ?**
क. 15 फुट ख. 25 फुट
ग. 20 फुट घ. 30 फुट

28. **महाकुंड की गहराई कितनी है ?**
क. 8 फुट ख. 9 फुट
ग. 7 फुट घ. 5 फुट

29. **महाकुंड के तीन तरफ किसके कक्ष बने हुए हैं ?**
क. मेहमानों के ख. साधुओं के
ग. अमीरों के घ. कामगारों के

30. **उत्तर में दो पांत में कितने स्नानघर हैं ?**
क. चार ख. पाँच
ग. सात घ. आठ

31. **कुंड के पानी के प्रबंध के लिए क्या व्यवस्था है ?**
क. पानी की नहर ख. तालाब
ग. कुआँ घ. पानी की नाली

उत्तर -	1- ख	2- क	3- ग	4- क	5- ख
	6- क	7- ख	8- ग	9- घ	10- ग
	11- ग	12- क	13- ग	14- घ	15- ग
	16- घ	17- ख	18- ख	19- ग	20- क
	21- ग	22- ग	23- ग	24- ख	25- ग
	26- घ	27- ख	28- ग	29- ख	30- घ
	31- ग				

jharkhandeb.com

पाठ - 4	**डायरी के पन्ने** -एन फ्रैंक

पाठ्य पुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न- 1. "यह साठ लाख लोगों की तरफ़ से बोलने वाली एक आवाज़ है। एक ऐसी आवाज़, जो किसी संत या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण लड़की की है।" इल्या इहरनबुर्ग की इस टिप्पणी के संदर्भ में ऐन फ्रैंक की डायरी के पठित अंशों पर विचार करें।

उत्तर :- ऐन फ्रैंक एक तेरह बरस की यहूदी बच्ची थी। हिटलर के नस्लवाद का इन्हें शिकार बनना पड़ा। हिटलर पूरे विश्व से यहूदियों को मिटा देना चाहता था। जर्मनी का राष्ट्रपति बनते ही उसने अमानवीय अत्याचार आरंभ कर दिए। उसे यहूदियों से इतनी नफ़रत थी कि उन्हें मारने के लिए अनेक यातना शिविर बनाए। प्राप्त दस्तावेज़ों के आधार पर देखा, जाए तो उसने 60 लाख यहूदियों का नरसंहार किया। इसे अब तक का सबसे बड़ा नरसंहार और आधुनिक इतिहास का काला अध्याय माना जाता है।

ऐन फ्रेंक एक यहूदी परिवार की साधारण बच्ची थी। हिटलर की बर्बरता की वजह से उसे सपरिवार दो वर्ष तक अज्ञातवास में गुजारना पड़ा था। ऐन संवेदनशील एवं मानवीय सोच से भरी थी। उसने अपनी डायरी में गुप्तावास के दौरान भोगे गए यथार्थ का वर्णन मार्मिक ढंग से किया है।

डायरी में भूख, प्यास, आतंक, मानवीय संवेदना, प्रेम बढ़ती उम्र की आशाएं, हवाई हमले का डर, पकड़े जाने का डर, तेरह वर्ष के किशोर मन की कल्पनाएं, पूरी दुनिया से अलग-थलग पड़ जाने का दर्द, प्रकृति के प्रति संवेदना, मानसिक और शारीरिक जरूरतें, हंसी -मजाक, युद्ध की पीड़ा और अकेलेपन के यथार्थ का मार्मिक और सजीव चित्रण किया है।

इस डायरी में विद्यमान यथार्थ उस समय की भयानकता को कितना सरलता से उकेर देता है, देखते ही बनता है। ऐसा कोई मंझा हुआ कवि या संत भी नहीं कर पाता। इसमें कल्पना या बनावट नहीं है। इसमें जो है, वह केवल सत्य है। जिसे एक मासूम-सी बच्ची ने अपनी मासूमियत से उकेरा है। वह अनजाने में ऐसे हज़ारों लोगों का प्रतिनिधित्व करने लगती है, जो उसी के समान इस यातना को झेल रहे थे।

प्रश्न 2: "काश कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफ़सोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला....।" क्या आपको लगता है कि ऐन के इस कथन में उसके डायरी लेखन का कारण छिपा है।

उत्तर- मुझे लगता है कि कोई ऐन फ्रैंक की भावनाओं को गंभीरता से नहीं समझ पाया इसलिए उसे डायरी का सहारा लेना पड़ा। ऐन का स्वभाव बहुत अलग था। लोग उसे घमंडी, अक्खड़ और जिद्दी समझा करते थे। उसने स्वयं कहा है कि सभी उससे परेशान थे। सब उसे टोकते थे। उसे समझाते रहते थे। लेकिन कोई उसे समझ नहीं पाता था। जैसे उसे कहा जाता था, वो वैसी बिलकुल नहीं थी। परिवार तथा उसके मध्य एक खाई थी। उस खाई को वह कम नहीं कर पा रही थी। यही कारण था कि वह सबसे कटने लगी। वह डायरी से अपने मन की बात कर सकती थी। अपनी परेशानियाँ, अपनी सोच, अपनी भावनाओं को किसी से कह नहीं पाती थी। उसे लगता था कि कोई उसे समझ नहीं पा रहा है। वह सबके मध्य स्वयं को अकेला पाती थी। यदि वह कुछ कहना चाहती थी, तो उसे डांट दिया जाता था। यही कारण था कि उसने डायरी को अपना मित्र बनाया। इसमें वह संबोधन के लिए किट्टी नाम का सहारा लेती है। उसे ही अपने दिल की बात बताती है। इस तरह डायरी उन दोनों के मध्य होने वाली बात को संजोकर रखने का एक माध्यम बन जाती है।

प्रश्न 3: 'प्रकृति-प्रदत्त प्रजनन-शक्ति के उपयोग का अधिकार बच्चे पैदा करें या न करें अथवा कितने बच्चे पैदा करें- इस की स्वतंत्रता स्त्री से छीन कर हमारी विश्व-व्यवस्था ने न सिर्फ़ स्त्री को व्यक्तित्व-विकास के अनेक अवसरों से वंचित किया है बल्कि जनांधिक्य की समस्या भी पैदा की है।' ऐन की डायरी के 13 जून, 1944 के अंश में व्यक्त विचारों के संदर्भ में इस कथन का औचित्य ढूँढ़ें।

उत्तर- ऐन अपनी डायरी के 13 जून, 1944 के अंश में जो विचार व्यक्त करती है, वह इस प्रकार है- स्त्रियों को प्रकृति ने माँ बनने का अधिकार दिया है। वही एक ऐसी है, जो बच्चे को अपने गर्भ में रखती है और जन्म देती है। एक तरफ यह जहाँ औरत के लिए गौरवपूर्ण बात है, वहीं इसने औरत की स्वतंत्रता तथा विकास को रोका है। प्रायः विवाह इसलिए किया जाता है ताकि वंश को चलाया जा सके। यहाँ पर स्त्रियों के पास स्वतंत्रता नहीं होती है कि वह माँ बने या न बने। उसे विवश किया जाता है कि वह माँ बने और केवल बेटे की ही माँ बने। इस तरह उसके बच्चे पैदा करने के अधिकार पर अतिक्रमण किया जाता है। यदि एक बार में संतान रूप में बेटा प्राप्त हो जाता है, तो वह स्त्री के लिए राहत भरा होता है। यदि बेटे के स्थान पर बेटी उत्पन्न हो जाए, तो तब तक उसे संतान को जन्म देने के लिए विवश किया जाता है, जब तक संतान के रूप में बेटा न मिले। इस तरह स्त्री को प्रताड़ित किया जाता है। जहाँ वह शारीरिक रूप से कमज़ोर हुई, वहीं उसकी व्यक्तित्व छिन्न-भिन्न हो जाता है। उसके स्त्रीत्व की हत्या होती है। उसके व्यक्तित्व को उभरकर आने नहीं दिया जाता। उसे पुरुष के नीचे ही समझा जाता है और पुरुष के आगे सिर नहीं उठाने दिया जाता है। फलस्वरूप वह एक ऐसे व्यक्तित्व की मालिक बनकर उभरती है, जिसे पुरुष की गुलामी करना स्वीकार होता है। उसका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं होता है। पुरुष की आज्ञा ही उसका धर्म होता है और बेटे की माँ बनना उसका गौरव। फिर चाहे जनसंख्या का स्तर कितना भी बढ़ जाए। भारत में पुत्र प्राप्ति की इच्छा जनसंख्या वृद्धि का सबसे बड़ा कारण रहा है।

प्रश्न- 4. "ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ है, तो साथ ही उसके निजी सुख-दुख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी। इन पृष्ठों में दोनों का फ़र्क मिट गया है।" इस कथन पर विचार करते हुए अपनी सहमति या असहमति तर्कपूर्वक व्यक्त करें।

उत्तर :- ऐन की डायरी में ऐतिहासिक, निजी सुख-दुख तथा भावनात्मक उथल-पुथल इत्यादि सभी गुण मिलते हैं। उसने डायरी लिखी ही निजी सुख-दुख और भावनात्मक उथल-पुथल को दर्शाने हेतु। लेकिन उसकी लेखनी में इतनी सरलता और स्पष्टवादिता है कि वह ऐतिहासिक दौर का भी जीवंत दस्तावेज़ बन गई है।

उसने जब यह डायरी लिखी, तब उसके जीवन में भयंकर बदलाव आ चुका था। हिटलर जर्मनी का राष्ट्रपति बन चुका था। यहूदियों के प्रति उसकी नफ़रत शैतान बनकर आ खड़ी हुई। उसने जर्मनी से यहूदियों का सफाया करने की ठान ली थी। अपने परिवार को बचाने के उद्देश्य से ऐन के पिता अपने आफिस के कार्यालय में स्थित गुप्त स्थान पर छिप गए। वहाँ पर अकेलेपन से लड़ने के लिए ऐन ने अपनी डायरी का सहारा लिया। यह डायरी उसकी जिजीविषा का उत्तम उदाहरण है। वह एक संवेदनशील लड़की है। उसकी डायरी में जहाँ-तहाँ उसकी संवेदनशीलता के प्रमाण मिलते हैं। वह अपने आस-पास राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक बदलावों को महसूस ही नहीं करती बल्कि उनमें चिन्तन-मनन भी करती है। गुप्त आवास में रहते हुए वह हर पक्ष पर विचार करती है और उसे शब्दों के रूप में उकेरती है। उसकी डायरी में हर स्थिति का सटीक ब्यौरा मिलता है। अतः हम कह सकते हैं कि "ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ है, तो साथ ही उसके निजी सुख-दुख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी। इन पृष्ठों में दोनों का फ़र्क मिट गया है।

jharkhandjob.com

प्रश्न 5. ऐन ने अपनी डायरी 'किट्टी' (एक निर्जीव गुड़िया) को संबोधित चिट्ठी की शक्ल में लिखने की ज़रूरत क्यों महसूस की होगी?

उत्तर : -ऐन संवेदशील लड़की थी। लोगों के मध्य उसकी छवि अक्खड़, घमंडी तथा जिद्दी लड़की की थी। यही कारण था कि वह सबसे कटी-कटी रहती है। लोग उसकी बातों को समझने में अयोग्य थे। ऐसा भी हो सकता है कि छोटी बच्ची में वे ऐसे विचारों का समावेश सहन न कर पाते हों। ऐसे में ऐन और उनके मध्य खाई बन गई थी। इसे पाटना दोनों के वश में न था। अतः अपने मन में उठने वाले भावों तथा विचारों को ऐन डायरी में लिखती है। अपनी डायरी वह किट्टी को संबोधित करके लिखती है। यह उसकी गुड़िया का नाम था। किट्टी उसकी बातें सुनती है। उससे बहस नहीं करती। उसे खराब नहीं कहती है। बस उसके विचारों को सुनकर चुप रहती है। उसकी बातें गुप्त रखती है। यही कारण है हो सकता है कि ऐन को किट्टी को संबोधित करके चिट्ठी लिखने की आवश्यकता पड़ी हो।

(अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हिटलर किसे दुनिया से मिटा देना चाहता था तथा उसने कितनी हत्याएं की थी?

उत्तर :- हिटलर दुनिया से यहूदियों को मिटा देना चाहता था क्योंकि वह यहूदियों से नफरत करता था इसलिए उनपर अपमानजनक नियम कानून थोपता रहता था। हिटलर के डर से यहूदी अपने लिए सुरक्षित स्थानों को खोजते फिरते थे। वे अंधकारमय कमरों में जीवन जीने के लिए मजबूर थे।अगर उन्हे पकड़ लिया जाता था तो उन्हें तरह- तरह की यातनायें दी जाती थी। प्राप्त दस्तावेज़ों में पाया गया कि हिटलर ने लगभग 60 लाख यहूदियों का नरसंहार किया। यह अब तक का सबसे बड़ा नरसंहार है यही कारण था कि यहूदी मारे-मारे फिरते थे।

प्रश्न 2. यहूदियों पर किस प्रकार के जुल्म किये गये?

उत्तर :- यहूदियों पर तरह -तरह के अत्याचार किए जा रहे थे जैसे भेदभाव पूर्ण और अपमानजनक नियम-कायदों को मानने के लिए मजबूर किया जाना।यहूदी अज्ञातवास में निरंतर अँधेरे कमरों में जीवन जीने को मजबूर थे । हिटलर की नाज़ी फ़ौज का खौफ उन्हें हर वक़्त सताया करता था । गेस्टापो जो हिटलर की खुफ़िया पुलिस थी वह जगह-जगह छापे मार कर यहूदियों को अज्ञातवास में से भी ढूंढ निकालती और यातनागृह में डाल देती। चारों ओर अराजकता फैली हुई थी, नाज़ियों का अत्याचार, लम्बे समय तक गुप्त स्थानों पर छुपे रहने वाले लोगों, गोलीबारी का आतंक, भूख, ग़रीबी, बीमारी, मानसिक तनाव, जानवरों-सा जीवन, चोरी आदि का भय चलता जा रहा था जो कि बेहद अमानवीय व्यवहार था ।

प्रश्न 3. "ऐन की डायरी में व्यक्तिगत और ऐतिहासिक पृष्ठ का फ़र्क मिट गया है" इस कथन की व्याख्या कीजिये।

उत्तर :- ऐन के डायरी में व्यक्तिगत और ऐतिहासिक पृष्ठ का फ़र्क मिट गया है इस कथन से आशय है कि ऐन के अपने परिवार, विशेषतः माँ और सहयोगियों से मतभेद, एकांत का दुःख, दूसरों द्वारा स्वयं पर किये गए आक्षेप, डांट-फटकार, खीझ, निराशा, पीटर के साथ सम्बन्ध, प्रकृति के लिए बेचैनी आदि का वर्णन मिलता है। ऐन की डायरी के पृष्ठों में युद्ध की विभीषिका के साथ-साथ व्यक्तिगत सुख-दुःख भी दिखते हैं। इसलिए ऐसा कहा गया है। क्योंकि पृष्ठभूमि दूसरा विश्वयुद्ध है। उसकी यंत्रणा है, जिसका व्यक्तिगत रूप से भी पूरे जीवन पर असर निश्चित है। समानांतर रास्ते पर ऐन की भावनात्मक पीड़ा भी चल रही है और यही वजह है कि दोनों तड़प और वेदना एक दूसरे में समाकर एक सामान्य पीड़ा बन गई है।

प्रश्न 4. ऐन ने एक निर्जीव गुड़िया को अपना काल्पनिक दोस्त क्यों बना लिया? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर :- ऐन एक निर्जीव गुड़िया को अपना काल्पनिक दोस्त इसलिए बनाया क्योंकि जब ऐन निर्वासन में थी, वह मात्र तेरह वर्ष की थी। उससे बात करने और उसकी भावनाओं को समझने वाला कोई नहीं था और वह बड़ों की बात सुनकर परेशान हो चुकी थी और जब इंसान अकेला होता है, उसके मन में अनेक कल्पनाएँ जन्म ले लेती हैं और उसकी आवश्यकता ही आविष्कार के लिए प्रेरित करती है। ऐसे माहौल में वह अपनी उसी निर्जीव गुड़िया से बात करती थी और वह अनुभवों और भावनाओं को फिर अपनी डायरी के माध्यम से व्यक्त करती है।

प्रश्न 5. ऐन ने अपने छुपने की जगह का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर :- ऐन ने अपने छुपने की जगह का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है -"तल मंजिल पर बना बड़ा सा गोदाम काम करने की जगह और भंडार घर के रूप में इस्तेमाल होता है। इसके अलग अलग हिस्से बने हुए हैं। ये हिस्से गोदाम, पिसाई का कमरा वगैरह हैं जहाँ इलायची, लौंग और काली मिर्च वगैरह पीसे जाते हैं। गोदाम के दरवाजे से ही सटा हुआ एक बाहर का दरवाजा है जो ऑफिस का प्रवेश द्वार है। ऑफिस के दरवाजे के एकदम अंदर की तरफ एक दूसरा दरवाज़ा है और उसके पीछे सीढ़ियाँ हैं। सीढ़ियाँ ऊपर चढ़ें तो एक और दरवाजा आता है, जिस पर आर-पार दिखाई न देने वाले काँच की खिड़की लगी है। इस पर काले अक्षरों में 'कार्यालय' लिखा हुआ है यही आगे वाला बड़ा यानी फ्रंट ऑफिस है।"

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -1. सैनिक किस बात पर गर्व करते हैं?

उत्तर :- घायल सैनिक अपने ज़ख़्मों को दिखाते हुए गर्व महसूस करते हैं क्योंकि जिस सैनिक को जितने ज्यादा घाव लगते हैं, वह उतना ही गर्व से भर जाता है।

प्रश्न -2. ऐन फ्रेंक को क्या मुंह-जबानी याद रहता था और कैसे?

उत्तर :- ऐन फ्रैंक को फिल्मों की समीक्षाएं और उनमें काम कर रहे मुख्य नायक व नायिकाओं के नाम मुंह-जबानी याद रहती थी, क्योंकि मिस्टर कुगलर उसके लिए पत्रिका 'सिनेमा एंड थियेटर' लाते थे जिसे वह पढ़ा करती थी।

प्रश्न -3. ऐन फ्रेंक का परिवार अज्ञातवास में क्यों चला गया था?

उत्तर :- ऐन फ्रेंक का परिवार अज्ञातवास में हिटलर के अत्याचारों से बचने के लिए चला गया था। क्योंकि ऐन फ्रेंक का परिवार यहूदी था । हिटलर यहूदी लोगों से नफरत किया करता था और वह दुनिया से यहूदी लोगों को मिटा देना चाहता था।

प्रश्न 4. इल्या इहरनबुर्ग ने ऐन के लिए क्या टिप्पणी की थी?

उत्तर :- इल्या इहरनबुर्ग ने ऐन के लिए टिप्पणी की थी कि "यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलने वाली एक आवाज़ है। एक ऐसी आवाज है, जो किसी संत या कवि की नहीं ,बल्कि एक साधारण लड़की की है।"

प्रश्न -5. ऐन फ्रैंक की डायरी का कौन-सा कथन उसके अन्दर के दुःख को बताता है ?

उत्तर :- ऐन फ्रैंक की डायरी का यह कथन उसके अन्दर के दुःख को बताता है" काश कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता।अफसोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला....।"

प्रश्न -6. ऐन को किस कारण लगा था कि उसकी दुनिया पूरी तरह से उलट-पुलट गई थी ?

उत्तर :- ऐन के घर बुधवार 8 जुलाई, 1942 को संदेश आया था कि उसकी सोलह वर्षीय बहन मार्गोट को ए०एस०एस० से बुलावा आया था। इस बुलावे का अर्थ उसे यातना शिविर से बुलाया जाना था जिसमें उसे जर्मन सैनिकों की दया पर छोड़ देना था। ऐन के माता-पिता को यह बिल्कुल भी स्वीकार नहीं था। इसलिए उन्होंने तुरंत अज्ञातवास में चले जाने का निश्चय कर लिया था। इससे ऐन को लगा था उसकी दुनिया पूरी तरह से उलट-पुलट हो गई थी।

प्रश्न - 7 .अज्ञातवास की बात सुनकर ऐन के मन में छिपने की कौन-सी

jharkhandlab.com

जगह आई थी ?

उत्तर :- वे कहाँ छिपेंगे-किसी के घर में? शहर में ? किसी परछत्ती पर? यहाँ? कहाँ? वह यह किसी से पूछ नहीं सकती थी पर ये प्रश्न उसके मन में उठ रहे थे।

प्रश्न- 8 .ऐन ने अपने थैले में क्या-क्या भरा था?क्यों?

उत्तर ;- ऐन ने अपने थैले में डायरी, कलर, रूमाल, स्कूली किताबें, कंघी और पुरानी चिट्ठियाँ भरी थीं। वह कपड़ों की तुलना में स्मृतियों को अधिक महत्व देना चाहती थी।

प्रश्न -9. ऐन की डायरी के 13 जून, 1944 के अंश में स्त्रियों के लिए क्या लिखा गया था?

उत्तर :- ऐन की डायरी के 13 जून, 1944 के अंश में स्त्रियों के लिए यह लिखा गया था कि 'प्रकृति प्रदत्त प्रजनन शक्ति के उपयोग का अधिकार बच्चे पैदा करें या न करें अथवा कितने बच्चे पैदा करें इस की स्वतंत्रता स्त्री से छीन कर हमारी विश्व -व्यवस्था ने न सिर्फ़ स्त्री को व्यक्तित्व विकास के अनेक अवसरों से वंचित - किया है बल्कि जनांधिक्य की समस्या भी पैदा की है।'

प्रश्न - 10. ऐन की डायरी में किसका वर्णन है तथा इसे ऐतेहासिक दस्तावेज क्यों कहा जाना चाहिए?

उत्तर :- ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी में यहूदी परिवारों पर हुए अकल्पनीय यातनाओं का वर्णन किया है जो द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हुआ था लेकिन साथ ही ये एक जीवंत दस्तावेज़ भी है जिसमें ऐन के निजी सुख-दुःख और भावनात्मक उथल-पुथल के बारे में बताया गया है,

दूसरे विश्वयुद्ध के समय यहूदी परिवारों पर हुए अकल्पनीय यातनाओं,उनकी पीड़ाओं के वर्णन के कारण ही यह डायरी एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ है।

प्रश्न 11. खाने की टेबल पर ऐन को कौन-सी कहानियाँ सुननी पड़ती थी?

उत्तर :- खाने की टेबल पर ऐन को अच्छे खाने और राजनीति के बारे में बहुत- सी कहानियाँ सुननी पड़ती थी। ऐन लिखती है कि "अगर खाने के वक्त बातचीत राजनीति या अच्छे खाने के बारे में नहीं हो रही होती तो मम्मी या मिसेज वान दान अपने बचपन की उन कहानियों को लेकर बैठ जाती हैं जो हम हजार बार सुन चुके हैं या फिर डसेल शुरू हो जाते थे। खूबसूरत रेस के घोड़े, उनकी चार्लोट का महँगा वार्डरोब, लीक करती नावें, चार बरस की उम्र में तैर सकने वाले बच्चे, दर्द करती माँसपेशियों और डरे हुए मरीज आदि के किस्से सुनने पड़ते थे।

प्रश्न 12. अज्ञातवास में जाने के पहले लोगों ने क्या-क्या पहन रखा था?

उत्तर :- अज्ञातवास पर जाते समय उन चारों ने इतने अधिक कपड़े पहने थे मानो वे अपनी रात फ्रिज में गुजारने जा रहे हों। वे अपने साथ अधिक-से-अधिक कपड़े ले जाना चाहते थे। सबने दो बनियानें, तीन पैंटें, एक ड्रेस, उसके ऊपर एक स्कर्ट, एक जैकेट, एक बरसाती, दो जोड़ी स्टार्किंग्स, भारी जूते, एक केस, एक स्कार्फ और इनके अतिरिक्त और भी बहुत कुछ पहना था।

प्रश्न 13. ऐन ने अपनी बिल्ली को कहाँ और किसकी देख-रेख में छोड़ दिया

उत्तर :- उन्होंने अपनी बिल्ली को पड़ोसियों के यहाँ छोड़ दिया था। वे ही अब उसकी देखभाल करने वाले थे। वे रसोई में बिल्ली के लिए सेर भर मीट भी छोड़ गए थे।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न- 1. ऐन फ्रैंक कौन थी?

उत्तर :- ऐन फ्रैंक यहूदी परिवार में जन्मी एक तेरह साल की बच्ची थी।

प्रश्न- 2. घर के कायदे कानून का कौन सही से पालन नहीं करता है?

उत्तर :- घर के कायदे क़ानूनों का सही से पालन मिस्टर डसेल के द्वारा नहीं किया जाता था।

प्रश्न 3. ऐन फ्रैंक का परिवार कहाँ छुपने वाला था?

उत्तर :- ऐन फ्रैंक का परिवार उसके पिताजी के कार्यालय की इमारत में छुपने वाला था।

प्रश्न 4. जॉन और मिस्टर क्लीमेन को किसके बारे में बात करना अच्छा लगता है?

उत्तर :- जॉन और मिस्टर क्लीमेन को उन लोगों के बारे में बात करना अच्छा लगता था जो अज्ञातवास में छुपे या भूमिगत हो गए हों।

प्रश्न 5. इज्मुईडेन पर ब्रिटिश सेना का हमला कैसा था?

उत्तर :- इज्मुईडेन पर 550 टन गोला बारूद ब्रिटिश सेना के 350 वायुयानों के द्वारा बरसाया गया था।

प्रश्न -6 . ऐन फ्रैंक के पिता के ऑफिस में कौन- कौन कार्य करता था?

उत्तर :- ऐन फ्रैंक के पिता के ऑफिस में बहुत कम लोग ही काम किया करते थे। मिस्टर क्लीमेन,मिस्टर कुगलर, मिएप और बेप वोस्कुइल जो तेइस बरस की टाइपिस्ट थी।

प्रश्न -7. मिस्टर डसेल किसके साथ पत्राचार कर रहे थे तथा उनके पत्र कौन डील करता है ?

उत्तर :- मिस्टर डसेल चार्लोट और बाकी लोगों के साथ पत्राचार कर रहे थे तथा उनके पत्रों को डील उनकी डच अध्यापिका मार्गोट किया करती है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. ऐन का कौन-सा ऐसा शौक था जिसे उसके घरवाले पसंद नहीं करते थे?

क. हर समय पढ़ाई करना
ख. नई-नई केश-सज्जा करना
ग. बहुत बोलना
घ. गीत गाना

प्रश्न 2. मिस्टर डसेल के बारे में लेखिका ने किस विशेषण का प्रयोग किया है।

क. चुगलखोर ख. कंजूस
ग. अनुशासनप्रिय घ. दयालु

प्रश्न 3. मिस्टर डसेल लेखिका की शिकायत किससे करता था?

क. लेखिका के पापा से ख. लेखिका की मम्मी से
ग. लेखिका की बहन से घ. मिस्टर वान दान से

प्रश्न 4. कौन-सा देश जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में शामिल नहीं हुआ था ?

क. इंग्लैंड ख. फ्रांस
ग. टर्की घ. अमेरिका

प्रश्न 5. कौन-सी मुद्रा अवैध घोषित की गई थी?

क. 100 गिल्डर का नोट ख. 500 गिल्डर का नोट
ग. 1 गिल्डर का नोट घ. 1000 गिल्डर का नोट

प्रश्न 6. घायल सैनिकों से कौन बातचीत करता था?

क. हिटलर ख. चर्चिल
ग. विल्सन घ. जॉनसन

प्रश्न 7 . घायल सैनिक अपने जख्म दिखाते हुए क्या महसूस कर रहे थे?

क. दुख ख. पीड़ा
ग. गर्व घ. निराशा

प्रश्न 8. हर सोमवार को लेखिका के लिए सिनेमा और थियेटर पत्रिका कौन लेकर आते थे?

jharkhandlab.com

क. मिस्टर कुगलर ख. मिस्टर उसेन
ग. पापा घ. मिस्टर वान दान

प्रश्न 9. किसको जन्मजात बहादुर कहा गया है?
क. हिटलर को ख. चर्चिल को
ग. विल्सन को घ. मिस्टर वान दान को

प्रश्न 10. ऐन किनको मूर्ख समझती है?
क. मिसेज़ वान दान और मिस्टर डसेल को
ख. मिस्टर वान दान और मिसेज़ वान दान
ग. मिस्टर डसेन और मिसेज़ डसेल को
घ. मार्गोट को और मिसेज़ वान दान

प्रश्न 11. ऐन किसको शांतिदायिनी और आशादायिनी मानती है?
क. प्रेम को ख. मित्रता को
ग. रात को घ. प्रकृति को

प्रश्न 12. युद्ध के समय ब्लैक मार्केट में जूते का नया तला कितने का मिलता था ?
क. 7.50 गिन्डर का ख. 5 गिन्डर का
ग. 6 गिन्दर का घ. 8 गिन्दर का

प्रश्न 13. मिस्टर डसेल किस कारण से लेखिका से खफा था?
क. झगड़ा करने के कारण
ख. तकिया उठाने के कारण
ग. पीटर के साथ छत पर जाने के कारण
घ. बात नही सुनने के कारण

प्रश्न-14. 13 जून, 1944 को ऐन कितने वर्ष की हो गई थी।
क. 12 वर्ष की ख. 13 वर्ष की
ग. 15 वर्ष की घ. 14 वर्ष की

प्रश्न-15. जन्मदिन पर ऐन को क्या मिले थे?
क. केवल फूल ख. केवल कपड़े
ग. वन पुस्तकें घ. बहुत-से उपहार

प्रश्न-16. ऐन ने पीटर को किस प्रकार का व्यक्ति कहा है।
क. सज्जन ख. चालाक
ग . घुन्ना घ. डरपोक

प्रश्न-17. ऐन फ्रैंक ने डायरी का आरंभ किस तिथि से किया?
क. 9 जुलाई, 1943 को ख. 8 जुलाई, 1942 को
ग. 9 जुलाई, 1942 को घ. 10 जुलाई,1942 को

प्रश्न-18. ऐन फ्रैंक की बड़ी बहन का नाम क्या था?
क. किट्टी ख. बिट्टी
ग. मार्गोट घ. बेप

प्रश्न-19. ऐन फ्रैंक के पापा को किसके बुलावे का नोटिस मिला था?
क. एन०एस० एस० ख. आर०एस० एस०
ग. एम०एस० एस० घ. ए०एस० एस

प्रश्न-20. मिस्टर वान दान ऐन फ्रैंक के पापा का क्या लगता था?
क. बड़ा भाई ख. छोटा भाई
ग. मित्र घ. बिजनेस पार्टनर

प्रश्न-21. ए०एस०एस० के बुलावे का क्या मतलब था?
क. पुलिस द्वारा गिरफ्तारी ख. यातना शिविर में जाना
ग. अस्पताल में जाना घ. फाँसी पर चढ़ना

प्रश्न-22. ऐन फ्रैंक किस धर्म से संबंधित थी?
क. ईसाई धर्म से ख. मुस्लिम धर्म से
ग. यहूदी धर्म से घ. बौद्ध धर्म से

प्रश्न-23. ए०एस०एस० का बुलावा किसके लिए आया था?
क. वान दान के लिए ख. पापा के लिए
ग. ऐन फ्रैंक के लिए घ. मार्गोट के लिए

प्रश्न-24. ऐन फ्रैंक के परिवार ने बुलावे के कारण क्या फैसला लिया?
क. यातना शिविर में जाने का
ख. अज्ञातवास में जाने का
ग. भागने का
घ. यहूदी अस्पताल जाने का

प्रश्न-25. अज्ञातवास में जाने के लिए ऐन फ्रैंक के परिवार की किसने सहायता की ?
क. हैलो ने ख. डसेल ने
ग. मिएप ने घ. वान दान

प्रश्न-26. ऐन फ्रैंक ने अपनी बिल्ली को कहाँ पर छोड़ा?
क. सड़क पर ख. जंगल में
ग. पड़ोसियों के पास घ. उद्यान में

प्रश्न-27. ऐन फ्रैंक के परिवार ने पहले कब अज्ञातवास में जाने का फैसला लिया था?
क. 16 जुलाई को ख. 15 जुलाई को
ग. 17 जुलाई को घ. 18 जुलाई को

प्रश्न-28. ऐन फ्रैंक का परिवार कहाँ पर छिपकर रहा ?
क. पापा के ऑफ़िस की इमारत में
ख. मिस्टर वान दान के ऑफिस में
ग. मिएप के घर में
घ. मिस्टर डसेल के घर में

प्रश्न-29. ऐन के परिवार ने कितना वक्त छिपकर गुजारा?
क. 2 वर्ष ख. 3 वर्ष
ग. 4 वर्ष घ. 5 वर्ष

प्रश्न-30. मार्गोट की कितनी आयु थी ?
क. 17 वर्ष ख. 16 वर्ष
ग. 15 वर्ष घ. 18 वर्ष

प्रश्न-31. ऐन के परिवार की पालतू बिल्ली का क्या नाम था?
क. मूझा ख. बूझा
ग. मूर्जा घ. मूर्ज्जे

प्रश्न-32. ऐन के घरवालों ने खिड़कियों को किससे ढक रखा था?
क. चादरों से
ख. कागजों से
ग. ईंटों से
घ. ब्लैक आऊट वाले पर्दो से

प्रश्न-33. ऐन को किसका लंबा उपदेश सुनना पड़ता था?
क. पापा का ख. मिस्टर वान दान का
ग. मिस्टर डसेल घ. माँ का

उत्तर -	1-ख	2-क	3-ख	4-ग	5-घ
	6-क	7-ग	8-क	9-ख	10-क
	11-घ	12-क	13-घ	14-ग	15-घ
	16-ग	17-ख	18-ग	19-घ	20-घ
	21-ख	22-ग	23-घ	24-ख	25-ग
	26-ग	27-क	28-क	29-क	30- ग
	31-घ	32-घ	33-घ		

jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

अभिव्यक्ति और माध्यम

Jharkhandlab.com

1. अनुच्छेद–लेखन

1. अनुच्छेद किसे कहते हैं ? अनुच्छेद लेखन में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गए सम्बद्ध एवं लघु वाक्य समूह को अनुच्छेद लेखन कहते हैं।

दूसरे शब्दों में किसी घटना दृश्य अथवा विषय को संक्षिप्त किंतु सारगर्भित ढंग से जिस लेखन शैली में प्रस्तुत किया जाता है उसे अनुच्छेद लेखन कहते हैं। यह अंग्रेजी भाषा के 'पैराग्राफ' शब्द का हिंदी पर्याय है। अनुच्छेद निबंध का संक्षिप्त रूप होता है। इसमें किसी विषय के किसी एक पक्ष पर 80 या 100 शब्दों में अपने विचार व्यक्त किए जाते हैं। अनुच्छेद में हर वाक्य अपने मूल विषय से जुड़ा रहता है। अनुच्छेद अपने आप में स्वतंत्र और पूर्ण होते हैं। अनुच्छेद के सभी वाक्य एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। उसमें एक भी वाक्य बेकार और अनावश्यक नहीं होता।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

1. अनुच्छेद लिखने से पहले रूपरेखा, संकेत-बिंदु आदि तैयार करना चाहिए।
2. अनुच्छेद में विषय के किसी एक ही पक्ष का वर्णन होना चाहिए।
3. भाषा सरल स्पष्ट और प्रभावशाली होनी चाहिए।
4. बातों का दोहराव नहीं होना चाहिए।
5. अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
6. शब्द सीमा का ध्यान रखना चाहिए।
7. पूरे अनुच्छेद में एकरूपता होनी चाहिए।
8. विषय से संबंधित सूक्ति अथवा कविता की पंक्तियों का प्रयोग करना चाहिए ।

2. निबंध और अनुच्छेद में क्या अंतर है?

उत्तर जहां निबंध में प्रत्येक बिंदु को अलग-अलग अनुच्छेद में लिखा जाता है, वहीं अनुच्छेद लेखन में एक ही परिच्छेद या पैराग्राफ में प्रस्तुत विषय को सीमित शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है। इसके अतिरिक्त निबंध की तरह भूमिका, मध्य भाग एवं उपसंहार जैसा विभाजन अनुच्छेद में करने की आवश्यकता नहीं होती। अनुच्छेद अपने आप में स्वतंत्र और पूर्ण होते हैं। अनुच्छेद का मुख्य विचार या भाव की कुंजी या तो आरंभ में रहती है या अंत में। जिस अनुच्छेद में मुख्य विचार या भाव अंत में होता है, वह उच्च कोटि का माना जाता है।

3. निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए-

क. 'कंप्यूटर आज की जरूरत'

कंप्यूटर की उपयोगिता सर्वविदित है। जीवन के हर क्षेत्र में यह अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण प्रमाणित हो चुका है। कृषि, चिकित्सा, व्यवसाय, शिक्षा, बैंक, रेलवे, हवाई सेवा, डाक सेवा हर जगह इसने अपना अभूतपूर्व स्थान बना लिया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि बस बटन दबाओ और काम बन गया।

सेकेंडों में कीजिए, घंटे भर का काम।
कहीं भी, कभी भी, सुबह हो या शाम।।

एक समय विज्ञान ने कंप्यूटर को बनाया था किंतु आज विज्ञान के कार्यभार को कंप्यूटर ने संभाल रखा है। पृथ्वी के एक छोर पर बैठकर हम दूसरे छोर की जानकारी मिनट में हासिल कर लेते हैं। ब्रह्मांड की जानकारी भी प्राप्त कर रहे हैं। चांद पर पहुंच गए हैं। ज्योतिष शास्त्र की गणना, चिकित्सा के क्षेत्र में नए अनुसंधान एवं शोध, पुलिस विभाग को रहस्यमय गुत्थियाँ सुलझाने में मदद आदि न जाने कितने कार्य हैं। जो कंप्यूटर के आने से अत्यंत शीघ्र और सुलभ हो गए हैं। फाइलों का झंझट अब लगभग खत्म हो गया है। बैंक, विद्यालय इत्यादि संस्था अपनी जानकारी कंप्यूटर पर अपलोड करके पासवर्ड डालकर रख लेते हैं। जरुरत पड़ने पर पल भर में देख लेते हैं। छात्रों के लिए ज्ञानवर्धक किताबें भी हैं। फिल्म भी है, गेम और मनोरंजन के विभिन्न साधन भी हैं तथा साथ ही साथ समाज को बर्बादी के रास्ते पर ले जाने वाला अश्लील साइट भी है। यह हमारे लिए अभिशाप और वरदान दोनों है। यह हमारे विवेक और बुद्धि की बात है कि हम इसका सदुपयोग करते हैं या दुरुपयोग।

ख. काल करे सो आज कर

समय सर्वश्रेष्ठ धन है। जिसने समय के महत्व को नहीं जाना, पहचाना, समझा उसका जीवन अभिशाप से भर गया। वह जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। एक अंग्रेजी कहावत हैं "टाइम एंड टाइड वेट फॉर नना।" अवसर और समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। बीता समय वापस नहीं लौटता। संत तुलसीदास जी ने कहा है–

समय चूकी क्या पछितानी।
का वर्षा जब कृषि सुखानी।।

खेती का समय बीत जाने पर होने वाली वर्षा का क्या उपयोग? अवसर को पीछे से कभी भी नहीं पकड़ा जा सकता। नदी उलट कर बह सकती है, हवा विपरीत दिशा में चल सकती है, लेकिन समय का प्रवाह कभी भी उलटी दिशा में नहीं जाता। समय की ओर से विमुख करने वाला हमारा सबसे बड़ा शत्रु आलस्य है अतः समय को जीतने के लिए आलस्य को जीतना आवश्यक है। जिन्होंने समय के मूल्य को पहचाना उन्होंने इतिहास के पन्नों पर अपने नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित करवाएं। सिकंदर महान, नेपोलियन, वीर शिवाजी, रानी लक्ष्मीबाई, डॉ राजेंद्र प्रसाद अनगिनत उदाहरण हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं। अंत में हम कह सकते हैं कि समय ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है। यदि आप समय बर्बाद करते हैं तो समय आपको बर्बाद कर देगा। अतः हमें समय के महत्व को समझ कर इसका सदैव सदुपयोग करना चाहिए।

jharkhandlab.com

ग. कर्म ही पूजा है

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है– "कर्मण्य वाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन।"

मनुष्य का अधिकार कर्म मात्र पर है। परिश्रम ही मनुष्य का आभूषण है। परिश्रम से ही मनुष्य का प्रत्येक सपना साकार होता है। दृढ़ संकल्प लेकर बढ़ता हुआ मनुष्य पत्थर को भी पानी बना देता है। पर्वतों को भी चकनाचूर कर देता है। महर्षि भगीरथ ने अगर घोर परिश्रम ना किया होता, तो भागीरथी गंगा स्वर्ग से धरती पर नहीं उतरती। धरती हरियाली से नहीं लहराती। परिश्रम से ही सब कुछ मिलता है। श्रम से ही कार्य की सिद्धि होती है। केवल दिवास्वप्न देखना और बड़े-बड़े संकल्पों को लेने से कुछ नहीं होता, अपितु परिश्रम करने से ही जीवन में सब कुछ प्राप्त होता है। जो मेहनती होते हैं, उन पर लक्ष्मी और सरस्वती दोनों की कृपा बरसती है। जीवन को सुख सुविधा पूर्ण बनाने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है। सागर में डुबकी लगाने पर मोती हाथ लगता है। लहरों से भयभीत हो जाने वाला कभी भी मोती नहीं पा सकता। परिश्रम में ही आनंद है, परिश्रम तन और मन दोनों को स्वस्थ रखता है। सुंदर स्वस्थ एवं सफल जीवन की प्राप्ति के लिए हमें सदा परिश्रम करते रहना चाहिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निबंध ..... साहित्य की एक विद्या है।

1. गद्य 2. पद्य
3. महाकाव्य 4. काव्य

2. निबन्ध का अंतिम भाग कहलाता है-

1. परिचय 2. निष्कर्ष
3. विषय-विस्तार 4. प्रस्तावना

3. अनुच्छेद किस विद्या का संक्षिप्त रुप है?

1. यात्रावृत्तांत 2. निबंध
3. डायरी 4. कहानी

4. अनुच्छेद लिखते समय क्या आवश्यक है?

1. अनावश्यक विषय-विस्तार
2. शब्द सीमा का ध्यान
3. बातों का दोहराव
4. अनेक पक्षों का वर्णन

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 1, 2 - 2, 3 - 2, 4 - 2

Jharkhandlab.com

2. कार्यालयी पत्र

प्रश्न 1. कार्यालयी पत्र क्या होता है ?

उत्तर - कार्यालयी पत्र वे औपचारिक पत्र होते हैं। जो विभिन्न कार्यालयों से अपने कर्मचारियों, अधिकारियों या दूसरे कार्यालयों को भेजे जाते हैं। कार्यालयी पत्रों में भावात्मक, अलंकृत तथा मुहावरेदार भाषा के लिए कोई स्थान नहीं होता। कार्यालयी पत्रों में केवल विषय से संबंधित एवं तर्कसंगत बातें ही कही जाती हैं। इनका प्रयोग क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। केंद्र और राज्य सरकारों, राज्य एवं राज्य सरकारों, सचिवालय तथा विभिन्न सरकारी और निजी संस्थाओं आदि के बीच होने वाला संपूर्ण पत्राचार कार्यालयी पत्रों की परिधि में आता है।

प्रश्न 2. कार्यालयी पत्र कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर - सामान्यताः निम्नलिखित प्रकार के पत्रों को कार्यालयी पत्र के अंतर्गत रखा जाता है। शासकीय पत्र, अनुस्मारक, कार्यालय आदेश, कार्यालय ज्ञापन, अधिसूचना, अर्ध सरकारी पत्र, परिपत्र, टिप्पणी, सूचना, संपादक के नाम पत्र, प्रार्थना पत्र, आवेदन पत्र।

प्रश्न 3. कार्यालयी पत्र लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है ?

उत्तर- सबसे ऊपर बाएं ओर पत्र संख्या लिखी जाती है। उसके नीचे प्रेषक का नाम पद व पता लिखा जाता है। तत्पश्चात दिनांक लिखा जाता है। दिनांक के पश्चात प्रेषिती का नाम लिखा जाता है तथा दिनांक उसके नीचे होता है। दिनांक में महीने का नाम अंकों की बजाय शब्दों में लिखना प्रभावी होता है। इसके अंतर्गत कार्यालय या विभाग का नाम, पता इत्यादि लिखने के बाद 'सेवा में' लिखा जाता है। इसके पश्चात पत्र पाने वाले का नाम, पद और पता लिखा जाता है। फिर विषय के अंतर्गत उस बात की संक्षिप्त चर्चा की जाती है। जिसके लिए पत्र लिखा जा रहा है। पत्र पाने वाले को संबोधन करने के लिए महाशय, मान्यवर आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। संक्षिप्तता कार्यालयी पत्र की विशेषता है। पत्र की समाप्ति के बाद बाईं ओर भवदीय इत्यादि लिखकर पत्र लिखने वाले को अपना हस्ताक्षर करना होता है।

प्रश्न 4. अधिसूचना से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - सामान्य जनता तथा सरकारी कार्यालयों की जानकारी के लिए जो सूचनाएं राजपत्र (गजट) में प्रकाशित की जाती है, उन्हें अधिसूचना कहते हैं। अधिसूचना द्वारा संवैधानिक नियमों और आदेशों की घोषणा की जाती है। इसमें राजपत्रित अधिकारियों की नियुक्ति, पदोन्नति, स्थानांतरण एवं प्रतिनियुक्ति का प्रकाशन किया जाता है। सरकारी अध्यादेशों, संकटकालीन घोषणाओं और अधिनियमों का प्रकाशन भी अधिसूचना द्वारा किया जाता है।

प्रश्न 5. परिपत्र क्या होता है ?

उत्तर - एक ही विषय का पत्र जब अनेक विभागाध्यक्षों को भेजा जाए तो वह परिपत्र कहलाता है। इसका प्रयोग उस स्थिति में किया जाता है, जब केंद्र सरकार को अन्य सरकारों से या एक मंत्रालय से अन्य मंत्रालयों को अथवा एक विभाग को एक समान सूचना या आदेश भेजने या मंगाने हों। इसका प्रेषक एक ही व्यक्ति होता है तथा पाने वाले कई होते हैं।

प्रश्न 6. अनुस्मारक किसे कहते हैं ?

उत्तर - किसी कार्यालय को भेजे गए पहले पत्र का उत्तर न आने की दशा में कार्यालय को पुनः मूल पत्र के संदर्भ में उसे स्मरण कराने के लिए जो दूसरा पत्र लिखा जाता है, उसे अनुस्मारक कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं।

1. सरकारी पत्र के रूप में।
2. अर्ध सरकारी पत्र के रूप में।

प्रश्न 7. कार्यालय आदेश क्या होता है ?

उत्तर - वे पत्र जिनके द्वारा किसी भी मंत्रालय या विभाग के कर्मचारियों को आदेश दिए जाते हैं। कार्यालय के आंतरिक क्रियाकलापों हेतु कार्य का विभाजन तथा कर्मचारियों की नियुक्ति, प्रोन्नति, स्थानांतरण, अवकाश आदि की स्वीकृति संबंधी सूचनाओं के लिए कार्यालय आदेश जारी किए जाते हैं। कर्मचारियों द्वारा इनका अनुपालन करना आवश्यक होता है।

प्रश्न 8. 'टिप्पणी' किसे कहते हैं ?

उत्तर - कार्यालय में विचाराधीन पत्रों को शीघ्रता और सुगमता से निपटाने के लिए अधीनस्थ अधिकारी, कार्यालय सहायक या संबंधित लिपिक द्वारा उस पर लिखी गई अभ्युक्ति अथवा संक्षिप्त विवरण को 'टिप्पणी' कहते हैं।

प्रश्न 9. 'अर्ध सरकारी पत्र' क्या होता है ?

उत्तर - सरकारी कार्यालयों में जब किसी विषय पर कई बार लिखने के बावजूद अपेक्षित कार्रवाई नहीं होती तो उसके अंतरिम निस्तारण हेतु एक अधिकारी दूसरे अधिकारी को सरकारी भाषा में मैत्री भाव से जो पत्र लिखता है। वह पत्र अर्ध सरकारी पत्र कहलाता है।

प्रश्न 10. कार्यालय ज्ञापन से क्या समझते हैं ?

उत्तर - कार्यालयों से ज्ञापित सूचना या आदेश को 'कार्यालय ज्ञापन' कहते हैं। इसका प्रयोग प्रायः सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों में पारस्परिक पत्र व्यवहार के लिए किया जाता है।

jharkhandlab.com

प्रश्न 11. प्रार्थना पत्र क्या है ?

उत्तर - प्रार्थना पत्र वस्तुतः आवेदन पत्र ही है जो विद्यालय, महाविद्यालयों के प्राचार्य अथवा संस्था या संगठन के प्रधान को किसी कार्यवश लिखा जाता है।

प्रश्न 12. आवेदन पत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर - किसी पद हेतु आवेदक संस्थाओं के प्रमुख इत्यादि को जिस प्रारूप में आवेदन करता है उसे आवेदन पत्र कहते हैं।

प्रश्न 13. शासकीय(सरकारी) पत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर - केंद्र सरकार द्वारा किसी राज्य सरकार को, राज्य सरकारों द्वारा केंद्र सरकार को, एक राज्य सरकार द्वारा किसी दूसरे राज्य सरकार को, केंद्र अथवा विभिन्न सरकारों के सचिवालय के अधिकारियों द्वारा विभिन्न अधीनस्थ कर्मचारियों को, न्यायालय, लोक सेवा आयोग, विभिन्न निदेशालय, महालेखाकार तथा अन्य स्वास्थ्य एवं अर्ध-स्वाधीन अधिकारियों को भेजे जाने वाले पत्र सरकारी या शासकीय पत्र कहलाते हैं।

प्रश्न14. किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखकर अपने क्षेत्र में बिजली वितरण की व्यवस्था की ओर बिजली अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कीजिए।

परीक्षा भवन,

रांची (झारखंड)।

दिनांक 15 मार्च 2023

सेवा में,

संपादक महोदय,

हिंदुस्तान,

रांची।

विषय -विद्युत वितरण की अव्यवस्था और उससे उत्पन्न परेशानी हेतु।

महोदय,

आपके समाचार पत्र के माध्यम से मैं अपने क्षेत्र में विद्युत वितरण की अव्यवस्था और इससे होने वाली परेशानियों के विषय में सरकार और संबंधित विभाग को ध्यान दिलाना चाहती हूं। आशा है कि विषय की गंभीरता को देखते हुए आप इस पत्र को अपने समाचार पत्र में अवश्य प्रकाशित करेंगे। आजकल विद्युत वितरण विभाग की ओर से बिजली की अत्यधिक कटौती की जा रही है। बिजली की दिन की कटौती के साथ-साथ रात्रि में भी कटौती की जा रही है। इस गर्मी के मौसम में बिजली कि इस प्रकार की जाने वाली कटौती जनजीवन के लिए संकट उपस्थित कर रही है। विभिन्न क्षेत्रों में उद्योग, व्यापारिक संस्थान तथा विद्यालय आदि इससे बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। मेरा सरकार और विद्युत विभाग के अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि इस समस्या की गंभीरता को देखते हुए विद्युत आपूर्ति नियमित करने का प्रबंध किया जाए ताकि क्षेत्रवासियों को इस भयंकर गर्मी से राहत मिल सके।

धन्यवाद सहित

भवदीय

क ख ग

प्रश्न15. विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए, जिसमें शुल्क माफी हेतु निवेदन हो।

परीक्षा भवन,

रांची (झारखंड)।

दिनांक - 09 दिसंबर 2022

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

संत जेवियर स्कूल,

डोरंडा, रांची(झारखंड)

विषय - शुल्क माफी हेतु निवेदन।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 12 का छात्र हूं। हाई स्कूल दसवीं परीक्षा में मैंने राज्य की मेधा सूची में सातवां स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम ऊंचा किया है। मेरे पिताजी पिछले 1 वर्षों से कैंसर जैसी बीमारी से जूझ रहे हैं जिस कारण हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई है। मैं विद्यालय का शुल्क देने में असमर्थ हूं। आपसे यह प्रार्थना है कि मेरा शुल्क माफ करके आगे अध्ययन जारी रखने में मेरी सहायता कर मुझे कृतार्थ करें।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी छात्र

क ख ग

क्रमांक - 15

कक्षा - 12. (ब)

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कार्यालयी पत्रों की भाषा होनी चाहिए ?

1. अलंकृत 2. मुहावरेदार
3. औपचारिक 4. भावात्मक

2. अधिसूचना का अंग्रेजी अनुवाद है ?

1. स्टेटमेंट 2. नोटिस
3. एंड क्लोज 4. नोटिफिकेशन

3. परिपत्र किस श्रेणी का पत्र है ?

1. सामाजिक 2. कार्यालयी
3. व्यक्तिगत 4. पारिवारिक

4. अधिसूचना का प्रकाशन कहां होता है ?

1. सोशल मीडिया पर 2. तार पत्र
3. समाचार पत्र 4. राजपत्र(गजट)

5. टिप्पण कितने प्रकार के होते हैं ?

1. 2 2. 3
3. 4 4. 5

jharkhandlab.com

6. **पूर्व में प्रेषित पत्र का उत्तर न आने की दशा में कार्यालय को पुनः स्मरण दिलाने के लिए भेजा गया पत्र क्या कहलाता है ?**
   1. निमंत्रण पत्र 2. परिपत्र
   3. अनुस्मारक 4. ज्ञापन

7. **कार्यालय पत्र में सबसे ऊपर लिखा जाता है ?**
   1. दिनांक 2. पत्र क्रमांक
   3. कार्यालय का स्थान 4. प्रेषिति को संबोधन

8. **परिपत्र किस शैली में लिखा जाता है ?**
   1. उत्तम पुरुष शैली में 2. मध्यम पुरुष शैली
   3. अन्य पुरुष शैली 4. इनमें से कोई नहीं

9. **एक ही विषय का पत्र जब एक स्थान से कई प्रेषितियों को भेजा जाता है तो इसे कहते हैं ?**
   1. ज्ञापन 2. विज्ञप्ति
   3. परिपत्र 4. अधिसूचना

10. **एक अधिकारी दूसरे अधिकारी को व्यक्तिगत शैली में पत्र लिखता है उसे कहते हैं ?**
   1. शासकीय पत्र 2. अर्ध शासकीय पत्र
   3. टिप्पणी 4. कार्यालय ज्ञापन

11. **सरकारी या शासकीय पत्र के अधोलेख में लिखा जाता है ?**
   1. शुभेच्छु 2. आपका
   3. भवनिष्ठ 4. भवदीय

12. **किस पत्र में प्रेषक एक ही व्यक्ति होता है तथा पाने वाले कई ?**
   1. परिपत्र 2. टिप्पणी
   3. अनुस्मारक 4. कार्यालय ज्ञापन

13. **कौन सा पत्र औपचारिक पत्र के अंतर्गत नहीं आता ?**
   1. अनुस्मारक 2. अधिसूचना
   3. परिपत्र 4. व्यक्तिगत पत्र

14. **प्रारूपण को कहा जाता है ?**
   1. नोटिस 2. रिपोर्ट
   3. ड्राफ्टिंग 4. नोटिफिकेश

15. **रिपोर्ट किसे कहते हैं ?**
   1. टिप्पण 2. प्रत्यावेदन
   3. प्रतिवेदन 4. प्रारूपण

16. **पत्र प्रारंभ करते समय संबंधित अधिकारी को संबोधित किया जाता है ?**
   1. प्रिय महोदय 2. महोदय
   3. आदरणीय 4. श्रध्देय

17. **सरकारी गजट में जनसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित होने वाले आलेख को कहते हैं ?**
   1. अधिसूचना 2. परिपत्र
   3. कार्यालय-ज्ञापन 4. सरकारी पत्र

18. **टिप्पण कार्य का अंतिम सोपान कहा जाता है?**
   1. प्रत्यावेदन 2. प्रतिवेदन
   3. टिप्पन 4. प्रारूपण

19. **गश्ती चिट्ठी या परिक्रमिक पत्र किस पत्र का अन्य नाम है?**
   1. टिप्पण 2. अधिसूचना
   3. प्रारूपन 4. परिपत्र

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 3,	2 - 4,	3 - 2,	4 - 4,	5 - 1,
6 - 3,	7 - 2,	8 - 3,	9 -3,	10- 2,
11 - 4,	12 - 1,	13 - 4,	14 - 3,	15 - 3,
16 - 2,	17 - 1,	18 - 4,	19 - 4	

Jharkhandlab.com

3. जनसंचार माध्यम

प्रश्न 1. इस पाठ में विभिन्न लोक- माध्यमों की चर्चा करते हुए आप पता लगाइए कि वे कौन-कौन से क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं? अपने क्षेत्र में प्रचलित किसी लोकनाट्य या लोक माध्यम के किसी प्रसंग के बारे में जानकारी हासिल करके उसकी प्रस्तुति के खास अंदाज के बारे में लिखें।

उत्तर - लोक नृत्य, लोक संगीत और लोकनाट्य प्रमुख लोक माध्यम हैं। यह देश के विभिन्न भागों में विविध नाट्यरूप कथावाचन, बाउल, सांग, रागिनी, तमाशा, लावनी, नौटंकी, जात्रा, गंगा गौरी, यक्षगान, कठपुतली, लोक नाटक आदि में प्रचलित है। इनमें स्वांग- उत्तर भारत, नौटंकी- उत्तर प्रदेश, बिहार, रागिनी- हरियाणा तथा यक्ष-गान कर्नाटक क्षेत्रों से संबंधित है। हमारे क्षेत्र में नौटंकी का प्रयोग खूब होता है। यह ग्रामीण नाट्य शैली का एक रूप है। इसमें प्रायः रात्रि के समय मंच पर किसी लोककथा या कहानी को नाट्य शैली में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें स्त्री पात्रों की भूमिका भी प्रायः पुरुष पात्र करते हैं। हारमोनियम, नगाड़ा, ढोलक आदि वाद्य यंत्रों के साथ यह संगीतमय प्रस्तुति लोक लुभावन होती है।

प्रश्न 2. आजादी के बाद भी हमारे देश के सामने बहुत सारी चुनौतियां हैं। आप समाचार पत्रों को उनके प्रति किस हद तक संवेदनशील पाते हैं ?

उत्तर - आजादी के बाद भी हमारे देश में बहुत सी चुनौतियां हैं। यह चुनौतियां हैं- निर्धनता से निपटने की चुनौती, बेरोजगारी से निपटने की चुनौती, भ्रष्टाचार की चुनौती, देश की एकता बनाए रखने की चुनौती, आतंकवाद का मुकाबला करने की चुनौती, संप्रदायिकता से निपटने की चुनौती।

प्रश्न 3. टी.बी. के निजी चैनल अपनी व्यवसायिक सफलता के लिए कौन-कौन से तरीके अपनाते हैं ? टी.वी. के कार्यक्रमों से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर - टी. वी. के निजी चैनल अपनी व्यवसायिक सफलता के लिए लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने वाले कार्यक्रम दिखाते हैं। लोग ऐसे कार्यक्रमों की ओर आकर्षित होते हैं। यह चैनल कई बार लोगों की आस्था को भी निशाना बनाने से नहीं चूकते। इन कार्यक्रमों को टुकड़ों में दिखाते हुए ऐसे मोड़ पर समाप्त करते हैं, जिससे लोगों में उत्सुकता अगले कार्यक्रम के लिए बनी रहे। गत दिनों जम्मू कश्मीर में आई बाढ़ की खबरों तथा उन में फंसे नागरिकों को बचाने संबंधी खबरों को 6 दिनों तक टीवी पर दिखाया जाता रहा। इसी प्रकार अमेठी(उत्तर प्रदेश) के भूपति भवन पर अधिकार को लेकर संजय सिंह(राज्य सभा सांसद) और उनकी पहली पत्नी गरिमा सिंह, पुत्र अनंत विक्रम सिंह के मध्य हुए झगड़े और विवाद को कई बार दिखाया गया।

प्रश्न 4. इंटरनेट पत्रकारिता ने दुनिया को किस प्रकार समेट लिया है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इंटरनेट पत्रकारिता के कारण अब दूरियां सिमट कर रह गई है। इंटरनेट की पहुँच दुनिया के कोने-कोने तक हो गई है। इसकी रफ्तार बहुत तेज है। इसका असर पत्रकारिता पर भी हुआ है। इसकी मदद से स्टूडियो में बैठा संचालक किसी भी मुद्दे पर देश-विदेश में बैठे व्यक्ति से बातें कर लेता है और करा देता है। इसकी मदद से गोष्ठियां, वार्ताएं आयोजित की जाती है। इससे विश्व की किसी भी घटना की जानकारी अब आसान हो गई है।

प्रश्न 5. किन्हीं दो हिंदी पत्रिकाओं के समान अंकों को (समान अवधि के) पढ़िए और उनमें निम्न बिंदुओं में से किसी एक के आधार पर तुलना कीजिए।

आवरण पृष्ठ

अंदर के पृष्ठों की साज-सज्जा

सूचनाओं का क्रम

भाषा-शैली

उत्तर - हम 'सरिता' और 'इंडिया टुडे' पत्रिकाओं के समान अंकों को लेते हैं और तुलना करते हैं। आवरण पृष्ठ- सरिता पत्रिका का आवरण पृष्ठ अधिक रंग-बिरंगा, चित्रमय, आकर्षक और सुंदर है जबकि इंडिया टुडे का आवरण पृष्ठ अच्छा है पर उतना आकर्षक नहीं।

प्रश्न 6. निजी चैनलों पर सरकारी नियंत्रण होना चाहिए अथवा नहीं? पक्ष विपक्ष में तर्क प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर - निजी चैनलों पर नियंत्रण होने से उनका काम करने का दायरा एवं ढ़ग प्रभावित होगा। इससे उनकी निष्पक्षता पर भी असर पड़ेगा। उन्हें सरकारी दबाव में काम करना होगा, अतः हमारे विचार से निजी चैनलों पर सरकारी नियंत्रण नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 7. नीचे कुछ कथन दिए गए हैं उनके सामने सही या गलत का निशान लगाते हुए उसकी पुष्टि के लिए उदाहरण भी दीजिए।

क - संचार माध्यम केवल मनोरंजन के साधन है। (गलत)

उदाहरण - संचार माध्यमों से हमें तरह-तरह का ज्ञान प्राप्त होता है, अतः ये केवल मनोरंजन के साधन नहीं है।

ख - केवल तकनीकी विकास के कारण संचार संभव हुआ, इससे पहले संचार संभव नहीं था। (गलत)

उदाहरण - संचार दो व्यक्तियों के बीच यहां तक अकेले भी होता है। इसके लिए तकनीकी विकास की आवश्यकता अनिवार्य नहीं थी। तकनीकी विकास बाद में सहायक बने हैं।

ग - समाचार- पत्र और पत्रिकाएं इतने सशक्त संचार माध्यम है कि वे राष्ट्र का स्वरूप बदल सकते हैं। (सही)

jharkhandlab.com

उदाहरण- समाचार पत्र पत्रिकाएं घोटाले, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, सांप्रदायिकता आदि के विरुद्ध आवाज उठाकर राष्ट्र का स्वरूप बदल सकते हैं।

घ - टेलीविजन सबसे प्रभावशाली एवं सशक्त संचार माध्यम है। (सही)

उदाहरण - टेलीविजन आवाज और चित्र का संगम होने के कारण अमीर- गरीब, शहरी- ग्रामीण, युवा- वृद्ध सभी की पसंद बन गया है।

ङ - इंटरनेट सभी संचार माध्यमों का मिला जुला रूप या समागम है। (सही)

उदाहरण - इंटरनेट पर समाचार- संगीत,फिल्म, बैठक, गोष्ठी आदि देखा-सुना जा सकता है।

च - कई बार संचार माध्यमों पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। (सही)

उदाहरण - इंटरनेट और टेलीविजन अपने कार्यक्रमों से समाज में अश्लीलता परोसने का काम कर रहे हैं।

प्रश्न 8. उल्टा पिरामिड शैली किसे कहते हैं ?

उत्तर - उल्टा पिरामिड शैली में समाचार पत्र के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सर्वप्रथम लिखा जाता है। इसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में दूसरे तथ्यों या सूचनाओं को बताया जाता है। अर्थात् कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं वरन खबर के प्रारंभ में आ जाता है। इस शैली के अंतर्गत समाचारों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है। इंट्रो, बॉडी, समापन। इंट्रो- समाचार का मुख्य भाग होता है। बॉडी - घटते हुए क्रम में खबर को विस्तार से लिखा जाता है। समापन- अधिक महत्वपूर्ण न होने पर अथवा स्पेस न होने पर इसे काट कर छोटा भी किया जा सकता है।

प्रश्न 9. पत्रकार कितने तरह के होते हैं ?

उत्तर - पत्रकार तीन तरह के होते हैं।

1. पूर्णकालिक पत्रकार - इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन में नियमित वेतन भोगी कर्मचारी होते हैं।
2. अंशकालिक पत्रकार - इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर एक निश्चित समय अवधि के लिए कार्य करते हैं।
3. फ्रीलांसर पत्रकार- इस श्रेणी के पत्रकारों का संबंध किसी विशेष समाचार पत्र से नहीं होता बल्कि वे भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार पत्रों के लिए लिखते हैं।

प्रश्न 10. जनसंचार के प्रमुख कार्य कौन-कौन से हैं ?

उत्तर - जनसंचार के प्रमुख कार्य इस प्रकार है।

सूचना देना - जनसंचार माध्यमों का एक प्रमुख कार्य सूचना देना है। हमें उनके जरिए भी दुनियाभर से सूचनाएं प्राप्त होती हैं। हमारी जरूरतों का बड़ा हिस्सा जनसंचार माध्यमों के जरिए ही पूरा होता है।

शिक्षित करना - जनसंचार माध्यम सूचनाओं के जरिए हमें जागरूक बनाते हैं। यहां शिक्षित करने से आशय उन्हें देश दुनिया के हाल से परिचित कराने और उनके प्रति सजग बनाने से है।

मनोरंजन करना - जनसंचार माध्यम मनोरंजन के प्रमुख साधन है। सिनेमा, टीवी, रेडियो, संगीत के टेप और किताबें आदि मनोरंजन के प्रमुख माध्यम है।

एजेंडा तैयार करना -किसी भी घटना या मुद्दे को चर्चा का विषय बना कर जनसंचार माध्यम सरकार और समाज को उस पर अनुकूल प्रतिक्रिया करने के लिए बाध्य कर देते हैं।

निगरानी रखना - अगर सरकार कोई गलत कदम उठाती है या संगठन/ संस्थान में कोई अनियमितता बरती जा रही है, तो उसे लोगों के सामने लाने की जिम्मेवारी जनसंचार माध्यम पर है।

विचार-विमर्श के मंच - जनसंचार विभिन्न विचार लोगों के सामने पहुंचाते हैं। जैसे किसी समाचार पत्र के संपादक के पृष्ठ पर किसी घटना या मुद्दे पर किसी विचार रखने वाले लेखक अपनी राय व्यक्त करते हैं। इसी तरह संपादक के नाम चिट्ठी स्तंभ में आम लोगों को अपनी राय व्यक्त करने का मौका मिलता है।

प्रश्न 11. जनसंचार मुद्रित माध्यमों की खूबियां और कमियां बताएं?

उत्तर - जनसंचार मुद्रित माध्यमों की खूबियां-

- शब्दों को हम एक बार ही नहीं अनेकों बार पढ़ सकते हैं।
- अपनी रुचि और समझ के अनुसार उस स्तर के शब्दों से परिचित हो सकते हैं।
- उसका अध्ययन चिंतन मनन किया जा सकता है।
- जटिल शब्द आने पर शब्दकोश का प्रयोग भी किया जा सकता है।
- चाहे तो किसी भी सामग्री को लंबे समय तक सुरक्षित भी रखा जा सकता है।

जनसंचार मुद्रित माध्यमों की कमियां-

- मुद्रित माध्यम की कमियां भी है जैसे अशिक्षित लोगों के लिए अनुपयोगी।
- टेलीविजन तथा रेडियो की भांति मुद्रित माध्यम तुरंत घटी घटनाओं की जानकारी नहीं दे पाता।
- समाचार पत्र निश्चित अवधि तक मात्र 24 घंटे में एक बार, साप्ताहिक सप्ताह में एक बार और मासिक माह में एक बार प्रकाशित किया जाता है।
- किसी भी खबर या रिपोर्ट के प्रकाशन के लिए एक डेट लाइन (समय सीमा) तय होती है।

jharkhandnb.com

- जबकि रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट माध्यम पर ऐसा प्रतिबंध नहीं होता।
- महत्व एवं जगह की उपलब्धता के अनुसार किसी भी खबर को स्थान दिया जाता है।
- मुद्रित माध्यम में अशुद्धि होने पर सुधार हेतु अगले अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ती है अन्य माध्यमों में तत्काल सुधार किया जा सकता है।

प्रश्न 12. टी.वी. खबरों के विभिन्न चरणों को बताएं?

उत्तर - टीवी में भी सूचनाएं चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुंचती हैं। ये चरण हैं-

फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज- सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुंचाई जाती है। इसमें कम से कम शब्दों में महत्त्वपूर्ण सूचना दी जाती है।

इाई एंकर -इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहां, क्या, कब और कैसे हुआ ? जब तक खबर के दृश्य नहीं आते एंकर दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएं पहुंचाता है।

फोन इन - इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फोन पर बात करके सूचनाएं दर्शकों तक पहुंचाता है। इसमें रिपोर्टर घटना वाली जगह पर मौजूद होता है और वहां से उसे जितनी ज्यादा से ज्यादा जानकारियां मिलती है। वह दर्शकों को बताता है।

एंकर-विजुअल - जब घटना के दृश्य विजुअल मिल जाते हैं तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है। जिसे एंकर पढ़ता है। इस खबर की शुरुआत भी प्रारंभिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।

एंकर-बाइट - बाइट यानी कथन टेलीविजन पत्रकारिता में बाइट का काफी महत्व है। टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही इस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुना कर खबर को प्रमाणिकता प्रदान की जाती है।

लाइव - लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। सभी टीवी चैनल कोशिश करते हैं कि किसी बड़ी घटना का दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुंचाया जा सके। इसके लिए मौके पर मौजूद रिपोर्टर और कैमरामैन ओ. बी. वैन के जरिए घटना के बारे में दर्शकों को दिखाते और बताते हैं।

एंकर-पैकेज- पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का एक जरिया है। इसमें संबंधित घटना के दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाइट, ग्राफिक के जरिए जरूरी सूचनाएं आदि होती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. संचार शब्द की उत्पत्ति 'चर' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है?

1 रुकना 2 चलना
3 बैठना 4 हटना

2. भारत में हिंदी का प्रथम समाचार पत्र कौन सा है?

1 दिग्दर्शन 2 उदंत मार्तंड
3 बनारस अखबार 4 मालवा समाचार

3. पी. टी. आई. क्या है ?

1 समाचार एजेंसी 2 गुप्तचर विभाग
3 पुलिस 4 साहित्यिक मंच

4. श्रव्य जनसंचार माध्यम कौन सा है ?

1 समाचार पत्र 2 रेडियो
3 इंटरनेट 4 टेलीविजन

5. मुद्रण का आरंभ किस देश में हुआ?

1 भारत 2 जापान
3 चीन 4 इंग्लैंड

6. भारत का पहला छापाखाना कब खुला?

1 सन 1556 2 सन 1542
3 सन 1542 4 सन1776

7. भारत का पहला छापाखाना कहां पर लगाया गया?

1 दिल्ली में 2 कोलकाता में
3 गोवा में 4 कानपुर में

8. भारत में पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' 1913 में बनाने का श्रेय किसको जाता है?

1 दादा साहब फाल्के 2 संजय दत्त
3 निशांत सेतु 4 सत्यजीत राय

9. भारत में बनी पहली बोलती फिल्म का नाम है?

1 आलम आरा 2 सत्य रायबल
3 द अराइवल ऑफ ट्रेन 4 हिंदुस्तानी

10. दूरदर्शन की रजत जयंती कब मनाई गई?

1 1984 2 1975
3 1970 4 1955

11. रेडियो कब अस्तित्व में आया?

1 1975 2 1982
3 1960 4 1895

12. हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्र उदंत मार्तंड का संपादन 1826 ई. में किसने किया ?

1 राजाराम 2 जुगल किशोर शुक्ल
3 रामचंद्र शुक्ल 4 हजारी प्रसाद

Jharkhandjab.com

13. **संचार प्रक्रिया में आई बाधाओं को कहते हैं?**

1 शोर 2 संदेश
3 माध्यम 4 प्राप्तकर्ता

14. **संचार प्रक्रिया की शुरुआत किससे होती है ?**

1 संदेश 2 माध्यम
3 प्राप्तकर्ता 4 स्रोत या संचालक

15. **रेडियो जनसंचार का कौन सा माध्यम है?**

1 दृश्य 2 श्रव्य
3 दृश्य -श्रव्य 4 कोई नहीं

16. **पत्रकारिता दिवस कब मनाया जाता है ?**

1 30 मई 2 15 मई
3 7 जून 4 5 मई

17. **संचार के मुद्रण माध्यम में शामिल किया जाता है ?**

1 समाचार पत्र 2 पत्रिकाएं
3 पम्पलेट 4 ये सभी

18. **इंटरनेट पत्रकारिता का पहला दौर कब था ?**

1 1982 से 1992 2 1983 से 1985
3 1984 से 2018 4 1985 से 1986

19. **एक प्रसिद्ध संचार शास्त्री हैं?**

1 विल्वर श्रैम 2 जेम्स वेवर
3 जोसेफश्रैम 4 इनमे से कोई नहीं

20. **उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग किस लेखन में होता है ?**

1 पत्र 2 निबंध
3 समाचार वाचन 4 समाचार लेखन

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 2,	2 - 2,	3 - 1,	4 - 2,	5 - 3,
6 - 1,	7 - 3,	8 - 1,	9 - 1,	10 - 1,
11 - 4,	12 - 2,	13 - 1,	14 - 4,	15 - 2,
16 - 1,	17 - 4,	18 - 1,	19 - 1,	20 - 4, ,

Jharkhandlab.com

4. संपादकीय लेखन

प्रश्न 1. संपादकीय लेखन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- यह समाचार पत्रों या पत्रिकाओं में एक खंड है, जिसमें लेखक या संपादक वर्तमान चर्चित विषयों पर अपनी राय साझा करते हैं । संपादकीय किसी भी समाचार पत्र का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग होता है । यह किसी ज्वलंत मुद्दे या घटना पर समाचार पत्र के दृष्टिकोण व विचार को व्यक्त करता है । संपादकीय संक्षेप में तथ्यों और विचारों की ऐसी तर्कसंगत और सुरुचिपूर्ण प्रस्तुति है जिसका उद्देश्य मनोरंजन,विचारों को प्रभावित करना या किसी समाचार का ऐसा भाष्य प्रस्तुत करना है जिससे सामान्य पाठक उसका महत्व समझ सकें। संपादकीय को समाचार पत्रों का दिल और आत्मा माना जाता है।

प्रश्न 2. संपादकीय लेखन का क्या अर्थ है ?

उत्तर- संपादकीय लेखन का शाब्दिक अर्थ समाचार पत्र के संपादक के अपने विचार से है। प्रत्येक समाचार पत्र में संपादक प्रतिदिन ज्वलंत विषयों पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। संपादक प्रतिदिन किसी ज्वलंत समस्या या प्रमुख समसामयिक घटनाक्रम पर संपादकीय लेखन करता है । इस लेख में समाचार पत्रों की नीति, सोच और विचारधारा को प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न 3. संपादकीय लेखन की क्या विशेषताएं हैं ?

उत्तर- संपादकीय लेखन की निम्न विशेषताएं हैं–

1. संपादक द्वारा लिखा गया लेख ना अधिक बड़ा ना अधिक छोटा होता है।
2. एक आदर्श संपादकीय लेखन 800से 1000 शब्दों के बीच में होता है।
3. संपादकीय लेखन संक्षिप्त होते हुए भी अपने आप में पूर्ण होता है।
4. गंभीर विषय का संपादन भी सरल,सहज भाषा शैली में इस प्रकार करना चाहिए कि विषय पाठकों की समझ में आ जाए और वह उस विषय पर अपनी स्पष्ट राय बता सके।
5. लेखन का विषय प्रायः ज्वलंत समस्या या तात्कालिक घटनाक्रम से लिया जाता है।
6. प्रत्येक संपादक की अपनी शैली होती है । अपनी शैली में ही संपादक लेख लिखता है।
8. इसके बाद संपूर्ण समाचार का विस्तार किया जाता है और अंत में अपना विचार निष्कर्ष के रूप में दिया जाता है।

प्रश्न 4. संपादकीय का महत्व बताइए ।

उत्तर- 1. संपादकीय किसी भी गंभीर और अरुचिकर विषय को बहस योग्य बनाता है।
2. संपादकीय का स्वभाव आकर्षक होता है।
3. संपादकीय विचारोत्तेजक होते हैं और पाठक के मन में सवाल खड़े करते हैं।

प्रश्न 5. संपादकीय लेखन का कार्य किन रूपों में किया जाता है?

उत्तर संपादकीय लेखन का कार्य दो रूपों में किया जाता है ,एक जो संपादक कहना चाहता है और दूसरा वह उसे कैसे और किस रूप में कहना चाहता है। अतः सर्वप्रथम संपादक को विषय वस्तु का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। उसकी विषय पर गहरी पकड़ होनी चाहिए तथा उसमें विषय के पक्ष- विपक्ष में तर्क करने की क्षमता होनी चाहिए। संपादकीय में प्रस्तुतीकरण का अत्यधिक महत्व होता है। प्रस्तुतीकरण की पहली शर्त है संप्रेषणीयता। संप्रेषणीयता के साथ-साथ दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है जन भावनाओं का ध्यान रखना। अतः प्रस्तुतीकरण ऐसा हो कि विषय वस्तु को सामान्य पाठक भी समझ जाएं और किसी की भावनाएं भी आहत ना हों।

प्रश्न 6. संपादकीय लेखन की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- संपादकीय लेखन की प्रक्रिया को निम्नलिखित चरणों में बांटा जा सकता है-

(1) **विषय का चयन** : ज्वलंत व सामाजिक विषय को संपादकीय लेखन के लिए चुना जाता है ।विषय प्रादेशिक, राष्ट्रीय या अंतराष्ट्रीय महत्व का हो सकता है।

(2) **विषयानुरूप सामग्री का संकलन** : विषय निर्धारण के उपरांत सामग्री का संकलन किया जाता है। संपादक दिन-प्रतिदिन के घटनाओं पर पैनी नजर रखते हुए विभिन्न संदर्भ सामग्री के माध्यम से विषय वस्तु का संकलन करता है।

(3) **विषय प्रवेश एवं विस्तार** : संपादकीय के विषय प्रवेश में समस्या की ओर ध्यानाकर्षण किया जाता है। तदुपरांत तार्किक ढंग से विचारों एवं तर्क को प्रस्तुत करते हुए विषय वस्तु का विस्तार किया जाता है।

(4) **विषय का निष्कर्ष** : संपादकीय के अंतिम भाग में संपादक विषय, घटना या मुद्दे पर अपनी राय अथवा विचार रखता है। यह राय अथवा विचार पाठक के मस्तिष्क को उद्वेलित करने वाला होता है।

(5) **शीर्षक** : संपूर्ण लेखन के बाद संपादक अपने लेख के शीर्षक का निर्धारण करता है। शीर्षक निश्चय ही किसी लेख के लिए अति महत्वपूर्ण होता है। अतः संपादकीय का शीर्षक पाठक को प्रभावित करने वाला व विषय समग्रता को अपने आप में समाहित करने वाला होना चाहिए।

प्रश्न 7. संपादकीय के बिना समाचार पत्र का प्रकाशन अधूरा है कैसे ?

उत्तर- संपादकीय संपादक को पाठक के साथ जोड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी है। गंभीर व चिंतन योग्य घटनाओं तथा मुद्दों को पाठक के समक्ष तार्किक ढंग से प्रस्तुत कर उसे सोचने के लिए प्रेरित करना संपादकीय का प्रमुख उद्देश्य होता है।

jharkhandlab.com

संपादकीय के अभाव में समाचार पत्र मात्र सूचनाओं का संवाहक मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि संपादकीय के बिना समाचार पत्र का प्रकाशन अधूरा है।

प्रश्न 8. किसी समाचार पत्र के लिए संपादकीय का क्या महत्व है?

उत्तर- संपादकीय को किसी समाचार पत्र की आवाज माना जाता है। यह एक निश्चित पृष्ठ पर छपता है , जो समाचार पत्र को पठनीय तथा अविस्मरणीय बनाता है। संपादकीय से ही समाचार पत्र के गुण-दोष व उसकी गुणवत्ता का निर्धारण किया जाता है। किसी समाचार पत्र के लिए इसकी महत्ता सर्वोपरि है।

प्रश्न 9. एक अच्छे संपादकीय में क्या गुण होने चाहिए?

उत्तर- एक अच्छे संपादकीय में निम्नलिखित गुण अवश्य होने चाहिए-

(1) संपादकीय लेख की शैली प्रभावशाली एवं सजीव होनी चाहिए ।
(2) भाषा बिल्कुल स्पष्ट,सशक्त और प्रखर होनी चाहिए।
(3) संपादकीय में समुचित विचार और विश्लेषण होना चाहिए।

प्रश्न 10. संपादकीय पृष्ठ पर क्या-क्या प्रकाशित होता है?

उत्तर- संपादकीय पृष्ठ पर निम्न सामग्री प्रकाशित होती है-

(1) संपादकीय लेख।
(2) विचारात्मक व विश्लेषणात्मक लेख -टिप्पणियाँ।
(3) स्तंभ लेख।
(4) संपादक के नाम पत्र।

बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) अखबार की आवाज किसे माना जाता है?

1 आलेख 2 फीचर
3 संपादकीय 4 पत्र लेखन

(2) निम्न में से किसे समाचार पत्र की आत्मा कहा जाता है?

1 संपादकीय पृष्ठ 2 प्रथम पृष्ठ
3 बिजनेस पृष्ठ 4 स्थानीय पृष्ठ

(3) " संपादकीय किसी भी समाचार- पत्र या पत्रिका की रीति -नीति का दर्पण होता है।" यह कथन किसका है?

1 डॉ अर्जुन तिवारी 2 डॉ पृथ्वी नाथ पांडेय
3 डॉ विजय कुलश्रेष्ठ 4 डॉ हरिमोहन

(4) संपादक को उसके विविध कार्यों में सहायता प्रदान करना किसका कार्य है?

1 सहायक संपादक का 2 संयुक्त संपादक का
3 उप - संपादक का 4 इनमें से कोई नहीं

(5) संपादकीय लेखन का दायित्व किसका होता है?

1 सहायक संपादक का 2 संपादक का
3 1 और 2 दोनों 4 इनमें से कोई नहीं

(6) समाचार-पत्र में किस पृष्ठ पर संपादक के नाम पत्र प्रकाशित किए जाते हैं?

1 आर्थिक पृष्ठ पर 2 मुख्य पृष्ठ पर
3 खेल पृष्ठ पर 4 संपादकीय पृष्ठ पर

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 3, 2 - 1, 3 - 4, 4 - 2, 5 - 3, 6 - 4

Jharkhandlab.com

5. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) लेखन

प्रश्न 1. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) क्या है?

उत्तर- 'रिपोर्ट' शब्द का हिंदी पर्याय 'प्रतिवेदन' है। प्रतिवेदन का सामान्य अर्थ या इसका मतलब किसी घटना या स्थिति की क्रमिक जानकारी अथवा रिपोर्ट प्रस्तुत करना है। हर समय देश विदेश में ऐसी घटनाएं होती रहती है, जिन को जानने के लिए हम उत्सुक रहते हैं लेकिन उसके लिए तथ्यों की जांच पड़ताल होना जरूरी होता है ,जो किसी सरकारी या गैर सरकारी एजेंसी द्वारा की जाती है ।ऐसे व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत विवरण को ही प्रतिवेदन या रिपोर्ट कहते हैं। जिस व्यक्ति या समूह द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाता है उसे प्रतिवेदक कहते हैं।

समाचार संकलित कर उसे लिखकर प्रेस में भेजना रिपोर्टिंग कहलाता है। ज्यादातर यह कार्य फील्ड में जाकर किया जाता है। एक संवाददाता सेमिनार, रैली अथवा संवाददाता सम्मेलन से विविध प्रकार की खबरें एकत्रित करके उन्हें अपने कार्यालय में प्रेषित कर देता है। वास्तव में रिपोर्ट एक प्रकार की लिखित विवेचना होती है जिसमें किसी संस्था, सभा, दल, विभाग अथवा विशेष आयोजन की तथ्यों सहित जानकारी दी जाती है। रिपोर्टिंग का उद्देश्य संबंधित व्यक्ति, संस्था, परिणाम, जाँच अथवा प्रगति की सही एवं पूर्ण जानकारी देना है।

प्रश्न 2. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) की आवश्यकता कब पड़ती है ?

उत्तर- आजकल प्रतिवेदन-लेखन एक महत्वपूर्ण कार्य है। प्रतिवेदक विभिन्न तथ्यों की जांच पड़ताल कर जो निष्कर्ष निकालता है उसे जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत करता है।

जब भी कोई विषय या मुद्दा सामान्य जनता के विरुद्ध होती है तो उस विषय की छानबीन करना आवश्यक हो जाता है ऐसी स्थिति में प्रतिवेदन की जरूरत पड़ती है।

प्रश्न 3. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) के तत्व पर विचार कीजिए ।

उत्तर- क. घटना या स्थिति-यह किसी भी प्रतिवेदन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है ।जब भी किसी घटना, समस्या या मुद्दे की जानकारी पर कार्यवाही की जाती है ,तभी प्रतिवेदन लिखा जाता है।

ख. समिति की नियुक्ति- किसी भी घटना की संपूर्ण जानकारी के लिए किसी व्यक्ति को जिम्मेदारी सौंपी जाती है ,या एक समिति की नियुक्ति कर के मामले की सच्चाई तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है।

ग. पूर्ण जांच पड़ताल - जांच पड़ताल के माध्यम से ही समस्याओं की जड़ तक पहुंचना संभव हो पाता है। क्योंकि किसी भी समस्या के अनेक पहलू होते हैं, इसलिए उन सब को उजागर करना कठिन होता है।

घ. प्रमाण -प्रतिवेदन की प्रमाणिकता दिए गए सबूतों और तथ्यों पर निर्भर करता है।

च. सुझाव -सुझाव या सिफारिशों के माध्यम से ही समिति अपने विचारों को व्यक्त करती हैं।

छ. निश्चित अवधि- किसी भी प्रतिवेदन को निर्धारित समय में ही प्रस्तुत करना होता है।

प्रश्न 4. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) के किन-किन विषयों पर तैयार की जा सकती है ?

उत्तर रिपोर्ट निम्नलिखित विषयों पर हो सकती है-

1. राजनीतिक, साहित्यिक, सामाजिक, आर्थिक भाषणों एवं सम्मेलनों की रिपोर्ट
2. खोजी समाचारों की रिपोर्ट
3. व्यावसायिक प्रगति अथवा स्थिति की रिपोर्ट
4. अदालतों की रिपोर्ट
5. अपराधिक मामलों की रिपोर्ट
6. युद्ध एवं विदेश यात्रा की रिपोर्ट
7. प्राकृतिक आपदा, दुर्घटना एवं दंगे की रिपोर्ट
8. पुस्तक प्रदर्शनी एवं चित्र प्रदर्शनी आदि की रिपोर्ट
9. संगीत सम्मेलन व कला संबंधी रिपोर्ट
10. प्रेस कॉन्फ्रेंस या संवाददाता सम्मेलन की रिपोर्ट।

प्रश्न 5. प्रतिवेदन लिखते समय किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

उत्तर-

1. सर्वप्रथम संस्था और आयोजन स्थल का नाम लिखा जाना चाहिए।
2. बैठक या सम्मेलन का उद्देश्य स्पष्ट किया जाना चाहिए।
3. आयोजन अथवा घटना की तिथि और समय की सूचना दी जानी चाहिए।
4. कार्यक्रम एवं गतिविधियों की जानकारी दी जानी चाहिए।
5 तथ्यों का प्रामाणिक होना जरूरी है।
6. शीर्षक हमेशा छोटा और स्पष्ट होना चाहिए।
7.. यदि भाषण हो तो उनके मुख्य बिंदुओं के बारे में बताया जाए।
8.. घटना की व्याख्या सही क्रम में होनी चाहिए।
9.. प्रतिवेदन लिखते समय भाषा में प्रथम पुरुष का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
10. रिपोर्ट में उन्हीं तथ्यों को समावेश करना चाहिए जो महत्वपूर्ण है।
11. रिपोर्ट के अंत में सभा या दल संस्था के अध्यक्ष को हस्ताक्षर कर देना चाहिए।
12. रिपोर्ट की भाषा अलंकारिक तथा मुहावरेदार नहीं होनी चाहिए।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 6. एक अच्छे रिपोर्ट की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- रिपोर्ट अपने आप में एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसका महत्त्व मात्र समसामयिक नहीं होता। अपितु संबंधित क्षेत्र में सुदूर भविष्य तक भी इसकी उपयोगिता रहती है। रिपोर्ट की विशेषताओं का विवेचन नीचे किया जा रहा है –

1. **कार्य योजना**-रिपोर्टर को पहले पूरी योजना बनानी चाहिए। विषय का अध्ययन करके उसके उद्देश्य को समझना चाहिए। इसकी प्रारंभिक रूपरेखा बनाने से रिपोर्ट लिखने में सहायता मिलती है।

2. **तथ्यात्मकता**-रिपोर्ट तथ्यों का संकलन होता है। इसलिए सबसे पहले विषय से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी लेनी पड़ती है। इसके लिए पुराने रिपोर्टों, फाइलों, नियम-पुस्तकों, प्रपत्रों के द्वारा आवश्यक सूचनाएँ इकट्ठी की जाती हैं। सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार द्वारा आँकड़ों और तथ्यों को प्राप्त किया जाता है। इन तथ्यों को रिकार्ड किया जाए और आवश्यकता पड़े तो इनके फोटो भी लिए जा सकते हैं।

3. **प्रामाणिकता**-तथ्यों का प्रामाणिक होना अत्यंत आवश्यक है। किसी विषय, घटना अथवा शिकायत आदि के बारे में जो तथ्य जुटाए जाएँ, उनकी प्रामाणिकता से रिपोर्ट की सार्थकता बढ़ जाती है।

4. **निष्पक्षता**-रिपोर्ट एक प्रकार से वैधानिक अथवा कानूनी दस्तावेज़ बन जाती है। इसलिए रिपोर्टर का निर्णय विवेकपूर्ण होना अत्यंत आवश्यक है। रिपोर्ट लिखते समय या प्रस्तुत करते समय रिपोर्टर प्रत्येक तथ्य, वस्तुस्थिति, पक्ष-विपक्ष, मत-विमत का निष्पक्ष भाव से अध्ययन करे और फिर उसके निष्कर्ष निकाले। इस प्रकार प्रत्येक स्थिति में उसका यह नैतिक दायित्व हो जाता है कि वह नीर-क्षीर विवेक का परिचय दे। इससे रिपोर्ट उपयोगी होगा और मार्गदर्शक भी सिद्ध होगा।

5. **विषयनिष्ठता**-रिपोर्ट का संबंधित प्रकरण पर ही केंद्रित होना अपेक्षित है। यदि किसी विषय-विशेष पर रिपोर्ट लिखा जाना है तो उससे संबंधित तथ्यों, कारणों और सामग्री आदि तक ही सीमित रखना चाहिए। इसमें प्रकरण को एक सूत्र की तरह प्राप्त तथ्यों में पिरोया जाए, जिससे प्रकरण अपने-आप में स्पष्ट होगा।

6. **निर्णयात्मकता**-रिपोर्ट मात्र विवरण नहीं होती। इसलिए रिपोर्टर को संबंधित विषय का विशेष जानकार होना आवश्यक है। यदि वह विशेषज्ञ होगा तो साक्ष्यों और तथ्यों का सही या गलत अनुमान लगा पाएगा तथा उनका विश्लेषण करने में समर्थ होगा। साथ ही वह प्राप्त तथ्यों, साक्ष्यों और तर्कों का सम्यक परीक्षण कर पाएगा और अपने सुझाव तथा निर्णय भी दे पाएगा।

7. **संक्षिप्तता और स्पष्टता**-रिपोर्ट लिखते समय यह ध्यान रखा जाए कि उसमें अनावश्यक विस्तार न हो। प्रत्येक तथ्य या साक्ष्य का संक्षिप्त और सुस्पष्ट विवरण दिया जाए। यदि रिपोर्ट काफी लंबा हो गया हो तो उसका सार दिया जाए जिससे प्राप्त तथ्यों और सुक्षावों पर ध्यान तुरंत आकृष्ट हो सके। लेकिन अस्पष्ट सूचना या विवरण से उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता। अतः रिपोर्ट संक्षिप्त होते हुए भी अपने आप में स्पष्ट और पूर्ण होनी चाहिए।

प्रश्न 7. अपने मोहल्ले में हुई चोरी की वारदात पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

उत्तर- गत 20 जून, 2023 को हमारे मोहल्ले में लाला खजूरी दास के यहाँ चोरी हो गई। चोरी रात के लगभग 12 बजे हुई। घर के सभी लोग शादी समारोह में गए थे। हमारे मोहल्ले में हर रोज रात 11 बजे से 2 बजे तक बिजली गुल हो जाती है। चोरों ने इसका भरपूर फायदा उठाया। वे पीछे के दरवाज़े से कोठी में दाखिल हुए। उन्होंने घर की प्रत्येक चीज़ का मुआयना किया। वे अपने साथ 50,000 रुपये नकद, 21 तोले सोना और अन्य कीमती सामान ले गए। लाला जी को चोरी की बात सुबह 2:30 बजे पता चली जब वे वापिस लौटे। वे कुछ गणमान्य व्यक्तियों को साथ लेकर थाने में पहुँचे। पुलिस ने चोरी की रिपोर्ट दर्ज कर ली है। वह चोरों की तलाश में जुट गई है। इंस्पेक्टर महोदय ने आश्वासन दिया है कि जल्द ही चोरों को पकड़ लिया जायेगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **रिर्पोट प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया क्या कहलाती है?**
   1. संवाद 2. संपादकीय
   3. समाचार 4. रिपोर्टिंग

2. **रिपोर्ट क्या है?**
   1. किसी घटना की तथ्यात्मक जानकारी
   2. किसी घटना का मनोरंजनपूर्ण प्रस्तुतीकरण
   3. किसी घटना के कारणों का काल्पनिक प्रस्तुतीकरण
   4. इनमें से सभी

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 4, 2 - 1

Jharkhandlab.com

6. आलेख लेखन

प्रश्न- 1. आलेख से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- आलेख गद्य लेखन की विधा है। आलेख दो शब्दों से मिलकर बना है-आ +लेख।'आ' उपसर्ग यह प्रकट करता है कि लेख सर्वांगपूर्ण और सम्यक् हो और लेख अर्थात किसी एक विषय पर उससे संबंधित विचार।अतः 'आलेख' गद्य लेखन की वह विधा है, जिसमें किसी एक विषय पर सर्वांगपूर्ण तथा सम्यक् विचार होते हैं। आलेख किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं जैसे- खेल, राजनीति, फिल्म आदि। आलेख में विषय की तथ्यात्मक, विश्लेषणात्मक अथवा विचारात्मक जानकारी होती है।

आलेख समाचारेत्तर साहित्य और उससे भिन्न पत्रकारीय लेखन का ही एक विशिष्ट रूप है, जिसमें विविध तत्वों जैसे- प्रामाणिकता,गंभीरता, बौद्धिकता, बहुआयामी व्यापकता एवं सामाजिकता की उपस्थिति अनिवार्य होती है। इन तत्वों की उपस्थिति में ही आलेख अपना पूर्ण स्वरूप ग्रहण करता है।

आलेख में मुख्य रूप से दो अंग प्रयुक्त होते हैं । प्रथम अंग है भूमिका तथा द्वितीय व महत्वपूर्ण अंग है विषय का प्रतिपादन।भूमिका के अंतर्गत शीर्षक का अनुरूपण किया जाता है तथा विषय के प्रतिपादन में विषय का क्रमिक विकास तारतम्यता और क्रमबद्धधता का ध्यान रखा जाता है तथा अंत में तुलनात्मक विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला जाता है।

प्रश्न-2. एक अच्छे आलेख में कौन-कौन से गुण होते हैं?

उत्तर- एक अच्छे एवं सार्थक आलेख में निम्नलिखित गुण अथवा विशेषताएं होती हैं-

1. एक अच्छा आलेख नवीनता और ताजगी से भरा होता है।
2. उसमें जिज्ञासा उत्पन्न करने की शक्ति होती है।
3. विचार स्पष्ट होते हैं।
4. भाषा अत्यंत सरल, सुगम तथा प्रभावी होती है।
5. विचारों की पुनरावृत्ति नहीं होती।

प्रश्न-3. आलेख और फीचर में क्या अंतर है?

उत्तर- आलेख का विषय विवेचन विस्तृत और गहन रूप से होता है।इसका लेखन करते समय विभिन्न पुस्तकों, आकड़ों, तथ्यों का अध्ययन करना पड़ता है। फीचर लेखन में लेखक को अपने आंख, कान, भावनाओं, अनुभूतियों, मनोवेगों और अंवेषणों का सहारा लेना पड़ता है।

आलेख की भाषा शैली गंभीर और नीरस होती है जबकि फीचर मनोरंजक, अनौपचारिक बातचीत की शैली में लिखा जाता है।

आलेख में सामान्यतः किसी समस्या विशेष या उसके अन्य किसी पहलू का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन होता है किंतु फीचर में विषय के अधिक गहराई में जाना अनुपयुक्त समझा जाता है।

आलेख में बौद्धिकता की प्रधानता होती है, तो फीचर में बौद्धिकता के स्थान पर हृदय पक्ष को विशेष महत्व दिया जाता है।

आलेख लेखक अपनी राय प्रत्यक्ष रूप से रख सकता है, लेकिन फीचर लेखक पाठकों को ही विचार करने के लिए बाध्य करता है, स्वयं उसमें समाविष्ट नहीं होता।

प्रश्न 4. निम्नलिखित विषयों पर आलेख लिखिए-

क. जीवन संघर्ष है, स्वप्न नहीं

मनुष्य का जीवन वास्तव में सुख-दुख, आशा-निराशा, उत्थान-पतन आदि का मिश्रण है।जीवन एक निरंतर चलने वाले संघर्ष का नाम है। जीवन की गति अविरल है। समय के साथ-साथ आगे बढ़ते रहने की प्रबल मानवीय लालसा ही जीवन है। जीवन में अनेक ऊंचे-नीचे रास्ते एवं अनेक बाधाएं आती रहती हैं। इन्हीं बाधाओं से संघर्ष करते हुए जीवन आगे बढ़ता रहता है। यही कर्म है व यही सत्य है। जीवन में आने वाली बाधाओं से घबराकर रुक जाने वाला या पीछे हट जाने वाला व्यक्ति कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। निरंतर उत्साह, उमंग, विश्वास, प्रेम एवं साहस के साथ जीवन को जीना ही जीवन का सार है।

जीवन सत्य है जबकि स्वप्न काल्पनिक व अवास्तविक है। स्वप्न का महत्व केवल वहीं तक है, जहां तक वह मनुष्य के जीवन को आगे बढ़ाने में प्रेरक होता है। मनुष्य स्वप्न के माध्यम से ही ऐसी कल्पनाएं करता है, जो अवास्तविक होती हैं, लेकिन उस काल्पनिक लोक को वह अपने परिश्रम उमंग एवं दृढ़ इच्छाशक्ति से यथार्थ एवं वास्तविकता में परिवर्तित कर देता है। वास्तविक जीवन एक कर्तव्य पथ है, जिसके मार्ग में अनेक फूल बिखरे पड़े हैं, लेकिन मनुष्य की इच्छा शक्ति एवं दृढ़ संकल्प बाधाओं व कांटों की परवाह नहीं करता और उन्हें रौंद कर आगे निकल जाता है।

जीवन संघर्ष की लंबी साधना है। यह संघर्ष तब तक बना रहता है, जब तक मनुष्य के शरीर में सांस चलती रहती है। आदिम अवस्था में अंधकारमय गुफा में निवास करने वाला मनुष्य जीवन के संघर्ष के मार्ग से गुजरकर ही सभ्यता के ऊंचे दुर्गों का निर्माण कर सकता है। संघर्ष के मार्ग में ही हमें जीत की ऊंची चोटियां मिलती हैं। प्रकृति एवं प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए ही मनुष्य ने समाज एवं परिवार के विकास की लंबी गाथाएं लिखी हैं। मनुष्य जीवन का सबसे महान आदर्श है- अंधकार से प्रकाश की ओर चलना व ज्ञान की अमरता की ओर बढ़ना, इस प्रक्रिया में उसे निरंतर संघर्ष से गुजरना पड़ता है। संघर्ष है, इसलिए गति है, और गति है, तो जीवन है।

जीवन वृत्ति स्वप्न की भांति असत्य नहीं है। सपने अल्पकालीन एवं परिवर्तनशील होते हैं। जीवन व्यवहार है, जिसमें सत्य समाहित होता है। यहां बिना परिश्रम किए और बिना मूल्य

jharkhandiab.com

चुकाए कुछ भी प्राप्त नहीं होता। अतः कहा जा सकता है कि जीवन स्वप्न तथा अयथार्थ या काल्पनिक नहीं, बल्कि वास्तविकता का कटु यथार्थ है, जहां कदम- कदम पर कुछ भी प्राप्त करने के लिए संघर्ष से गुजरना ही पड़ता है।

2 बचत का महत्व

आज समाज में उपभोक्ता संस्कृति का प्रचार-प्रसार होने से सामाजिक ढांचे में आमूल -चूल परिवर्तन हुआ है। पुरानी पीढ़ी की सोच 'सादा जीवन, उच्च विचार' नई पीढ़ी में बदलने लगी है। आज लोग अपने सुख-सुविधाओं के लिए आमदनी से अधिक खर्च करने लगे हैं, जिसके कारण जीवन में अर्थाभाव बना रहता है। मनुष्य के ऊपर कर्ज हो जाता है और व्यक्ति अनेक मानसिक परेशानियों का शिकार हो जाता है।

नई पीढ़ी भौतिकवादी दृष्टिकोण की पक्षधर होती जा रही है। उनकी सोच 'खाओ, पीओ और मौज मनाओ' के सिद्धांत पर आधारित हो चली है। विज्ञापित और ब्रांडेड वस्तु की चाहत में आज का युवा वर्ग कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। अपनी इच्छा पूर्ति के लिए उसे न अपने चरित्र का ध्यान रहता है और न ही कर्त्तव्यों का। स्वार्थ में डूबा आज का युवा बचत जैसी कोई योजना नहीं अपनाता। मेहनत से अर्जित धन बर्बाद करता हुआ, विनाश की ओर बढ़ता जाता है।

बचत का तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं है कि व्यक्ति अपनी सुख-सुविधाओं को एक ओर रखकर केवल धन संचय करने में लगा रहे। यहां बचत से तात्पर्य है कि व्यक्ति अपनी आय में से सभी खर्चों को पूरा करने के बाद भी कुछ बचाने की चेष्टा करे। आज की अल्प बचत भी भविष्य में एक बड़ी राशि बन जाती है। कहा भी जाता है कि 'बूंद- बूंद से घड़ा भर जाता है'।

आज खर्च के जितने कारण हैं, बचत केउतने उपाय भी हैं। बुद्धिमान मनुष्य उनमें से किसी भी साधन को अपनाकर बचत कर सकता है। बैंकों, बीमा योजनाओं, म्यूच्यूअल फंड आदि उपायों से बचत करने पर धन केवल बचाया ही नहीं जाता वरन ब्याज मिलने से बढ़ाया भी जाता है। अपनी जमाराशि को व्यक्ति जब चाहे उपयोग में ला सकता है। बचत के अनेकानेक लाभों को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को बचत करनी चाहिए और जीवन को सही मार्ग पर ले जाना चाहिए।

(ग) जनसंख्या वृद्धि समस्या और समाधान

भारत एक विशाल देश है, जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार की समस्याएं व्याप्त हैं, जिनमें से एक है-जनसंख्या वृद्धि। जनसंख्या वृद्धि देश के विकास में बाधा का कार्य करती हैं, इसलिए हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता जनसंख्या वृद्धि को रोकना है। इस क्षेत्र में हमारे सभी प्रयत्न निष्फल रहे हैं। ऐसा क्यों है? यह इसलिए भी हो सकता है, क्योंकि समस्या को देखने का हर एक का अलग दृष्टिकोण है। जनसंख्याशास्त्रियों के लिए यह आंकड़ों का अंबार है। अफसरशाही के लिए यह टारगेट तय करने की कार्यविधि है। राजनीतिज्ञ इसे वोट बैंक की दृष्टि से देखता है। यह सब अपने-अपने ढंग से समस्या को सुलझाने में लगे हैं। अतः पृथक-पृथक किसी के हाथ सफलता नहीं लगी।

परंतु यह स्पष्ट है कि परिवार के आकार पर आर्थिक विकास और शिक्षा का बहुत प्रभाव पड़ता है। यहां आर्थिक विकास का तात्पर्य पश्चात मतानुसार भौतिकवाद नहीं जहां बच्चों को बोझ माना जाता है। हमारे लिए तो यह सम्मानपूर्वक जीने के स्तर से संबंधित है। यह मौजूदा संपत्ति के समतामूलक विवरण पर ही निर्भर नहीं है वरन ऐसी शैली अपनाने से संबंधित है जिसमें 80 करोड़ लोगों की ऊर्जा का बेहतर उपयोग हो सके। इसी प्रकार स्त्री -शिक्षा भी है।यह समाज में एक नए प्रकार का चिंतन पैदा करेगी, जिससे सामाजिक और आर्थिक विकास के नए आयाम खुलेंगे और साथ ही बच्चों के विकास का नया रास्ता भी खुलेगा। अतः जनसंख्या की समस्या सामाजिक है। इसे सरकार अकेले नहीं सुलझा सकती। केंद्रीकरण से हटकर इसे ग्राम- ग्राम, व्यक्ति -व्यक्ति तक पहुंचाना होगा। जब तक यह जन -आंदोलन नहीं बन जाता, तब तक सफलता मिलना संदिग्ध है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. एक आलेख लेखन की भाषा कैसी होनी चाहिए?

1. सरल 2. सुगम
3. प्रभावी 4. यह सभी

2. निम्नलिखित में से कौन -सा तत्व आलेख लेखन का तत्व नहीं है?

1. गंभीरता 2. बौद्धिकता
3. बहुआयामी 4. मनोरंजकता

3. आलेख एक विधा है -

1. गद्य लेखन की 2. पद्य लेखन की
3. लघुकथा लेखन की 4. रिपोर्ट और लेखन की

4. आलेख के लिए अंग्रेजी में कौन सा शब्द प्रयुक्त होता है?

1. फीचर 2. आर्टिकल
3. रिपोर्ट 4. नोटिस

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 4, 2 - 4, 3 - 1, 4 - 2

Jharkhandlab.com

7. पुस्तक समीक्षा

प्रश्न 1. पुस्तक समीक्षा की परिभाषा (डेफिनेशन ऑफ बुक रिव्यू) बताएँ।

उत्तर- किसी भी पुस्तक जैसे कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, एकांकी, यात्रावृत्तांत इत्यादि किसी भी पुस्तक के बारे में पढ़कर उसके सभी अच्छे एवं बुरे पहलुओं के बारे में अवलोकन कर विचार प्रस्तुत करना पुस्तक समीक्षा कहलाता है।

प्रश्न 10. पुस्तक समीक्षा क्या है ?

उत्तर- पुस्तक समीक्षा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली समस्याओं में प्रमुख स्थान रखती है। पुस्तक समीक्षा में किसी पुस्तक का सम्यक् विश्लेषण किया जाता है। इस विश्लेषण से पाठक को पुस्तक विशेष के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। पुस्तक समीक्षा में एक पुस्तक की पूरी छानबीन की जाती है। समीक्षक पाठक को पुस्तक से परिचित कराता है। इस क्रम में वह पुस्तक के लेखक, विषय वस्तु, शिल्प, प्रकाशन स्तर, आदि पर प्रकाश डालता जाता है। इसके साथ ही वह समग्र रूप में पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। इस प्रकार पुस्तक विशेष के संबंध में समीक्षक अपनी राय भी व्यक्त करता है। पुस्तक समीक्षा का पहला और प्राथमिक दायित्व पाठकों को पुस्तक से परिचित कराना है, लेकिन परिचय का अर्थ पुस्तक की विषय वस्तु का सारांश भर देना नहीं है निश्चय ही पुस्तक की विषय वस्तु के बारे में जानने की उत्सुकता है। पाठकों को पुस्तक समीक्षा पढ़ने के लिए प्रेरित करती है, परंतु यह भी सही है कि वह समीक्षा के द्वारा पुस्तक की विषय वस्तु संरचना और भाविक सर्जनात्मक के संबंध में समीक्षक की विशेषज्ञता पूर्ण राय जानना चाहता है।

वह समीक्षक से विश्लेषण और आलोचनात्मक विवेचन की भी अपेक्षा रखता है। इसलिए समीक्षा लिखते समय समीक्षक को सतर्क रहना चाहिए कि उसकी समीक्षा पुस्तक का सारांश मात्र बनकर न रह जाए।

प्रश्न 3. पुस्तक समीक्षा का महत्व बताएँ।

उत्तर- साहित्य में पुस्तक समीक्षा की अहम भूमिका होती है। समीक्षा पाठक और पुस्तक को एक दूसरे से जोड़ती है। पाठक के सामने बराबर यह समस्या रहती है कि वह कौन सी किताब पढ़े। इसके इसलिए सवाल का समाधान पुस्तक समीक्षा कर देती है।

इसके अलावा पाठक वर्ग का एक हिस्सा भी होता है, जो पूरी किताब नहीं पढ़ना चाहता है या उसके पास इतना समय नहीं है कि वह सभी पुस्तकों को पढ़ें। यहां समीक्षा उसकी मदद करती है। इस प्रकार एक बार में पुस्तक को ढेर सारे पाठकों तक पहुंचा देती है। इसके दो फायदे होते हैं एक तो पाठक को प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की जानकारी मिल जाती है, दूसरे वह नए लेखकों के और रुझानों से भी परिचित होता चला जाता है। साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, समाज विज्ञान, खेलकूद आदि क्षेत्रों से संबंधित पुस्तकों की जानकारी समीक्षा के माध्यम से पाठकों तक पहुंचती है। पुस्तकों के इस व्यापक संसार में पाठक के लिए सही पुस्तक का चुनाव मुश्किल काम है। समीक्षा इस मुश्किल को कम करती है, इसके अतिरिक्त वह लेखक को पाठक से जुड़ने का सामाजिक दायित्व भी निभाती है। साथ ही इसकी मदद से पाठक किसी लेखक या कृति के बारे में अपनी समझ विकसित कर सकता है और अपनी राय बना सकता है।

प्रश्न 4. पुस्तक समीक्षा की विशेषताएं बताएँ।

उत्तर- एक अच्छी समीक्षा में निम्न गुणों अथवा विशेषताओं का होना जरूरी है-

1. विषय वस्तु का संगणन, तार्किक तथा मनोवैज्ञानिक हो, विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण पाठकों के मानसिक स्तर के अनुरूप हो।
2. व्याख्या स्पष्टीकरण, उदाहरणों की मदद से विषय का सरलीकरण हो , तथा भाषा शैली में सरलता, स्पष्टता मौलिकता एवं प्रभावशीलता हो।
3. विषय वस्तु से संबंधित आधुनिकतम घटनाओं तथा समस्याओं पर बल दिया गया हो।
4. चिंतन तथा नवीन विचारों का प्रस्तुतीकरण हो
5. विषय वस्तु से किसी की भी भावनाओं को आघात न पहुंचाना अर्थात् निरपेक्षता की भावना पर ध्यान देना।

प्रश्न 5. पुस्तक समीक्षा के उद्देश्य बताएँ।

उत्तर-

1. पाठकों को पुस्तक अथवा पुस्तक की विषय वस्तु से परिचित कराना।
2. लेखक के रचनात्मकता एवं लेखन शैली को उजागर करना।
3. यदि संपूर्ण रूप से देखा जाए तो लेखक की योग्यता, विषय वस्तु का संगठन, प्रस्तुतीकरण, पठनीयता, शुद्धता, दृष्टांतता, अनुकूलनीयता इत्यादि का अवलोकन कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाना।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. साहित्यिक समालोचना क्या कहलाती है?

1. संपादकीय 2. कहानी लेखन
3. पुस्तक समीक्षा 4. पत्रकारिता

प्रश्न 2. पुस्तक समीक्षा को अंग्रेजी में क्या कहा जाता है?

1. बुक रिव्यू 2. फीचर
3. पोस्टर 4. बुक राइटिंग

प्रश्न 3. पुस्तक समीक्षा करनेवाला क्या कहलाता है?

1. लेखक 2. पत्रकार
3. समीक्षक 4. संवाददाता

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 3, 2 - 1 3 - 3

Jharkhandlab.com

8. फीचर लेखन

प्रश्न 1. फीचर लेखन से क्या समझते हैं ?

उत्तर- फीचर लेखन हिंदी पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण विधा है। समाचार पत्र की भांति फीचर भी मानव जीवन को प्रभावित करने वाली गतिविधि है। फीचर मनोरंजक ढंग से लिखा नवीन लेख है, जो स्वतंत्रता के बाद विकसित हुआ है। फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करने के साथ-साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है।

फीचर पाठक की चेतना को ही नहीं जगाता बल्कि उनकी भावनाओं और संवेदनाओं को जागृत करता है। इसमें लेखक पाठक को अपने अनुभव से समाज का परिचय कराता है। यह सूचनाओं को संप्रेषित करने का साहित्यिक रूप है।

प्रश्न 2. फीचर लेखन की शैली कैसी होती है ?

उत्तर- फीचर लेखन का कोई एक ढाँचा या फार्मूला नहीं होता है। फीचर लेखन की शैली काफी हद तक कथ्यात्मक शैली की तरह है। फीचर लेखन की भाषा समाचारों के विपरीत सरल, रूपात्मक, आकर्षक और मन को छूने वाली होती है। फीचर की भाषा में समाचारों की सपाटबयानी नहीं चलती है। फीचर आमतौर पर समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं । अखबारों और पत्रिकाओं में 250 शब्दों से लेकर 2000 शब्दों तक के फीचर छपते हैं।

फीचर एक ट्रीटमेंट है ।विषय या मुद्दे की जरूरत के अनुसार लिखा जाता है ।कुछ हल्के-फुल्के समाचार भी फीचर शैली में लिखा जा सकता है।

प्रश्न 3. फीचर के प्रकारों की चर्चा कीजिए।

फीचर के प्रकार

(1) व्यक्तिगत फीचर
(2) समाचार परक फीचर
(3) ऐतिहासिक फीचर
(4) विज्ञान परक फीचर
(5) खेलकूद परक फीचर
(6) सांस्कृतिक फीचर
(7) हास्य व्यंग्यपरक फीचर
(8) व्याख्यान फीचर

प्रश्न 4. एक अच्छे फीचर की विशेषताएँ बताईए ।

एक अच्छे फीचर लेखन की विशेषताएं

(1) मनोरंजक होना चाहिए
(2) ज्ञानवर्धक होना चाहिए
(3) भावात्मक हो
(4) मानवीय रूचि पर आधारित होना चाहिए
(5) तर्कसंगत होना चाहिए

बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्म निष्ठ लेखन को क्या कहा जाता है?

1 फीचर 2 आलेख
3 विशेष रिपोर्ट 4 इंट्रो(मुखड़ा)

(2) निम्नलिखित में से फीचर का क्या उद्देश्य होता है?

1 पाठकों को सूचना देना
2 पाठकों को शिक्षित करना
3 पाठकों का मनोरंजन करना
4 उपर्युक्त सभी

(3) फीचर लेखन के संबंध में निम्नलिखित में से असत्य कथन का चयन कीजिए?

1 फीचर आमतौर पर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित तथ्यात्मक विवरण का विश्लेषण होता है।
2 फीचर में लेखक के पास अपना दृष्टिकोण, राय व भावनाएं जाहिर करने का अवसर होता है।
3 फीचर आत्मनिष्ठ लेखन है।
4 फीचर को अखबार की आवाज माना जाता है।

(4) फीचर लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

1 विषय से जुड़े पात्रों की मौजूदगी होना जरूरी है ।
2 फीचर मनोरंजन के साथ सूचनात्मक हो।
3 फीचर का प्रारंभ विरोधाभास हो।
4 1 और 2 दोनों

(5) फीचर लेखन का प्रथम चरण है-

1 शीर्षक 2 भूमिका
3 विषय का विस्तार 4 निष्कर्ष

(6) फीचर शब्द का अर्थ है-

1 चित्र 2 रेखा चित्र
3 रूपरेखा 4 संस्मरण

(7) फीचर में तथ्यों की प्रस्तुति का ढंग कैसा होता है?

1 निरस 2 मनोरंजक
3 व्यापक 4 संकुचित

Jharkhandlab.com

(8) फीचर किस प्रकार की विधा मानी जाती है?

1 विषय प्रधान 2 समस्या प्रधान
3 व्यक्ति प्रधान 4 पत्र प्रधान

(9) फीचर लेखन के लिए किसकी आवश्यकता होती है?

1 कल्पना शक्ति की 2 अनुभूति की
3 अवलोकन की 4 इनमें से सभी

(10) निम्नलिखित में से कौन फीचर लेखन का तत्व है?

1 अलंकार 2 छंद
3 कल्पना 4 बिंब

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 1, 2 - 4 3 - 3, 4 - 4, 5 - 1,
6 -3, 7 - 2, 8 - 1, 9 - 4, 10 - 3

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION 2023

हिंदी कोर (आधार)
कला (Arts)
हल प्रश्न-पत्र

बहुविकल्पीय आधारित प्रश्न

GROUP - A (समूह - A)

(अपठित बोध)

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 1 से 4 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए :

यह जीवन क्या है ? निर्झर है, मस्ती इसका पानी है।

दुख- दुख के दोनों तीरों से, चल रहा राह मनमानी है।

कब फूटा गिरी के अंतर से ? किस अंचल से उतरा नीचे।

किस घाटी से बहकर आया ? समतल में अपने को सींचे।

निर्झर में गति है, जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।

धुन एक सिर्फ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

1. जीवन की तुलना किससे की गई है ?
(1) निर्झर से (2) सरोवर से
(3) सागर से (4) रथ से

2. सुख-दुख के दोनों तीरों पर कौन चल रहा है ?
(1) यौवन (2) बचपन
(3) जीवन (4) बुढ़ापा

3. प्रस्तुत पंक्तियों के अनुसार अपनी मस्ती में कौन गाता है ?
(1) समुद्र (2) निर्झर
(3) आकाश (4) बादल

4. 'गिरी' का अर्थ है ?
(1) फूल (2) पहाड़
(3) चांद (4) धरती

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 5 से 8 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए :

प्रकृति माता है - इसकी एक-एक प्रक्रिया अनोखी एवं अद्‌भुत है। इसे केवल दिया जा सकता है; इसकी कोई बौद्‌धिक व्याख्या संभव नहीं है। यह ऐसी ही है और हमें इसी के अनुरूप जीना है। इसके साथ चलने पर विकास के सोपान चढ़ते हैं और इसके विपरीत चलने पर विनाश के गर्त में गिरते हैं । प्रकृति हमें उठाती भी है और गिराती भी है। यह उठाती है, जब हम इसके नियम-विधान का अनुसरण करते हैं और गिराती है, जब हम इसके अंतहीन शोषण पर उतारू हो जाते हैं । जैसा कि वर्तमान समय में हो रहा है तथा जिसके भीषण परिणाम से हम रूबरू हो रहे हैं ।

5. किसकी बौद्‌धिक व्याख्या संभव नहीं है ?
(1) प्रकृति माता (2) धरती
(3) गगन (4) हवा

6. किसके साथ चलने से हमारा विकास होता है ?
(1) मित्र (2) पति
(3) पत्नी (4) प्रकृति

7. मनुष्य किसका दोहन कर रहा है ?
(1) पैसे का (2) पशु का
(3) प्रकृति का (4) नारी का

8. वर्तमान समय में मनुष्य प्रकृति के साथ कैसा आचरण कर रहा है ?
(1) विरुद्‌ध (2) समानांतर
(3) विनम्र (4) अच्छा

GROUP - B (समूह - B)

(अभिव्यक्ति और मध्यम)

9. पत्राचार किसकी अभिव्यक्ति का सरल तरीका है?
(1) संकेतों (2) व्यसनों
(3) विचारों (4) इन सभी का

10. औपचारिक पत्र में सर्वप्रथम क्या लिखा जाता है ?
(1) पत्र भेजने वाले का पता
(2) संबोधन
(3) पत्र क्रमांक
(4) पत्र प्राप्त करने वाले का पता

11. मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता है
(1) स्थायित्व (2) गतिशीलता
(3) श्रव्यता (4) सांकेतिकता

12. जनसंचार का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?
(1) जिज्ञासाओं का समाधान
(2) सूचनाओं को परस्पर बांटना
(3) विचारों की अभिव्यक्ति
(4) इनमें से सभी

13. रिमाइंडर को हिंदी में क्या कहते हैं ?
(1) स्मृति पत्र (2) अनुस्मारक
(3) मिनट (4) नोटिस

14. 'संचार' शब्द की उत्पत्ति 'चर' शब्द से हुई है । 'चर' का अर्थ है
(1) चरना (2) हटना
(3) बढ़ना (4) चलना

Jharkhandlab.com

15. **फीचर लेखन में कितने आयाम होते हैं ?**
(1) दो (2) तीन
(3) चार (4) एक

16. **'प्रार्थना पत्र' में 'आपका विश्वासी' लिखने के बाद किसका हस्ताक्षर होता है ?**
(1) प्रेषक का (2) संपादक का
(3) पत्रकार का (4) पत्र प्राप्तकर्ता का

17. **संपादक को उसके विविध कार्यों में कौन सहायता पहुंचता है ?**
(1) मंत्री (2) नेता
(3) पाठक (4) संयुक्त संपादक

18. **वर्तमान पत्रकारिता का स्वरूप क्या है ?**
(1) अंतरराष्ट्रीय (2) राष्ट्रीय
(3) प्रदेशीय (4) क्षेत्रीय

GROUP - C (समूह - C)

पाठ्यपुस्तक

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 19 से 22 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए :

नभ में पांति-बंधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरी आंखें।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती सांझ की सतेज श्वेत काया।
हौले-हौले जाती मुझे बांध निज माया से।

19. **उपर्युक्त काव्यांश में किसके सौंदर्य का वर्णन किया गया है ?**
(1) सायंकालीन प्रकृति का
(2) प्रातः कालीन प्रकृति का
(3) वसंतकालीन प्रकृति का
(4) हेमंतकालीन प्रकृति का

20. **इन पंक्तियों में कवि ने किस पक्षी का चित्रण किया है ?**
(1) बगुला (2) मोर
(3) बाज (4) चिड़िया

21. **'हौल-हौल' में कौन-सा अलंकार है ?**
(1) यमक अलंकार (2) उपमा अलंकार
(3) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार (4) रूपक अलंकार

22. **नभ में छाए बादलों की रंगत कैसी है ?**
(1) श्वेत (2) श्याम
(3) रक्तिम (4) भूरा

23. **भाषा को घूमने-फिराने से बात कैसी हो जाती है ?**
(1) पेचीदा (2) सरल
(3) सौम्य (4) सहज

24. **'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में कौन किसका साक्षात्कार ले रहा है ?**
(1) पत्रकार, नेता का (2) पत्रकार, अधिकारी का
(3) पत्रकार, विकलांग का (4) पत्रकार, समाजसेवी का

25. **"सहर्ष स्वीकारा" का शाब्दिक अर्थ है**
(1) दुख के साथ (2) खुशी के साथ
(3) घृणा के साथ (4) क्रोध के साथ

26. **कवि कविता की तुलना किससे कर रहा है ?**
(1) चिड़िया से (2) मोर से
(3) कबूतर से (4) मछली से

27. **पतंग उड़ाने वाले बच्चे दिशाओं को किसके समान बजाते हैं ?**
(1) ढोलक के समान (2) वीणा के समान
(3) बांसुरी के समान (4) मृदंग के समान

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 28 से 31 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए :

जब उसका सामान कस्टम पर जांच के लिए बाहर निकाला जाने लगा तो उसे झीरझिरी-सी आयी और एकदम से उसने फैसला किया कि मुहब्बत का यह तोहफा चोरी से नहीं जाएगा, नमक कस्टमवालों को दिखाएगी वह। उसने जल्दी से पुड़िया निकाली और हैंडबैग में रख ली, जिसमें उसका पैसों का पर्स और पासपोर्ट आदि थे। जब समाज कस्टम से होकर रेल की तरफ चला तो वह एक कस्टम अफसर की ओर बढ़ी।

28. **प्रस्तुत पाठ के लेखक कौन हैं ?**
(1) महादेवी वर्मा (2) भवानी प्रसाद मिश्र
(3) जयशंकर प्रसाद (4) रज़िया सज्जाद ज़हीर

29. **प्रस्तुत पाठ में किस देश के विभाजन से उपजे दर्द को अंकित किया गया है ?**
(1) भारत-चीन विभाजन (2) भारत-पाक विभाजन
(3) भारत-वर्मा विभाजन (4) भारत-श्रीलंका विभाजन

30. **सफिया को झिरीझिरी-सी क्यों आयी ?**
(1) पकड़े जाने के डर से (2) मिलने की खुशी से
(3) नाराज़गी की वजह से (4) भाई पर गुस्से की वजह से

31. **मुहब्बत का तोहफा क्या था ?**
(1) चीनी (2) संतरे
(3) कीनू (4) नमक

32. **भक्तिन किसकी बेटी थी ?**
(1) किसान की (2) गोपालक की
(3) व्यापारी की (4) जमींदार की

33. **बाजार में किसका जादू है ?**
(1) रूप का (2) चुंबक का
(3) लोहे का (4) किसी का नहीं

34. **चांद सिंह पहलवान के गुरु का क्या नाम था ?**
(1) बाबर सिंह (2) बादल सिंह
(3) वीर सिंह (4) सूरज सिंह

35. **चार्ली चैप्लिन ने अपने फिल्मों में किन दो रसों का मिश्रण किया है ?**
(1) वीर रस और रौद्रा रस (2) श्रृंगार रस और वीर रस
(3) हास्य रस और बीभत्स रस (4) करुण रस और हास्य रस

jharkhandlab.com

36. **'काले मेघा पानी दे' में लड़कों की टोली अपने आप को क्या कह कर बुलाती थी ?**

(1) मेंढक मंडली (2) इंदर सेना

(3) बानर सेना (4) अक्षय सेना

37. **'सिल्वर वैडिंग' के यशोधर पंत किस पद पर थे ?**

(1) सेक्शन ऑफिसर (2) क्लर्क

(3) चपरासी (4) माली

38. **'जूझ' शीर्षक कहानी का लेखक किससे डरता था ?**

(1) दादाजी से (2) पिताजी से

(3) माताजी से (4) दादीजी से

39. **मोहनजोदड़ो-हड़प्पा से प्राप्त हुई नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी हुई है ?**

(1) इस्लामाबाद संग्रहालय में (2) लाहौर संग्रहालय में

(3) दिल्ली संग्रहालय में (4) लंदन संग्रहालय में

40. **डायरी के पन्ने की लेखिका ऐन फ्रैंक ने किसे संबोधित कर डायरी लिखी है ?**

(1) मां को (2) बहन को

(3) सहेली को (4) गुड़िया को

उत्तर-	1- (1)	2- (3)	3- (2)	4- (2)	5- (1)
	6- (4)	7- (3)	8- (1)	9- (3)	10- (1)
	11- (1)	12- (4)	13- (2)	14- (4)	15- (2)
	16- (1)	17- (4)	18- (1)	19- (1)	20- (1)
	21- (3)	22- (1)	23- (1)	24- (3)	25- (2)
	26- (1)	27- (4)	28- (4)	29- (2)	30- (1)
	31- (4)	32- (2)	33- (1)	34- (2)	35- (4)
	36- (2)	37- (1)	38- (2)	39- (3)	40- (4)

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION 2023

हिंदी कोर (आधार)
कला (Arts)
हल प्रश्न-पत्र

विषयनिष्ठ आधारित प्रश्न

सामान्य निर्देश -

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
2. कुल प्रश्नों की संख्या 8 है।
3. खंड - A में एक प्रश्न है जो अनुच्छेद पर आधारित है। प्रश्न की अधिमानता 6 अंक है।
4. खंड - B में एक प्रश्न है। प्रश्न संख्या 2 का प्रत्येक उपप्रश्न की अधिमानता 5 अंक निर्धारित है। प्रत्येक उपप्रश्न का उत्तर 100 शब्दों में दीजिए।
5. खंड - में 4 प्रश्न (3 - 6) हैं। प्रश्न संख्या 3 में प्रत्येक 5 अंक के दो उपप्रश्न हैं। जिन में से किसी एक उपप्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दें।

   प्रश्न संख्या 4 में प्रत्येक 3 अंक के 3 उपप्रश्न हैं जिनमें से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 50 शब्दों में देना है। प्रश्न संख्या 5 में प्रत्येक 3 अंक के उपप्रश्न है जिनमें से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर 50 शब्दों में देना है। प्रश्न संख्या 6 का उत्तर 50 शब्दों में देना है जिसकी अधिमानता 2 अंक है।
6. खंड - D में दो प्रश्न (7- 8) है जिनका उत्तर प्रत्येक 50 शब्दों में देना है। प्रश्न संख्या 7 की अधिमानता 3 अंक तथा प्रश्न संख्या 8 की अधिमान्ता 2 अंक है।

खंड - A

(अपठित बोध)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(2+2+2=6)

बात करने से बड़े-बड़े मसले, अंतरराष्ट्रीय समस्याएं तक हल हो जाती हैं। पर संवाद की सबसे बड़ी शर्ते हैं, एक दूसरे की बातें पूरे मनोयोग से, संपूर्ण धैर्य से सुनी जाएं। श्रोता उन्हें कान से सुने और मन से अनुभव करें तभी उसका लाभ है, तभी समस्याएं सुलझने की संभावना बढ़ती है और कम-से- कम यह समझ में आता है कि अगले के मन की परतों के भीतर है क्या? सच तो यह है कि सुनना एक कौशल है जिसमें हम प्राय अकुशल होते हैं। दूसरे की बात काटने के लिए, उसे समाधान सुलझाने के लिए हम उतावले होते हैं उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें नहीं पहुंचने देता। हम तो बस अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं, तब दूसरे पक्ष को झुंझलाहट होती है। वह सोचता है व्यर्थ ही इसके सामने मुंह खोला। कवि रहीम ने ठीक ही कहा था - 'सुनि अठिलैहैं लोग सब, बांटी न लैहैं कोय'। ध्यान और धैर्य से सुनना आध्यात्मिक कार्य है और संवाद की सफलता का मूल मंत्र है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर - सुनना: एक कौशल

(ख) हम संवाद की आत्मा तक प्राय: क्यों नहीं पहुंच पाते?

उत्तर - दूसरे की बातों को सुनने में हम प्राय: अकुशल होते हैं। जिस कारण दूसरे की बात काटने के लिए उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं। इसी उतावलेपन के कारण हम संवाद की आत्मा तक नहीं पहुंच पाते।

(ग) संवाद की सफलता का मूल मंत्र क्या है?

उत्तर - ध्यान और धैर्य से सुनना संवाद की सफलता का मूल मंत्र है।

खंड - B

अभिव्यक्ति और माध्यम

2. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 5+5=10

(क) राष्ट्र के निर्माण में युवा शक्ति की भूमिका बताइए।

अथवा

नारी हिंसा की घटनाओं पर एक निबंध लिखिए।

उत्तर- **(क) राष्ट्र के निर्माण में युवा शक्ति की भूमिका**

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में युवा वर्ग एक अहम भूमिका निभाता है। युवा वर्ग शारीरिक और मानसिक रूप से किसी भी कार्य को कुशलतापूर्वक करने में सक्षम होता है। हर व्यक्ति जीवन के इस दौर से गुजरता है। युवाओं को उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए और विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान देना चाहिए।

राष्ट्र को विकसित बनाने में युवा शक्ति का सर्वाधिक योगदान रहा है। राष्ट्र की प्रगति विज्ञान, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, प्रबंधन और अन्य क्षेत्रों में विकास पर निर्भर होती है। इन सभी मानदंडों को पूरा करने के लिए सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक आधार पर युवा वर्ग का सशक्तिकरण आवश्यक है।

युवाओं को एक सकारात्मक दिशा में निर्देशित किया जाना चाहिए उनके विकास और प्रशिक्षण पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उनकी उचित शिक्षा और कौशल विकास से ही उनके काम करने की क्षमता में वृद्धि होती है। युवा वर्ग उत्साह से भरा होता है और उसमें सफलता की ओर अग्रसर होने का हुनर होता है।

आज का युवा राष्ट्र के कल की स्थिति को आकार देता है। इसलिए युवा वर्ग को पर्याप्त अवसर देकर उनकी शक्ति और क्षमता का सदुपयोग किया जाना चाहिए। युवा वर्ग को ज्ञान और कौशल दोनों में निपुण करने की आवश्यकता है जिससे कि राष्ट्र का सर्वांगीण विकास हो सके।

अथवा

उत्तर- **नारी हिंसा**

भारतीय समाज के पुरुष प्रधान होने की वजह से महिलाओं को बहुत अत्याचारों का सामना करना पड़ा है। आमतौर पर महिलाओं को जिन समस्याओं से लड़ना पड़ता है उनमें प्रमुख है- दहेज हत्या, यौन उत्पीड़न, महिलाओं से लूटपाट, नाबालिग लड़कियों से राह चलते छेड़छाड़ आदि।

हिंसा से तात्पर्य हैं किसी को शारीरिक रूप से चोट या क्षति पहुंचाना। किसी को मौखिक रूप से अपशब्द कहकर मानसिक परेशानी देना भी हिंसा का ही रूप है। इससे शारीरिक चोट तो नहीं लगती किंतु मन मस्तिष्क पर गहरा आघात पहुंचता है। बलात्कार, हत्या, अपहरण आदि को आपराधिक हिंसा की श्रेणी में गिना

Jharkhandlab.com

जाता है तथा घर में दहेज के लिए पत्नी से मारपीट, बदसलूकी, यौन शोषण जैसी घटनाएं घरेलू हिंसा का उदाहरण है। लड़कियों से छेड़छाड़, पत्नी को भ्रूण हत्या के लिए मजबूर करना आदि सामाजिक हिंसा के अंतर्गत आते हैं। ये सभी घटनाएं महिलाओं तथा समाज के बड़े हिस्से को प्रभावित कर रही हैं।

महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा में लगातार बढ़ोतरी हो रही है और यह चिंताजनक विषय बन चुका है महिला हिंसा से निपटना सरकार तथा समाज सेवकों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है हालांकि महिलाओं को जरूरत है कि वह खुद दूसरों पर निर्भर न रहकर अपनी जिम्मेदारी खुद ले तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो और स्वयं की सुरक्षा कर सके।

(ख) अपने नगर में पेयजल की आपूर्ति को नियमित कराने हेतु नगर पालिका के अध्यक्ष को पत्र लिखिए।

उत्तर -

सेवा में,

अध्यक्ष,

रांची नगर पालिका, रांची।

विषय - पेयजल की आपूर्ति नियमित करने के संबंध में।

महाशय,

उपरोक्त विषय के संबंध में निवेदन पूर्वक कहना यह है कि आज हमारा मोहल्ला पेयजल की अनियमित आपूर्ति से बहुत परेशान है। हमारे मोहल्ले के अधिकतर चापाकल खराब पड़े हैं। घर के बाहर लगे नलों में भी कई-कई दिनों तक पानी नहीं आता है। अगर पानी आता भी है तो आधे घंटे के लिए ही आता है। पेयजल की कमी के कारण लोग आधी रात से ही पानी भरने के लिए घंटों लाइन में खड़े रहते हैं। कभी-कभी तो पानी भरने के दौरान लोगों में लड़ाई भी हो जाती है।

अतः श्रीमान से नम्र निवेदन है की इस मोहल्ले में पेयजल आपूर्ति नियमित करने की कृपा करें। इस कार्य के लिए हम सभी आपका सदैव आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

आकाश सिंह

हरमू कॉलोनी

(ग) समाचार लेखन के छह ककार कौन- कौन से हैं?

उत्तर - समाचार लेखन के छह ककार-

किसी समाचार को लिखते हुए मुख्यतः छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है - क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहां हुआ, कब हुआ, कैसे हुआ और क्यों हुआ ?

इस - क्या, किसके (या कौन), कहां, कब, कैसे और क्यों को छह ककारों के रूप में भी जाना जाता है । किसी घटना समस्या या विचार से संबंधित खबर लिखते हुए इन छह ककारों को ही ध्यान में रखा जाता है ।

(घ) अपने मित्र को ग्रीष्म अवकाश साथ व्यतीत करने के लिए निमंत्रित कीजिए।

उत्तर -

देवघर,

10 मई, 20XX

प्रिय राहुल

सप्रेम नमस्ते!

यहां सब कुशल है और तुम्हें सानंद चाहते हैं। मेरी वार्षिक परीक्षा पूरी हो गई है और तुम्हारी परीक्षा भी समाप्त हो गई होगी। मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस बार ग्रीष्मावकाश में तुम हमारे यहां आ जाओ। मैंने अपने माता-पिता से इस संबंध में स्वीकृति ले ली है। यहां देवघर में अनेक पर्यटन स्थल हैं। बैद्यनाथ मंदिर पूरे भारत में प्रसिद्ध है। दोनों मित्र साथ- साथ रहकर ग्रीष्मावकाश का सुखद उपयोग कर सकेंगे। मेरा यह आग्रह अवश्य ही स्वीकार करना। अपने पिता जी एवं माता जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा स्नेही

विनोद

खंड - C

(पाठ्यपुस्तक)

3. निम्नलिखित में से किसी एक का काव्य- सौंदर्य लिखिए:

(क) कथा कही सब तेहिं अभिमानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी।।
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे। महा महा जोधा संहारे।।
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकंपन भारी।।
अपर महोदर आदिक बीरा।परे समर महि सब रनधीरा।।

उत्तर - भाव सौंदर्य - इस पद्यांश में रावण ने अभिमान के साथ वह सारी कथा कह सुनाई कि कैसे वह सीता का अपहरण कर लाया था। उसने कहा- भाई कुंभकर्ण रामचंद्र के वानरों ने कई राक्षस मार डाले हैं। उन्होंने बड़े-बड़े योद्धाओं का संघार कर डाला है। दुर्मुख, देव शत्रु, नरांतक, अतिकाय, अकंपन और महोदर आदि बड़े-बड़े योद्धा रणभूमि में मरे पड़े हैं।

शिल्प सौंदर्य - अवधी भाषा का प्रभावी प्रयोग हुआ है।

महा महा में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

कथा कही, निसिचर मारे, अपर महोदर, परे समर, में अनुप्रास अलंकार है।

(ख) कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वही है, हाय, जहां पर दाना।
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूं, सीखा ज्ञान भुलाना!

उत्तर - भाव सौंदर्य - इस पद्यांश में सांसारिकता की भागदौड़ को व्यर्थ बता कर उससे दूर रहने की सलाह दी गई है। कवि के अनुसार जिसे देखो वही नादानी कर रहा है हर कोई धन वैभव भोग सामग्री के पीछे सड़ा हुआ है। कवि सांसारिकता के इस पाठ को भूलने में लगा हुआ है।

शिल्प सौंदर्य - भाषा सरल और सहज है।

प्रश्न शैली के कारण काव्य में सौंदर्य आ गया है।

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने न जाना? में अनुप्रास अलंकार है।

4. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए:। 3+3=6

(क) समर्थ शक्तिवान लोग दुर्बल को दूरदर्शन पर क्यों लाते हैं?

उत्तर - समर्थ शक्तिवान लोग दूरदर्शन के स्वामी हैं। वे दुर्बलों की पीड़ाओं को आम जनता के सामने रखकर अपनी कार्यक्रम को रोमांचक बनाना चाहते हैं ताकि वह इन के माध्यम से पैसा कमा सकें।

(ख) खुद का पर्दा खोलने से क्या आशय है?

उत्तर - खुद का पर्दा खोलने का आशय है- खुद के दोषों का प्रकट होना। कवि कहना चाहता है कि जब कोई निंदक बढ़- चढ़कर कवि की निंदा करता है तो वह वास्तव में कवि की निंदा न करके अपनी ही कमजोरी प्रकट करता है। अपनी ही ईर्ष्या प्रकट करके जग हंसाई करवाता है।

Jharkhandlab.com

(ग) छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

उत्तर - कवि अपने कवि कर्म को किसान के कर्म जैसा बताना चाहता है। वह कविता की समानता खेती से करना चाहता है। इसलिए वह कागज के पन्ने को छोटा चौकोना खेत कहता है। जिस प्रकार खेत में ही बीज, जल, रसायन आदि डाले जाते हैं और उसमें से अंकुर, फल, फूल आदि उगते हैं। उसी प्रकार कागज के पन्ने पर ही कवि के भाव शब्द, अलंकार, रस आदि के रूप में प्रकट होते हैं।

5. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3+3=6

(क) 'बाजार दर्शन' में कितने ग्राहकों का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है तथा उनकी क्या विशेषताएं हैं?

उत्तर - बाजार दर्शन में तीन प्रकार की ग्राहकों का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है -

लेखक का पहला मित्र - मामूली चीज लेने के लिए बाजार गए थे पर लौटे तो बहुत से बंडल पास थे।

लेखक के दूसरे मित्र - दोपहर के पहले बाजार गए थे किंतु शाम को खाली हाथ घर लौटे। उन्होंने सब कुछ खरीदने के लालच में बाजार से कुछ नहीं खरीदा।

लेखक के पड़ोसी भगत जी - वे बाजार जाते हैं। आंख खोलकर बाजार को देखते हैं किंतु रुकते हैं केवल पंसारी की दुकान पर, जहां से उनको जीरा व नमक खरीदना है। वे वांछित सामान खरीद कर घर लौट आते हैं।

(ख) भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

उत्तर - भक्तिन अपनी समझ में बहुत समझदार है। वह हर बात का अपना ही अर्थ निकाल लेती है और फिर उस पर दृढ़ता से टिकी रहती है। जब भक्तिन ने अपना सिर मुंडवा लिया और महादेवी ने उसे ऐसा करने से रोका तो भक्तिन ने शास्त्रों की दुहाई दी। उसने प्रमाण देते हुए कहा कि शास्त्रों में लिखा है- 'तीरथ गए मुंडाय सिद्ध'। यह उक्ति या तो उसकी अपनी गढ़ी हुई थी या लोगों से सुनते-सुनते उसे अपना लिया था।

(ग) जीजी ने 'इंदर सेना' पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

उत्तर - गांव के कुछ नंग धड़ंग बच्चे कीचड़ में लथपथ होकर गांव वालों से पानी मांगते थे। उनका विश्वास था कि ऐसा करने से इंद्र देवता प्रसन्न होते हैं और वर्षा होती है। इस मंडली को इंदर सेना कहा गया है। जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंकने की परंपरा को बिल्कुल सही ठहराया। उनकी मान्यता थी कि देवता से कुछ पाने के लिए पहले कुछ दान और त्याग करना पड़ता है। यही बात इंदर सेना पर लागू होती है। इंदर सेना लोगों से जल का दान कराके भगवान इंद्र को भेंट करती है तभी भगवान इंद्र अपनी ओर से झमाझम वर्षा करते हैं। एक प्रकार से यह वर्षा की बुवाई है।

6. हरिवंश राय बच्चन अथवा डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी की किन्ही दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर -

हरिवंश राय बच्चन - आत्म परिचय, मधुशाला।

अथवा

डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी - सूर साहित्य, कबीर।

खंड - D

7. यशोधर बाबू परिवार के बावजूद स्वयं को अधूरा क्यों मानते थे ? 3

उत्तर - यशोधर बाबू का अपना भरा पूरा परिवार होने के बावजूद भी स्वयं को अधूरा मानते हैं। उनके बच्चों ने उन्हें लगभग नकार दिया है वे ना तो बाबूजी का सम्मान करते हैं ना उनसे कोई सलाह लेते हैं और ना ही उन्हें किसी प्रकार का सहयोग देते हैं। वे यशोधर बाबू की हर आदत और हर चीज को उपेक्षा और तिरस्कार की नजरों से देखते हैं बच्चों का मन रखने के कारण उन्हें साइकिल छोड़नी पड़ती है। फ्रिज और गैस अपनानी पड़ती है। यहां तक की उन्हें उपहार में मिला हुआ गाउन भी अपमान झेल कर पहनना पड़ता है। उनमें अब इतनी हिम्मत नहीं रही कि वह बच्चों की किसी बात को मना कर सकें। सच तो यह है कि बच्चे उनके घर पर भी कब्जा कर चुके हैं। उनकी पत्नी बच्चों के साथ मिल चुकी है। इसलिए वे घर में बिल्कुल अकेले और असहाय हो चुके हैं।

अथवा

'सिंधु घाटी सभ्यता मूलतः खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी।' स्पष्ट करें।

उत्तर - कुछ इतिहासकारों का मानना है कि सिंधु घाटी सभ्यता खेतिहर और पशुपालक सभ्यता ही थी। इतिहासकार इरफान हबीब के अनुसार यहां के लोग रवि की फसल का उत्पादन करते थे। कपास, गेहूं, जौ, सरसों और चने की उपज के सबूत खुदाई में मिले हैं। विद्वानों का मानना है कि ज्वार, बाजरा और रागी की उपज भी होती थी। लोग खजूर, खरबूजे और अंगूर उगाते थे। झाड़ियों से बेर जमा करते थे। कपास की खेती भी होती थी। खेती के प्रमाण मिलने के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह सभ्यता खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी।

8. ऐन परिवार को अज्ञातवास में जाने के लिए क्यों मजबूर होना पड़ा? 2

उत्तर - द्वितीय विश्व युद्ध के समय हालैंड के यहूदी परिवारों को जर्मनी के प्रभाव के कारण बहुत सारी यातनाएं सहनी पड़ी थी। इस बीच यहूदियों ने तरह- तरह के कष्ट सहे। गुप्त तहखानों में छिपकर जीवन रक्षा की। शारीरिक और मानसिक कष्ट सहे। भूख, गरीबी और बीमारी देखी। उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया गया। जर्मनी के शासक ने लाखों यहूदियों को मौत के घाट उतार दिया। ऐसे समय में दो यहूदी परिवार एक गुप्त आवास में 2 वर्ष तक छिपे रहे। इनमें एक था फ्रैंक परिवार जो ऐन का परिवार था। हिटलर के यातनाओं से बचने के लिए और अपने जीवन की रक्षा के लिए इन्हें अज्ञातवास में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

अथवा

'जूझ' शीर्षक कहानी के आधार पर बताएं कि प्रारंभ में लेखक किस तरह कविताएं लिखा करता था?

उत्तर - लेखक अपने मास्टर से प्रभावित होकर कविता करने लगा। मास्टर जी ने अपने दरवाजे की मालती लता पर कविता लिखी थी। लेखक ने मालती लता व कविता दोनों देखी थी। इससे लेखक को लगा कि मैं भी अपने खेतों पर, गांव पर, गांव के लोगों पर कविता लिख सकता हूं। अतः भैंस चराते- चराते फसलों पर या जंगली फूलों पर लेखक भी तुकबंदी करने लगा। उन कविताओं को गुनगुनाता और मास्टर जी को दिखाता। लेखक को कविता लिखने की इतनी धुन लगी कि यदि कागज पेंसिल ना होता तो कंकड़ से पत्थर की शिला पर लिख लेता या लकड़ी के टुकड़े से भैंस की पीठ पर लिख लेता कंठस्थ होने पर उसे पोंछ देता।

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION 2023

हिंदी - A (कोर)
विज्ञान / वाणिज्य
हल प्रश्न-पत्र

बहुविकल्पीय आधारित प्रश्न

GROUP - A (समूह - A)

(अपठित बोध)

निर्देश : निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 1 से 4 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए :

प्राचीन हो कि नवीन, छोड़ो रूढ़ियां जो हों बुरी,

बनकर विवेकी तुम दिखाओ, हंस जैसी चातुरी।

प्राचीन बातें ही भली हैं ,यह विचार अलीक है,

जैसी अवस्था हो जहां, वैसी व्यवस्था ठीक है।।

मुख से न होकर, चित से देशानुरागी हो सदा,

है सब स्वदेशी बंधु, उनके दुखभागी हो सदा।

देकर उन्हें साहाय्य भरसक, सब विपत्ति-व्यथा हरो,

निज दुख से ही दूसरों के, दुख का अनुभव करो।

1. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि रूढ़ियों को छोड़ने के लिए क्यों कह रहा है ?

(1) रूढ़ियां समय के बदलने पर विकास में बाधा पहुंचाती हैं।

(2) ये समय के बदलने पर अधिक प्रासंगिक हो जाती हैं।

(3) ये समय के बदलने पर विकास में सहायता पहुंचाती हैं।

(4) इनमें से कोई नहीं।

2. कवि किस पक्षी के समान चातुरी दिखाने को कहता है ?

(1) कोयल (2) कौआ (3) मोर (4) हंस

3. 'मुख से न होकर चित्त से देशानुरागी हो सदा' - कथन का आशय है

(1) हमें केवल देशप्रेम की बातें ही नहीं करनी चाहिए

(2) हमें उसके लिए सार्थक प्रयास भी करनी चाहिए

(3) हमें कथनी और करनी में समानता रखने चाहिए

(4) इनमें से सभी

4. हम दूसरों की पीड़ा को कैसे महसूस कर सकते हैं ?

(1) निज दुख से (2) निज सुख से (3) निज क्रोध से (4)निज स्वार्थ से

निर्देश : निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या पांच से आठ के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए :

हमारी हिंदी संजीव भाषा है। इसी कारण इसने अरबी, फारसी आदि के संपर्क में आकर इनके तो शब्द ग्रहण किए ही हैं, अब अंग्रेजी के भी शब्दों को ग्रहण करती जा रही है। इसे दोष नहीं, गुण ही समझना चाहिए, क्योंकि अपनी इस ग्रहणशक्ति से हिंदी अपनी वृद्धि कर रही है, ह्रास नहीं। ज्यों-ज्यों इसका प्रचार बढ़ेगा, त्यों-त्यों इसमें नए शब्दों का आगमन होता जाएगा।

क्या भाषा की विशुद्धता के किसी भी पक्षपाती में यह शक्ति है कि वह विभिन्न जातियों के पारंपरिक संबंध को न होने दे या भाषाओं की सम्मिश्रण-क्रिया में रुकावट पैदा कर दे ? यह कभी संभव नहीं। हमें तो केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस मिश्रण के कारण हमारी भाषा अपने स्वरूप को तो नहीं नष्ट कर रही - कहीं अन्य भाषाओं के बेमेल शब्दों के मिश्रण से अपना रूप तो विकृत नहीं कर रही। अभिप्राय यह है कि दूसरी भाषाओं के शब्द, मुहावरे आदि ग्रहण करने पर भी हिंदी, हिंदी ही बनी रही है या नहीं, बिगड़कर कहीं वह कुछ और तो नहीं होती जा रही है।

5. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक है ?

(1) हिंदी भाषा का महत्व (2) हिंदी भाषा की विकृति

(3) हिंदी भाषा की अवनति (4) हिंदी भाषा का अवमूल्यन

6. सजीव भाषा से क्या तात्पर्य है ?

(1) जिसने अनेक भाषाओं के शब्दों को पचा लिया है

(2) जिस भाषा में शब्द ग्रहण की शक्ति सहज है

(3) जिस भाषा में अपनी मौलिकता हो

(4) इनमें से सभी

7. हिंदी में नए शब्दों का आगमन क्यों उचित है ?

(1) शब्द भंडार समृद्ध होगा

(2) अभिव्यक्ति में मदद मिलेगी

(3) हिंदी सुगम, सहज और सर्वग्राह्य बनेगी

(4) इनमें से सभी

8. हमें अपनी हिंदी भाषा के लिए किस बात को ध्यान में रखना चाहिए ?

(1) भाषा का स्वरूप नष्ट नहीं हो

(2) भाषा में विकृति न आने पाए

(3) हिंदी सदा हिंदी ही बनी रहे

(4) इनमें से सभी

GROUP - B (समूह - B)

(अभिव्यक्ति और माध्यम)

9. टी.वी. किस प्रकार का जनसंचार माध्यम है ?

(1) दृश्य माध्यम (2) श्रव्य माध्यम

(3) दृश्य-श्रव्य माध्यम (4) इनमें से कोई नहीं

jharkhandlab.com

10. **रचनात्मकता यद्यपि प्रकृति प्रदत्त है तथापि इसे किससे पोषित किया जा सकता है ?**
(1) प्रशिक्षण द्वारा (2) शिक्षा द्वारा
(3) (1) एवं (2) दोनों के द्वारा (4) इनमें से कोई नहीं

11. **फीचर में तथ्यों की प्रस्तुति का ढंग होता है -**
(1) नीरस (2) व्यापक
(3) मनोरंजक (4) संकुचित

12. **निम्न में से पत्राचार का कौन-सा प्रकार है ?**
(1) व्यावसायिक (2) सरकारी
(3) पारिवारिक (4) इनमें से सभी

13. **मंत्री, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति द्वारा लिखी गई टिप्पणी को क्या कहते हैं ?**
(1) अध्यादेश (2) रिट
(3) सेकण्ड (4) मिनट

14. **जनसंचार का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?**
(1) जिज्ञासाओं का समाधान
(2) सूचनाओं को परस्पर बांटना
(3) विचारों की अभिव्यक्ति
(4) इनमें से सभी

15. **सूचनाओं का संकलन कर संपादक तक पहुंचाने की जिम्मेदारी किसकी होती है ?**
(1) खिलाड़ी (2) लेखक
(3) संपादक (4) पत्रकार

16. **समाचार-लेखन की शैली कौन-सी है ?**
(1) काव्यात्मक शैली (2) उल्टा पिरामिड शैली
(3) संस्मरणात्मक शैली (4) भावात्मक शैली

17. **प्रत्यक्ष संवाद के बजाय किसी तकनीकी या यांत्रिक माध्यम के द्वारा समाज के एक विशाल वर्ग से संवाद कायम करना कहलाता है**
(1) फीचर (2) समाचार
(3) संचार (4) जनसंचार

18. **मीडिया का इस समय सबसे सशक्त माध्यम क्या है ?**
(1) प्रिंट मीडिया (2) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
(3) सोशल मीडिया (4) इनमें से कोई नहीं

GROUP - C (समूह - C)

(पाठयपुस्तक)

निर्देश - निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 19 से 22 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए :

जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उड़ेलता हूं, भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है ?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चांद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है ।

19. **प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता का नाम है**
(1 गजानन माधव मुक्तिबोध
(2) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
(3) हरिवंश राय बच्चन
(4) तुलसीदास

20. **कवि की हृदय में कैसे पानी का झरना है ?**
(1) मीठे पानी का सोता (2) खारे पानी का सोता
(3) निर्मल पानी का सोता (4) नमकीन पानी का सोता

21. **धरती के ऊपर कौन मुसकाता रहता है ?**
(1) चंचल हवा (2) सूर्य
(3) तारे (4) चांद

22. **कवि के हृदय में किसके प्रति प्रेम भरा है ?**
(1) माता के प्रति (2) भक्त के प्रति
(3) भगवान के प्रति (4) प्रिय के प्रति

23. **शारीरिक रूप से दुर्बल और पीड़ाग्रस्त कौन है ?**
(1) विकलांग (2) सिपाही (3)सैनिक (4) नौकर

24. **परिमल, अनामिका, गीतिका, नए पत्ते, अणिमा, बेला, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, किनके कविता संग्रह हैं ?**
(1) महादेवी वर्मा (2) दिनकर
(3) निराला (4) इनमें से कोई नहीं

25. **किस वर्ग के बच्चे हर प्रकार के दुखों को सहन करने की शक्ति रखते हैं ?**
(1) शोषित वर्ग (2) धनी वर्ग
(3) जमींदार वर्ग (4) व्यापारी वर्ग

26. **मां किसके घरौदों में दिए जलाती है ?**
(1) खुद के (2) बच्चों के
(3) (1) तथा (2) दोनों के (4) इनमें से कोई नहीं

27. **मां बच्चे को किस प्रकार कपड़े पहनाती है ?**
(1) हाथों में लेकर (2) घुटनों में लेकर
(3) गोद में लेकर (4) इनमें से कोई नहीं

निर्देश - निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 28 से 31 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए :

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी । पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो, किंतु गांव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी ।

28. **प्रस्तुत पंक्तियां किस पाठ से ली गई है ?**
(1) चार्ली चैप्लिन यानी हम सब (2) नमक
(3) पहलवान की ढोलक (4) बाजार दर्शन

29. **रात्रि की विभीषिका को कौन चुनौती देती रहती थी ?**
(1) पहलवान का तबला। (2) पहलवान की बांसुरी
(3) पहलवान की ढोलक (4) पहलवान का झांझर

30. **पहलवान कितनी देर तक ढोलक बजाता था ?**
(1) एक घंटा (2) दो घंटे
(3) तीन घंटे (4) संध्या से सुबह तक

31. **ढोलक की आवाज किसके भीतर संजीवनी शक्ति का संचार करती थी ?**
(1) शहर के लोगों (2) गांव के लोगों
(3) बाजार के लोगों (4) मेले के लोगों

jharkhandlab.com

32. निम्न में कौन-सा कथन सत्य है

(1) जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण है

(2) जाति-प्रथा बिल्कुल सही है

(3) इससे कोई परेशानी नहीं है

(4) इनमें से कोई नहीं

33. पहलवान लुट्टन सिंह के कितने बेटे थे ?

(1) दो बेटे (2) तीन बेटे

(3) एक बेटा (4) चार बेटे

34. लेखक किसके पूजा-पाठ में सहयोग करता था ?

(1) जीजी के (2) माता के

(3) आर्य समाज के (4) इनमें से कोई नहीं

35. पैसा खर्च करने का मुख्य स्थान क्या होता है ?

(1) बाजार (2) घर

(3) धर्मशाला (4) मंदिर

36. महादेवी वर्मा किस युग की कवयित्री मानी जाती हैं ?

(1) भारतेंदु युग (2) छायावादी युग

(3) द्विवेदी युग (4) प्रयोगवादी युग

37. यशोधर बाबू के बड़े लड़के का क्या नाम था ?

(1) आभूषण (2) भूषण

(3) रामधर (4) विदेहानंद

38. 'जूझ' कहानी के आधार पर बताएं कि लेखक के दादा किससे डरते थे ?

(1) पत्नी से (2) रखमा बाई से

(3) अपने पुत्र से (4) राव साहब से

39. लेखिका के परिवार के साथ किसका परिवार छुपने के लिए जा रहा था ?

(1) ऐन फ्रैंक का (2) वानदान का

(3) किट्टी का (4) इनमें से कोई नहीं

40. लेखिका के अनुसार अगली सदी आने तक किसको सम्मान मिलेगा ?

(1) इंसानों को (2) जानवरों को

(3) औरतों को (4) इनमें से कोई नहीं

उत्तर - 1 (1), 2 (4), 3 (4), 4 (1), 5 (1), 6 (4), 7 (4), 8 (4), 9 (3), 10 (3), 11 (3), 12 (4), 13 (4), 14 (4), 15 (4), 16 (2), 17 (4), 18(3), 19 (1), 20 (1), 21 (4), 22 (4), 23 (1), 24 (3), 25 (1), 26 (2), 27 (2), 28 (3), 29 (3), 30 (4), 31 (2), 32 (1), 33 (1), 34 (1), 35 (1), 36 (2), 37 (2), 38 (4), 39 (2), 40 (3)

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION 2023

हिंदी - A (कोर)
विज्ञान / वाणिज्य
हल प्रश्न-पत्र

विषयनिष्ठ आधारित प्रश्न

PART - B (भाग - B)

(विषयनिष्ठ आधारित प्रश्न)

निर्देश -

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें ।
2. कुल प्रश्नों की संख्या 8 है ।
3. खंड - A में 1 प्रश्न है जो अनुच्छेद पर आधारित है। प्रश्न की अधिमानता 6 अंक है ।
4. खंड - B में 1 प्रश्न है । प्रश्न संख्या 2 का प्रत्येक उपप्रश्न की अधिमानता 5 अंक निर्धारित है । प्रत्येक उपप्रश्न का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में दीजिए ।
5. खंड - C में 4 प्रश्न (प्रश्न संख्या 3 - 6) हैं । प्रश्न संख्या 3 में प्रत्येक 5 अंक के 2 उपप्रश्न हैं जिनमें से किसी 1 उपप्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दें ।

   प्रश्न संख्या 4 में प्रत्येक 3 अंक के 3 उपप्रश्न हैं जिनमें से किन्हीं 2 उपप्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 50 शब्दों में देना है । प्रश्न संख्या 5 में प्रत्येक 3 अंक के 3 उपप्रश्न है जिनमें से किन्हीं 2 उपप्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 50 शब्दों में देना है । प्रश्न संख्या 6 का उत्तर 50 शब्दों में देना है जिसकी अधिमानता 2 अंक है ।
6. खंड - D में दो प्रश्न (प्रश्न संख्या 7 - 8) हैं जिनका उत्तर प्रत्येक 50 शब्दों में देना है । प्रश्न संख्या 7 की अधिमानता 3 अंक तथा प्रश्न संख्या 8 की अधिमंता 2 अंक है ।

SECTION - A (खंड - A)

(अपठित बोध)

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2+2+2=6

भोजन संबंधी भूलों में सबसे बड़ी भूल बिना भूख के खाना है । बिना भूख भोजन करना अपने शरीर के साथ अपराध करना है । प्रायः लोगों का विचार है कि अधिक खाने से शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है और कम खाने से शरीर कमजोर हो जाता है । यह धारणा बिल्कुल गलत है । अपच रोग का यह एक कारण है । मनुष्य ही ऐसा है जो भूख न लगने पर भी भोजन करता है । अन्य कोई प्राणी बिना तेज भूख लगे भोजन नहीं करता । हम जो कुछ खाते हैं, उसी से हमारे शरीर का निर्माण होता है । अतएव भोजन ऐसा होना चाहिए, जो संतुलित हो, ताजा हो और शीघ्र पच जानेवाला हो । ऐसा भोजन ही हमारे लिए लाभप्रद होता है । ऐसे भोजन से ही हम दीर्घजीवी, स्वस्थ और निरोग होते हैं ।

(क) भोजन कब करना चाहिए ?

(ख) किन लोगों में अपच का रोग अधिक होता है ?

(ग) हमारा भोजन कैसा होना चाहिए ?

उत्तर - (क) भोजन भूख लगने पर ही करना चाहिए।

(ख) भूख न लगने पर भोजन करने वाले तथा अधिक खाने वाले लोगों में अपच का रोग अधिक होता है ।

(ग) हमारा भोजन संतुलित, ताजा और शीघ्र पच जाने वाला होना चाहिए ।

2. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5+5=10

(क)' देश की प्रगति में महिलाओं का योगदान' के बारे में लिखिए।

अथवा

'पुस्तकों का महत्व ' पर एक निबंध लिखिए ।

उत्तर - **(क) देश की प्रगति में महिलाओं का योगदान**

राष्ट्र की प्रगति में महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान है। आज की महिलाएँ राष्ट्र की प्रगति के लिए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम ही नहीं कर रही, बल्कि कई क्षेत्रों में पुरुषों से आगे भी चल रही हैं ।आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं, जहां उच्च स्थान पर नारी कार्यरत न हो।वह कृषि, उद्योग,व्यापार, राजनीति,और समाजसेवा से लेकर वायुयान उड़ाने और अंतरिक्ष तक जा रही है। गाँव में आज महिलाएँ पंच ,सरपंच एवं मुखिया के पद पर भी काम कर रही हैं।

भारत वर्ष एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है, जहां महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान रहा है।

भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, "हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रौशनी की लौ भी हैं।" अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के बड़े उदाहरण स्थापित किए हैं।

महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि "जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं। जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं।"

भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है। आनंदीबाई गोपालराव जोशी पहली भारतीय महिला चिकित्सक रही है। सरोजिनी नायडू ने साहित्य जगत में अपनी छाप छोड़ी। हरियाणा की संतोष यादव ने दो बार माउंट एवरेस्ट फतेह किया। बॉक्सर मैरी कॉम एक जाना-पहचाना नाम है। हाल के वर्षों में, हमने कई महिलाओं को भारत में शीर्ष पदों पर और बड़े संस्थानों का प्रबंधन करते हुए भी देखा है – अरुंधति भट्टाचार्य, एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष, अलका मित्तल, ओएनजीसी की पहली महिला सीएमडी, सोमा मंडल, सेल अध्यक्ष, कुछ और नामचीन महिलाएं हैं, जिन्होनें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और अभी चन्द्रयान-3 की टीम का भी नेतृत्व एक महिला ने ही किया है।

JharkhandLab.com

कोविड-19 के दौरान कोरोना योद्धाओं के रूप में महिला डाक्टरों, नर्सो, आशा वर्करों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व समाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की प्रवाह न करते हुए मरीजों को सेवाएं दी है। कोरोना के खिलाफ टीकाकरण अभियान को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। भारत बायोटेक की संयुक्त एमडी सुचित्रा एला को स्वदेशी कोविड -19 वैक्सीन कोवैक्सिन विकसित करने में उनकी शानदार भूमिका के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

निस्संदेह, आज महिलाएं और लड़कियां समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलाव की अग्रदूत हैं। देश की प्रगति में उनके अवदान को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता।

अथवा

पुस्तकों का महत्व

पुस्तकें निस्संदेह मानव जाति के लिए एक वरदान हैं। पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती हैं जो हमें अनमोल ज्ञान देती हैं।गीता में कहा गया है- "ज्ञानात ऋते न मुक्ति" अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति सम्भव नहीं है। ज्ञान की प्राप्ति के मुख्यतः दो मार्ग है- सत्संगति और 'स्वाध्याय'। तुलसीदासजी ने सत्संगति की महिमा बताते हुए कहा है- "बिन सत्संग विवेक न होई"परन्तु सत्संगति की प्राप्ति रामकृपा पर निर्भर है। यदि भगवान की कृपा होगी तो व्यक्ति को सत्संगति मिलेगी।परन्तु पुस्तकें तो सर्वत्र सहजता से उपलब्ध हो जाती हैं। ज्ञान का महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं-पुस्तकें। प्रत्येक मनुष्य अपनी क्षमता के अनुसार अध्ययन करके अपने ज्ञान क्षितिज का विस्तार कर सकता है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पुस्तकों के महत्त्व पर लिखा है कि तोप , तीर, तलवार में जो शक्ति नहीं होती ; वह शक्ति पुस्तकों में रहती है। तलवार आदि के बल पर तो हम केवल दूसरों का शरीर ही जीत सकते हैं , किंतु मन को नहीं। लेकिन पुस्तकों की शक्ति के बल पर हम दूसरों के मन और हृदय को जीत सकते हैं। ऐसी जीत ही सच्ची और स्थायी हुआ करती है , केवल शरीर की जीत नहीं ! पुस्तकों का महत्त्व अमूल्य है।अच्छी पुस्तकें मनुष्य को पशुत्व से देवत्व की ओर ले जाती हैं। मनुष्य की सात्विक वृत्तियों को जाग्रत कर उसे पथभ्रष्ट होने से बचाती हैं।श्रेष्ठ पुस्तकें मनुष्य, समाज तथा राष्ट्र का मार्गदर्शन करती हैं। इतना ही नहीं पुस्तकों का हमारे मन मस्तिष्क पर स्थाई प्रभाव पड़ता है। सच कहें तो किताबों से गुजरना दुनिया के श्रेष्ठ अनुभवों से गुजरने जैसा है। इस दुनिया में किताबें पढ़ने से बड़ा सुख शायद ही कोई हो। तभी तो किताबों को सबसे अच्छा मित्र कहा जाता है। निर्मल वर्मा के अनुसार - "किताबें मन का शोक, दिल का डर या अभाव की हूक कम नहीं करतीं, सिर्फ सबकी आंख बचाकर चुपके से दुखते सिर के नीचे सिरहाना रख देती हैं।"

पुस्तकें न सिर्फ हमें जानकारियां देती है बल्कि हमारे अतीत के चलचित्र से भी रू-ब-रू करवाती हैं। किताबें हमारे जीवन की सबसे अच्छी साथी होती हैं। जब भी हमें उनकी आवश्यकता होती है वे हमारे लिए उपलब्ध होती हैं। किताबें हमारी आसपास की दुनिया को समझने, सही और गलत के बीच निर्णय लेने में हमारी मदद करती हैं। वे हमारे आदर्श, मार्गदर्शक या सर्वकालिक शिक्षक के रूप में भी हमारे जीवन में शामिल होती हैं। पुस्तकें पढ़ने से हमारे व्यक्तित्व में गुणात्मक परिवर्तन आता है। जो लोग अच्छी पुस्तकें पढ़ने में कोई रुचि नहीं रखते, वे जीवन की बहुत सी सच्चाइयों से अनभिज्ञ रह जाते हैं। महात्मा गाँधी जी ने पुस्तक पढ़ने से होने वाले लाभ को देखते हुए कहा था- "पुराना कोर्ट पहनो तथा नई पुस्तक खरीदो"। पुस्तकें पढ़ने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि हम जीवन में कठिन से कठिन परिस्थितियों से जूझने में भी सक्षम बन जाते हैं इन कठिन परिस्थितियों में पुस्तकें ही हमारा मार्गदर्शन करती हैं।

अधिकांश पुस्तकें मानव को ज्ञान और मनोरंजन प्रदान करती हैं। इस संदर्भ में मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है -

'केवल मनोरंजन ना कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।

विज्ञान, वाणिज्य, कला या कानून की सभी पुस्तकें मानव के ज्ञान में संवर्धन करती हैं।उन्हें पढ़कर मानव अपने भीतर आंतरिक शक्ति का अनुभव करता है। सच तो यह है कि पुस्तकें हमारी सच्ची मार्गदर्शक हैं।वे हमें नए-नए क्षेत्रों और रहस्यों का ज्ञान तो कराती ही हैं साथ ही चिंतन-मनन के लिए बाध्य करती हैं।दुविधाग्रस्त स्थिति में श्रेष्ठ पुस्तकें मनुष्य के मन में दृढ़ संकल्प जगाती हैं, तभी तो महात्मा गाँधी जी गीता को "माँ" की संज्ञा देते थे क्योंकि वह प्रत्येक कठिन स्थिति में उनका मार्गदर्शन करती थी।पुस्तकें ऐसी हानिरहित मार्गदर्शक हैं जो दंड नहीं देतीं,नाराज नहीं होतीं, हमसे बदले में कुछ नहीं लेतीं, बल्कि अपना अमृत तत्त्व बाँटती चली जाती हैं।पुस्तकों में वो ताकत होती है जिन्हें पढ़ने पर व्यक्ति के अन्दर शिखर तक पहुंचने की तपन पैदा होती है। वे हमारे लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती हैं साथ ही यथासमय लक्ष्य प्राप्ति में भी मददगार हैं। हममें से कई लोगों को अपने खाली समय में या सोने से पहले किताबें पढ़ने की आदत होती है क्योंकि पढ़ने से अवांछित तनाव पर काबू पाने में भी मदद मिलती है। यह हमें एक अलग ही दुनिया में ले जाती है जिसे हम सुकून की दुनिया कह सकते हैं। पुस्तकें ज्ञानार्जन में,परामर्श देने में और मार्गदर्शन करने में विशेष भूमिका निभाती हैं। लोकमान्य तिलक के शब्दों में - "मैं नरक में भी पुस्तकों का स्वागत करूँगा, क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी वहाँ स्वतः स्वर्ग बन जाएगा"। पुस्तकें हमें साहस और धैर्य प्रदान करती हैं। अन्धकार में हमारा मार्ग दर्शन कराती हैं। अच्छा साहित्य हमें अमृत की तरह प्राण शक्ति देता है। पुस्तकों को पढ़ने से जो आनन्द मिलता है वह ब्रह्मानन्द के ही समान होता है। वेद, शास्त्र, रामायण, भागवत, गीता आदि ग्रन्थ हमारे जीवन की अमूल्य निधि हैं। सृष्टि के आदिकाल से आज तक ये पुस्तकें हमारा मार्ग दर्शन कर रही हैं और हमारी सांस्कृतिक विरासत को कायम रखे हुए हैं।

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का है। इस युग में इंटरनेट का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है, इंटरनेट के माध्यम से कहीं भी और कुछ भी पठन सामग्री कम समय में लाया-पहुंचाया जा सकता है। सच पूछा जाए तो इंटरनेट ने नई-नई पुस्तकों की जानकारी देकर पुस्तकों के प्रति पाठकों की रुचि को बढ़ा दिया है। पुस्तकें वास्तव में लाभप्रद तभी बनेंगी जब उनका चयन उचित तरीके से किया जाय। जिस प्रकार एक मित्र का चयन सोच समझ कर किया जाना आवश्यक है वैसे ही पुस्तकों का चयन करते समय इसके सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर पुस्तकों का संग्रह करना चाहिए।

(ख) चुनाव के दिनों में बढ़ गए शोर और ध्वनि-प्रदूषण को नियंत्रित करने की अपील करते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

सेवा में,

थानाध्यक्ष

बुण्डू, रांची।

विषय - चुनाव के शोर और ध्वनि-प्रदूषण को नियंत्रित करने के संबंध में।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि इन दिनों 12वीं की परीक्षाएं निकट है। हम छात्र अपने अध्ययन में व्यस्त हैं, परंतु चुनाव के चलते इन दिनों जगह-जगह लाउडस्पीकरों की शोर से हमारे अध्ययन में दिक्कत हो रही है। चुनाव प्रचार के लिए सभी पार्टियां निर्बाध रूप से लाउडस्पीकर बजाए जा रहे

jharkhandlab.com

हैं। इससे ध्वनि-प्रदूषण हो रहा है और हम एकाग्रचित होकर अध्ययन नहीं कर पा रहे हैं।

अतः हमारे क्षेत्र के हजारों छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग पर प्रतिबंध लगाने संबंधी आदेश जारी करें।

धन्यवाद !

भवदीय
अंकित राज
बुण्डू, रांची
दिनांक-25/02/2024

(ग) संपादकीय लेखन क्या होता है ?

उत्तर –

'संपादकीय' का सामान्य अर्थ है - समाचार-पत्र के संपादक के अपने विचार। संपादक द्वारा लिखा गया लेख ही संपादकीय लेखन होता है । इस लेख में संपादक प्रतिदिन किसी सामाजिक, राजनीतिक जैसे ज्वलंत समस्या पर अपना विचार समाचार-पत्र में लिखता है। संपादकीय लेख में संपादक, समाचार पत्रों की नीति, सोच और विचारधारा को प्रस्तुत करता है ।

एक संपादक ज्वलंत समस्या या प्रमुख घटनाओं पर संपादकीय लेखन करता है। संपादकीय लेख में किसी घटना पर प्रतिक्रिया हो सकती है या किसी विषय पर अपने विचार हो सकते हैं । लेख में किसी आंदोलन की प्रेरणा हो सकती है या किसी उलझी हुई समस्या क विश्लेषण हो सकता है ।

संपादकीय के लिए संपादक स्वयं जिम्मेदार होता है। अतएव संपादक को चाहिए कि वह इसमें संतुलित टिप्पणियाँ ही प्रस्तुत करे।

घ. छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई को अपने स्वास्थ्य और पढ़ाई के विषय में सजग करते हुए एक पत्र लिखें।

उत्तर -

राँची,
24 जुलाई 2023

प्रिय अनुज,

शुभाशीष !

हम सभी घर पर सकुशल हैं । आशा करते हैं कि तुम भी छात्रावास में आनंदपूर्वक होगे । बड़ी बहन होने के नाते मैं तुम्हें स्वास्थ्य एवं पढ़ाई के बारे में कुछ बातें समझाना चाहती हूँ। तुम्हें मेरी सलाह है कि छात्रावास के वे दिन दुर्लभ हैं।ये दिन लौट कर नहीं आएंगे। अतः अध्ययन का कोई अवसर चूकना नहीं। मन लगाकर पढ़ना। संपूर्ण पाठ्यक्रम की एक रूपरेखा बनाकर तुम्हें निरंतर अध्ययनशील रहने की आवश्यकता है।

एक बात और कि पढ़ाई के चक्कर में स्वास्थ्य की उपेक्षा मत करना। स्वास्थ्य ठीक रखने और प्रसन्नचित्त रहने का सर्वोत्तम उपाय खेल और व्यायाम है । समय पर पढ़ना और समय पर व्यायाम करना । उससे पढ़ाई की थकान और तनाव दूर होगा, स्पूर्ति बढ़ेगी, मन प्रसन्न होगा तथा हर काम में मन लगेगा।

एक विद्यार्थी के लिए पढ़ाई का जितना महत्त्व है उतना ही महत्त्व व्यायाम का भी है । स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ विचारों की उत्पत्ति होती है। स्वस्थ शरीर का भी उतना ही महत्त्व है जितना कुशाग्र बुद्धि का।

आशा है तुम मेरे उपर्युक्त कथन के महत्त्व को समझोगे और कल से ही उस पर अमल करना आरंभ कर दोगे। शेष सब ठीक है।

तुम्हारी दीदी
सुशीला कुमारी

3. निम्नलिखित में से किसी एक का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए : 5

(क) मुझसे मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊं किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को,
भरता उर में विह्वलता है !
दिन जल्दी जल्दी ढलता है !

उत्तर -

भाव सौंदर्य - दिन के ढलने से प्राणी अपने-अपने घर आने को आतुर हैं, क्योंकि उनके घर पर कोई-न-कोई उनकी प्रतीक्षा कर रहा होता है। पर कवि के आने के इंतजार में कोई प्रतीक्षारत नहीं है, इसलिए उसके पैर शिथिल हैं।

काव्य-सौंदर्य -

(1) एकाकी जीवन बितानेवाले व्यक्ति की मनोदशा का वास्तविक चित्रण हुआ है।
(2) भाषा सरल, सहज और भावानुकूल खड़ी बोली है।
(3) 'मुझसे मिलने' में अनुप्रास अलंकार, 'मैं होऊं किसके हित चंचल' में प्रश्नालंकार तथा 'जल्दी-जल्दी' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(4) मुक्तक छंद है।
(5) तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है।

ख. सूत बित नारी भवन परिवारा।
होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ।।
अस बिचारि जियं जागहु ताता।
मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ।।

उत्तर - भाव-सौंदर्य - प्रस्तुत काव्यांश गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखित 'लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप' नामक कविता से लिया गया है।यह चौपाई लक्ष्मण जी को शक्ति बाण लगने के समय भगवान श्रीराम के विलाप के सन्दर्भ की है।प्रभु राम की दशा आज सामान्य मनुष्य की सी दशा है।अर्धरात्रि तक हनुमान नहीं आए हैं। लक्ष्मण का सिर गोद में लिए भगवान श्रीराम रोते हुए कहते हैं कि इस संसार मे सुत अर्थात पुत्र, बित अर्थात धन,नारि अर्थात स्त्री, भवन अर्थात घर या महल ,परिवार जन्म जन्म में मिलेंगे लेकिन सहोदर भाई बार-बार नहीं मिलेगा। अतः मेरे द्वारा कही गयी इस बात पर ह्दय में विचार करके हे भाई लक्ष्मण ! अब तुम जाग जाओ।

काव्य-सौन्दर्य – (1) कोमल पदावली युक्त अवधी भाषा है।
(2) चौपाई छंद का सुंदर निर्वाह हुआ है।
(3) श्री राम के वियोग का सुंदर, सजीव व बिंबात्मक चित्रण हुआ है।
(4) करुण रस व प्रसाद सम्पन्न भाषा है।
(5) पद में लय,तुक एवं गेयता का सुंदर समन्वय है।
(6) चित्रात्मक शैली एवं कोमलावृति है।

4. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3+3=6

(क) **छोटे चौकोने खेत को 'कागज का पन्ना' क्यों कहा गया है?**

उत्तर - छोटे चौकोने खेत को ' कागज का पन्ना 'इसलिए कहा गया है क्योंकि कवि अपने कवि- कर्म को किसान के कर्म जैसा बताना चाहता है । वह अपनी कविता को खेत एवं स्वयं को किसान मानकर कागज जैसे खेत पर शब्दों द्वारा कविता का रूप देकर कविता की फसल तैयार करता है,अर्थात् कवि कविता की समानता खेती करने से करना चाहता है। इसलिए, वह कागज के पन्ने को छोटा चौकोना खेत कहता है। जिस प्रकार खेत में ही बीज, जल, रसायन आदि डाले जाते हैं और उसमें से अंकुर,फल-फूल आदि उगते हैं,ठीक उसी प्रकार कागज़ के पन्ने पर ही कवि के भाव शब्द, अलंकार, रस आदि के रूप में प्रकट होते हैं।

Jharkhandlab.com

(ख) पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है - तुलसी का यह काव्य सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है। तर्कसंगत उत्तर दीजिए ।

उत्तर - गोस्वामी तुलसीदास श्री राम के अनन्य भक्त थे। वे मानते थे कि दुनिया के सभी दुखों व परेशानियों से केवल श्री राम ही मुक्ति दिला सकते हैं । इसलिए वे कहते थे कि दुनिया के सभी प्राणियों के दुखों का अंत सिर्फ श्री राम की भक्ति से ही संभव है ।

किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए ईश्वरीय कृपा के साथ-साथ कड़ी मेहनत की भी आवश्यकता होती है । इन दोनों के संतुलन से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है । इसलिए कहा गया है कि ईश्वर भी उसी की मदद करते हैं, जो कठिन परिश्रम कर अपनी मदद आप करते हैं और आज के संदर्भ में यही सत्य है ।

(ग) 'छटपटाती छाती को भवितव्यता डराती है' - इस पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट करें।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति 'सहर्ष स्वीकारा है'की है। यहाँ कवि को प्रिय के संयोग जनित प्रकाश अर्थात् सुखानुभूति से भविष्य की आशंकाएँ डराने लगी हैं। कवि कहता है कि मेरे मन में प्रिय की ममता सदा बादलों की भाँति मण्डराती रहती है।यही कोमल ममता कवि को अन्दर ही अन्दर पीड़ा भी पहुँचाती रहती है। यह सोचकर कवि की छाती अर्थात् हृदय छटपटाने लगता है कि यदि भविष्य में उसे प्रिय का प्रेम नहीं मिलेगा तो वह कैसे जी सकेगा?

प्रिय के बिना आगे के जीवन की कल्पना से कवि का हृदय छटपटाने लगता है तथा भयानक भविष्य की कल्पना से काँपने लगता है।

5. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3+3=6

(क) भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी ? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा ?

उत्तर - भक्तिन का वास्तविक नाम -लक्षमिन अर्थात् लक्ष्मी था, जिसका अर्थ है - धन की देवी । लेकिन नाम के अनुसार लक्ष्मी के पास धन बिल्कुल नहीं था । वह गरीब थी, इसलिए वह अपना वास्तविक नाम छुपाना चाहती थी । लेखिका महादेवी वर्मा ने उसके गले में कंठी की माला देखकर उसका नया नामकरण किया था, क्योंकि लक्ष्मी ने अपना नाम लक्ष्मी न पुकारने की प्रार्थना लेखिका से की थी ।

(ख) सफिया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से क्यों मना कर दिया?

उत्तर - सफिया का भाई एक बहुत बड़ा पुलिस अफसर था । वह कानून-कायदों से भली-भांति परिचित था । वह जानता था कि लाहौरी नमक ले जाना सर्वथा गैर कानूनी है । यदि कोई व्यक्ति दूसरे देश में इसे ले जाए तो यह कानून के खिलाफ किया हुआ कार्य बन जाता है । इसलिए उसने अपनी बहन सफिया को नमक की पुड़िया ले जाने से मना कर दिया । वह नहीं चाहता था कि उसकी बहन कस्टम कार्यों की जांच में पकड़ी जाए ।

(ग) शिरीष वृक्ष के आकार प्रकार का वर्णन करते हुए उसके उपयोग पर प्रकाश डालिए।

उत्तर – शिरीष तीव्र गति से बढ़ने वाला एक पर्णपाती वृक्ष है । इसके तीन प्रकार पाए जाते हैं । काला (लाल) शिरीष, पीला शिरीष एवं सफेद शिरीष । शिरीष मध्यम आकार का सघन छायादार पेड़ है जो संपूर्ण भारत के गर्म प्रदेशों में एवं पहाड़ी प्रदेशों में 8 हजार फुट की ऊंचाई तक पाया जाता है । शिरीष के वृक्ष के पत्ते एक से लेकर डेढ़ इंच तक लंबे इमली के पत्तों के समान किंतु कुछ बड़े होते हैं । इसके फूल कोमल गेंद की भांति गोल और महीन रेशों से भरे हुए होते हैं । पुष्प जितने कोमल होते हैं, बीज उतने ही कठोर होते हैं । शिरीष के वृक्ष की फलियां 4 से 12 इंच तक लंबी, चपटी, पतली एवं भूरे रंग की होती है । ये वृक्ष वायुमंडल से अपना रस खींचता है, इसलिए इसे सूखा सहिष्णु वृक्ष भी कहा जाता है ।

शिरीष वृक्ष का प्रत्येक भाग रोग निरोधक क्षमता से परिपूर्ण है । इसकी छाल, फूल, पत्ते, जड़, तेल, बीज व फलियां अत्यंत कड़वे होते हैं । ये श्रेष्ठ कृमिनाशक नाशक तथा खुजली, त्वचा दोष, दमा, कीट दंश, दांत विकार, कब्ज, सिरदर्द आदि अनेकानेक बीमारियों का अचूक उपचार है । यह सौंदर्य प्रसाधन के रूप में भी प्रयुक्त किया जाता है । शिरीष के वृक्ष की लकड़ी बहुउपयोगी होने के कारण कृषि उपकरणों, फर्नीचरों, सजावटी वस्तुओं, खिलौने आदि बनाने में प्रयुक्त की जाती है । यह वृक्ष आज के ग्लोबल वार्मिंग के युग में सर्वाधिक उपयोगी वृक्षों की श्रेणी में आता है ।

6. फणीश्वरनाथ रेणु अथवा महाकवि तुलसीदास की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखें । 2

उत्तर - फणीश्वरनाथ रेणु की दो रचनाएं - 'जुलूस' और 'मैला आँचल।

अथवा

तुलसीदास की दो रचनाएं - 'रामचरितमानस'और 'विनय पत्रिका'।

7. ऐन फ्रैंक कौन थी ? उसकी डायरी क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर - ऐन फ्रैंक एक यहूदी परिवार की लड़की थी। हिटलर के अत्याचारों से उसे भी अन्य यहूदियों की तरह अपना जीवन बचाने के लिए दो वर्ष से अधिक समय तक अज्ञातवास में रहना पड़ा । इस दौरान उसने अज्ञातवास की पीड़ा, भय, आतंक, प्रेम, घृणा, हवाई हमले का डर, किशोरावस्था के सपने, अकेलापन, प्रकृति के प्रति संवेदना, युद्ध की पीड़ा आदि का वर्णन अपनी डायरी में किया है । यह डायरी यहूदियों के खिलाफ अमानवीय दमन का पुख्ता सबूत है । इस कारण यह डायरी प्रसिद्ध है ।

अथवा

सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था । कैसे ?

उत्तर – सिन्धु सभ्यता, एक साधन-सम्पन्न सभ्यता थी। प्रत्येक तरह के साधन इस सभ्यता में थे। इतना होने के बाद भी इस सभ्यता में दिखावा नहीं था। कोई बनवावटीपन या आडंबर नहीं था।उसमें राजसत्ता या धर्मसत्ता के चिह्न नहीं मिलते। वहाँ की नगर योजना, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता द्वारा उनमें अनुशासन देखा जा सकता है। यहाँ पर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। अन्य सभ्यताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते हुए भव्य महल, मंदिर ओर मूर्तियाँ बनाई गईं किंतु सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई में छोटी-छोटी मूर्तियाँ,खिलौने, मृद-भांड, नावें मिली हैं। जो वस्तु जिस रूप में सुंदर लग सकती थी, उसका निर्माण उसी ढंग से किया गया था। इसीलिए सिंधु सभ्यता में भव्यता थी, आडंबर नही।

8. यशोधर बाबू की पत्नी अपने पति से क्यों नाराज रहती थी ?

उत्तर - यशोधर बाबू की पत्नी अपने पति से नाराज रहती है क्योंकि वह अपने जीवन के सुखों को पूरे मन से भोगना चाहती है।संयुक्त परिवार में रहने के कारण उसने अनेक मौकों पर अपने मन को मारा है।वह स्वतंत्र और आधुनिक जीवन जीना चाहती है। उसे अपने पति पर क्षोभ है कि उसी ने उसे खुलकर जीने का अवसर नहीं दिया। पति ने अपने बूढ़ी चाची के समान ही उसे भी खाने-ओढ़ने को दिया। उसे पति के परंपरावादी विचारों पर बार-बार क्रोध आता है। इसलिए वह कहती है -" तुम्हें क्या सूर लगा जो उनका बुढ़ापा खुद ओढ़ने लगे हो ? तुम शुरू में तो ऐसे नहीं थे, शादी के बाद मैंने तुम्हें देख क्या नहीं रखा है ! हफ्ते में दो-दो सिनेमा देखते थे, गज़ल गाते थे गज़ल!" अपनी इस कुंठित अवस्था के लिए वह यशोधर बाबू को ही जिम्मेदार मानती है।

अथवा

'जूझ' कहानी के लेखक को कविता लिखने की प्रेरणा कैसे मिली ?

उत्तर - जूझ कहानी के लेखक के मन में कविताएं रचना की प्रेरणा स्रोत

Jharkhandboard.com

उनके मराठी शिक्षक सौंदलगेकर रहे हैं। लेखक, मराठी शिक्षक की कला व कविता सुनाने की शैली से काफी प्रभावित हुआ। उसे महसूस हुआ कि कविता लिखने वाले भी हमारे जैसे मनुष्य ही होते हैं। कविता रस, लय, छंद के आधार पर गाई जाती है। कविता सुनाने की कला - ध्वनि, गति, चाल आदि सीखने के बाद लेखक को लगा कि वह अपने आसपास, अपने गांव, अपने खेतों से जुड़े कई दृश्यों पर कविता बन सकता है। वह भैंस चराते-चराते फसलों या जंगली फूलों पर तुकबंदी करने लगा। वह हर समय कागज व पेंसिल रखने लगा। वह कविता लिखकर अध्यापक को दिखाने लगा। इस प्रकार लेखक के मन में कविता लिखने के प्रति रुचि उत्पन्न हुई।

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

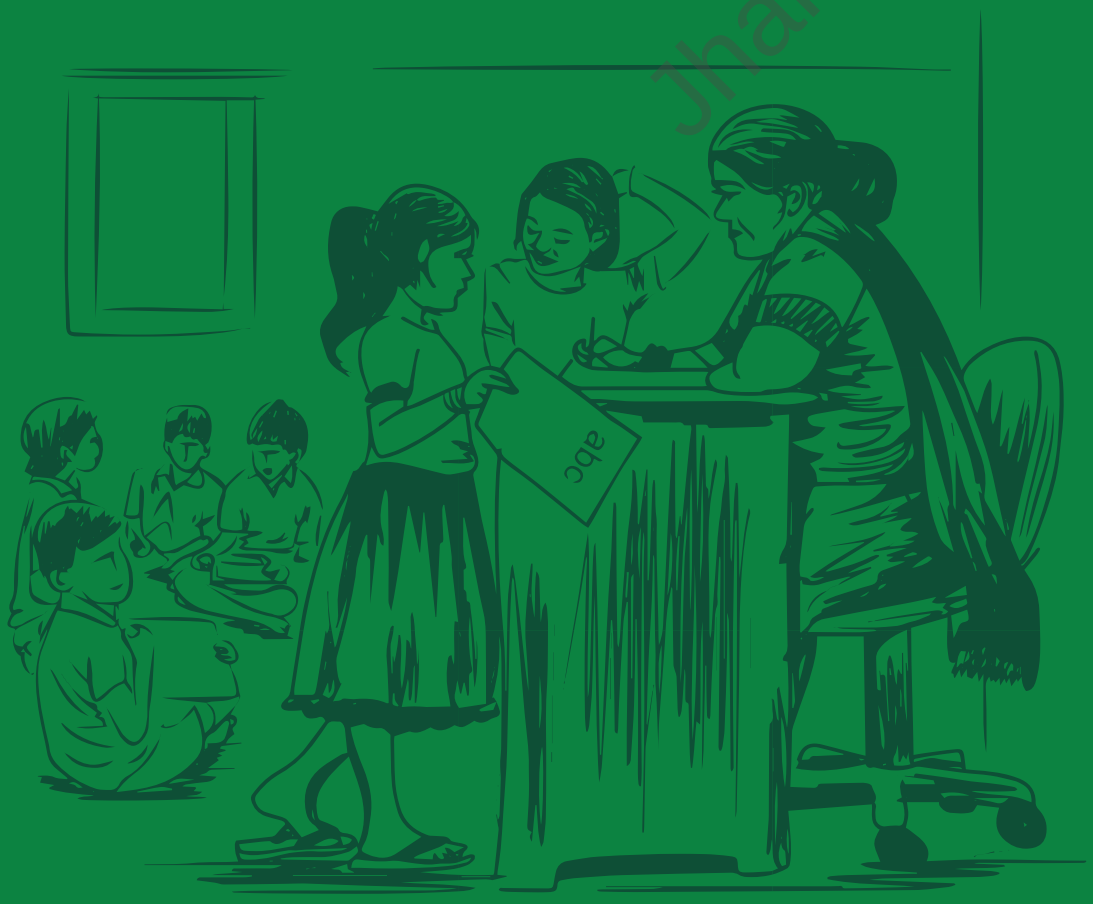

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi